ओ३म

नवीन वर्षका प्रोत्साहन्

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः।
हिरण्य गर्भं जनया मास पूर्व सनो बुद्धया शुभया संयनक्तु

अखिल प्रत्यनीक कल्याण गुणैकतान करुणानिधान श्रीभगवान की अहैतुकी कृपा कटाक्ष से "वनौषधि प्रकाश" अपना प्रथम वर्ष समाप्त कर नवीन वर्षमें पदार्पित होता है। इस वर्षमें इसका शरीर विशेष प्रकार से परिवर्तित और परिवर्धित किया जाता है। अर्थात् प्रति मास ४ फारम में से दो तो वनस्पति गवेषण विचाराभिपूरित, तृतीय फार्म में "परीक्षित वनौषधि प्रयोग माला" शीर्षक लेख जिसमें भारतीय विद्वान वैद्यों द्वारा प्रेषित वनस्पतियों के अनुभव सन्निवेशित रहा करेंगे। चतुर्थ फार्म में "अनुभूत प्रयोगार्णव" नामक दुःसाध्य रोगोंकी अनुभूत चिकित्साओं से परिभूषित तथा "ज्वर चिकित्सा चक्रवर्ती" नामक सटीक पुस्तक प्रकाशित हुआ करेगी। यही नहीं किन्तु और भी समयर पर अन्यान्य वैद्यक विषय के लेख प्रकाशित हुआ करेंगे। अतः सद्वैद्यों से विशेष प्रकार से निवेदन है, तथा प्रबल आशा करते हैं कि वह निज कृपा कटाक्ष से सभी भांति अनुगृहीत करते रहेंगे।

आपका शुभेच्छु—

पं० बाबूराम शर्म्मा।

इस पुस्तक में आने वाले संकेत—

हि०—हिन्दी।
म०—मराठी।
दे०—देशी।
कों०—कोंकणी।
व०—वह्राड़ी।
खा०—खानदेशी।
गो०—गोमन्तकी।
गु०— गुजराती।
बं०—बंगला।
क०—कर्नाटकी।
ते०—तेलंगी।
मा०—मारवाड़ी।
रा०—राजपूतानी।
का०—कान्यकुब्ज।
मा०—मावल।
पं०—पंजाबी।
ता०—तामिल।
तु०—तुळू।
म०—मलयालम।
फा०—फारसी।
अ०—अरबी।
इं०—इंग्रेजी।
ला०—लाटीन।
गो०—गोरखाली।
ने०—नेवारी।
कनौ०—कनौजी।
सिक्०—सिक्कम।
मल०—मलवारी।
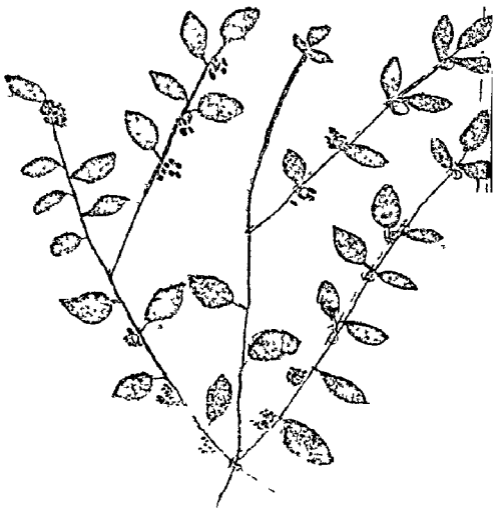
रुद्रवंती

वनौषधि प्रकाश ।

द्वितीय गुच्छ ।

रुद्रवंती (१८)

[Native Names and generic and Specific Botanical Names.]

रुदंति तु स्रवत्तोया संजीवन्यमृतस्रवा ।
रोमांचिका महा मांसी चणपत्री सुधास्रवा ॥

[निघंट शिरोमणि]

चणपत्र समम् पत्रं क्षुपश्चैव तथाम्लकम् ।
शिशिरे जल बिन्दूनां स्रवंतीति रुदंतिका ॥

[राज निघंटु]

रुदंति चणकाकारा स्रवंति तोयबिन्दुकान् ।

[रस सार]

चणक पत्र सादृश्या हेममारि तपस्विनी ।
यस्यां तु विंदते तोयम् हेम विन्दु निभाकृति ॥
रुदंति सा समाख्याता वैद्यविद्या विशारदैः ।

[कल्प पञ्चक प्रयोग]

रुदंति नाम विख्याता जरा व्याधी विनाशनी ।
चण पत्रोपमै पत्रैर्युक्तां भो बिन्दु वर्षिणी ॥

[औषधि कल्पलता]

अनेक भाषानाम

(१) संस्कृतः। रुदन्ति, रुद्रवन्ती, सवजीया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका, महामांसी, चणपत्री, सुधास्रवा।

(२) हि०—रुद्रवन्ती। गु०—पलियो। म०—लाणी-राणहरभरा क०—सलुगणी—आडिबेकडेछे—नोरा सुत्तक। ले०—(Cressa Cretica) क्रेस क्रेटिका।

(२) वर्णनः—[General Discription.]

रुद्रवन्ति यह एक दिव्यौषधि वर्ग की दुःस्प्राप्य तथा अचिंत्य शक्ति महौषधि है। जिसका क्षुप ८ इंच से १ फुट तक गुल्छा-कृति चणे के क्षुप के सदृश शाखा प्रति शाखा ओं से संगठित अनुक्रम से पतली होती गई शाखाओं वाला चमकती हुई बारीक रोमावली से सुशोभित होता है। इसकी प्राय फूलके भेद से चार जाती होती है यथा (चतुर्विधातु साताख्या साधकेन महात्मना। श्वेता रक्ता तथा पीता कृष्णातु पुनरेवसा ॥) अर्थात सफेद, लाल, पीली और काली फूल वाली रुदन्ति।

पत्र चनेके पत्तो के आकार के उनसे छोटे ओसकी बिन्दुओं से ढपे हुए। फल छोटे २ गोल होते हैं। इस क्षुप के नीचे की पृथ्वी जलकी बूँदों से भीगी हुई होती है, यह जाड़े की ऋतु में अधिकता से उत्पन्न होता है।

मूल(Root)पीले वा हरे रंगकी बहुत पतली पतली कहीं कहीं फुट भर तक पृथ्वी में समाई हुई होती है। डंडी और शाखा (Stem and Branches)शाखायें बहुधा जड़के पास से निकलकर चारों तरफ को फैलती हैं। जो सुतली के सम आभदार श्वेत रोमावली से युक्त होती है।

पत्र (Leaves and Stipules) असन्मुखवर्ती, चनेके पत्तों के आकार वाले छोटे छोटे चमकदार बहुत पास पास होते हैं। कहीं कहीं तो ऐसे निकट होते हैं कि पत्तों के डंठल तक दिखाई नहीं देते। पत्ते डंठलकी तरफ चौड़े सिरेकी तरफ सुकड़े हुए रंग के चमकदार बिंदुओं से सुशोभित बहुधा सफेदी मायल हरे रंग के होते हैं। पत्रों पर से जल के समान प्रवाही पदार्थ सर्वदा झड़ा करता है। पत्र उग्र-स्वाद किञ्चित खारा अथवा खट्टासा होता है।

पुष्प (Flower) शाखाओं के अन्तमें अथवा पत्र कोणों पर गुच्छाकृति अति सूक्ष्म होते हैं।

फल (Fruit) छोटे छोटे लम्बे गोल हरे रंग के छोटे छोटे बीजों से युक्त होते हैं।

स्थानक—यथा—शिवालये भवेद्दिव्या औषधी देव पूजिता। गिरि कन्दर दुर्गेषु निर्झरेषु तथैवच॥ पुण्यक्षेत्रेषु सर्वेषु देवता गारेषुच। अर्थात् शिवस्थानों के निकट, पर्वतों की कन्दरा, दुर्गमस्थान, किलों में तथा दूसरे पुण्यक्षेत्रों में तथा प्रायशः देवागारों के निकट होती हैं।

गुण दोष—[Medicinal properties.]

कट्विग्निस्तु कटुस्तिक्ता कषाया चोष्ण कारका।
रक्त, पित्त, कृमि, हरा कफ, श्वास विनाशनी॥
रसायनी मेह हरा "राजनाम निघंट के"

अर्थात्—कटु तिक्त, पाक में गरम, रक्तपित्त, कृमिरोग, कफ, श्वास, मेहादि रोग हरता रसायन तथा पारद के बाँधने वाली है।

उपयोग प्रयोग—(General use)

(१) [कफ रोग पर] इसके पञ्चाङ्ग को कूट कर शहत के साथ चाटना।

(२) [श्वास रोगमें] इसके पञ्चांग का क्वाथ मधु गेर कर पिलाना।

(३) [स्त्रियों के दूध बढ़ाने को] इसका पञ्चांग दूध में घोटा कर खिलाना।

(४) [रक्त पित्त में] इसके पञ्चांग की भाफ नासिका में लेना।

(५) [आयु वृद्धि तथा पुरुषार्थ को] इस औषधि को शुक्ल पक्ष शुभ मुहूर्त में यथा विधि लाकर सुखावे एक सेर पञ्चांग को इसके रस की ७ भावना दे एक माशा प्रमाण गोली बनाकर कड़वी तूँबी मे भर रक्खे। प्रातः काल घृत मधु न्यूनाधिक करके उसके साथ खाय इसके एक घंटे बाद दूध पीवे इस प्रकार ६ मास सेवन करने से सर्व रोग मुक्त दिव्य देह अज्योतित चक्षु होवे। इसका सेवन करने वाला नमक न खाय।

(६) इसके पञ्चांग का चूर्ण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किए हुए दूध के साथ खाय।

दूध १ सेर, जल १ सेर, घी २॥ तोला, शहत २ तोला इनको एकत्र कर दूध निःशेष रहने तक पकावे। इस प्रयोग के ४२ रोज के सेवन से मेह रोग शांत होता है।

(७) रुदन्ती के पत्तों के साथ पारा घोटने से निर्दोष शुद्ध और बद्ध होता है।

(८) इसके रस में २१ बार गरम करके ताँबे के पत्रों को}
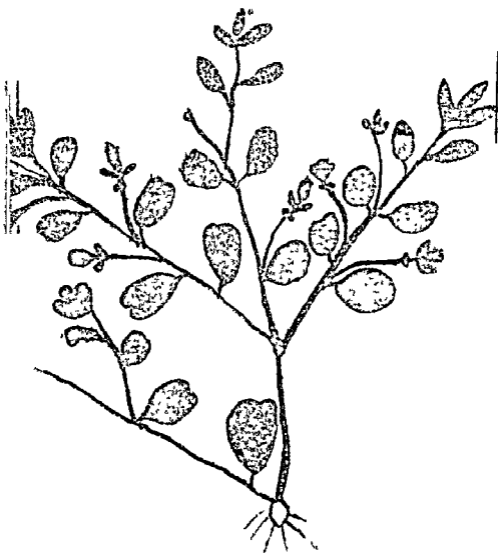
सं० मूषाकर्णी   हिं० चूहाकन्नी

बुझाना और इसके पत्तों की लुगदी में रख कर गज पुट देना ऐसा करने से एक ही आँच में उत्तम श्वेत भस्म होती है।

(९) इसके चूर्ण में समान भाग वायविड़ंग का चूर्ण मिला कर खिलाने, लगाने और नस्य देने से विषैले जन्तुओं का विष नष्ट होता है।

(१०) रुद्रवन्ती के रस में पारे को ३ दिन घोटे, फिर रुद्रवन्ती की लुगदी में रख शराव सम्पुट में कपड़ मिट्टी कर दो बड़ी जंगली उपलों की आग दे तो पारद की कठिन गोली हो पुनः उसको फोड़ कर इसके अर्क में गोली बाँध अग्नि दे ऐसी ३ पुटों में उत्तम भस्म होती है।

(११) रुद्रवन्ती १ तोला, काली मिर्च ४ रत्ती, घोट कर पीने से रक्त शुद्ध होता है। पथ्य न बिगड़ना चाहिये।

विशेष विवेचन।—इसके पत्रों पर से जल बिन्दु स्रवण होने के कारण इसको रुद्रवन्ती—स्रवन्ती आदि विशेषणों से विभूषित किया है। यथा—रूदंति समातिष्ठलोकान् दृष्ट्वाति दुस्तरान्। मयिच विद्यमानायां कथं क्लिश्यंतिं मानवाः॥ अर्थात् रुद्रवंति लोगों को दुस्तर देख कर रुदन करती हुई मानों कहती है कि मेरी विद्यमानता में मनुष्य क्यों क्लेश पाते हैं।

मूषा कर्णी (१६)

आखु कर्णीतु कुशिका द्रवंत्युंदर कर्णिका।
चित्राखु कर्णी न्यग्रोधी तथा मूषक कर्णिका॥
बहु कर्णी प्रत्यी पर्णी माता भूमि चरी तथा।
चंडा च शम्बरी चैव तथैव बहु पादिका॥
प्रबक अर्णी मूषा चैव पुत्र श्रेणी बहुस्वरम्।

प्रोक्ता "राज निघंटेतु" भिषक शास्त्र विशारदे ॥
मूषिका च विषा चैव त्वशु पर्णी तदुत्तरम्।
"धन्वन्तर निघटे" च संप्रोक्ता भिषजाम्बरे ॥
मूषक श्रवणी लीका मूदर्वासु श्रुतिच्छदा।
श्रवण वृष कर्णीच तथैव भूधराश्रिया ॥
"कैय देव" भिषक श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशय।
वृदिच पर्णीन्द्र पर्णीच "द्रव्य रत्ने" भिषक जनै ॥
पर्णिका भूधरी जाच प्रोक्ता "भाव प्रकाश" के।
प्रथक पर्णी शुभ श्रेणी तथा भूमि रदश्रवा ॥
श्रवला चैव कान्ताच तद्वदिदर कर्णिका।
प्रोक्ता गण निघटेतु सप्त त्रिंशति संख्यका ॥

अनेक भाषानाम

संस्कृत—आखुकर्णि, कशिका, द्रवंती, उदरकर्णिका, चित्रा, सुकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिक कर्णिका, बहुकर्णी, वृदिचपर्णी, माता भूमिचरी, चण्डा, शंबरी, बहुपादिका, प्रथक श्रेणी, वृषा, पुत्रश्रेणी, (रा० नि०) मूषिका, अविषा, (ध० नि०) मूषक श्रवणी, लीका, भूधरी, श्रुतिच्छदा, श्रवणा, वृषकर्णी, भूधराश्रिया, (कै० नि०) पर्णिका, भूधरीजा, (भा० प्र०) श्रवला, कांता (ग० नि०)।

हि०—चूहाकर्णी, मूषाकरनी।

म०—उंदिरकानी, भोपनी।

गु०—उंदरकानी, उंदरी, उंदरडी।

फा०—वल्लिदरूहे।

तै०—राक्षक ऐविचदूहू।

यू०—शरदम।

फा०—सतर, गोरूमुख।
अ०— मजानुलफार।
ले०—I pomoea riniformis आय पोमिया रेनीफोर्मिस।
डाक्टरी—Salvinia Cucullata.

(मात्रा चूर्ण ४ आने भर)

वर्णन—इसकी बेलें चौमासे में प्रायः उगती हैं, जो १ से ३ फीट तक लम्बी, घनी शाखाओं युक्त पृथ्वी पर फैली रहती हैं। इसकी शाखायें कभी इक तरफी और कभी चौतरफी फैलती हैं। इस बेल में से प्रायः गाँठ गाँठ पर से जड़ें फूट फूट कर पृथ्वी में धसती जाती हैं। और बेल आगे को बढ़ती जाती है।

पत्र—छोटे छोटे चूहे के कान के आकार वाले बीच में कमानदार गोलाई लेते हुए श्वेत रोमावली युक्त हरे रंग के होते हैं जो विषमवर्ती आध इंच से १ इंच तक लम्बे होते हैं।

फूल—पत्र कोण में से सूक्ष्म डंठलों पर पाँच या छै आते हैं। इनके पुष्प पत्र बहुत छोटे होते हैं। जो पाव इंच से आध इंच लम्बे घंटाकार बैंजनी या गुलाबी रंग के होते हैं। यह मध्याह्न में खिला करते हैं॥

फल—गोलाईदार चने के दाने के सदृश आकार वाले होते हैं। जिन पर चारों तरफ रूवां स्पष्ट प्रतीत होता है। यह कच्चे तो हरे रंग के या बैंजनी रंग के होते हैं और पकने पर भूरे रंग के हो जाते हैं। इनको चीरने से इनमें दो खंड और हर एक खंड में एक एक बीज होता है।

बीज—एक बाजू बाहर निकला हुआ और दूसरे बाजू में दबे हुए से सूक्ष्म बिंदु युक्त लग भग १ रेखा लम्बे होते हैं।

(१९) मूषा करनीमें शोधक गुण है इसके पत्तोंका स्वरस पीने से शरीरका बिगड़ा हुआ खून सुधर जाता है। पित्त विकृति पर उत्तम कार्य कर है। वात रक्तादि रोगों पर इसका असर देखनें के लिये कम से कम ३ मास व्यवहार करना चाहिये।

(डा० वी० जी०)

स्थानक—रास्तोंके किनारे, बागोंके आस पास, खेतोंकी मेंडों पर तराई की जगह। कच्छ, काठिया वाड, अवध, दक्षिण आदि सभी भारतीय विभागोंमें पाई जाती हैं।

विशेष विवेचना।

इसके पत्तोंका आकार चूहेके कानके सदृश होने से इसको मूषा करणी कहते है। इसकी बेलकी गांठ गाठ में से जड़ निकल कर जमीनमें धसी होनेके कारण इसका नाम भूचरी विख्यात है। जिस जगह यह घास होती है, प्राय उसी के निकट ब्राह्मी भी होती है। इसकी कई जातियाँ होती है। इसी नाम से एक और वनस्पति प्रख्यात है जिसको लेटिन भाषामें "Remoti flora" कहते हैं। किंतु वह ठीक मूषा करणी जिसका अपने शास्त्रोंमें प्रयोग कियागया है प्रतीत नहीं होती।

हस्ति शुंडी (२०)

हास्तिनी हस्ति शुंडा च शुंडी धूसर पत्रिका।

[राज निघंटू]

संस्कृत:—हस्तिनी, हस्ति शुंडा, हस्ति शुंडी, धूसर पत्रिका, महा शुंडी।

हिन्दी—हाथी सूंडी, कडेडा, ऊँट जीरा।

गु०—हाथी सुंडा, भुरंडी, सिरयारी, हट सुप, हाती सुप।

सं० हस्तिशुंडी   हिं० हाथीसूंडी

गुण दोष—

आखु कर्णी कटूष्णाच कफ पित्ता पहा सरा।
आनाह ज्वर शूलघ्नी पाचनी "राज नामके" ॥
हृद्रोग कफ जन्तुघ्नी "धन्वन्तरि निघंट"के।
लघु शीता च तिक्ता कषाया "भाव" नामके ॥

अर्थात्—कटु, गरम, कफ पित्त हरने वाली, दस्तावर, अफारा, ज्वर, शूल, हृद्रोग, कृमी हरने वाली, चिर गुण कारी, पौष्टिक, मूत्रल, शोधक, विषहर और शोथघ्न है।

प्रयोग :—

(१) चूहेके विष पर—इसका कांढ़ा कर पिलाना और दंश स्थानको उसी से धोना।

(२) प्रमेह पर—इसके पत्तोंको पीस कर उनका स्वरस निकाल कर मिश्री मिला कर खाना।

(३) ज्वरके पश्चात रही हुई कमजोरी पर—मूषा करनी, गिलोय, काली मिर्च इनका काढ़ा करके पिलाना।

(४) विस्फोटक पर—इसके काढ़ेमें शहत डाल कर पिलाना।

(५) मूत्रावरोध पर—मूषा करनी, पाषाण भेद, दैढ़, गोखरू, ताल मखाना, ककड़ी के बीज इनका काढ़ा कर मिश्री मिला कर पिलाना और इसको पेड़ू पर लेप करना।

(६) गुरदेके दर्द पर—इसके स्वरसमें गिलोयका स्वरस डाल कर पिलाना।

(७) रतवा रोग पर—इसके स्वरसका लेप करना।

(८) घात रक्त पर—इसका बफारा देना।

(९) इसके स्वरसके साथ भंगरेका स्वरस मिला कर नाकमें डालने से पीनसमें नाश विरेचन होता है।

(१०) सर्प दंश पर—इसका स्वरस लगाना और पिलाना हितकर है।

(११) कानके दर्द पर—इसके स्वरस मीठे तेलमें जला कर बूँद बूँद डालना।

(१२) शिरो शूल पर—इसके पञ्चांगको कूट कर गरम करके बांधना।

(१३) शरीरकी उष्णता दूर करनेको इसके बीजोंके चूर्णमें मिश्री मिला कर ठंडे जलसे फंकी करना।

(१४) ज्वर पर—इसके पत्तोंका स्वरस शहतके साथ चटाना।

(१५) अपस्मार अथवा वायु से अंगोंके अकड़ने पर—इसका स्वरस १ तोला, पलधा ३ रत्ती मिला कर पिलाना।

(१६) बहुत से मनुष्य इसके पत्तोंमें काली मिर्च गेर काढ़ा कर चायकी तरह पीते है।

इसके स्वरस की मात्रा १ से २ तोले तक है। इसके रसमें पारेकी गोली बंधती है।

(१७) कृमी रोग पर—मूषा करनी, नागर मोथा, त्रिफला, देवदारु, सोंहजना, नीमकी छाल, वायविडंग इनका काढ़ा कर पीने से कोष्ट गत कृमी नष्ट हो जाते है।

(१८) वैद्य रुगनाथ इसके विषयमें इस प्रकार लिखते है—इसकी बेलका काढ़ा छोटे बच्चोंको पिलाने से पेटका रोग, भ्रम, खांसी, मूत्रविकार, कफ, मिटता है। स्त्रियोंके योनिरोग, शूल, प्रमेह, अफारा; छातीके दर्द, विष, पांडु, भगंदर, कोढ़ आदि रोगों को मिटाता है।

म०—हस्ति शुंडी, नेल वाल।

बं०—हाति शुंडे।

फर०—नलदावरे।

ले०—Heliatropium Indicum.

वर्णन—इसका क्षुप १ से ३ फीट तक ऊँचा, बहुतसी शाखाओं युक्त, पत्ते नागर पानके आकार के लंबे गोल-सफेद रुवेंदार खरदरे सफेदी मायल हरे रंगके होते हैं। फूलोंकी मंजरी १ से ८ इंच तक लंबी बहुधा पत्तोंके विरुद्ध वृक्षमें निकल कर हाथीकी सूंडके अग्रकी सदृश मुड़ती जाया करती है। जड़ पृथ्वीमें गहरी समाई हुई बादामी रंगकी होती है।

गुण दोष—त्रिदोष, ज्वर, शोथ, विष हर है।

उपयोग प्रयोग:—

(१) इसकी जड़की मूसलियोंको उखाड़ कर बिच्छूके काटे पर लेप करने से लाभ होता है।

(२) इसके पत्तोंके रसमें हाथ भिगो कर फिर सुखाना और फिर बिच्छु पकड़ने से वह डंक नहीं मारता।

(३) सब प्रकारके व्रणों पर इसके पत्तोंका अर्क तैलमें जला कर लगाना।

(४) बावले कुत्तेके काटे पर इसके पत्तोंका लेप करना।

(५) ५ तोले इसके पत्तोंको कूट कर पोटली बना कर बारीके ज्वर आनेके ६ घंटे पहले सूँघना।

(६) [करीन्द्र शुंडयादि सान्निपात विध्वंश रस]—सिंगरफ उत्तम आध सेर लेकर उससे पारा निकाल कर उसे सेंधे नमक की पोटलीमें बाँध कर केवल जलसे उपहर स्वेदन करना।

पुनः उस पारदको दोनों दूधियोंमें खरल उतनी ही गंधक डाल कर हाथी सूँडी के रसमें ७ दिन खरल कर फिर वालु यंत्रमें पका कर निकाल लो। उसको त्रिकुटेके रसकी भावना देना ७ दिन पुनः उससे आधे श्वेत ताम्र भस्म और उतना ही शुद्ध विष मिला कर खरल कर शीशी में रखना।

इसकी १ चावल भर मात्रा अद्रकके अर्क और मधु सह देने से सन्निपातको शांत करता है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से रोगोंमें यथानुपान देने से अच्छा गुण करता है। यह एक अनुभव सिद्ध प्रयोग है।

"परीक्षित वनौषधि प्रयोग माला"

(१) * शिवलिंगी—जिस स्त्री के बालक नहीं जीते हों उसके शिव लिंगीके बीज २७ पीपलकी डाढ़ी ६ माशे, गजकेसर ८ माशे इन दोनोंको पीस कर तीन टिकिया बनावे। उनमें से हर एक टिकियामें शिवलिंगी के ९ बीज रखे। स्त्रि ऋतुमति होनेके पश्चात् शुद्ध स्नान करके काली गायके दूधकी खीर बनावे, उसमें गोघृत मिश्री डाले और उनमें से १ टिकिया डाल कर रखे और ऋतुदान लेनेके पश्चात् यह खीर खावे तो बालक होता है। महादेवजीका दिया धरे और ६ महीने सोमवारका व्रत करे।

(२) [रजान]—धातु क्षय या प्रमेह होवे तो रजानके पत्ते या कच्ची फली ३ तोले, कालीमिर्च ७, इलायची नग ३, मिश्री १ तोला सबको घोट कर पीवे तो धातु क्षय जाय।

(३) हिचकी पर—गुल हजारेके फूल या पत्तोंका रस निकाल कर उसमें रुद्राक्ष घिस कर जिह्वाको दिनमें तीन बार लगावे हिचकी जाय।

(४) बेर—कोलास्थि मज्जकल्कस्तु पीतो वाप्युदकेन च।
अचिरादिति हंत्येष प्रयोगो भस्मकंनृणां॥

अर्थ—बेरकी गुठलीकी मींगी पानीमें घिस कर पीवे तो भस्मक रोग नाश होय।

(५) कर्कन्धु छोटा बेर—इसकी मींगी नेत्र रोग निवारक है, दाफ फोड़ेको आराम करती है। इसके पत्ते ३ तोले, कालीमिर्च नग ८, छोटी इलायची नग ३, मिश्री १ तोला घोट कर पीवे तो स्त्रियोंका प्रदर और पैरोंकी तलियोंका जलना दूर होय।

---

* इस विवरणको "वनौषधि प्रकाश" वर्ष१ संख्या १२में देखो।

(२) बेरके पत्तोको भिगो कर झाग उठावे और तलवों से लगावे तो जलन दूर हो।

(६) सीताफल—सं०—गात्रिमा, मतृप।

हिन्दी—शरीफा।

इंग्रेजी—Custerd apple.

(१) कृमि रोग पर—इसके पत्ते पीस कर लगावे।

इसके पत्ते ५ घोट कर पिलावे तो नशा उतरता है।

इसके फल दाह गरमीको शांत करते है।

इसके बीजोके तैलको सिरसे लगावे जूं मरजाती है और गंजको लाभ पहुचता है।

(७) बलबीज गर्मी होवे तो बलबीज के पत्ते ५ तोले पीस कर या मसल कर उसमें खांड़ बनारसी २ तो० मिला कर खावें निरने हो, ऊपर से मूंगकी दाल रोटी अलौनी खावें, मिर्च खटाई न खाई जाय, घी खूब खाना तो उपदंश को आराम हो। जख्मों पर पत्तों को पीस कर लगाना।

(८) अमरूद मराठीमें पेरू इंग्रेजीमें Guava.

वंग भस्मकृती—

रांग डलीका पाव भर लेवे उसको ताकर रखे। एक लोहेके पात्रमे तैलादिक द्रव द्रव्य भर कर उसको पृथ्वीमें गढा खोद कर गाड़ दे उसके ऊपर एक पत्थरकी पतली खिल जिसमें बारीक छद्र हो रहा हो उसे ढके। सिलके छिद्रमें होकर तया हुआ रांग डाले इस प्रकार तिल के तेल में २१ दफे, छाछ में २१ दफे, गोमूत्रमें २१ दफे, आक के दूधमें २१ दफे बुझावे तो रांग शुद्ध हो (जस्त और शीसे के शोधनेकी भी यही कृती है)

फिर उसके छोटे छोटे टुकड़े करे। एक धडी अमरूद के पत्तों को बारीक पीसकर उसकी दो राटी भी बनावे उनमें एक राटी एक बड़े उपल पर रखे उसके ऊपर रांग के जो विछावे और उसके ऊपर दूसरी रोटी ढक ऊपला रखकर लोह के तार से बांधे। उस के इधर उधर और ऊपला लगा कर फूंके। स्वांग शीतल होने पर देख तो यह अति उत्तम भस्म होवे, निर्बलता प्रमेहादि विविध रोगों पर यथानुपान काममें लावे। इसी क्रिया से भंग, मंहदी, पनसुनी आदि बूँटियोंमे भस्म हो जाती है।

(९) रामफल लघणी।

इंग्रेज़—Anonareteculata. एनोन रेटी क्युलेटा।

इसका पका हुआ फल लेकर छिलके उतार कपड़े में डाल कर उसका अर्क निकाले उसमें से १५ तोले रस, इलायची, वंशलोचन गिलोयकासत, मुलेठी, प्रत्येक तीन मासे, मिश्री १० तोला सबको मिलाकर घातल में भरे एक तो० प्रतिदिन खाय तो सुजाक प्रमेह इत्यादि रोग मिट जाते हैं इसको २१ दिन व्यवहार करना चाहिए।

(१०) अधःपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधुहुला, धेनुजिह्वा, अधोमुखपुष्पी, सुरसा, गंध पुष्पिका।

ले० Trich desma Indicum.

यह नेत्ररोग हितकर और मूढ गर्भको अपकर्षण करती है।

(११) जंगली गाभी—इसकी जड़ क्षुप सहित लाकर २ तोले, काली मिरच ९नग डालकर पीसना, उसको १०तोले जलम छानना सात दिन पीने से श्वेतादर (कफोदर) जाता है। अपथ्य खटाई, तैल, पथ्य मूँगकी दाल रोटी।

जंगली गोभी पीछे फूलकी पसरवां छत्ता होता है, उसकी जड़ २ तोला, मिर्च नग ५ डाल कर औटे पीवे तो सुजाक जाय।

सं०—गो जिह्वा।

फारसी—भलमिरो।

इंग्रेजी—Meicrorhynchus Sarmen to sus N. O. Compositae.

इसके पत्तोंकी लुगदीमें मूँगा रख कर फूंकने से उत्तम भस्म होती है।

(१२) आलु बालु।

फारसी—आंबेसा।

इंग्रेजी—Commonchery tree Prunus Lallrocerasus N. O. Rossceo यह पित्त नाशक है, परन्तु अनुभव से सिद्ध हुआ कि हृदय की गतिको बंद करता है।

(१३) आजवला।

हिन्दी—नगदी।

यह दो किस्मकी होती है एक काले रंगकी और दूसरी सफेद रंगकी इन दोनों के गुण अलग अलग हैं।

काली नगदी—अमर कंटक के पहाड़, केदारके नजदीक, ज्योगी शिखर पर, आबू पहाड़में सिद्ध पुर और हिमालय आदि प्रदेशों में होती है।

प्रयोग—कोढ़ या भगंदर होवे तो काली नगदी को ओट कर निरने ही पीवे तो आराम हो।

काली नगदीमें शोधित पारा घोट कर संपुटकर गढेमें धर अरने उपले में फूँके तो भस्म होय।

श्वेतनगदीके पत्ते ३ मासे, चंदाल डोरा ३ मासे, कडवी तूंबीकी

गिरी ३ माशे, आखके पत्ते नग एक, इन सबको पीस कर झुलास बनावे तो सुंघाने से मिरगी पीनस जाय।

(२) सिंगरफ तो० ५को गोमूत्रमें भिजोय कर फिर श्वेतनगदी के रसमें ९ दिन भिगोवे। पीछे लुगदी बना कर पान की लुगदी में रख पाँच सेर कंडोंकी आंच दे। स्वांग शीतल होने पर निकाल रखे इसमें मात्रा आधी रत्ती मिश्री के साथ देने से पुरुषार्थ बढ़ताहै और अर्द्धांग को भी लाभ होता है।

(१४) मेंहदी।

संस्कृत—मिमिर, कोक दंता, द्विवृन्त, नखरंजक, मेंदिका, रागंभा, सुगंध पुष्पा, रागांगी, यवनेष्टा।

इंग्रेजी—Hena.

लेटिन—Lonsoniallea.

यह दाह नाशक, कफ और कोढ़ को दूर करती है, रक्त शुद्धि कारक होने से कोई २ डाक्टर इसके सतमें डालते हैं।

मेंहदी पुरानी २ तोला, मिश्री १ तोला, इलायची ४ रत्ती, घोट के पीवे तो प्रमेह रोग जाय परंतु सात दिन नित्य पीना चाहिये।

(२) नकसीर वाले को मेंहदी पानी में पीसकर तलवों में लेप करना और तालू में धरना। इससे नकसीर जाय।

(आँख आने पर) मेंहदी की पोटली बना कर उसमें लोध, फिटकिरी, कापूर, कतरी हुई बहुत बारीक सुपारी, सब एकत्रित कर पोटली बना आँखों में लगावे।

(३) गोरखमुंडी।

इंग्रेजी—Spoeranthus Indicus.

प्रयोग—इसके स्वरस में शहद डाल कर पीने से गंडमाला और अपची रोग शांत होता है।

(२) इसके स्वरस का गर्म कर काली मिर्चका चूर्ण डाल कर पीवै तो सूर्यावित आधासीसी जाय।

(डा० मा० मुझूमदार)

अल्हुर—बारतुवा (शॉ)

का० शवार होत। (मा० भा) आल। तगड़ (ते) आच (बंगाल) सुरजा सु०) नूनमार (ता०)

अंग्रे०—Meorinda Tinctoria N. O. Cinchonaceal

यह वृक्ष १५ से २० फाट ऊँचा हिन्दुस्तानके बहुतक इवाजमा (प्रांत में दखनमें आत है।

इसके पत्तोंका रस १तोला देने से मनुष्यों मायु रोगमें बहुत गुण होता है। कोचीन चीन प्रांत में इसको फल आर्तव राग काम में आते हैं। इसकी जड़ ६मास गामूत्र सह देने से पाण्डु रोग को लाभ होता है।

द्रोण पुष्पी

(देखो वनौ० प्रकाश संख्या १)

इसके पत्तों का कोल्हूमें पिलवा कर उस रस का एक बरतन में भर कर उसमें उतनाही जल भरदेना। दूसरे दिन ऊपर का समस्त जल निथार कर नीचे बैठे हुए सत्व को एक थाली में कर रखना एक बड़ी दगची को पानी से भरकर चूल्हे पर चढ़ाना उसके ऊपर वह थाली रखना चूल्हे में आंच जलाकर जब भापकी गरमी से थाली में से सब जल उड़जाय और सत्व शेष रहे तो उसे छुड़ा कर एक शीशी में भर रखना इस सत्व को इमेते १ मासे की मात्रासे निम्न लिखित रोगों पर देकर अति गुणद पाया है।

(१) बारी के ज्वर—शीतपूर्वज्वर, विषमज्वरादि पर साथ १ मासा काली मिर्च २५ नग तुलसी के पत्ते नग ५ कर जुवे की मिंगी १ मासा सब को एकत्र कर गरम जल से देना।

(२) कामला पर इसका सत्व को शहद में मिलाकर नेत्रों में डालना।

(३) अफीम के नशे पर—पानी में घोल कर आध आध घन्टे बाद पिलाना।

(४) सर्प दंश—बेहोशी की अवस्था में नली से नाक में फूकना और होश होने पर पानी में घोल कर पिलाना।

यह समस्त प्रयोग हमने अच्छे प्रकार अनुभव किए हैं आशा है कि वैद्यगण अनुभव कर लाभ उठावें।

अनुभूत प्रयोगार्णव

इस अनुभूत प्रयोगार्णव शीर्षक लेख माला में सद्वैद्य, हकीम, डाक्टरों द्वारा परीक्षामें आये हुए विविध रोगों पर तात्कालिक गुणप्रद प्रयोग (नुस्खे) प्रकाशित होते रहा करेंगे। इस कारण निवेदन है कि सच्चिकित्सक वर्ग अपने २ तात्कालिक प्रयोग भेज कर भारतवर्षीय चिकित्सा साहित्यको गौरव पूर्ण बनाने में यथा शक्ति उदारताका परिचय देते रहें।

(डा० बाबा साहब मुझूमदार)

नीचे लिखी आसान तरकीबों से जाड़ेकी खांसी दूर होती है।

(१) Syrup of Scillce साइरफ आफ स्किल्स १ ड्राम, गम एकेशिया पिसा हुआ आधा ड्राम, एमोनिया क्लोराइड आठ ग्रेन, इसमें इतना पेपरमेंट मिलाकर मिश्रण प्रस्तुत करना कि जिस से सब मिल कर दो ड्राम हो जाय।

बच्चोंको जाड़की एक २ चमची दो दो घंटे बाद देना।

(२) बड़े बच्चोंके वास्ते—साइरप आफ इपिकाक, दो हिस्सा साइरप स्किल्स, चार हिस्सा, पेअर गेरिक (Paregaric) एक हिस्सा सबको मिलाकर जितनी २ देरमें मुनासिब समझें दें।

(३) साइरप इपी काक १ औंस, साइरप आफ टोलू १ औंस, पेअर गेरिक आधा औंस, साइरप वाईल्ड चेरी एक औंस

(४) टींचर क्लोराइड आफ आइरन दो ड्राम, ग्लेसरीन ४ ड्राम, पानी ४ ड्राम मिलावें इसकी आधी चमची बाइकी मात्रा से पीने से सूखी खांसी आराम होती है।

(५) बाइ रप आफ पोपीज एक चमचा एन्टी मोनिया वाईन २० बूंद यह एक खुराक है जो खांसी श्वासके रोगियों को सोते समय चाय के साथ पीनी चाहिए। क्लोडिनम ३० बूंद, बाइनगार और शहृत हर एक २ चमचा (Ipecacuanha wine) पापिकाक्यु आना वाइन २० बूंद यह एक खुराक है जो ऊपरकी तरह पीना चाहिए।

(६)(Emulsion)बादामका दूध ४ औंस, साइरप ओफ स्किल्स और टोलु हर एक एक २ औंस मिला कर मिकचर बनालो जब खांसी ज्यादा तुखदे तो चाह में १ चमची मिलाय कर पीलो।

(७) टिंकचर आफ टोलु दो ड्राम, पेअर गेरिक एलि गजुर, टिंकचर आफ स्किल्स, हर एक ४ ड्राम, साय रप आफ हाइट पापीज १ औंस सबको मिश्रित कर एक चमची Barley water में पिया करो।

जब खांसी में बहुत तकलीफ हो उस समय लाभ होता है।

(८) Asthma (श्वासको) प्रिल्डिलिया ४ ड्राम, जेयो रेडी ८ ड्राम, यूकलेपटस ४ ड्राम, डिजेटेलिस ४ ड्राम, कयूवेब ४ ड्राम, इस्ट्रेमोनिया १६ ड्राम, नाईटेड आफ पोटाश १२ ड्राम, काल के रोला वार्क १ ड्राम इसको मिश्रित करना।

यथा विधि सेवन से बहुत लाभ होताहै।

[महा मारी (प्लेग) पर अनुभव सिद्ध प्रयोग]

प्लेग की गिल्टी निकलते ही सफेद चीते की जड ठंडे पानी

में पीसकर लेप करना, फिर सेकना इस प्रकार ६, ७ लेप करने चाहिए। लेप सूकने के पश्चात अलसी के आटे की पुल्टिस बांधना चाहिए। ऐसा क्रम एक या दो दिन करने से गिल्टी पक जाता है अथवा बैठ जाती है और ज्वर भी स्वयम कम हो जाता है। प्लेग के रोगी को आरम्भावस्था से ही ब्रांडी में ब्रोमाइड देना चाहिए जिससे घाव प्रकुपित नहीं होने पाता और निद्रा भी अच्छी प्रकार से आती है। ऐसा बहुत दफे हमारी परीक्षा में आया है।

पथ्य—दूध, साबूदाने की खीर इत्यादि देना।

(दूसरा प्रयोग) इसमें एक डाक्टर महाशय लिखते हैं कि,—"Carbolic acid" कारबोलिक एसिड बारह ग्रेन रोगी को देने से ७२ में १० रोगी अच्छे हुए हैं। डाक्टर लोग यह उपाय करके देखें।

(तीसरा प्रयोग) राज चढेश्वर रस—शुद्ध पारा १ तोला शुद्ध गंधक १ तोला, शुद्ध बछ नाग १ तोला, शुद्ध सिंगरफ २ तो० इन सब औषधियों को एकत्र करके निर्गुंडी (माले) के रस की २१ भावना अदरक के रस की २१ भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना।

अनुपात, अदरक का रस ३ मासे, शहत १ तोला, मिश्री ६ मासे, दिनमें ३ बार देना, इस से तीन दिनमें फायदा प्रतीत होगा किन्तु निरंतर सात दिन तक इसी अनुपान से देना चाहिए।

यदि इस अवसर में वायु अधिक हो तो उक्त अनुपान में बांसे का रस और मिलाना चाहिए। और गिल्टी पर चीतेकी जड़, बछनाग, कबूतरकी बीट यह पीसकर लगाना और सेकना चाहिए इस प्रयोग से सैकड़ा पीछे १५ मनुष्य बबई भातमें अच्छे हुएहैं।

(प्रयोग बोधा) विक्रम सं० १७२६ की हस्त लिखित संस्कृत में ग्रंथियुक्त सन्निपात पर इलाज लिखे हैं।

(१) अग्निशिखा (चौकाई)की पत्तियों को कूट कर गरम करके गिलटी पर बांधना।

२) पीपलकी छाल घोट कर लेप करना।

(३) पर्जन्य कालमें उत्पन्न पित्त पापड़ेको गांठ पर बांधना और खिलाना।

(४) ग्रंथी के ऊपर नमक बांधना, पांव के तलवेमें जोंक लगवाना।

[बाल बढ़ानेका तेल] एरंडका तेल १ पौंड, नारियलका तेल १ पौंड, तिल का तेल १ पौंड एकत्र मिलाकर उसमें १० औंस रेक्टिफाइड स्पिरिट। २० रत्ती कौनेन मिलाना, लेवेंडर का तेल २ ड्राम, रोजमरी २ ड्राम, अनन्नास का एसेंस २ ड्राम इन सबका एकत्र कर बोतलमें रखना, प्रातः सायं लगाने से बाल बढते हैं।

[कर्पूर संपुट यंत्र] लौंग, इलायची, जावित्री, जायफल आदिमें से यदि किसी वस्तु का तैल निकालना हो तो उसको कूट कर एक लोहेके तसलेमें रखना, तसलेके बीचमें एक कटोरा रखना, वैसेही तसले के ऊपर तवा रखना फिर चारों तरफ मुद्रा देकर ऊपरले तवेमें पानी भर देना, उसको चूल्हे पर चढ़ा कर धीमी २ आंच देना इस प्रकार सब अर्क प्याले में निकल आता है।

[स्त्रि रोग चिकित्सा] प्रदर रोग पर गिलोयका सत्व ३ मासा, शुद्ध लाख ,२ मासा, गेरू १ मासा इनको एकत्र कर कच्चे दूधके साथ देना।

(२) गूलरका रस, शहद, मिश्री, एकत्र मिला कर पीने से श्वेत तथा रक्त दोनों प्रकारके प्रदर दूर होते हैं।

(३) सफेद आखे की छाल ३ मासे, काली मिर्च २७ इनको घोट कर पीने से दोनों प्रकारके प्रदर दूर होते हैं।

(४) अशोक वृक्षकी छाल २ तोला, गौ का दूध पाव भरमें पाव भर जल डाल कर ओटाना, दूध शेष रहने पर मिश्री मिला कर पीनेसे रक्त प्रदर दूर होता है।

उपोद्घात ।

भक्त्या लाद्यन्वच्छिन्नऽनन्त ब्रह्मांड धारिणे ॥
तस्मै शांताय महते तें जो रूपायवै नमः ॥

ईश्वर की भी कपा ही अपार महिमा है कि जिसको क्षण मात्र एकांत स्थलमें निष्पक्ष होकर विचारने से स्पष्ट भान होता है। कि यह जगत् क्षण भंगी है।

"प्रथमम जगदेव नश्वरम् पुनरस्मिन क्षण भंगुरास्तनुः ।
ननु तत्र सुखार्पित हेतवे क्रियते हंत जनैः परिश्रमः ॥

प्रथम देखिए कि इन शरीरों की कैसी आश्चर्य मय उत्पत्ति है। कि यदि इनके उपादान कारण पर दृष्टि देते हैं तो उस रजो वीर्य्यसे एसे आश्चर्य मय शरीरों का उत्पन्न होना किसी प्रकार भी बुद्धि में नहीं आता। पुनः शरीर और प्राण के वियोग होने पर यदि समस्त जगतमें ढूंढिए तो उस प्राणीका पता नहीं पावेगा। परंतु भारतीय उद्यम शाली विद्वानोंने इस ही शरीर द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, रूपी परम पुरुषार्थ प्राप्ति के निमित्त इसही को मुख्य स्तंभ माना है। यथा—

"शरीर माद्यम खलु धर्म साधनम् ।"

अर्थात संपूर्ण पुरुषार्थोंका आधार एक उत्तम और निरोग शरीर ही है। परंतु इस समय हम लोगोंको यह सोभाग्य नहीं है कि हमे दृढ़ काय, सुदीर्घ शरीर, विशाल वक्ष सहिष्णु वीर्यवान प्रभृति विशेषण प्राप्त कर सकें।

कारण कि हमने पूर्वज महर्षियों वेदादि सत्य शास्त्रोंके वचन के अनुसार धर्म व्यवहार छोड़ दिए।

यथा, "सत्य भूते दया दानं वलयो देवतार्चनम्।
सद् वृत्तस्यातु वृत्तिश्च प्रशमो गुप्ति रात्मनः।
हितंजन पदानाञ्च शिवा ना मुप सेवनम्।
सेवनं ब्रह्मचर्यस्य तथैव ब्रह्मचारिणाम्।
संकथा धर्म शास्त्रानां महर्षिणां जितात्म नाम्।
धार्मिकैः सात्विकैर्नित्यं सहास्या वृद्ध सम्मतैः।

अर्थात—सत्य भाषण, प्राणि मात्र पर दया, बलिदान, देव पूजा, सदाचार, शाँति, ज्ञान, आदि साधनों द्वारा आत्माकी रक्षा, जिस स्थान में रोग न हो वहाँ का वास ब्रह्मचारियोंकी सेवा, तथा स्वयं ब्रह्मचर्यसे रहना, धर्म, शास्त्र, महर्षि और जितेन्द्रिय महात्माओंकी कथा, वृद्ध सम्मत, धार्मिक और सात्विक जनोंमें सह वास। इत्यादि शास्त्र नियम, तथा वेद्वोक्त सत्य कर्मानुष्ठान यथा—

मुंचामित्त्वा हविषाजीव नाय कमज्ञात यक्ष्मादुत राज यक्ष्मात् ग्राहि र्जग्राह यदि वै तदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्रमु मुक्ते मनम्॥ यदि क्षितायुर्या दिवा परेतो यदि मृत्यो रंतिकं नीत एव॥ तमाहरामि निर्ऋत रूपस्यात् स्पर्शमन शारदाय॥ सहस्राक्षेण शत शार देन शतायुषा हविषा हार्ष मेनम्॥ शतं यथेमं शारदोन यातीन्द्रो निश्वस्य दुरितस्य पारम्। शतं जीव शरदो वर्ध मानः शतं हेमं तान्वसत सुवसन्तान्॥ शतमिन्द्राग्नि सवितर बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः॥ अथर्व १०।१६७।

(अर्थात् हे व्याधि ग्रस्त मनुष्यो तुम ज्ञात तथा अज्ञात व्याधियोंसे हवन द्वारा आरोग्य लाभ करो, चिरकालीन रोगोंको इन्द्र तथा अग्निकी सहायता से हटाओ, जो रोगी मरणोन्मुख हो वो वह भी पुनः आरोग्य संपन्न हो सकता है ।

शरीर में जो कुछ (दुरित, दुर विषमय, दुष्ट, इत, गत, अर्थात् आभ्यंतर प्रविष्ट) अर्थात् शरीरके विषमय दोष युक्त विजातीय पदार्थ (डाक्टर कुन्हेन बनाते हैं कि शरीरमें विषम प्रकृति(Foreign Matter) भरे रहनेसे नाना रोग उत्पन्न होते हैं) के अंशोंमें प्रवेश क्या हो तो शत गुण हवनसे दूर हो सकता है ।

इन्द्र, अग्नि, सूर्य बृहस्पति, इनकी सहायतासे आसन्न मरण रोगी पुनः शतायुषी हो सकता है) पर व्यवहार न करने से समस्त वायु, जल, देश कालादिका दुषित करने वाला अधर्म उत्पन्न होता है यथा—

सर्वेषा मंगिनेवेश वाय्वादीनां यद्वै गुण्य मुत्पद्यते तस्य मूल मधर्मः ॥

सुश्रुत संहिता में अधर्म के कारण वायु आदि में दूषण होना इस प्रकार वर्णित है ॥

तेषा व्यापदोऽदृष्ट कारिताः शीतोष्णा वांत वर्षांषि खलु विपरीतान्यौष धीर्व्या पाद यन्त्य पश्चतासां सुप योगाद्वि विध रोग प्रादर्भावो मारको वाभवेदिति ॥

अर्थात जब इन ऋतु आदमें विपरीतता हो जाती है तब औषधि अन्न, जलादि दूषित हो जाते है । और इन दूषित अन्न जलके सेवन से बड़े मारक रोगों का प्रादुर्भाव होता है ॥ तथा चरकमें भी कहा है ।—

"यदा देश नगर निगम जन पद प्रधाना धर्म मुत्क्राम्या-धर्मेण प्रजां वर्त्तयन्ति तदाश्रितो पाश्रिताः पौर जनपदा व्यव्हारोप जीविनश्च तमधर्म मभि वर्धयन्ति। ततः सोऽधर्मः प्रसभं धर्मं मन्तर्धत्ते। ततस्तेऽन्तर्हित धर्माणो देवताभिरपि त्यज्यंते तेषां तथाऽन्तर्हित धर्मा णामधर्म प्रधाना सव क्रांत देवता मा मृतवोऽव्यापयन्ते तेनापो यथा कालं देवो वर्षति नवा वर्षति विकृतं वा वर्षति। वातान सम्य गभिवान्ति क्षितिर्व्यापद्यते सलिलान्युप शुष्यन्त्यौषधयः स्वभावं परिहाया पद्यन्ते विकृतिम्। तत उध्व सन्ते जनपदाः स्पर्शाभ्यव हार्य दोषात्।

इसका सारांश यह है देश, नगर, ग्राम, प्रांतादि के अधिकारी प्रजासे अधर्मका बर्ताव करतेहैं तब उनके आश्रित उपाश्रितलोग, कर्म चारी, मुखत्यार, व्यापारी आदि लोग भी सब के सब देखा देखी उसी प्रकार का अधर्माचरण करने लगते हैं इस तरह धर्म का ह्रास होतेर धर्म नष्ट प्राय हो जाता है। जिस देशमें धर्म उठ जाता है उस देशको देवता छोड़ देते हैं एसे देशमें ऋतु विपरीत होजाते हैं। जिसमें वर्षा ठीक ठीक और समय पर नहीं होती। और जो हुई तो अति वृष्टि वायु विकृत हो जाता है भूमि व्यापन्न होजाती, जलाशय सूख जाते हैं औषधियें अपने गुणोंका त्याग देती है एसे विकृत पदार्थों के स्पर्श और सेवन से रोग उत्पन्न होकर देश के देश तबाह हो जाते हैं। इत्यादिकारणों से आज कल वर्षादिके विप-रीततासे विशूचिका रोगका प्रादुर्भाव होकर मारकता कि अधिकता

होती है। तथा भयानकता से प्रसूत होकर देशके देशोंको विह्वल कर देता है। और ऐसा भयानक रूप धारण करता है कि जिससे सहस्र २ भारतकी आरत संतान काल के ग्रास में पतित हो कर आबाल, वृद्ध, वनिता, दरिद्र, धनी, सभी प्राणी भय से नितांत व्याकुल होजाते हैं।

अतः नितांत आवश्यक है कि यदि ऐसे भयानक रोग की चिकित्सा तथा निदानकी कोइ हिन्दी भाषा में पुस्तक हो। जिस से सामान्यजन उसमें वर्णित विवरणादि से विज्ञ होकर इस महान रोग के चुंगलमें से छूटसके। इत्यादि कारणोंको सन्मुख रखते हुए हमने, हिन्दी प्रेमियोंके सौकारार्थ, भारतीय वैद्योंके मनोरंजनार्थ तथा इस रोगसे आतुर पुरुषोंकी रक्षार्थ यह "विषूची चिकित्सा चन्द्रोदय" नामक निबंधको संग्रह करना आरंभ किया है जिसमें इस रोग का पूर्व वृत्तांत, कारण, उत्पत्ति, लक्षण चिकित्सा, इस रोग से बचे रहनेका उपाय, चिकित्सा, प्रभृति सभी आवश्यक विषयोंका, चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, शार्ङ्गधर-आयुर्वेद संग्रह प्रभृति वैद्यक ग्रंथों तथा, एलोपेथी, यूनानी, होम्यो पेथिक, आदि से अनेकानेक विषय सन्निवेषित करेंगे, इस पुस्तकके समीप होने से फिर इस रोगकेनिदान चिकित्सादि में किसी भी ग्रंथ की सहायता नहीं लेनी पड़ेगी।

शुभमस्तु भूयात् !

विषूची चिकित्सा

चन्द्रोदय

पूर्व वृत्तांत

यह रोग प्राचीन समय में शतादृश देशव्यापक वा मारात्मक रूप से उल्लिखित नहीं है।

१५०० ईस्वी में जिस समय पोर्चुगीजजाति प्रथम भारत वर्ष में आई उस समय इसरोग का विवरण सुननेमें आया, सौ वर्ष से अधिक हुए होंगे कि विषूचिका प्रथम मन्द्राजमें प्रकाशित हुआ उसके पश्चात भारत के केवल तीन चार स्थानों में देखा गया, इंग्रेजी सं१८१७ में विषूचिका का वृत्तांत बंगदेश से प्रथम अंग्रेजोंके कर्णकुहर गत हुआ लार्ड हेस्टिंगज के समय में पांच दिन के भीतर ५००० प्रजा वर्ग और नौ हजार सैनिक विषूचिका रोग ग्रस्त हो विकराल कालके ग्रास में अकाल पतित हुए। तत्पश्चात् मेमनसिंह पटना, कृष्ण नगर, चटग्राममें माटुंमाचित हो भयानक रूप से प्रसृतहुआ, सहस्र सहस्र मनुष्यों को भीत और कातर कर दिया।

ई० १७२०में डनकन (Duncan) नामक एक इंग्रेज सौदागरने हिन्दु जाती के सन्तुष्ट निमित कलकत्ते में "उलाऊठा" नामक देवी का एक मन्दिर बनवा दिया, जिसको सैंकड़ों हिन्दू लोग पूजा करने लगे। कहते हैं कि बंगदेश से प्रथम यह रोग उत्पन्न होकर चारों दिशाओं में, अराकान, ब्रह्मदेश मालवे तक फैल गया।

सं० १८१९ में पश्चिम, फारिस, तातार, चीन देश तक और सं० १८१३ ई० तक समस्त योरोप, इंग्लैंड, अफरीका तक होगया।

विषयानुक्रमणिका ।

Printed by Bishwambhar Nath
Sharma at "Sree Madangopal" Press,
Brindaban U. P.

परीक्षा के लिये।

छः प्रसिद्ध दवाएं एक ही बकस में, मूल्य १॥) डेढ़ रु० डॉक महसूल ।=) डाक्टर बर्मनकी दवाओंके लिये बहुधा इस विषयके पत्र आया करते हैं कि "परीक्षाके लिये थोड़ी दवाई भेज देओ बाद गुण देखनेके अधिक दवाएं मँगावेंगे"। केवल साधारण मनुष्य ही नहीं वरन् डाक्टर, वैद्य व हकीम भी ऐसे ही चाहते हैं। और ऐसा चाहना उचित भी है। इस लिये डाक्टर बर्मनने अपनी बनाई हुई दवाओंमें से छः विशेष जरूरी दवाओंका एक बकस नमूनेका बनाया है। इसमे नीचे लिखी हुई दवायें पेटण्ट शीशियोंमें भरी हुई सुन्दर कागजके बकसमें बन्द रहती हैं। साथ पूरे हालकी छपी हुई पुस्तक व सेवनविधि भी रहती है। गृहस्थोंके लिये यह अनमोल है थोड़े २ खर्चमें डॉ० बर्मनकी विशेष गुणदायक दवाओंका उपकार मिलता है। अपनी तथा दूसरों की थोड़े ही में बहुत भलाई होसकती है।

दवाओंका नाम।

अर्कपुर-हैजा या गर्मीके दस्तकी एक ही दवा है। दमेकी दवा-तत्काल "दमा" को दबाती है। कोलाटानिक-हर एक के लिये बल बढ़ानेकी दवा। धातुपुष्टकी गोली-यथा नाम तथा गुण। जुलाबकी गोली-सहजमें पेट साफ करती है। अर्क पुदीना सब्ज-अजीर्ण, पेट दर्द व बादीकी दवा।

सम्वत सर २ अंक २

वनौषधि प्रकाश।

वैद्यक

[मासिक पत्रिका]

जंगलकी जड़ी बूटियोंके रंगीन चित्र, पहचान, उपयोग प्रयोगादि, विविध वैद्यक विषय सम्पन्न हिन्दी भाषामें एक मात्र पत्रिका।

Vol. 2. | February 1913. | Issue. 2

"Banoshadhi Prakash"

(*A monthly Botanical Hindi magazine*)

Edited and published

By

V. Pt. Babu Ram Sharma.

Post. Jalalabad

MEERUT.

वार्षिक मूल्य २) रु० प्रति संख्या ≡)

नियम ।

(१) इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित २) रु० प्रति संख्या =)
अग्रिम लिया जाता है।

(२) जो महाशय इसी विषयके उपयोगी लेखों द्वारा इसकी निरंतर
सहायता करेंगे उनको बिना मूल्य।

(३) विज्ञापन छपाई अथवा बंटाईको पत्र व्यवहार करो।

(४) बैरिंग न लिये जांयगे तथा जबावके लिये जबाबी कार्ड व टिकट
आने चाहिए।

(५) सब प्रकारका पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से होना
चाहिये।

पता—बाबूराम शर्म्मा।

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ।

सचित्र

वनौषधि प्रकाश।

मासिक पत्र।

वर्ष २ || फर्वरी १९१३ ई० || अंक १

विविध समाचार।

बड़े लाट महोदय जब कलकत्ते में थे, तब उनके पास कलकत्ता विश्वविद्यालयके इनस्टिटिउटके नये सदस्योंने अभिनन्दन पत्र भेजा था। बड़े लाट बहादुरने उसके उत्तरमें एक चिट्ठी लिख भेजी थी चिट्ठी और किसीने नहीं; स्वयं बड़े लाट महोदयने अपने हाथ लिखी थी। इस चिट्ठीमें सदस्योंको 'मेरे मित्रो' सम्बोधनकर बड़े लाट महोदयने लिखा था,—"आपका मित्र भावपूर्ण पत्र पा मैं बड़ा ही प्रसन्न हुआ हूँ। मेरे लिये इससे अधिक काम्य विषय और कोई नहीं, कि कलकत्ता-विश्वविद्यालयके छात्रगण सुखी और स्वस्थ रहें अन्तमें बड़े लाट महोदयने लिखा था,—"मुझे आशा है, कि आप लोग मुझे सदा अपना अकपट मित्र समझते रहेंगे।" इसमें सन्देह नहीं, कि बड़े लाट महोदयका यह व्यवहार अत्यन्त मधुर है। कितने ही जिलोंके मजिष्टर या पुलिसके सुपरटण्ट जिलेके सम्भ्रांत मनुष्योंके साथ बड़ा ही वाहियात व्यवहार किया करते हैं। आशा है, कि बड़े लाट महोदयके इस दृष्टान्तसे ऐसे लोग जरूर शिक्षा ग्रहण करेंगे।

गत २९ वीं दिसम्बर को उत्तर-पश्चिम सीमान्त प्रदेशके बन्नु नगरमें वहांके हिन्दुओंकी बहुत बड़ी एक सभा हुई। सभामें निम्न लिखित तीन प्रस्ताव उत्थापित, समर्थित और परि गृहीत हुए (१) पठान डाकुओंका उपद्रव बढ़ जानेसे सीमान्त प्रदेशके हिन्दु इन दिनों अत्यन्त व्यथित हैं। पठान डाकुओंके अधिकांश दल अफगानस्थानके खोस्त आदि स्थानोंसे आते हैं। ऐसी दशामें भारत-सरकार अफगान अमीरसे कह ऐसी व्यवस्था करायें, जिसमें अफगानस्थानके पठान लुटेरे भारत सीमामें आ न सकें। (२) पठान डाकुओंका उपद्रव मुसलमानों पर नहीं; सिर्फ हिन्दुओं ही पर होता है। उपद्रवके समय हिन्दुओंके पड़ोसी अन्यान्य जातिके लोग हिन्दुओंका साहाय्य नहीं देते। ऐसी दशामें व्यवस्था की जाय, जिससे उपद्रवके समय हिन्दु अपने विधर्मी पड़ोसीयों से साहाय्य प्राप्त कर शकें। (३) साधारणतः सीमान्त प्रदेशके समस्त हिन्दु; विशेषतः बन्नु जिलेके हिन्दु अस्त्र-आइन से मुक्त किये जायें और सीमान्त प्रदेशमें जिस भू-सम्बन्धीय कानून के चलनेसे हिन्दु-मुसलमानों के बीच विरोध उत्पन्न हुआ है, वह कानून रद्द कर दिया जाय।" पठान डाकुओंका भीषण अत्याचार सीमान्त-प्रदेशके कष्ट-सहिष्णु हिन्दुओंने इतने दिनोंतक नीरव निस्तब्ध रह सहन किया; किन्तु अब यह अत्याचार चरमको पहुँच गया है; इस लिये उनसे सहा नहीं जाता। इसीलिये बहुत दिनों तक नीरव-निस्तब्ध रहनेके उपरान्त अब सीमान्त-प्रदेशके हिन्दुओंने। अपनी सरकारको पुकारा है। आशा है, यह पुकार सरकार सुनेगी।

हमारे बहुतेरे पाठकों को यह मालूम न होगा, कि बहुतेरे युरोपिय भारत वासियोंमें मिल अपनी जीवनी यात्रा निर्व्वाह कर रहे है। भारत वासियोंमें यह सब इस तरह हिल मिल गये हैं, कि इनका पहचानना कठिन है। हालमें ऐसे दो युरोपियोंका समाचार अङ्गरेजी अखबारोंमें प्रकाशित हुआ है। इनमें एक युरोपियका समाचार इस तरह है,—"युक्त प्रदेशके एक क्षुद्र ग्राममें एक युरोपीयका निवास था। मृत्युके समय उसने अपनी जाति प्रकट की। इससे पहले कोई भी जान न सका, कि यह युक्त प्रदेश वासी नहीं कोई युरोपिय है। उसने ईटका व्यवसाय कर प्रचुर धनोपार्ज्जन किया और एक देसी स्त्री से विवाह कर लिया था। इस स्त्रीसे उस के कितने ही सन्तान उत्पन्न हुए थे। उसकी भाषा, आचार, व्यवहार सभी युक्त प्रदेश वासियों जैसे थे।" दूसरा समाचार है,—"एक गोरी फौजका एक गोरा शिक्षक फौज छोड़ भारत वासी बन एक देशी राज्यमें नौकर होगया था। उसे देख कोई भी यह कहन सकता था, कि वह देशी नहीं; युरोपीय है।" नहीं जानते कि भारत वासीयोंमें छुपे ऐसे युरोपिय अपने जाति-भाई अन्यान्य युरोपियोंसे प्रकट या गुप्त कोई संम्बध रखते हैं या नहीं।

गत सप्ताह युक्तप्रदेश—आगरेमें 'क्षत्रिय उपकारिणी महासभा का वार्षिक अधिवेशन सानन्द समाप्त हो गया। इस सभाके सभापति श्रीमान् काश्मीर नरेश महोदयने एक सुदीर्घ वक्तृता दे जो बातें कहीं, उनका मर्म्म इस तरह है,—"यह चतुर्थ वार मुझे इस सभा का सभापतित्व प्राप्त हुआ है। यों तो मैं सदा ही अपने जाति भाई क्षत्रियोंकी सेवा करनेके लिये उत्सुक रहा करता हूँ; किन्तु

इस बार अपनी इच्छासे नहीं वरन् जामनगरके महाराज रणजित सिंहके विविध कारण वश यह पद ग्रहण करनेमें असमर्थ होनेकी वजह इस पदका कार्य्य करनेके लिये मैं प्रस्तुत हुआ हूं। सभी जानते हैं, कि इन दिनों राजपूत जाति बड़ी ही शोचनीय दशाको प्राप्त हुई है; फिर भी, देशके बहुतेरे राजपूत नरेश निश्चिन्त बैठे हैं अपनी जातिकी उन्नतिकी ओर उतना ध्यान नहीं देते, जितना ध्यान उन्हें देना चाहिये। कितने ही लोगोंका कहना है, कि राजपूत यदि शिक्षा लाभ कर लेंगे तो अपने पूज्य पुरखोंकी अवज्ञा करेंगे। मेरा कहना है, कि यह बात भ्रमसूचक है। जिस तरह पूर्वकालके शिक्षित राजपूतोंने अपने पूज्य पुरखोंकी अवज्ञा नहीं की है, उसी तरह आजकलके भी शिक्षित राजपूत अपनी मर्य्यादा अपने हाथसे जाने न देंगे।"

कलकत्ते में माड अलन :—"मार्जन ओपरा हाउस" नामक नाचघर में विलायत की प्रसिद्ध नर्तकी माड अलनका आगत स्वागत बड़ी धूम धाम से किया गया। हमने सुना है कि हमारे नगर के भी कुछ भद्र पुरुष बीबी नर्तकी का दर्शन करने कलकत्ते पहुँचे हैं। यदि यह समाचार सत्य हो तो हमें इस बातका बड़ा खेद होगा कि जातीय महासभा का जो अधिवेशन करांची नगरमें हुआ है उसमें हमारे प्रान्त से केवल बाबू चन्द्रवंशी सहाय ही जांय और इस बात का कलक बिहारके मत्थे मढ़ा जाय कि जिस बिहार की राजधानी पाटली पुत्र नगर में गत वर्ष काङ्ग्रेस का अधिवेशन हुआ था उस पटने से किंवा समस्त बिहारकी ओर से केवल एक ही प्रतिनिधि जावे। यह बिहार वासियों के उत्साह का एक नमूना है।

पहली ही बात की थी। लन्दन के मान्च में इस बात का पता लग गया कि दर्शकों में भारत वासियों की संख्या बहुत अधिक थी।

गाड़ी पटरीसे उतर गई—विगत बुधवार को कालका शिमला रलवे के केनन और कोथली घाट स्टेशन के बीच बम्बई मेल पटरी से उतर गई थी। डाक और यात्रियों को तीन घंटे तक वहाँ ही ठहरना पड़ा।

प्रसिद्ध गायिका की:—"तलमन" जहाज पर थीसी नारडिका नामक एक प्रसिद्ध गायिका कलकत्ते आ रही है यह समाचार अन्यत्र प्रकाशित है। समाचार मिला है कि उसके पास दसलाख पौण्ड अर्थात् एक करोड़ पचास लाख रुपये के आभुषण हैं।

संसार परिक्रमा। प्रसिद्ध फरांसीसी उड़ाका बेटराइस मिश्र की राजधानी केरोंमें पहुँचा है। वह हवाई जहाज पर एशिया माइनर, हिन्दुस्थान, इण्डो चाइना, ईस्टइण्डीज और आष्ट्रेलियाके रास्ते संसार की परिक्रमा करेगा। वह केरोंमें पन्द्रह दिन ठहरेगा।

औरतों की जूरी—चौंतीस वर्ष के पश्चात् लण्डन नगर में गत ११ दिसम्बर को बारह अङ्गरेज महिलाओं की एक जूरी खूनके एक मुकद्में को विचारने के लिये बैठी थीं। एक औरत को अपने चार वर्ष के नन्हे बच्चे की हत्या करने के अपराध में मान्यवर जज ने फांसी का दण्ड दिया था। अपराधी ने दया की प्रार्थना की इस पर जज ने औरतों की जूरी संगठन करके पुनः विचार करना स्वीकार किया। जूरी ने भी उस औरत को अपराधी समझा और उसे फांसी दी गई।

आनरेबुल बाबू बालक राम ने गत २१ दिसम्बर को श्रीअयोध्या पुरी में श्री चित्रगुप्त महाराज के मन्दिर निर्माण की नेव डाली। आप ने पाँच सौ रुपये सहायता देने के लिये वचन दिया है और

समय २ पर सहायता प्रदान करेंगे। इस अवसर पर बहुत से कायस्थ एकत्र हुवे थे।

संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट श्रीमान् लार्ड मेस्टन तथा श्रीमती लेडी मेस्टन की अभिलाषा प्रकट होने पर श्रीमती सत्यबाला देवी ने गत शुक्रवार को बीना बजाया। आप प्राचीन गान्धर्व विद्या में बड़ी निपुण हैं। बीना और सारङ्गी बजा कर आपने अनेक प्रकार के हिन्दुस्तानी भजन गाये। जय देव की अष्ट पदी सुन कर श्रीमती लेडी मस्टन ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की।

श्रीमान् डाक्टर राशबिहारी घोष ने कलकत्ता विश्वविद्यालय को दश लाख रुपये दान देने का जो वचन दिया था उसे विगत बुधवारको रजिष्टारके पास सरकारी नोट भेजकर पूरा कर दिया।

अदालत में बैंकमैनेजरः—क्रेडिट बैंक के मैनेजर जाफिर जुसब गिरफ्तार हो कर गत शुक्रवार को बम्बई की चीफ प्रेसीडेन्सी मैजिष्ट्रेट बहादुर की अदालत में लाये गये थे। जमानत नामञ्जूर हुई और इकतीस दिसम्बर मुकदमाकी तारीख नियत हुई।

डाक पर डाँका—गत रविवार को एक बजे रात में डाँकुओंने कलकत्ता मेल नं० २ डौन पर नार्थ वेस्टर्न रेलवे के जहांगीरा रोड नामक स्टेशन के पास धावा किया। डांकू लोग झाड़ी में छिपे हुये थे। झाड़ी से निकल कर उन्होंने गार्ड विलबन पर गोली चलाई और इञ्जिन पर आक्रमण किया। फायर मैन गोली खाते ही भूतलशायी बना। ड्राइवर और ट्रेनको बड़ी कड़ी आघात पहुँची। गार्ड और ड्राइवर दोनों पर धावा करने के पश्चात डकैतों ने गाड़ियों को लूटना चाहा परन्तु मुसाफिरों के भाग्यवश वहां शीघ्र ही वृटिश सवारों की एक छोटी सी सेना पहुंच गई और डाकू और सैनिकों के मध्य मूठ भिड़ाव हो गई अन्तमें डाकू भाग

पड़े। ड्राइवर अस्पताल जाते समय मार्ग में ही मरगया। सेना बढ़ादीगई है और उनका बड़ा कड़ा पहरा वहां पड़ रहा है।

छात्रोंकी हड़ताल:—लखनऊ कालेज के छात्रों ने गत १७ दिसम्बर को हड़ताल मचादी। हड़ताल मचाने का कारण यह है कि गत ३० नवम्बर को गोमती नदी पर पुल पार होते समय इंजिनियर थडगर और छात्रों तथा उनके अध्यापक मिष्टर एन० एन० मुकरजी के मध्य खटपट हो गई थी इस के पश्चात् दो छात्र कालेज से निकाल दिये गये। इन दो छात्रों का कालेज से निकालना लड़कों को (खटकने लगा) क्योंकि उनका अपराध इस योग्य नहीं था। कालेज के छात्रों ने प्रिन्सिपल महाशय के पास आवेदन पत्र दिया जिसमें उन छात्रों पर कृपा करने की प्रार्थना की। कालेज २४ दिसम्बर को क्रिष्टमस के लिये बन्द होने वाला था परन्तु ढेढ़सौ छात्रों ने कालेज जाना बन्द कर दिया है और होटल में रहने वाले छात्रों ने धर्मशाले में डेरा दिया है इस लिये कालेज १८ दिसम्बर को ही बन्द कर दिया गया।

महिलाओं के लिये छात्र वृत्तियाँ—श्रीमती लेडी हार्डिंज महिला ओं की शिक्षा की ओर कितना अधिक प्रेम और उदारता रखती हैं यह पाठकों से छिपा नहीं है। आप ने हाल में निश्चय किया है कि दिल्ली नगर में महिलाओं के लिये जो कालेज खोल ने के अर्थ निधि खोली गई है उस में से कुछ छात्र वृत्तियाँ उन कन्याओं को दी जावे जो कालेज खुलने के साथ ही प्रवेश करने की इच्छा प्रकट करें।

सभा पति का स्वागत:—गत बुधवार को कांग्रेस के सभापति नव्वाब सय्यद महम्मद करांची नगर में पहुँचे। आप के गले में हार पहनाया गया और नगरके प्रधान २ सड़कों पर आपकी गाड़ी

खींची गई। छोहान जाति के दो सौ नवयुवक एक वेशमें पोशाक पहिन कर कांग्रेस के स्वेच्छा सेवकों के संग प्रधानजी के आगे पीछे हुये। सर्वत्र प्रधानजी का जयजयकार मनाया गया।

वार्षिकोत्सवः—गया नागरी प्रचारिणी सभा का प्रथम वार्षिकोत्सव गत मङ्गलवार को गयाके सोयम मुन्शिफ पण्डित रामचंद्र चौधरी की प्रधानता में मनाया गया। प्रधान महाशयने भारतकी दशा का कुछ वर्णन करनेके पश्चात् श्रीमान् सत्यदेवजी के व्याख्यान सुनने के लिये श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया।

"शिक्षा" और "साहित्य" विषय पर व्याख्याता ने बड़ी अच्छी वक्तृता दी। आपने प्रथम भारत के दुर्दशा का वर्णन किया। फिर बतलाया कि संस्कृत भाषा की शिक्षा अङ्गरेजी विश्वविद्यालयों में दी जा रही है परन्तु भारत वासी यह नहीं चाहते कि अन्यान्य जातियों की सभ्यता का पाठ पढ़ें और उन में जो उत्तमोत्तम बात हो उसे ग्रहण करें। आपने यह भी कहा कि संस्कृत शिक्षा की प्राचीन प्रणाली की अब आवश्यकता नहीं है। नये ढंग से इस शिक्षा का प्रचार होना उचित है। शिक्षा का उद्देश्य आपने बतलाया कि पढ़ लिख कर अधिकतर नवयुवक लोग स्वतंत्रता पुर्वक जीवन व्यतीत करें। आपने शरीर रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिलाया और युरोपियनों की अपेक्षा भारत वासियों का स्वास्थ्य कैसे गिरा हुआ है इसका आपने अच्छा चित्र खींचा। आप व्याख्यान का पूरा २ विवरण प्रकाशित करने के लिये मेरे पास स्थान नहीं है। अन्त में आपने कहा कि भारत वासियों को अपने भूतपूर्व गौरवों पर केवल अभिमान करने से कुछ नहीं होगा। वर्त्तमान अवस्था को सुधार कर भविष्य को अच्छा बनाना अब उचित है।

परीक्षित वनौषधि प्रयोगमाला

लटकरी

(विवरणके लिये वनौ० प्र० अं० १)

प्रयोग—

(१) इसके पत्तों को सरसों के तैल में जलाकर मालिश करने से वायु के दर्द, दाद, छाजन प्रभृति दूर होते हैं।

(२) [ध्वज भंग रोग पर] इसके पत्तोंकी टिकिया बनाकर बांधने से छाला पड़कर, सफेद, पीला जल निकल जाता है और नसें ठीक होजाती हैं। मावले फूटने के बाद गाय का मक्खन लगाना चाहिए।

(३) इसके बीजों के ३ मा० चूर्ण के साथ बराबर की मिश्री मिलाकर खाने से १५ दिनमें बादी की बवासीर जाती रहती है। पथ्य—घी, खिचड़ी।

(४) घृत में पकाकर इसके रस द्वारा तैयार किया हुआ हलवा नियमति खाने से पेट के कीड़ोंको मारता, भूक खूब लगाता, कुष्ट और कंठ माला को हितकर है।

(५) बावले कुत्ते के काटे पर इस की टिकियां बांधने से सब जहर को चूस लेती है।

(६) इसके पत्तोंका रस २ तो० रेक्टीफाइड स्पिरिट [illegible], २० तो० दोनों को एक बोतल में भरकर तीन रोज तक रखना, पुनः ब्लाटिंग पेपर में छानकर रखना। प्लेग के ज्वर में इसकी १५

बूंद २॥ तो० ठंडे जल से देना, जिससे ज्वर बहुत जलदी शांत होता है। गिलटी पर प्रथम वर्ष के व० प्र० प्रथमांक में वर्णित उपचार करना।

(७) इस के हरे पत्तों को कूट कर टिकिया बनाकर गट्टे और एड़ी के बीच की जगह पर बांधने से आबला पड़कर गृध्रसी वायु को तुरंत आराम होजाता है।

(८) इसके सूखे पत्ते की धूनी देने से कीड़े, मच्छर, तथा सब विषैले जन्तु मरजाते हैं। सॉप बिच्छू इत्यादि भाग जाते हैं।

(९) (चांदी भस्म) चांदीके वरकोंको इसके रस में ३ दिन घोट फिर एक सकोरे में बन्द कर गजपुट की अग्नि दें। स्वांग शीतल होने पर निकाल कर अग्नि दे तो भस्म हो।

(१०) (ताम्र भस्म) तांबे के कंटक वेधी पत्र कर इसके रस में १०० दफे बुझावे पुनः दो उपलों की आग दे। इस प्रकार ७ आंच दे तो उत्तम भस्म हो।

(११) (बंग भस्म) इसके पत्तों को एक टाट के टुकड़े पर बिछा कर रांग की छोटी छोटी डली कर उसपर बिछा सबको लपेट १५ सेर उपलों में फूँके।

(१२) (उत्तम सिंगरफ भस्म) सिंगरफ आध सेर लेकर इसके पत्तों के रस में खरल करना। फिर डमरु यंत्रद्वारा उड़ाकर पारा निकालना। बचे हुए किट्ट को इसके रसमें खरल कर गजपुट देने से श्वेत भस्म होतीहै श्वासकासादि रोगों पर यथानुपान देना।

काक जंघा

(विवरण देखो वनौषधि प्रकाश गुच्छ प्रथम पृष्ठ ४५)

[कुष्ट पर] प्रथम कुष्टी को पञ्च कर्म द्वारा शुद्ध कर काक जंघा

का स्वरस ३ तो० सुबह श्याम पिलावे प्रत्येक दिन स्वरसकी मात्रा बढावे इस प्रकार १५ दिनके पश्चात मालकगनी ४छ० निबोली४छ० काकंजधाके बीज ४छ० इन सबको पाताळ यन्त्रसे तैल निकाल कर, रखे, एक पान पे लगा लेकर उस पर एक तरफ तैल चुपड़ कर सुबह श्याम खिलावे। पथ्य—बेसनी रोटी, घी, नमक बिलकुल नहीं दें चालिस दिन में अवश्य आरोग्य लाभ होगा।

कसोंदी

(विवरण देखो वनौषधि प्रकाश गु० १ पृ० ३४)

(१) रस काफूर कच्चा जो प्राय बाजारों में मिलता है लेकर उसको कसोंदी के पत्तों के रस में १ मास खरल करे तो उत्तम शुद्ध होगा। मात्रा २ चावल दही मे मिला कर दे। दो रोज खिला कर दो रोज बंद रखे फिर खिलावें इस प्रकार करने से दो सप्ताह में उपदंश वाले रोगियोंको शरतिया लाभ होताहै मुंह नहीं आता।

(२) कसोंदी के बीजों को दूध में पकाकर पिलाने से बच्चों की कुकर खांसी अच्छी होती है।

(३) इस के पत्तों के स्वरस को एक बोतल में भरकर फिर उस में रेक्टी फाइड स्पृट भर कर सात रोज धूप में रखना फिर ब्लाटिंग पेपर में छानकर बोतल में रखना, १५ बूंद ठंडे जल में डाल कर देने से ज्वर को पसीना लाकर तुरंत उतार देता है। यकृत और प्लीहा को ठीक करता है।

(४)(मूंगा भस्म)५ तो० मूंगे को बारीक पीसकर १ सेर कसोंदी के पत्तों के रसमें खरलकरना टिकिया बना कर धूपा मे बन्द कर फूंकना। उत्तम श्वेत भस्म होगी।

अपा मार्ग श्वेत

(अनु सन्धान प्र० गु० पृष्ठ १००)

अपा मार्गः शेखरी चक्रिण ही खर मञ्जरी ।
अश्वः शल्या दुर्ग्रहा च प्रत्यक पुष्पी मयूरिका ॥
कांड कंठःशेखरिका मर्कटीदुर्भिर्ग्रहा ।
पराक पुष्पी च बशिरा कटी मर्कट पिप्पली ।
कंट मञ्जरिका कंटा क्षवकः पंक्ति कंट कः ।
माला कंटः कुब्ज कश्च प्रोक्ता राज निघंट के ॥
किण ही दुर्ग्रहा चैव तथा कर्कट पिप्पली ।
धन्वन्तरि निघंटे च संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।
क्षार मध्या मार्ग दंता कैय देव प्रकीर्तिता ।
क्षुधा पामार्ग कश्चैव प्रोक्तागण निघंटके ।
त्रिंशत् संख्या भिषक् श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः

रक्ता पामार्ग ।

रक्ता पामार्ग कश्चैव क्षुद्रा पामार्ग एवच ।
आघट्टको दुग्धनिका रक्त विंद्दल्प पत्रिका ।
प्रोक्ता राज निघंटे तु भिषक् विद्या परायणैः।
ततो रक्त फलश्चैव वसिरः कपि पिप्पली ।

धन्वन्तरि निघंटे तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।
रक्तो रक्त फला चैव बिन्दुकों यशिरस्तथा ।
क्षुद्रकंटस्तु मर्कटी चैव प्रत्यक् श्रेणी स्वरच्छिदः ।
कैय देव निघंटे च प्रोक्ता पूर्व चिकित्सकैः ।
धामार्गवः केश पर्णी प्रत्यक् पर्णी तथैव च ।
प्रोक्ता भाव प्रकाशे विंशत् सख्या भिषक् जनैः ।

इति रक्ता पामार्ग व नामानि

विविध भाषानाम् ।

हि० चिर चिटा, छट जीरा, ओंधा, अपांग चिर चिरी ।
गु० अघेड़ा, झंझेटा ।
फा० खार वाज सूलः ।
अर्बी० आंकमे, मईम ।
पं० पुठ कंडा ।
ता० ना पुरुषी ।
परीसाक० आर्पा ।
धीर भूम० चड़ चड़े ।
ढाका० आर्पा, ऊपत छेड़ ।
मयमन सिंह० अपामार्ग ।
चट गांव० डाहते औंडा ।
रंग पुर० चट चटिया ।
यशो हर० शिप ऊड़ ।

काशी० चिट चिडा।
काशी से पश्चिम० ऊट जीरा।
दक्षिण० फीफड़ा।
कंबोज० ऊंधा कांटा।
नेपाल० अपामा।
इं० Rugh chafftreo रफ चेफ ट्री।
ले० Achyranthes Aspera.
जा० Omi No ja.
सिंहल० Gaskaralsaebo.

गुण

अपा मार्गस्तु तीक्ष्णोष्णः कटु कफ विनाशनकृत्। अर्श कंडू दरा मघ्नो ग्राही च विषहा तथा। रक्त कृत् वांति कृत प्रोक्तो राजनिघंटके। दीपनोथ सरश्चैव मेदानिल हरस्तथा। शूल सिध्मा पर्ची कंडू दद्रुघ्नो कैयदेवके कफ वातहरश्चैव गणे प्रोक्ताभिषक् जनैः।

रक्ता पामर्ग गुण।

रक्ता पामार्गकः शीतः कटुः कफ मरुत्प्रदः। व्रण कंडुविषघ्नश्च संग्राही वांति कृत्तथा। शीतस्वादु रसे पाके दुर्जरं बातलं तथा रुक्षंचरक्त पित्तघ्नं विष्ठंभी केग

देव के। द्रव्य रत्नाकरे भोक्ता वांतिकृत श्वास हारकं। वात कृत् कैय देवे च सर्वे फल गुण स्मृताः।

तहुकी काले नादिरा नवई से गुण।

आवाज साफ करता है, बलगमी बीमारी, कब्ज को हरता है। इसका नमक पाचक है। इसकी जड़ मिश्री के साथ देने से रक्तातिसार को नाश करता है।

ओहरे हिकमत से गुण।

दस्तावर, दाजिम, फोड़ों को लाभ दायक, कफ नाशक बवासीर, खुजली, मूत्र रोग को हित कर है।

प्रयोग

(१) पीपल के पेड़ के नीचे से खोदकर लाई हुई चिरचिटे की जड़ हाथ में बांधने से शीत ज्वर आराम होता है। किंतु बांधने वाले को दो तीन दिन सताता है किंतु फिर उसको भी आराम होजाता है।

(२) कफ, वायु, पार्श्व शूल पर—अमल तासका गूदा १ तो० सोंठ ६ मा० गिलोय ३ मा० रात को भिगोकर प्रातः काढाकर एरण्ड तैल २ तो० डाल कर ७ दिन पीवे गरमी प्यास लगे तो बनफशा १ तो० कदू की मिंगी १ तो० इलायची छोटी७ मा० काला दाना ७ मा० रगड छान कर मिश्री मिलाकर पीवे अनुभूत है।

(३) अर्श, कफज, श्वास, कास पर—थुहार, मदार, घी, गुरुची चिरचिटा, काला नमक सबको कूट छान कर एक कूजेमें बन्द कर १०सेर उपलों में फूंकके पीसकर ३माशे शहत संग चाटे।

(४) सेंधानमक, कालानमक, साँभर, शोरानमक, खारवारीनमक

जवाखार, सज्जीखार, पत्थर का चूना, ताडका खार, केलेकाखार, आखेकाखार, पलाशखार, इमली के फलके छिलके का खार, चिरचिटेका खार, मूलीकाखार प्रत्येक १ तो० सुहागा भुना २ तो० कलमीशोरा ३मा० मिर्चकाली ८- जीरा भुनाहुआ २तो० हाऊ २तो० पीपल २तो० *इन सब को एकत्र पीसकर। अद्रकका रस घी कुंवार* रका गूदा जभीरी नीव का रस प्रत्येक आधसेर ले मिला, बोतल में भर धूप में रखे। धला बलानुसार दे तो। उदर संबन्धी सब रोग शूल, प्लीहा, यकृत, वायुगोला, विशुचिका, स्त्रियों का मासिक धर्म न होना इत्यादि रोगों पर अचूक औषधि है।

(५) निम्न लिखित लक्षण वाला एक रोग एक व्यक्ति को अधिक स्नान करने से हुआ जिस की निम्नोपचार से शांति हुई॥

लक्षण—शिर ठंडा रहना, जड़ता, शिर दर्द, भ्रम, दिल में बुरे बुरे ख्यालों का उठना, दिल उदास रहना, शरीर और मस्तक कम जोर रहना, शत्यघात के कारण शरीर और मुंह का काला पड़ जाना, शरीर भर में वायुका बंद रहना, सिर में जुकाम बना रहना, आखों में जलन, खुजली, जठराग्नि, मन्दता, कोष्ठबद्धताके कारण प्रबल पीड़ा भ्रमकी तरंगें उठना इत्यादि।

उपचार—चिरचिटे के बीजों का पाताल यंत्र द्वारा तैल निकालकर १० बूंद तालू और माथे पर मलना, खाने को त्रिफला १० तो० शुद्ध गूगल, ५ तो० शुद्ध शिलाजीत, ५ तो० मिलाकर बादाम रोगन लगा लगा कर ४ दिन तक कूटना जंगली बेर के बराबर गोली बनाना सायं प्रातः एक दो गोली गरम दूध के साथ खाना दूध में ४ बूंद दाल चीनीका तैल डालना, तो शांति होगी।

(६) शुद्ध सोमल को थोहर और आक के दूध में खरल कर

अपामार्ग की राख में टिकिया दवा चूल्हे पर रख आठ पहर की अग्नि देने से उत्तम भस्म होती है।

(७) कंठ, कुब्ज पर नस्य—पिप्पली, अपामार्ग के रस का नस्य देन से शांति होती है।

(८) ग्रहणी कपाट रस—रौप्य भस्म, मोती भस्म, स्वर्ण भस्म कांति सार, प्रत्येक १ तो० शुद्ध गंधक २तो० पारा ३तो० एकत्र कर कैथ के रस में खरल कर मध्यम पुटदे निकाल कर नाग वला की, ७पुट अपामार्गकी ३ पुट दे तो सिद्ध हो, मधु और काली मिर्चोंके चूर्ण से देना, तो सन्निपात, अतिसार, संग्रह रोगादिको नाश करे।

(९) अपामार्ग के पत्ते, कालीमिर्च, घोड़े की राख में घिसकर अञ्जन करने से हैजे को अराम होता है।

(१०) अपामार्ग, गिलोय, वाय विडंग, शंखपुष्पी, वच, हैड कूट, शतावर, प्रत्येक औषधि समान भाग लेकर चूर्ण कर गो घृत मिला कर सेवन करने से स्मर्ण शक्ति बढेगी।

(११) शिरोविरेचन। अपामार्ग बीज, पिप्पली, मिर्च, विडंग, सोहंजना, सर्षप, तुम्बरु, कालाजीरा, अजमोद, पील, छोटी इलायची रेणुका, बड़ी इलायची, हिंगुपत्री, तुलसी वनतुलसी छोटे पत्तेकी तुलसी शिरसके बीज लशुन हल्दी, दारुणहल्दी, सेंधानमक सांभर नमक, माल कंगनी सोंठ इन सबको चूर्ण कर नस्य देने से मस्तक विरेचन होता है। जड़ता, मस्तक शूल, पीनस, आधा सीसी, कृमी, मृगी का नाश होता है, प्राण शक्ति बढ़ती है। वेहोशी दूर होती है।

(११) मरिचं निलय पामार्गः कासमर्दः पुनर्नवा।
एतच्चि कानयं घृष्टं छगली पयसा सह॥

ताम्रपात्रे भृता नेत्रे निशांध्यं याति वेगतः।

अर्थ—कालीमिर्च, नील, अपामार्ग की जड़, कसोंदीकी जड़ छेरी के दूध में तांबे के पत्र पर घिसकर अंजन करने से रतोंधी शीघ्र छूट जाती है।

(१२) अपामार्ग शिफ घृष्ठ मधुना सैंधवेन च।
ताम्र पात्रे भृता नेत्रे हन्ति पीडां तदुभ्दवां।

अर्थ—अपामार्ग की जड़, सेंधानमक, मधु इन को तांबे के पत्र पर घिसकर लगाने से रतोंधी दूर होती है।

राजवैद्य संत शरण बिहारीसिंह।
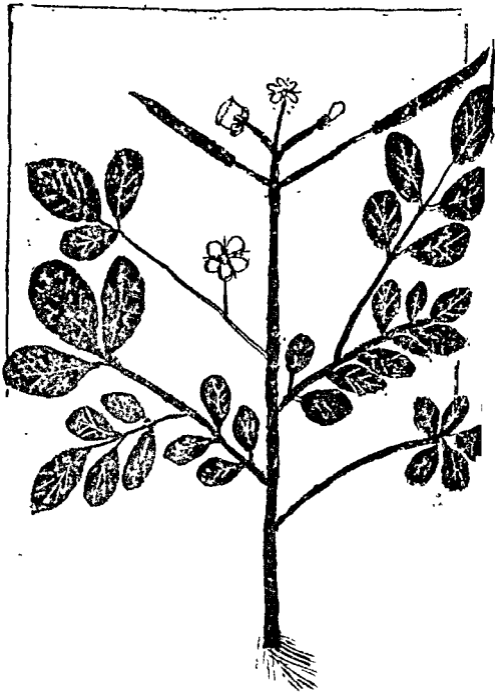
सं० चक्रमर्द   हिं० पंवाड़

चक्र मर्द

एडहस्ती विमर्दश्च दद्रुघ्नः शकुनाशनः। चक्री चक्र गजश्चैव दृढबीजो प्रपुन्नटः। चक्र मर्दस्त्वेड गजो मेषाह्वो चैड हस्तिकः। व्यावर्तकश्चक्र गजश्चक्री पुन्नाट एव च। खर्जुघ्नस्तु गजाख्यश्च प्रोक्तं राज निघंटके॥

ततस्त्वेड गजश्चैव मेषाक्ष्वेड गजस्तथा। प्रपुन्नटश्च विख्यातो प्रोक्तो धन्वन्तरी ग्रंथे क्ष्वेडकोड गजश्चैव क्ष्वेडको मर्दको मदा। चक्रिलो मेष कुसुमो कैयदेव निघंटके॥

तथा मदनपाले तु संप्रोक्ता कुष्ट कृंतनः। भाव प्रकाशे संप्रोक्तो पद्माटो मेष लोचनः। उरणाक्षस्तु कोशे च कविभिः परिकीर्तितः।

[निघंट शिरोमणिः]

मेष लोचन पद्माट पुनि प्रपुन्नाट पुन्नाट
चक्र मर्द दद्रुघ्न अरु चक्र एड गज आठ

[औषधि नाम माला]

संस्कृत नाम, एड हस्ति, विमर्द, दद्रुघ्न, शकु नाशन, चक्री, चक्र गज, दृढ बीज, प्रपुन्नट, व्यावर्तक, पुन्नाट, खर्जुघ्न, गजाख्य।

[राज निघन्टु]

एड गज, मेषाक्ष, प्रपुन्नट [धन्वतरि निघंटु]
दद्रुघ्न, एडगज, मर्दक, मर्दा, चक्रिको मेघ कुसुमो।
[कैय देव]
कुष्ठ हंतन [मदन पाल निघटु]
पद्माट, मेष लोचन,[भाव प्रकाश]
हर णाक्ष [कोश निघंटु]

विविध भाषा नाम

हि० पवाड, पवार, पमाड, पमार, चक वड, चकुन्दा, पनवार गांवकाठाकुर।
म० तरावटा, टाकला, तरोटा, तखटा
गु० कुवाडीयो,पंवाडियो
को० टाकला
बं० एडाची,चाकुदा,चाट काठा
क० टकरिके०हुंसळगि तगचे०चगचे०तगर चि०
तै० तांटय मु० तगिरस०
ता० तगेर० विन्दु
तु० तजंकु
मत्मा० तकर, तेकिळो
फा० संजोस चेया
इं० Oval leaved Cassi a ओवल लिव्ड केश्या।
ला० Classca Tora.
इं० Riugworm Shrub Broad leaved Cassia.

वर्णन-इसके क्षुप चौमासे में अधिक देखने में आते हैं जो कभी कभी ५ फीट तक ऊंचाई में बड़े हुए किन्तु साधारण तया दो वालिस्त ऊँचे गुच्छे दार एक ही जगह पर अधिक समुदाय में उगते हैं जिनकी शाखायें घनी चारों तरफ को न फैल कर केवल बीचकी ही डंडी के सहारे पर होती हैं।

इसके फूल पीले फल लंबे बारीक कसौंदी के सदृश गंध युक्त पत्ते अन्डाकृति हरे रंगके होते हैं।

मूल—४ से ६ इंच कभी २ एक फुटतक लंबी रेशे दार बारीक २ जड़ों से घिरी हुई पीले से रंगकी होती हैं। जड़की छाल बहुत पतली किन्तु बारीक और मजबूत रेशेवाली बाहर से भूरे रंगकी और अन्दर से सफेद होती है। जड़ों की वास उग्र, स्वाद मीठा पीछे से कुच्छ चरपरा सा होता है।

डंडी तथा शाखा—शाखाओं के कोमल भाग पर सफेद महीन रोमावाली होती हैं।

पत्र-सन्मुखवर्त्ती छोटे डंठल दार अधिक पास पास आने वाले होते हैं जो अनुक्रम से नीचेसे ऊपर की तरफ बड़े होते जाते हैं। अर्थात् नीचेके पत्ते सबसे छोटे और ऊपरके सबसे बड़े होते हैं। सब से नीचेकी पत्र जोड़ के बीचके मुख्य डंठल के भीतर की तरफ केसरिया रंगकी छोटी छोटी गोल छाइन लंबी रस कुप्पी (Glauds) आई हुई होती है।

फूल—पत्र कोणम से बहुधा एक नली पर दो या तीन फूल आते हैं डंठल के निकट ही सूक्ष्म पुष्प पत्र होते हैं। जिन पर श्वेत बारीक रोमावली आई होती है। फूलका आकार कसौंदी के फूल के आकार से मिलता, व्यास १ इंच तक, रंग पीला होता है॥

पुष्प बाह्य कोष—की ५ पत्ती पीले रंग की आपस में छोटी बड़ी बाहर की तरफ से सफेद सफेद नसोंदार होते हैं ।

पुष्पाभ्यंतर कोष—की पंखड़ी भी ५ही होती हैं हर एक पंखड़ी नोक दार ऊपर की तरफ चौड़ी सीधी नसोंसे युक्त॥ इंच तक लंबी ३ रेखा तक चोडी होती है ।

फल—दोनों बाजुओं से जरा दबी हुई मोटी फली होती है जो पहिले हरे रंगकी किंतु पकने पर भूरे रंगकी होजाती है । फली आधिकाधिक ६ इंच तक लंबाई में देखने में आती है । जिन के डंठल भी १ इच तक लंबे होते हैं

बीज—चमकदार कत्थे के सदृश रंग के $\frac{1}{8}$ इंच लंबे अति कठिन प्रथम हरे रंगके होते हैं ।

गुण दोष

चक्रमर्दःकटुः प्रोक्तो मेदो वात कफा पहः ।
व्रण कण्डू कुष्ठदद्रु पामा हा राज नाम के ।
हिमोरुक्षोत्थ हृद्यश्च स्वादुर्विष्टंभ कारकः ।
मल मूत्र हरश्चैव पित्ता निल हरस्तथा ।
कफ कुष्ट ज्वरघ्नश्च श्वास कासादि मेदहा ।
अरुचि क्रमी हंतेति फलं तस्य कटूष्ण कं ।
विषापहं तस्य शाकं मलघ्नं कैयदेव के ।
त्रिदोषघ्नं तथा ग्राहि शिरोर्ति हरणं तथा ।

शोकोद्भव कफान् हन्ति द्रव्य रत्नाकरे स्मृतं ॥

[निघंट शिरोमणि]

भाषाटीका—पंवाड़, कटु, मेद, वात, कफ हरने वाला, व्रण, खाज, कोढ़, दाद, पामा हर है [राज निघंटु]

हिम, रूखा, हृद्य, विष्टंभकारी, मल, मूत्र हरने वाला, पित्त, वायु, कफ, कुष्ट, ज्वर, स्वास, खांसी, मेद, अरुचि, कृमि हर है, तथा इसकी फली कटु और गरम है, विष को दूर करने वाली है। इसके पत्तों का शाक मलघ्न है [कैय देव निघंटु]

त्रिदोषघ्न, ग्राही, शिरो रोग, शोकोत्पन्न, कफ को हरता है।

[द्रव्यारत्ना कर निघंटु]

भाषा औषधि नाम मालासे गुण।

स्वादु रुक्ष लघु हृद्य हिम पित अति लहो हारि

श्वास कुष्ट कफ दद्रु कृमि देत सोइ दुख हारि

चक्र मर्द फल गरम है तिक्त कहत है सोई।

कुष्ट दद्रु कंडू हरे गुल्म वायु कु विलोय।

श्वास कास पुनि वायु बल विषको हरत है भीति।

यह विध गुण पुन्नाट को सुनहु हृदय धर मीति ॥

प्रयोग—(१) वायरोग पर इसके पत्तों का सागकर खाते हैं ।

(२) पंवाड़की को मट्ठे के साथ पीस कर लेप करने से, दाद दूर होते हैं।

(३) पंवाड़की जड़, बावची, सफेद चंदन इनको पीसकर लेप करने से सफेद कुष्ट दूर होता है।

(४) इसके पत्तों के काढे से कोढ के फोड़े धोने से बड़ा लाभ होताहै।

(५) इसके फूलों को मिश्री के साथ देने से वातज प्रमेह में बहुत लाभ होता है।

(६) बावची, सरसों, तिल, कूट, दोनों हल्दी, नागर मोथा, सबको मट्ठे में पीसकर लेपकरने से दाद और खुजली दूर होते हैं।

(७) करंजुवे के बीज पंवाड़ के बीज, कूट, इनका गो मूत्र में कल्क बना कुष्ठ पर लेप करना।

(८) दूब, हैड, सेंधा नमक, पंवाड़, इनको कांजी मे पीसकर लेपकरने से पाभा कण्ड दूर होता है।

(९) एड गजा तिल सर्षप कुष्ठं बाकुचिका रजनी द्वयतक्रम्।
सर्वंशतोप चिता मपि कण्डू हन्तिविचर्चिक मंडल दद्रुम।

पंवाड के बीज, तिल, सरसों, कूठ बावची, दोनों हलदी इनको मट्ठे में पीसकर लेप करने से, विचर्चिका, मण्डल कुष्ठ, दद्रु को नाश करता है।

(१०) भागैक एडगज स्तत्पादो धात्री फलस्य च।
शालि तन्दुल तः पादो दद्रु हरः स्मृतः।

पंवाड के बीज-आवला चौथाई भाग, चावलों के जलमें पीसकर लेपकरने से, दद्रु दूर होते है।

(११) लाक्षा कुष्ट सर्षपाः श्रीनिके तं रात्री त्र्योपं चक्र मर्दस्य बीजम्। कृत्येकस्थं तक्रपिष्टः प्रलेपो, दद्रुघ्नो मूलका द्वीजयुक्त।

लाख, कूट, सरसों समुद्र फेन, हल्दी, त्रिकुटा, पवाड़ के बीज, मूली के बीज, इन सब को मट्टे में पीसकर लेप करने से दाद जड़ से जाते रहते है।

(११) चक्राह्व बीज स्नुकक्षीर भावितं मूत्र संयुक्तं। रवितप्तं लक्षिपवञ्च लेपनं किटि भापहम्॥

पंवाड़ के बीज सेहुड-दूध में, पीसकर गो मूत्र डाल धूप में रख लेप करने किटिभ कुष्ट नाश होता है।

(१२) विडङ्गैडगजा कुष्ठ निशा सिन्धुत्थ सर्षपैः धान्याम्ल पिष्टैर्लेपोऽयं दद्रु कुष्ठ विनाशनः।

वायविडंग, पँवाड के बीज, कुठ, हल्दी, सेंधा नमक, सरसों, धनिया, इन्हें काँजी में पीसकर लेप करने से दाद कुष्ठ दूर होते हैं।

(१४) पंवाड़ के बीजोंका पाताल यंत्र द्वारा तेल निकाल कर लगाने से, दाद, खाज कुष्ट इत्यादि चर्म रोग दूर होते हैं, इस तेल की १० बूंद दूधमें डालकर पीने से पेट के कीड़े, वायु जनित दर्द रक्तदोषादि शमन होते हैं।

अनुभूत प्रयोगार्णव ।

घोडा चोली रस ।

रसं विषं गन्धक तालकं हि कटु त्रिकं त्रैत्रिफला समेतं॥
सटंकणं वै जैपाल बीजं संमार्दित भृंग रसेन पश्चात् ।
मुद्गप्रमाणा गुटिका विधेया ससेविता षष्टमनुपान योगैः।
सर्वा रुजोघै विनिहंति शीघ्रं गुटि प्रकर्षा हृद्यचोलिकेयं
[रस प्रकाश सुधा कर श्लोक २७२ पृष्ट ९९]

भाषाछन्द ।

पारद गन्धक ताल कटू त्रिफला विष शुद्ध समान धरीजे
गहि बीज जमाल सुहागा भूना भंगरा रसमें सबकोखर
लीजे ।
गुटिका वहु मूंग समाण रचोअनुपान बलै गद साठ हरीजे
गदकों हय चोली हरे सपदा गुण सिद्धसबेसु समक्षकरीजे

बनानेकी विधी—पारा शुद्ध १तो० गन्धक शुद्ध १तो० तेलिया मीठा १तो० हरताल तबकी शुद्ध १तो० सोंठ १तो० मिर्च १तो० पीपल १तो० हैड१तो० बहेडा १तो० आंवला१तो० सुहागा भुना १तो० जमाल गोटे

शुद्ध १तो०सबको भंगरे के रसमें ३दिन खरल कर मूंग प्रमाण गोली बनाना ६० अनुपानों द्वारा सेवन करने से।

पारा शोधन विधी—प्रथम पारेको हल्दीके चूरे और ईंटा खोये में खरल करना फिर धोकर सोहजने के अर्क, तुलसी अर्क, जिमींकंद के अर्क, थोहर के दूध में खरल करना तो शुद्ध होय।

अथवा लहसन के अर्क और सेंधे नमक के साथ खरल करना

गंधक शोधनविधि—एक हांडीमें कच्चा दूधभरकर उसके ऊपर कपडे का छन्ना बांधना फिर उस छन्ने पर गंधक को पीसकर फैला देना, फिर उस पे तवा उलटा धरना और इस तवे पर कोयलोंकी आंच धरना इससे गंधक पिघल पिघल कर दूध में आजायगी वह शुद्ध है।

विष शोधन विधी—मीठे तेलियको बिन ब्याई भैंस के गोबर के साथ पोटली बांध कर औटावे। जब उसमें लकड़ी गढ़ने लगे तो उतार कर ठंडे पानी में धोकर टुकड़े टुकड़े करके सुखा देना।

तबकी हड़ताल शोधन विधि—

तबकी हरताल को लेकर टुकडे २ कर पोटलीमें बांधे एक मटके में गाय का मूत्र और चूना गेर उसमें उसे ४ पहर स्वेदन करे फिर ब्राह्मी के रसकी १ भावनादे तो शुद्ध होय।

जमाल गोटे शोधन विधी—जमाल गोटों को लेकर उनका ऊपरका छिलका उतार कर गायके गोबर में दाबे जब फूल जांय तो उन्हें निकाल कर बीच की जिभी निकाल कर दूधमें पकावे पुनः पीसकर कोरी सनक पर लेप करके धूपमें रखे जब चिकनाई दूर होजाय तो नींबू के रस में खरल कर रख छोडे।

सिद्ध फला हयचोलि वटिका।

यह वटिका मैंने स्वयं अनुभव से तैयार कर विविध रोगों पर नाना अनुपान द्वारा सेवन कराई और प्रत्यक्ष फल देखा। इस-कारण ऐसी उत्तम वस्तुको गुप्त न रख विद्वद्वरों की सेवामें उपहार रूपसे प्रगट करता हूं तथा आशा करता हूं कि, गुणज्ञ पुरुष इसके गुणोंको व्यवहार द्वारा प्रत्यक्ष करने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

जो महाशय बनाने का कष्ट स्वीकार न करसकें वह हमारे यहां से बनी हुई मगा सकते हैं। मूल्य २) शीशी है।

षड्गुण बलि जारित रस सिन्दूर १ तो०, हरताल सत्व ३ मा० शुद्ध विष १तो० आकके दूध में ४० बार भावना दिया हुआ भुना सुहागा १तो० इन सब वस्तुओं का एकत्र कर जमाल गोटेके तककी ३ भावना गो दुग्धकी ३ भावना त्रिफले के काढेकी ७भावना त्रिकुटे, के काढे की ७ भावना, भंगरे के रसकी ७ भावना दे, सरसोंकी बरा बर गोली बनावे। निम्न लिखित अनुपानों से नाना रोगों पर रामबाण है।

अनुपान

(१) नवज्वर पर—तुलसी के पत्तों के रस शहद संग।

(२) वातज्वर पर—अद्रकके रस सहत संग।

(३) कफज्वर पर—पानके रस शहद संग।

(४) पित्तज्वर पर—सफेद जीरे मिश्री संग।

(५) पित्त, कफ, ज्वर पर—अनार का रस, पान का रस शहद संग।

(६) वात पित्त,ज्वर पर—कालीमिर्च मधु सह।

(७) कफ, वात, ज्वर पर—पानकारस अद्रकका रस मधु संग।
(८) तथा ज्वर पर—मिर्चकाली, जीरा, तुलसी संग।
(९) चौथिया ज्वर पर—भंगरेके रस संग।
(१०) सन्निपात पर—अद्रक के रस शहत संग।
(११) जीर्ण ज्वर पर—गिलोय के रस और मिसरी संग।
(१२) अतिसार पर अग्निमें सेंकी भंग, मधु संग, जायफल मधु संग
(१३) रक्तातिसारमें—बादामकी गिरी मिश्रीकी ठंडाई संग।
(१४) संग्रहणी पर—बड़ी दुद्धी के रस संग।
(१५) अजीर्ण पर—अद्रक का रस मधु सङ्ग।
(१६) अर्श पर—अनारके फल के रस शहत संग।
(१७) कास श्वास पर—बांसे के रस मधु संग।
(१८) स्वर भेद पर—बांसे के रस शहत संग।
(१९) पांडु रोग पर—पुनर्नवादि क्वाथ संग।
(२०) अम्ल पित्तपर—चूने के जल संग।
(२१) अरुचि पर—बिजौरे नीबू के रस संग।
(२२) छर्दि पर—नीबू के अचार संग।
(२३) कृमी रोग पर—काफूर मधु संग।
(२४) हिचकी पर—मोर के पंख की भस्म मधु संग।
(२५) मूत्रकृच्छ्र पर—गोक्षुरादि क्वाथ संग।
(२६) सूतिका रोग पर—हल्दी हींग सोंठ घी संग।
(२७) अस्थिगत वायु पर—देवदारू, वच, कुटकी संग।
(२८) सांप के काटे पर—चौलाई के रस संग।
(२९) कर्ण रोग पर—जायफल संग।
(३०) आधा शीशी पर—जायफल संग।
(३१) पीनस रोग पर—जायफल संग।

(३२) धनुर्वात पर—विष्णु क्रांता रस

(३३) विच्छु के काटे पर। अद्रक के रस घिसे कर लगाना

(३४) भूत दोष पर, नीवूके रसमें घिसकर आँखों में डालना

(३५) मकड़ी के विष पर, भंगरे के रसमें घिसकर लगाना,

(३६) बावले कुत्तेके काटे पर, दुल दुल के बीजों के साथ खिलाना।

(३७) वलि पलित नजला प्रभृति मस्तकीय रोगों पर। ब्राह्मी भंगरा मधु संग।

(३८) नेत्र रोगों पर। तिल पर्णीके रस संग अञ्जन करना,

(३९) वात,शूल पर—त्रिकटु क्वाथ संग,

(४०) पुत्र प्राप्तयर्थ—लक्ष्मणाके रस संग,

(४१) वायुसे कमर में दर्द होतो० वच अजमोद संग,

(४२) ज्वर पर, तुलसी के रसमें अञ्जन करना,

(४३) रतौंधी पर, स्त्रिदुग्ध में अञ्जन करना,

(४४) सूतिका ज्वर पर,, घीकुमार तुलसी मधु संग,

(४५) बुद्धि वृध्यर्थ० सुहागा ब्राह्मीके रस संग,

(४६) गुल्म पर० चूनेके जल संग,

(४७) प्रमेह पर,, विदारी कंद, शतावर, के चूर्ण संग,

(४८) मूत्र कृच्छ्र पर, सुपारी के काढ़े के साथ,,

(४९) विद्रधि पर—गुड़ संग,

(५०) पसीना ज्यादह अता हो तो भंगरे के रस संग,

(५१) तक्र मेह पर—वकरीके दूध संग,

(५२) उदरा मय पर० त्रिफला अरंडके तैल संग,

(५३) शोफ रोग पर—भंगरेके रस संग,

(५४) उष्ण वायु पर—जीरा मधु संग,

(५५) आम शूल पर—मरोड़ फली संग,

(५६) छिपकलीके विष पर पानी के संग खाय और लेप करे,

(५७) कुष्ठ पर—गिलोयके क्वाथ संग।

(५८) सोजाक पर—चिल मिलके बीजों संग,

(५९) हिष्टीरिया पर—हींग और घी संग,

(६०) गिलोयके सत, भाविनी, लौंग संग नित्य खाय तो कोई रोग न हो शरीर पुष्ट हो।

प्रदर रोगके प्रमाण भूत प्रयोग।

(१) चूहेकी मसीगन टंक १ लेकर खरल कर कपड़ छान करनी गायके पाय और दूध के साथ पी जाने से रक्त प्रदर दूर होता है।

(२) चूहेकी मसीगन टंक ५ लेकर कबूतरकी बीट टंक ५ मोचरस टंक ५ धायके फूल टंक ५ मिसरी टंक २७ इनका चूर्ण कैर बकरी के दूध संग सुबह स्याम दो सप्ताह तक खाने से लाभ होता है।

(३) छोटी इलायची, गोपी चंदन, अगली कबूतरकी बीट प्रत्येक ४ टंक लेकर कपड़ छन कर दूधके साथ खाय,

(४) मजीठ, धायके फूल, नील कमल, पठानी लोध इनका चूर्ण कर गायके दूध के साथ खाना,

(५) इलायची, राल, नागकेसर, तमालपत्र, धनिया, जीरा इन्द्रजो, मुलेठी, लोध, गेरु, गोपी चंदन रसोत इन सबको समान भाग ले सबके समान मिश्रि मिला ६ माशे फंकी करना।

(६) सुगंधवाला १ भाग मोर शिखा २ भा० ,बोल ३ भाग लोंग ४ भाग इन सबका चूर्ण कर पानीके साथ खाना।

(७) शुद्ध लाख, केसू, मिश्री क्रम से अधिक ले ,पानी के साथ पीनेसे सब प्रकारके प्रदर दूर होते है ।

(८) दारु हल्दी, रसोत, अमलतास, अडूसा, नागर, मोथा, मोल चीज भिलामा, कत्था, ,इनके काढे में शहद डाल कर पीने से प्रदर दूर होता है।

(९) शतावर, हल्दी, ,थोर,-मूल, नीबू सम भागले बत्ती बना योनी में रखने से प्रदर दूर होता है।

(१०) गिलोयका हिम मधु संग पीने से रक्त प्रदर दूर होता है।

(११) भूपली टं० २० ,छोटी इलायची टं० १० पीपर इन्द्र जो० मिश्री एकत्र कर ,बासी जलके ,साथ देने से रक्त तथा श्वेत दोनों प्रकार के प्रदर दूर होते हैं।

(१२) बकरीकी मींगनी टंक २ लोध टंक २ मिसरी टंक २ सबको बारीक पीस कर योनी खण्ड उपर लेप करने से रक्त प्रदर रक्त प्रवाह बंद होता है।

(१३) कस्तूरी, केसर, अगर, वंस लोचन, नखी छोटी इला-यची, शिलाजीत, अंबर, मिश्री, मधु इनकी योनी को धूप देनसे योनी गंध और प्रदर दूर होते है ।

(१४) चिरचिटे की जडको चावलोंके धोवनके साथ पीस कर योनी पर लेप करनेसे प्रदर दूर होता है ।

(१५) अजमोद, लोध का चूर्ण कर शहद के संग चाटने से सफेद प्रदर दूर होता है।

(१६) कपास के फूल, धायके फूल, मूलीके रसमें घिस कर १४ दिन तक पीनेसे श्वेत प्रदर दूर होता है।

(१७) भुनी फिटकरी और कच्ची खांड एकत्र कर खानेसे ७ दिनमें प्रदर दूर होता है।

(१८) आंवलोंके स्वरस को ७ दिन तक चावलोंके धोवन संग पीनेसे प्रदर दूर होता है।

(१९) आँवलोंके भीतर का गर्भ टंक १ कतीरा टंक १ दही में जमा कर खिचड़ी संग खानेसे प्रदर दूर होता है।

(२०) भू आमले की जड़ चांवलों के धोवन के साथ पीने से प्रदर भी नाश होता है।

(२१) सोंठ और लोधका चूर्ण घी और मिश्री के साथ फांकने से प्रबल प्रदर भी मिट जाता है।

(२२) चोलाई की जड़, लाखका रस, रसोत, इनको बकरी के दूधमें घोट कर शहद डाल ७ दिन पीनेसे आराम होता है।

(२३) केलेको चीर कर उसमें आंवले का चूर्ण भर देना उस चूर्ण को मधु संग चाटनेसे प्रदर और सोम रोग दोनों दूर होते हैं।

(२४) वंसलोचन, नागकेसर, नेत्रबाला इनको एकत्र कर चांवलोंके धोवन संग पीनेसे प्रदर मिटता है।

(२५) रास्ना, गोखरू, अड़ूसा इनके काथमें मधु डाल कर पीने से शूल सहित प्रदर दूर होता है।

सन्निपात चिकित्साचक्रवर्ती।

प्रथम खण्ड

नत्वा वैद्य पतिं शंभु सन्निपातार्णवस्यच। सानिदान चिकित्सस्य व्याख्यानं क्रियते मया॥

सन्निपातस्य कारणोत्पति।

अम्ल स्निग्धोष्ण तीक्ष्णैः कटु मधुर रसा ताप सेवा कषायैः
काम क्रोधाति रुक्षैर्गुरु तर पिशिता हार नीहार शीतैः
शोक व्यायाम चिंता ग्रहगण वनिता त्यंत सेवा प्रसंगैः।
प्रायः कुप्यंति पुंसां मधु समय शरद्वर्षणे सन्निपाताः॥

सं० टी० अम्लेति(अम्लो (जंवीरकादि) स्निग्ध (घृतमाषादिकं) अथोष्ण (उष्ण गुण द्रव्य तिलादिक) तीक्ष्ण (राजिकादि) कटुः (सौभाजनमूलादि.) मधुरसा (शालि जवगोधूमादय.) ताप सेवा (आतपो धर्मस्तस्य सेवा) कषायो (विभीतकादिः) कामो (भिलाप.) क्रोधः (प्राणिघात क्रियाविशेषः) रुक्षं (अति रुक्ष चण कादि) गुरुतर पिशिताहारः (अति शयेन गुरुर्गुरुतरं गुरुतर चतत पिशित च गुरु तरपिशितं, मासं, तस्याहारः) अनीहारस्तुषारः अन्ये नीहारस्थान सौहित्य मिति पठति, तत्रगुरुतर पिशिताहारस्ये सौहित्येन हेतु रुक्तः।

सौहित्य (तृप्तिः) उक्तं च "सौहित्यं तर्पण तृप्तिः" इत्यमरः।

शीतं (शीत गुण द्रव्यं मृणलादिकं) शोको (बन्धुवियोगादि जन्यस्मृतिः) व्यायाम (शरीरायास जननंकर्म उक्तं च वाग्भटा चार्येण।

"शरीरायासजननं कर्म व्यायाम उच्यते" चिंता (एकाग्रचित्तेन) ग्रहगण गृह द्वन्द्वे ग्राहा देवा सुर गन्धर्व यक्ष राक्षस पितृनाग पिशा चाद्याः (ग्रहणाद्ग्रहा उच्यंते, तेषांगणः, समूहः।

वनिता (योषितः) तासा मत्यंत सेवा प्रसंगैः। संग प्रभावे रिति पाठांतरे, तत्रापिस एवार्थः, एभिः कारणैः मार्योतिशयेन सन्निपाताः (सन्निधकादयः)कुप्यंति (दुष्टा भवंतीत्यर्थः) केषां पुंसा पुनसा मित्यु पलक्षणं। तेन स्त्रीणा मपि कुप्यन्ति इति सूचयति, कस्मिन, मधु समय शरद्वर्षणं इत्यत्र काल स्वभावेन कुप्यंतीति, अन्यत्र कुप्यंतीति तात्कथं तवतु आहारादि वशात कुप्यंति न तु कालेन "उक्तं च वाग्भटा चार्येण" इति काल स्वभावो यमऽमाहारादि वशात्तुनः कायां दीनयांति सद्योपि दोषाः कालेन यान तु। शारंग धरेणाप्युक्तं "चय कोप समान दोषः विहारा हार सेवणैः। समानैर्यांत्य कालेपि विपरीते विपर्य्ययः॥

भाषा टीका—खट्टा, चिकना, गरम, तीखा, कड़ुवा, मीठा, सूर्यकी धूप इत्यादि गरमीका सेवन, कसेला, काम, क्रोध, भारी, मांस, आदि पदार्थोंका सेवन, तुषार, शीत, शोक, व्यायाम, चिंता ग्रहपीडा, अत्यंत स्त्रि प्रसंग इन कारणो से और चैत्र, वैशाख, फाल्गुन, कार्तिक, सावन, भादों इन महीनोंमें प्राय मनुष्यों के सन्नि पात का कोप होता है।

आमो ह्याहार दोषात प्रथम मुपचितो हंतिवन्हि शरीरं। श्लेष्मत्वं याति भुक्तं सकल मपि ततोऽसौकफो वायु दुष्टः

स्रोतांस्यापूर्य रुध्या दनिल मथ मरुत्कोप येत्पित्त मंतः।
संमूर्छन्योन्य मेते प्रवल मितिनृणां कुर्वते सन्निपातम्॥

सं० टी०—प्रथम मुपचितः (पूर्वसंगृहीतः) आमः (अपक्व रसः) आमलक्षणं यथा"संसृष्ट मामैर्दोषैस्तुन्यस्त मपसुनिमज्जति, पुरीषंभृष दुर्गन्धि पिच्छलं चामसंज्ञतम् शरीरेवह्निंह हति(देहअग्निविनाशयति) अपि (निश्चयेन) मनुष्येण यत् भुक्ते (खादति) तत् सकल श्लेष्मत्वं याति (कर्फ प्राप्नोति) ततः (तस्मात्) असौ कफः वायु दुष्टः (एवश्ले ष्मवायुनादूषितः) स्रोतांस्या पूर्य्य (पवन वहानाड़ीमार्गान् पूर यित्वा) अनिलं (वायुं) रुध्यात (वारयेत) मरुत (पवनः) अन्तः (कायमध्ये) पित्तकोपयेत् दूषयेत्। एते अन्योन्य (परस्परं) संमूर्छय इति हेतोः नृणां मनुष्याणां प्रवलं सन्निपातं कुर्वते॥

भाषाटीका—आहार के दोष से प्रथम संगृहीत जो आम सो देह की अग्निको शांत कर देती है। पुनः इस कफ को वायु कुपित कर वायु के वहने वाली नाड़ियों के मार्ग में खेजा कर रुद्ध कर देता है। फिर वायु पित्तको कुपित करके तीनों दोष परस्पर दोष को प्राप्त हो मनुष्यों को प्रबल सन्निपात रोग प्रकट करते हैं॥१॥

सन्निपातस्य पूर्व लक्षणम्।

अकस्माच्छी लवि भ्रंसत्वाकस्माद्वपु रुन्नतम्।
अकस्मादिन्द्रियोत्पत्तिःसन्निपाताग्रलक्षणम्॥२॥

सं० टी० सन्निपात ज्वर पूर्व रूपे अकस्मात् (अकारणात्) शील विभ्रंशः (स्वभाव विपर्य्ययः) तु (पुनः) अकस्मात (कदाचित) वपुः (शरीरे)उन्नतम् (दोषानांवर्द्धनम्) अकस्मात् (अकारणात्) इन्द्रियोत पत्तिः (इन्द्रियाणां स्वस्व कार्येषु अशक्ति रुत्पत्तिः)।

भाषाटीका—सन्निपात ज्वर के पूर्व रूपमें कभी अकारण रोना गाना इत्यादि, स्वभावके विरुद्ध बातें, कभी दोषोंका प्रकोप, कभी अकारण ही हाथ पैर आँख आदि का अपने २ नियत कर्मों से उप राम इत्यादि लक्षण होते हैं ॥ ३ ।

सन्नि पात के सामान्य रूप ।

निद्रा नाशोति दाहोऽरुचि रुदर व्यथा संभ्रमः
संप्रला पस्तन्द्रा तृष्णास्य शोषस्तनु रति विकला
रोम हर्षः कदापि ।

शीर्षे पीड़ातिश्वासेनयनविकलताजिह्वयानर्थवाणी
मोहःकासोस्थिसन्धौ बहुतर व्यथनं सन्निपातस्य
चिन्हम् ॥४॥

सं० टी०—निद्रा नाशोति स्पष्टम् ।

भाषा टीका—नींद न आना, अत्यन्त दाह हो, किसी वस्तु को चित्त न चाहे, पेट में कभी शूल होय कभी अफारा आजाय कभी होल सी उठे, भूल होय, कभी असंबद्ध बात कहने लगे, बेखबरी हो नींदसीमें ऊँघता रहे। प्यास बहुत होय, मुंह सूखा जाय, शरीरमें बड़ी बेचैनी होय, हाथ पांव देदे मारे, कभी देही के रोम खड़े हो जाय, शीतसा लगे, शिर मेंदर्द होय, श्वास तेज चले, नेत्रों के पलक बहुत देर में मारे जिह्वा से अनर्थ वचन बोले, खांसी, हड्डियों के जोड़ों में पीड़ा इत्यादि सन्निपात के सामान्य लक्षण होते हैं । ४ ।

सन्निपात ज्वर लक्षण।

निद्रा नाश मद भ्रम श्रम तमस्तन्द्रा प्रलापा रुचि।
श्वास स्तंभ तृषाग्नि साद हृदय क्षौद स्वरोजःक्षयाः
स्वेद स्यादतिनैव वाति कलुषे रक्तेऽक्षिणी भुग्ने
संहृत पक्ष्माणी।
च परुषा दग्धेव सास्रुणी जिह्वा गुरु।
कर्णौ सस्वन वेदना बलिशिरः पर्वास्थि पार्श्वव्यथा
कंठः शूकशिखा शतैरिव वृतःकोठः शिरो लोठनम्
निष्ठीवः कफ रक्तयो रपि महान् दाहस्तथा हर्निशं
मोहोनर्तन गीत हास्य विकृतिर्दोषप्रपाकश्चिरात
संसर्गोति विशोऽल्प शोथ बहुशो नित्यंमवृत्तिर्ज्वरम्
कष्ट केचन सन्निपातित मिमं प्राहुश्च साध्यं तरम्

स० टी० निद्रानाश (निद्राऽभाव) मद (मत्तता) भ्रम (चक्रास्थ तस्यैव भ्रम वद्वस्तु दर्शनं) श्रम (श्रांति) तन्द्रा (निद्रा वत ग्लानि) प्रलापः (असंबद्ध भाषणम्) तृषा (पिपासा) अग्निसाद (अग्नेरभावः) हृदय क्षौद (हृदव्यथा) स्वरोज क्षयाः (स्वरस्य बलस्य च क्षीणता) कलुषे (आविले) रक्ते (रक्तवर्णे) अक्षिणी (द्वय नयने) परुषा (नाना वर्णा) अभुग्ने (अन्त प्रविष्टे) सास्रुणि (श्वासासनग्रह वर्त्तमान इति अश्रुभिः अश्रुपूर्णो) सस्वन (शब्दयुक्त) कंठः (गल मध्यः) शूकं (धान्यादिनां शूकं तुष इति लोके) कोठ भालुकी नाम्ने पठीतं तद्यथा "वरटी दृश सकाशः कंडुय मान लोहिताश्च कफ पित्त वात क्षणिकोत्पत्ति विनाशः कोठ इति निगद्यते"।

शिरसो लोठनम् इतस्ततः शिरश्चालनम् । दोष त्रयाणां बहुकाल न परिपाकश्च ।

भाषा टीका निद्राका नाश, मत्तता, सब वस्तु घूमती सी दिखाई दें । थकावटसी हो, बेहोशी, बकवाद, श्वासका खिचकर आना, प्यासकी अधिकता, भूखका लेश भी न होना, हृदय में पीड़ा, आवाज और बलमें कमी, पसीना कभी अधिक आवे और कभी बिलकुल न आवे । अश्रुपात युक्त काल अथवा लाल फटेसे नेत्र हों, जीभ परीदग्धवत् काली गोजीभके समान खरदरी, और मोटी हो जाय कानों में साय सांय शब्द और पीडा हो । माथा, पसली, हड्डी आदियों में हड़फूटनी, गला धानके सेंधरों तुसोंसे भरे हुएके समान पीडा युक्त, काले लाल चकते उपड आवे, पित्त और रुधिर मिला कफ थूके, दिनरात दाह रहे, मोह, बकवाद, हसना, रोना वातादि दोष त्रयका बहुत कालम पाक, मल मूत्रादि देरसे उतरे शोथ बहुधा हो ज्वर हो यह सन्निपातके लक्षण है ।

सन्निपातमें नाड़ी परीक्षा ।

सन्निपात ज्वरे नाड़ी सर्व ज्वर गतिं गतः ।

काष्ठ कूपति वर्कानाविच्छिन्न गामिनी ।

टी० सन्निपात ज्वरमें नाडी दोष त्रयकी चाल वाली अर्थात कभी वायु, कभी पित्त, कभी कफकी गतीसे चलती है । अथवा अधिक टेढी और जलदी चलती है ।

मन्दं मन्दं शिथिल शिथिलं व्याकुलं व्याकुलं वा
स्थित्वा स्थित्वा वहति धमनी याति नाशं च सूक्ष्मा
नित्यस्थानात स्खलित पुनरप्यंगुलीं संस्पृशेद्वा
भावैरेवं बहु विधविधैः सन्नि पाताद् साध्याः ।

सं. टी. मन्दमिति० मन्दंमन्द मनुद्धरं, शिथिल शिथिल मित स्खलिद्गति रूपम्। व्याकुलं व्याकुलं मिति, अस्तघर्द तस्ततोगमनं चाशब्दः समुच्चये, स्थित्वा स्थित्वे त्या वृत्याच तत्तद्रुपेव गतिः नाप मदर्शनं. याति, गच्छति, कदा चिन्नाडी स्पन्दा पिन सम्भाव्यत इत्यर्थः। सूक्ष्मेति यदि लभ्यते तदा तथैव नित्यंप्रायः स्थानादि तिस्थान मङ्गुष्ठ मूलम्। तस्मात् स्खलति कदाचित् तत्र स्पन्दापि न संलभ्यते। इत्यर्थ।

पुनरपीति, किंयद्धि छेव अंगुलीम् अंगुली मूलम् संस्प्रशेत। अकस्मात स्फुरेत्। एवं, इत्येवं रूपैर्बहुविधविधैर्भावैर्धर्मैः सन्निपाते नाड़ी आसद्या स्यात् तथा॥

भा०—जिनमध्यों की नाड़ी मंद मंद शिथिल शिथिल व्याकुल व्याकुल चलती हो और रह रह के अति सूक्ष्म और निरंतर स्थान को छोड़के फिरभी अंगुलियोंको स्पर्श कर एसे अनेक लक्षण युक्त सन्निपात की नाड़ी असाध्य है॥

मूत्र परीक्षा—

मूत्रं हारिद्र वर्णाभं कृष्णं वा तैल सन्निभं

मूत्र पीला हलदी का अथवा काला या तैल के रंगका होता है।

मल परीक्षा—

मलः कृष्णं सितः पीतो विधयो बाह्यतः श्रुतिः।

मल, काला, सफेद इत्यादि विविध रंगका होता है।

नेत्र परीक्षा—

लोचने कलुषे रक्तेर्निभुग्नेतन्द्रता श्रुणो।

अन्यच्च त्रिदोष दूषितं नेत्रं मन्तर्भुगं भृशं भवेद्।
त्रिलिंगं सलिल प्लावी भांति नोन्मील यत्यपि।
नेत्र काले, लाल, टेढ़े, तन्द्रित पुरुष के समान होता है।

मुख परीक्षा।

मुख स्वादं न जानातिष्टीकने कफ लोहितं।
मुख से स्वाद नहीं जाना जाता कफ रक्त मिला थूकता है।

नासा परीक्षा।

शुष्का नासा मरुत्कोपे चोष्णा पित्तहिमा कफे।
सन्नि पाते भवेद्वक्रा सर्बलिंगानुगाहिमा।
नासा वायुके कोपसे शुष्क, पित्त से गरम कफ से ठंडी और
और सन्निपातमें सर्व दोषों के लक्षण युक्त और टेढ़ी होती है।

जिह्वा परीक्षा

जिह्वा कृष्णा रुणारुक्षा शुष्कास्फुटिता कंटकैर्युता।
जीभ काली, लाल, रुखी, सूखी, फटी हुई और कांटों से घिरी हुई होती है।

शब्द परीक्षा—

शब्दोत्युच्चैः प्रलपनं मौनं वा क्रंदनं हि वा।
शब्द अत्यंत उच्च बोले, बकवाद करे अथवा चुप रहे या रो पड़े।

स्पर्श परीक्षा—

स्पर्शो क्षणं शीत दाहं श्रापंयित्वा मुहुर्मुहुः।
स्पर्श करने से कभी ठंडा और कभी गरम मालूम हो।

सन्निपात ज्वरस्या साध्य कृच्छ्र साध्यत्वमाह।

दोषे विबद्धे नष्टेऽग्नौ सर्व संपूर्ण लक्षणः।

सन्निपात ज्वरो साध्यः कृच्छ्र साध्यस्ततोन्यथा॥

सं० टी० दोषेत्यादि, (दोषे वात पित कफ मूत्र पुरिषादिके) दोषो मलं पित्तादिश्च जैज्जटस्तु। मलं पुरीष माह बिवद्ध इति वचनात्। विवद्धे (अचले, अप्रवृत्ति शीलेवा) अग्नौ (जठराग्नौ) नष्टे (विनष्टे) सति नष्टाग्निरव मित्यत्राविपाका इव गते तव्यम्। यदुक्तं "अग्नि जरण शक्तया इति सर्व सम्पूर्ण लक्षणः (सर्वाणि समग्राणि, सम्पूर्णानि वलीयांसि लक्षणानि यस्य सः। इति बहु व्रीहिः।

समस्त लक्षणः विशिष्टः सन्निपात ज्वरः (त्रैदोषिक ज्वर रोगः) असाध्यः (साधयतु मशक्यः) ततोऽन्यथा (तद्विपरीतः (दोषे वात पित्त कफ मूत्र पुरीषादिके) अविबद्धे, पक्के प्रवृत्ति शीले चलाय माने वा एवं अग्नौ अनष्ट दीप्ते असंपूर्ण लक्षण विशिष्टश्च सन्निपात ज्वरः कृच्छ्र साध्यः (कष्ट साध्य स्यात्) असाध्यस्य कृच्छ्र साध्यस्वा भिधानेन, सुख साध्यो न भवतीति भावः। उक्तं च चरके "सन्नि पाते दुश्चिकित्स्या नाम्। इति०।

भा० टीका—जिसमें वातादिक दोष चलाय मानहों मल खुल कर न हो अग्निनष्ट हो वह असाध्य है। इससे विपरीत जिसमें मल उतरे वातादिक दोष गमन करने लगे अग्नि कुच्छ दीप्त हो वह सन्निपात कष्ट साध्य होता है।

तत्र त्रिदोष ज्वरे धातु पाके हन्ति मल पाके विमुञ्चति।

सन्निपात ज्वर में धातु पांक होने पर मर जाता है। और मल पाक होने पर बचता है॥

धातु पाकके लक्षण।

निद्रा बलौ जोऽरुचि वीर्य्य नाशो हृद्देदनो गौरव तात्प चेष्टा।
विष्टंभ तापस्य किला रतिः स्यात् स धातु पाकी मुनि भिः प्रदिष्टः॥

गौरव (देहस्या भार बोधः) विष्टंभः (मल मूत्र योश्चावरोधः)

भाषाटीका—नींद, रुचि, बल, शक्ति, इनका नाश हो हृदय में पीड़ा, शरीर भार बोध, न्यून चेष्टा, विष्टंभ, निरंतर पीड़ा यह लक्षण जिसमें हों वह मुनियोंने धातु पाकी पुरुष कहा है॥

अन्यच्च तंत्रांरे—

काये धातु विपाकिनां पर करस्पर्शोपि वज्रायते।
रात्रिः कल्प शतायतेऽल्प तरभो दीपोपि दावायते।
शब्दो बाण समायते मृदु गतिर्वात स्त्रि शूलायते।
यूकासूचि कुलायते ततु तमं वासोपि भारायते।

धातु विपाकी पुरुषोंके शरीर पर दूसरोंका हाथ लगनेसे वज्र सदृश प्रतीति, रात्री एक कल्पके समान बडी, दीवा अग्निके समान और मृदु शब्द बाणके सदृश पीडा कर, वायु दुःखदा, जुं सुईके समान, कपडे बोझ देने वाले जान पड़ते हैं।

मल पाकके लक्षण—

दोष प्रकृति वै कृत्यं लघुताज्वर देहयोः।
इन्द्रियानां च वै मलयं मलानां पाक लक्षणम्।

सं०टी०—दोषाः (वात पित्त कफाः) तेषां प्रकृति, तन्द्रा, दाह, गौरवादि करणम्। तस्य वैकृत्यं (वैपरीत्यं) दाह तन्द्रा गौरवादि

धाद्वितयं लघुता ज्वर देह योः (ज्वरस्य देहस्य लाघवं स्यात्) इन्द्रियाणां नेत्र कर्ण नासा जिव्हात्वक् चित्त हस्त पाद मुख गुदो पस्थानां। वैमल्य (मळ प हितयं) मलानां दोषानां मेतत पाक लक्षनम् स्यादिति।

भाषा टीका—वातादि दोषोंका स्वभाव पलट जाय देह हलकी। इन्द्रियें निर्मल हों तो यह मल पाक के लक्षण है। धात पाक और मळ पाक होना ईश्वर के आधीन है।

असाध्य सन्निपात लक्षणम्—

निद्रा नाशो निशायां प्रभवति तथा कंठ कूपे बलाशो।
देहे दाहेति सूक्ष्मा लघुतर धमनी प्रस्खलंति च जिह्वा।
ह्री येते यस्य शीघ्रं बल दहन मना शक्तयश्चेन्द्रियाणां
तद्भैषज्यं वदति बिबुधा केवलं राम नाम॥

भाषा टीका—रातको नींद न आवे, गळे में कफ, देहमें दाह, नाड़ी सूक्ष्म और धीमी जिह्वा परिदग्धवत्। शरीर केवल, मुखकी ज्योति, मन इत्यादि इन्द्रियोंका बल जिसका घटता जाय वह असाध्य है॥

सन्निपात ज्वरमें तन्द्राका लक्षण—

सन्निपात ज्वरोत्पन्नां युक्तया तंद्रां जयेद्भिषक्।
उपद्रवः कष्ट तमो ज्वराणांस विशेषतः।
अचिता माशय कफे सन्निपात ज्वरे दृढे।
शांतेत्व वश्यं यस्याशु तन्द्रा समुप जायते।
अभिद्रव रसक्षीर दिवा स्वाप निषेवणात।
दुर्बलस्याल्प वातस्य जंतोः श्लेष्मा प्रकुप्यति।

वायु मार्गे समा वृत्य धमनी रतु सृत्य सः ।
तन्द्रां सु घोरां जनयेत् तस्या वक्ष्यामि लक्षणम् ।

उन्मीलितविनिर्भुग्ने परिवर्तित तारके ।
भवत तस्य नयने लुलिते चपल पक्ष्मणी ।

विवृतानन दंतोष्ठ मुहु रुत्तान शायिनम् ।
पिच्छलोच्छिन्न तन्तुश्च कंठे श्लेष्मास्य गच्छति ।

कंठ मार्गा बरोधश्च वैकृतं चोप जायते ।
सोर्वाक् त्रिरात्रं साध्यः स्यादसाध्यस्तु ततः परम् ।

भाषा टीका—जिस समय मनुष्यको ज्वर आता है। उस समय आम और कफ इकट्ठे होकर महा घोर सन्निपातको प्रकट करे हैं तिसकी शांति होने पर रोगीको तन्द्राकी उत्पत्ती करते है। गन्ना इत्यादि का पतला रस, बकरी प्रभृति के दूध, पीनेसे दिनमें सोने से दुर्बल अथवा वायु वाले रोगी के हृदय में कफ कुपित होकर वायु के मार्ग को रोक देता है। फिर स्नायुवों में प्रवेश कर घोर तन्द्राको उत्पन्न करे है। अब उसके लक्षण यह हैं। तन्द्रामें रोगी के नेत्र कुछ कुछ खुले रहे और कुछ २ मिच जांय भीतर को धस जांय, तारे इधर उधर को फिरें। बार बार पलक मारे, नेत्र लटकसे जांय, मुख खुल जाय होंट ऊपर को सिमट जांय, दांत दीखने लगें, बारंबार सीधा सोवे, उसके गले में चिपकता हुआ गाढ़ा तंतु के समान कफ आजाय, जिस से गला रुकजाय, अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न होय यह तीन दिनके पहले साध्य और बादमें असाध्य है॥

त्रिदोष ज्वरकी मर्य्यादा।

सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेपिवा।
पुनर्घोर तरो भूत्वा प्रशम याति हंति वा।
सप्तमी द्विगुणा चैव नवम्येकादशी तथा।
एषान्ति दोष मर्य्यादा मोक्षाय च बधाय च॥

भाषा टीका—जब त्रिदोष ज्वर प्रकट हो उससे सातवें दिन वा १०वें दिन तथा १२वें दिन, अत्यन्त बढ़ कर शांत हो जाताहै या मार डालता है चौदह या नौ किंवा अठारह या बाईस दिन में या मर जाता है या आरोग्य हो जाता है। यहां सब जगह रात्रि पदका अध्या द्वार्य करने से सप्तम दिन और सप्तम रात्रि का ग्रहण किया है दुनों का ग्रहण नहीं होता। तद्यथा। वात वृद्धया सप्तमी द्विगुणा पित्त वृद्धया नवमी द्विगुणा, कफ वृद्धया एकादशी द्विगुण। अत्र सर्वत्र रात्रि रित्याधार्य तेन सप्तमी रात्री, नवमी रात्री रित्यर्थो भवेत्। अत्र निपातस्या नेकार्थन्तु शब्दश्चार्थं तेना द्विगुणा अपि सप्तम्यादयो ग्राह्यः एतत संवादात् पूर्वश्लोकेपि दशम दिन प्रत्या सत्या नवम्ये कादशी चग्राह्य। वृद्धेति पदमावर्त्य च। सर्वत्र द्वैगुण्ये मपि ज्ञेयम्। तथा अत्रापि श्लोक एकादशी त्यस्यै केति पदमा वर्तनीयम्।

तच्च मत्वर्थीय प्रत्यांत प्रत्ये तव्यं। तेन नवम्ये कया सहिता दशम्ये कादश्येक सहिता द्वादशी मिथोविरोधः इत्यत्र सुश्रुत वचनेऽपि पुनः शब्देपि द्वैगुण्यं व्याख्येयं मत्या मत्यान्च नवम्येकादश दिन परिग्रः। एव मेव भूत मन्यादपि वचनं समाधेयम्। चतुर्विंश त्यधिक च मर्य्यादा दिवसो नास्त्यागम दर्शनात्॥

सद्यस्त्रि पञ्च सप्ताहाद्दशा हा द्वादशादपि।
एक त्रिंशद्दिनैः शुद्धः सन्निपाती सुजीवति।

सन्निपातमें, तुरंत, तीन, पांच, सात, दश, और बारह दिनसे इकीस दिवस तक सन्निपात वाला रोगी शुद्ध होने पर जीता है।

सन्निपात ज्वरमें अरिष्ट के लक्षण।

स्वेदो ललाटे हिम वन्नरम्य।
शीतार्द्रि तस्यैति सु पिच्छलश्च॥
कण्ठ स्थितो याति न यस्य वक्षो।
नूनं यमस्यैति गृहं स मर्त्यः॥

सान्निपात ज्वर पीडित पुरुषके यदि पसीना माथे ही माथे पर गाँव सरीर बरफके सदृश शीतल और चिपका युक्त, और कण्ठमें स्थित वस्तु हृदय तक न पहुँचे तो निश्चय मृत्युको प्राप्त होगा।

सन्निपात में कर्ण मूल।

सन्नि पात ज्वरस्यान्ते कर्ण मूले सु दारुणः।
शोफः संजायते तेन कश्चिदेव बिमुच्यते।

सन्निपात ज्वरके शांत होने पर यदि कानके पीछे कर्ण मूल शोथ उत्पन्न हो तो यह असाध्य है।

ज्वरस्य पूर्वं ज्वर मध्य तो वा ज्वरांत तो वा श्रुति मूल शोथः।
पूर्वे सु साध्यः खलु कष्ट साध्यः ततस्त्व साध्यो मुनिभिः प्रदिष्टः।

यदि सान्निपात ज्वरा रंभमें हो कर्ण मूल शोथ हो तो यह साध्य मध्यका कष्ट साध्य और अंतका असाध्य है॥

सन्निपात चिकित्सा फल।

मृत्युञ्जयति युद्धेन दोर्भ्यां तरतियोम्बुधिं।
यो वैद्य सन्नि पातार्ति शमं नयति भेषजैः॥

जो वैद्य सान्निपातको औशधी द्वारा शमन करता है मानो वह मृत्युको युद्ध करके जीतता और समुद्रकों तैर कर पार होता है॥

सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद्भेदो न वर्तते।
चिकित्सको जयेद्यस्तु तस्मात कोस्ति प्रतापवान्।

सन्निपातमें और कालमें कुछ अंतर नहीं जो उसको जीतता है उससे प्रताप वान कोन है॥

त्रिदोष जांगणं ग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्य राट।
आत्मापि तस्य दातव्यं किं पुनः कनकादिकः॥

त्रिदोष गणमें ग्रस्त पुरुषको जो वैद्य बचाता है उसको सोना चांदी तो क्या आत्माभी दे देने योग्य है।

सन्निपातार्णवे मग्नं याहुद्ध रतिमानवम्।
करस्तेन कृतो धर्म कांच पूजा न सोऽर्हति॥

जिस वैद्यने सन्निपातमें डूबे हुए पुरुषकी रक्षा की है उसने बतलाओ किसकी पूजा और कौनसा धर्म नहीं किया अर्थात् सब कुच्छ कीया है॥

सन्निपात ज्वरमें चिकित्सा।

किञ्चित क्रिया क्रमं वच्मि शास्त्रेभ्यः शृणु सांप्रतम्।
सन्निपात ज्वरे पूर्व्वं कुर्य्यादाम कफापहम्॥
पश्चातश्लेष्माणि संक्षीणे नाशयेत पित्त मारुतौः।

अन्यच्च। द्वन्द्वाग्नि दोषजं घोरं ज्वरं प्राण महारकं।
तस्मा त्वादौ कफस्याशो शोषण परि कीर्तितं॥
कफं विशेषकं ज्ञात्वा ततो वातं विनाशयेत्।
कफं वातस्य बलवान् सद्यो हंति रुजं तथा॥

सं० टी०—यद्यपि सन्निपात ज्वर स्त्रि दोषारब्धास्तथापि आमाशयस्य कफ स्थानत्वात्। स्थानत्वेन च कफ एव बली, अत स्तत्प्रत्यनीक चिकित्सा प्रथमो विधेया अतः कफ प्रत्यनीक मेव लंघनादिकं प्रथमं कर्तव्यं। यत्पुन स्तन्त्रांतरे॥ श्लेष्मपित्त मादौ ज्वरेषु समवायिषु। दुर्निवार तमं तस्मि ज्वरार्तेपुर्विशेषतः। इति तथा वातस्यानुप्रयं पित्तं पित्तस्यानुजयेत् कफम।

त्रयाणां वाजयेत्पूर्व्वम यो भवेद्द्धढ यत्नमः॥ इत्युक्तम तत्पुन रवस्था विशेष योध्यम्। साम ज्वरे कफ मेवादितः प्रति कुर्य्यात्। आमपाकान्ते पित्त मेवादौ चिरजे मारुत मेवादौ इति।

अत्रार्थे तन्त्रांतरेपि। ज्वरे त्रिदोषजे सामे शमयेत कफ मादितः पाकांत मागते पित्तं चिरजे विषमेऽनिलम। इति।

अन्ये पुनः। ननु वातादिनां विभिन्न सञ्चय प्रकोपादिनां युगपदु पस्थाना भावात् कथं सम्भूय सन्निपातिक व्याध्यारंभकत्त्वम्।

अथ मन्यते त्रिदोष कर निदान सेवन। प्रकोपः दोषां युगपदु पस्थाः ना भावात् कथं सम्भूय सन्निपातिक व्याध्या रंभकत्त्वम्। अथमन्यते त्रिदोष कर निदान सेवन। प्रकोपादेषांयुग पदुपस्थिति रिति॥ तदपि न मनोरमं यतस्तथाविध निदानोप सेवनेऽपि दोषानां विपरीतैर्गुणैः परस्परोप घातात्। युगपत्त प्रकोपस्य अनुप पत्तेः। अत्रोच्यते। "न खलु दोषाणां निखिल एव गुणो विपरीतः

सामान्यस्यापि कतिपय गुणस्य सद्भावात्। समाने नहि गुणे न दोषाणां मन्योन्य प्रकोप स्यापि सद्भावात्।

तथाहि रौक्ष लाघवाद्यैर्वायु स्तैजसं पित्त प्रकोप यति। पित्त मप्येव मेव वायुं वायु रपिशैत्यात् कफं कफोऽपि तथा वायुं, पित्तश्च द्रवत्वेन कफं कफोऽपि तथापित्त मितिगुण साम्यम्॥ न चाच्यं विपरी तस्तु गुणो भूयान् अल्प समान गुणं भुग्भूय। मन्नाम यत्येव कुतोन करोत्येव यतो दूष्या पेक्षया त्रिदोष कर द्रव्य प्रभावाच्च दूष्यगुण दोषयंति परं न शमयंति, दृढ बलत्वाद्व "विरुद्धै रपि नत्वेते गुणैर्घ्नंति परस्परम् दोषाः सहज सात्म्य यत्वात् घोरंविष महीनिव॥

भाषाटीका—सन्निपात ज्वरमें पहले आम और कफको शमन करे पुनः कफके शांतहोने पर पित्त और वायुको शमन करे॥

निरस्ते श्लेष्माणि ह्यस्य स्रोतः सूद्धाटि तेपु च।
लाघवं जायते सद्य स्तृष्णा चैवोप शाम्यति॥

कफके शमन होजाने पर वायुवहा नाडियों के स्रोत खुलजाते हैं जिससे शरीरमें लघुता और प्यास शात होती है।

विषूची चिकित्सा चन्द्रोदय।

पूर्व वृत्तांत, प्रथम अंक।

कारण व उत्पत्ती।

नाम—

इंग्रजी—Cholera कोलेरा।
हिन्दी—विषूचिका, हैजा।
बंगला—ओलाऊठा।
गुजराथी—कोगळीऊं, मटकी, मरकी।
संस्कृत—विषूचिका।

विषूची निदान।

(१) विसूचिका मूर्ध्वं चाधश्च प्रवृत्ताम दोषां यथोक्त रूपां विद्यात्। चरक निदानस्थान्॥

(२) विविधैर्वेदना भेदैर्वाय्वादेर्भृशकोपतः।
सूचि भिरिव गात्राणि भिनत्तीति विषूचिका॥

(३) अजीर्णं मामं विष्टंभं विदग्धंच यदीरितम्।
विषूच्यल्यलसकौ तस्माद्भवेच्चापि विलंविका॥

अन्यत् वृन्द माधव—

(४) आमादि सूचिविष्टब्धात् अलसः
विदग्धाद्विलंविका॥

इत्यादि प्रमाणों से प्रतीत होता है कि आमदोष की वायु आदि के कोपसे ऊपर कंठ गले आदि तथा नीचेको प्रवृत्ति सुई के बींधने की सदृश पीड़ा युक्त शूल वाले रोगको विषूचिका कहते हैं इसके कारणों के विषय में अनेक विद्व चिकित्सकोंने बहुत से अनुसन्धान करने पर फल निकलता है कि अजीर्ण तो इसका मुख्य कारण ही है किन्तु उसके होने के आश्रय भूत बहुत से कारण हैं।

प्रथम्—पश्चात्य चिकित्सा मह ही, का मत है कि एक प्रकार के विष बीज युक्त जन्तु इस रोग को उत्पन्न करते हैं जिनको (Poison germ) कहते हैं इन्हीं (Cholera germ) के भक्षण करजाने से मनुष्यके पेटके भीतर की नाड़ी आक्रांत होकर उसके भीतर विष वृद्धि होती है यहाँ तक विषूचिका के रोग ग्रस्त पुरुषोंके मळ में (Baullus) नामका एक प्रकारके जंतु देख जाते हैं जो स्वस्थ शरीर में प्रवेश कर विषूचिका के उपद्रव उत्पन्न करते हैं। (Vide Ibacna maras an Asia tic cholere)

हमारी समझ में यह पाश्चात्य चिकित्सक वर्गका अनुसन्धान ठीक है जिसके प्रमाण भूत वेदोंमें भी बहुत से मंत्र हैं।

कृमियों अस्तित्व के प्रमाण।

"नमोरुद्रेभ्योये प्रथिव्यांयेऽन्तरिक्षे यदि वियेषा।
मन्नं वातो वर्षमिषवः। यजुर्वेद।

[illegible] रुद्रों को नमस्कार है जि. जो प्रथ्वी पर अंतरिक्ष में तथा आकाशमें रहते हैं जिनका अन्न वायु है। वृष्टि बाण हैं अर्थात यह रुद्र रूपी रोग रुत् (भेद यन्तीति रुद्राः) जो रुलावें उन्हें रुद्र कहते हैं। कई प्रकार के होते हैं यथा—

दृष्ट मदृष्ट मतृह मथो कुरु रूम तृहम्। अलगंडू न्स्सर्वान छलुनान् कृमीन वचसा जंभयामसि ॥
अथर्व० २।३१।२

इस मंत्र में (१) कुरू (२) अलगण्डू (३) शलुन इन तीन प्रकार की कृमि जातियों का वर्णन है तथा यह भी कहा है कि कुछ नेत्रों से दीखते हैं और कुछ नहीं दीखते

यह रोग जंतु भोजन तथा जल द्वारा हृदय मस्तक, आमाशय, में प्रवेशकर विषूचिका को उत्पन्न करते हैं। यथा—

"अन्वान्त्रयं शीर्षण्य मथो पार्ष्टेयं क्रिमीन।"
अथर्व०२-३१-४।

इत्यादि से सिद्ध होगया कि, विष जंतु भी विषूचिका होने में एक हेतु भुत हैं।

द्वितिय कारण

लता, पता वृक्षादि के वर्षा ऋतु में सड़ने, दुर्गन्ध उत्पन्न होने, तथा वायू में विकृति होजाने से विषूचिका प्रादुर्भाव होता है।

भूवाष्पेणाम्बु पाकेन मलिने च वारिणा वन्हि नैव च मन्देन तेष्व अन्योन्य दूषिषु सुश्रुते प्युक्तं।

तत्रवर्षा सु औषधयस्तरुणयोऽल्प वीर्य्या आपश्चाऽप्रसन्ना क्षिति मल प्रायास्ता उपयुज्य माना नभसि मेघावतते जल प्रक्लिन्नायां भूमौक्लिन्न देहां प्राणिनां शीतवात विष्ठम्भिताग्नि नांविदहांते विदाहात पित्त संचयं मा पाद यंति। संचयः शरदि प्रविरल मेघेवियति उप

शुष्यति। पंके अर्क किरणं प्रविलायितः पैत्तिकान व्याधीन जनयति।

पुनः जल के बरसने से उत्पन्न हुई आद्रिता जलको बिगाड़ कर सूर्य के उत्ताप संतापित और वाष्प रूप हो वायुमें मिल कर मनुष्यों की नासिका द्वारा प्रवेश कर शरीर में विकृति उत्पन्न कर अजीर्ण उत्पन्न करती है जो विषूचिका कारण है। डाक्टर मारटिन (Dr. Morten) साहब लिखते हैं।

१८५६ में इङ्गलैंड मे जो विषूचिका उपस्थित हुआथा उस समय वायुघन स्तम्भित और पलेक्की सिटी के परमाणु न्यून थे जिससे बोध होता है कि उत्ताप और आद्रिताके सहयोग से जो दूषित पदार्थ वहिर्गत होता है वह वायु सहित मिश्रित होकर तदुद्भुत वा स्पीय विष अन्यत्र संचालित न हो उसी स्थानमें स्तंभित हो(Ali mentary canal) किंवा श्वास यंत्र द्वारा प्रविष्ठ होता है)

विषूचिकाकी विलक्षणता।

(१) बहुतसे स्थानों में यह निर्द्धारित समयमें उपस्थित होता है पुन एक वार प्रबल रूप से व्यापक हो कर यकदम अदृश्य हो जाता है।

(२) कहीं कहीं देखा गया है कि एक स्थान में भयानक रूप से फैलकर वायु वह वाभि मुख स्थानोंमें न फैल कर;उसके विपरीता दिशा के ग्रामों को रोगा क्रांत कर देता है जैसे। जिस समयनर्मदा नदी के किनारे से विषूचिका बर्वई में गयाथा उस समय अधिकांश दिन तक वायु दिन रात निरंतर विपरीत दशा का वहा था।

(३) अनेक समय देखा गया है कि सूर्य का उत्ताप अधिक होने से व्यापकता की वृद्धी और मारकता की अधिकता होती है।

योरप में शीतकाल में अति भयानक होता है प्रातः काल के समय इसका सक्त आक्रमण होता है कारण कि उस समय वायु शीतल होकर भारी हो जाती है और विषूचिका का विष वायु के साथ सगठित होकर प्रथ्वी के समीपस्थ हो इठता है। आक्रमण करता है।

(४) कभी २ अधिक वर्षा होने से यह रोग थम जाता है और कभी २ आरम्भ होजाता है।

सं० १८१७ में श्रावण मास में जिस साल वृष्टि अन्य सालों की अपेक्षा अधिक हुई थी यशोहर जिले में एसे असाधारण रूप से उपस्थित हुआ था कि जिससे समग्र भूमंलड एक बार ही भीत और विस्मयापन्न हो गया।

प्रश्नोत्तर

वनौषधि प्रकाश में एक पृष्ट "प्रश्नोत्तर" शीर्षक रहा करेगा जिस में प्रत्येक वैद्यक प्रेमी को अधिकार है कि अपने संशयादि पृष्ठव्य विषयों को इसमें छपावे।

तथा विज्ञ मंडली को उचित होगा कि यथा साध्य उनके उत्तर देने में त्रुटि न करें॥

प्रश्न

(१) सिंगरफ से पारदा कर्षण की सबसे सुगम क्या क्रिया है।

(२) पारद के बुभुक्षित करने की अति सुगम क्या रीति है।

(३) क्या ताम्र की श्वेत भस्म अधिक गुणद होती है उसकी क्रिया तथा रोगों में अनुभूत अनुपान द्वारा सूचित करने की कृपा करें॥

(४) तबकी हरताल के सत्व पातन तथा स्थिरीकरण की अत्युत्तम अपने हाथ से आजमाई हुई क्रियासे क्या कोई सूचित करेंगे।

(५) खपरिया, खर्पया, क्या वस्तु है। निश्चय रूपसे उसके स्वरूप ज्ञान की आवश्यकता है।

(६) सोमवल्ली, सोमकला का चित्र, विवरण तथा नमूना भेज कर आयुर्वेद्धार करनेका गौरव कौन महाशय प्राप्त करेंगे।

(७) मूर्वा के विषय नाना वैद्यों के नाना मत हैं उनका एक मन्तव्य, चित्र, विवरण अनुभूत प्रयोग भेजने चाहिए।

(८) विषूचिका रोगके चिकित्सा क्रमकी जो स्वयं अनुभव क्या हो प्रत्येक अनुभवी महाशयको भेजना उचित है॥

(९) यदि डाक्टर वायु, पित्त, कफ, के क्रमको नहीं मानते तो उनके चिकित्सा क्रममें क्या त्रुटि उत्पन्न होती है।

(१०) देसी वनस्पतियों की सत्वाकर्षण पद्धतिसे सूचित कीजिए।

उपहार ! उपहार !! उपहार !!!

आश्चर्य्य आविष्कार

केवल वनौषधि प्रकाशके ग्राहकोंको

आयुर्वेदोक्त पारिवारिक चिकित्सा बक्स

सफरमें साथ रखनेके लिए आयुर्वेद शास्त्रकी रामबाण सदृश गुणप्रद महौषधियों को एक सुंदर मजबूत बक्समें बंद किया है। जिनके द्वारा प्रत्येक रोगकी चिकित्सा भले प्रकार प्रत्येक देश और समयमें की जा सकती है यह बक्स ठीक उसी प्रकारकी त्रुटीको पूरा करता है। जिसको होम्यो पैथिक बक्स, सफर तथा गृहस्थमें होनेवाले सभी रोगोंकी चिकित्सामें हकीम डाक्टरोंकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसके साथ उपरोक्त १२ औषधियोंको काममें लानेकी विधी, प्रत्येक रोगका निदान- पथ्यापथ्य प्रभृती आवश्यकीय विषयोंको पुस्तक रूपमें प्रकट करने वाली पुस्तक मुफ्त देंगे। साधारणसे मूल्य ६) किंतु वनौषधि प्रकाशके ग्राहकोंसे केवल ४) जो मनिआर्डर द्वारा वसूल होने चाहिए।

सर्वज्वर हरअर्क

सब प्रकारके नवज्वर, वायु, पित्त, कफ, जनितज्वर त्रिदोष ज्वर मलेरियसज्वर, विषमज्वर, तेइया, चौथिया, शीतपूर्वदाह पूर्व ज्वर, मोह, तन्द्रा, भ्रम, पांडु, कामला, पृष्ठशूल, कटीशूल, प्रभृति रोगों पर अनुभूत है। मूल्य१)

शूलप्रशामी रस

सब प्रकारके दर्दोंको एक कर नींद लाती है। श्वास, कास, प्रतिष्याय, ज्वर, शीत, हैजा, मन्दाग्नि, बदहजमी, पेट फूलना मरोड़ा, पेचिस, संग्रहणी, हिस्टीरिया, गठीया, निमोनिया, इत्यादि रोगों पर व्यवहार कीजिये और गुण देखिए मूल्य १)

कासमर्दा रिष्ट

पलार्द्ध मपि भुञ्जस्यात सायं प्रात निरंतरं ।
कासश्वास कफाधिक्यं घुरघुर स्वच नाशयेत ॥
अन्येनस्यति क्षिप्रंहि अपस्मारो महा गदान् ।
क्रमि छर्दि ज्वराश्चैव समस्तान् सूतिकामयाः ॥

यह प्रसिद्ध बनस्पति कसौंदी, द्वारा प्रस्तुत किया हुवा अरिष्ठ है जो १ तोला सुबह स्याम पीनेसे खासी, श्वास, कफकी अधिकता गलेमें घुरघुर होना, अपस्मार, क्रमी, छर्दी, कफज्वर, वातज्वर, सूतिका रोग प्रभृति रोगों पर अनुभव सिद्ध है मूल्य १) शीशी ।

आयुर्वेदोक्त सालसा

यह आयुर्वेद पद्धति द्वारा भारतीय बनस्पतियों से प्रस्तुत कीया गया है जिसके सेवनसे सब प्रकारका रुधिर विकार, पारा कच्चा खानेसे उत्पन्न हुए विकार, उपदंस कुष्ट, प्रभृति समस्त रोगोंको हित है मूल्य १) शीशी

[गोप्यरस] पेटका दर्द, अफारा, अजीर्ण, शूल, सब प्रकारके श्वास, कास, डाढके दर्द, प्रभृतिको इसकी एक बिन्दु बस है । पुरानीसे पुरानी गठिया, वायुरोग, कफ रोगोंको केवल २१ दिनमें खो देता है मूल्य २)

[प्रमेहारी] सब प्रकारके प्रमेह विर्य दोष आदि पर परीक्षा कीजिए और गुण देखिए । मूल्य १)

[सुधांशुतैल] चित्तको प्रफुल्लित, मस्तकको शीतल, केशोंके कृष्ण सचिक्कन करता है । सिरका दर्द भारीपन, नेत्रोंका दुखना, कानोंसे राधका आना, चौस होना बिच्छू भिड ततैया इत्यादि जहरीले जानवरोंके काटेपर लगानेसे दर्दको तुरंत बंद करदेता है । इसकी मालिस से ८० प्रकारके वात रोग दूर होते हैं। गिल्टियों पर बांधनेसे उनको बेठा देता है । फोडों पर लगाने से अपना को तुरंत

भर देता है। आगसे जले हुए पर लगा देनेसे तत्काल जलन बंद होजाती है। और आवला नहीं पड़ने पाता, दूधमें इसकी १० बूंद डाल कर पिलाने से दस्त साफ आता है। मिश्री पर १० बूंद डाल कर खिलानेसे, सोजाक पेसाब जलन, मसानेका दर्द प्रभृति मूत्रके रोगोंको दूर करता है। यह १२४ भारतीय वनस्पति द्वारा वैज्ञानिक पद्धतिसे प्रस्तुत किया हुआ योग बाही अनुभव सिद्ध है। मूल्य १)

जो महाशय मनीआर्डर द्वारा रुपया भेज कर ३०जनवरी १९१४ तक वनौषधि प्रकाश प्रथम गुच्छ और द्वितीय गुच्छके ग्राहक होंगे उन्हें निम्न लिखित चीजें उपहार में दी जावेंगी।

सुधांशु तैल १ शीशी, (२) पामाहर अनुभूत चूर्ण १ पुड़िया।

सत्य नास्ति भयं क्वचित्।

सद्यफल प्रद आयुर्वेदीय अव्यर्थ महौषधि

(१) (सिद्ध पूर्णोदय रस) यह एक अनुभव सिद्ध प्रत्यक्ष गुणप्रद रस है जो अनुपान बलसे निम्न लिखित रोगों पर तात्कालिक है॥

(२) (जीर्ण ज्वर) मात्रा १ चावल भर गिलोयके हिममें मिश्री डाल कर इस अनुपानसे दिनमें ३ दफे देना, इस तरह प्रयोग करनेसे यह पुरानेसे पुराने विसम ज्वर, संतत, सतत शीतपूर्व दाह पूर्व, सब प्रकारके ज्वरोंको केवल एक सप्ताहमें खो देता है॥

(३) (नवज्वरमें) मिश्री, मुनक्का, इलायची की ठंडाइके साथ देनेसे वातज, पित्तज, कफ द्वन्द्वज सब प्रकार के ज्वरोंको १ पुड़ियाही खो देताहै। पथ्य दूध, खीर, चावल।

(४) (सर्वज्वर) २५ काली मिर्चोंको १ सेर जलमें औटाना आधी छटांक रहने पर एक तोला मधु मिश्रित कर पिलानेसे सब प्रकारके अति उद्धत ज्वरोंको पांच मिनटमें उतार देताहै। इसमें एन्टीफीब्रिन इत्यादि अंग्रेजी औशधोंसे भी उत्तम गुण है किन्तु अवगुण कुछ नहीं है।

(५) (म्लेरिया अजीर्ण ज्वरे) गंगाजल, तुलसीके पत्तोंकी ठंडाईके साथ देनेसे सब प्रकारके अजीर्ण ज्वर, म्लेरिया ज्वर, प्रभृति, तथा जन्तु जन्य ज्वरको, हरता है।

(६) (फुफ्फुस ग्रंथ प्रदाह जन्यज्वर) में बांसके पत्तोंके रस और शहत संग देना।

(७) (सन्निपात पर) सब प्रकारके सान्निपात बकवाद, बेहोशी इत्यादि पर अद्रकके रस शहत में।

[रक्त पित्त पर] मिश्री, मुनक्का, इलायची के साथ।

[प्रतिश्याय पर] गरमी में काफूर मधु संग, सरदी में पानके रस और शहत संग देना।

[शुष्क कास] में शहत संग।

[प्रमेह पर] गिलोयके स्वरस और शहत संग।

इनके अतिरिक्त, शूल, वायगोला, बवासीर महावात, कंप वात, अर्धांग, आधाशीशी इत्यादिमें पानमें देना।

(नोट) इस रसमें किसी प्रकार किसी भी धातु भस्म, पारद इत्यादि का संयोग नहीं, किंतु बूंटियों के स्वरसों द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिस से किसी प्रकार की हानी होने की संभावना नहीं है।

प्रत्येक रोगमें इसकी मात्रा १ चावल से अधिक नहीं है। आशा है कि सज्जन गण इसके आश्चर्यप्रद गुणोंको देखें। १ शीशी १ ड्रामवाली भरी हुई मूल्य २)रुपया।

(पामा हर अनुभूत चूर्ण) सब प्रकार की खुजली को केवल २॥ घंटे में अवश्य खो देता है। मूल्य-१)

[विपूचिकांतक वटी] हैजे की सब अवस्थाओं में देने से वमन, प्यास, चावल धोये जलकी समान दस्त आना, ऐंठन बेहोशी शरीर का शीतल पड़जाना, आदि तत्क्षण बंद कर पुनर्जीवन प्रदान करती है। नित्य प्रति व्यवहार करने से उन जगहों में जहां

हैजा फैल रहा हो रहने से हैजे होने की सम्भावना नहीं रहती और हैजे के रोग जंतु शरीर में प्रवेश नहीं कर सकते।

इसके अतिरिक्त बदहजमी, खट्टी डकार आना, भोजन कम हजम होना, मलेरिया ज्वर, अतिसार, शूल, श्वास, कास, आदि रोगों को दूर करती है। मूल्य १) शीशी।

अकृत्रिमफूकी और शोधित

धातु द्रव्य,

रस सिन्दूर	१ तो. २)	शोधित तूतक	तो. ।)
षड्गुण बलिजारित रस	,, ५)	शोधित मनःशिला ...	,, ।)
अभ्र भस्म कृष्ण	,, ३)	शोधित रस	,, १)
श्वेताभ्र भस्म	,, १)	हिंगुलोत्थ रस	,, २)
ताम्र भस्म	,, १)	मल्ल भस्म	,, ५)
बंग भस्म	,, १)	काला वज्राभ्रक	,, ॥)
चतुर्वंग भस्म	,, ५)	द्रोण पुष्पी सत्व ...	,, ।)
चांदी भस्म	,, ५)	गुड़ूची सत्व	,, ।)
स्वर्ण भस्म	,, ४०)	कटेरीका क्षार	,, ।)
हिंगुल भस्म	,, १)	बांसेका क्षार	,, ।)
हरताल भस्म	,, १)	आकेक क्षार	,, ।)
स्वर्ण माक्षिक भस्म ...	,, ३)	चिरचिटेका क्षार	,, ।)
शंख भस्म	,, ।=)	यव क्षार	,, ।)
शोधित अमृत	,, ।)	शंख भस्म	,, १)
शोधित गंधक	,, ।)	सीप भस्म	,, १)

वनस्पति योग निर्माण शाला,

आयुर्वेदकी उत्कर्षता इच्छुक सद्वैद्योंको उत्तम वनस्पति पहुंचाने के लिए हमने बदोवस्त किया है। क्यों कि वनौषधि प्रकाश में प्रकाशित वनस्पतियोंके मंगानेके लिए कितने ही महानुभावों के पत्र आया करते है। हम जो वनस्पति प्रकाशित करते है उनको स्वयं देख कर उनका विवरण लिखते है। इतने पर भी जिन वैद्यों को पूरा परिचय नहीं होता उनके लिए हरी वनस्पतियां डांक खर्च लेकर पहचान के लिए नमूनार्थ भी भेज देते है। तथा वनस्पतियों का हमने एक बडा भारी संग्रह रखने का प्रबंध कीया है जिसके लिए वैद्य महोदयों से निवेदन है कि वह कृपा पूर्वक अपने २ देशमें होने वाली वनस्पतियोंके नामोंसे सूचित करें जिससे वह मंगा कर रक्खी जावें और जिन महासयोंको जब जब जरूरत हो उचित मूल्य पर भेज देवें।

बूटियोके मूल्य

निर्गंध, लट्जरी, सारिवा, अध पुष्पी, मूषाकरनी, दुग्धिका हस्तिशुंडी, चक्रमर्द, गोरखमुन्डी, चित्रक, ब्रह्मदंडी, नकछिकनी, ब्राह्मी प्रत्येक २) सेर

द्रोणपुष्पी, कंटकारी, जलपीपल, मेघनाद, अडूसा, काक जघा काकमाची, शख पुष्पी, पाताल गरुडी, चित्रक, आटरुष, प्रत्येक ॥) सेर

ब्राह्मी, कोकिलाक्ष, पातालगरुडी, गुडूची, शिवलिंगी' गोक्षुर भंगरा, इन्द्रवारुणी, प्रत्येक १) सेर

शतावर, विदारीकंद, प्रत्येक ३) सेर।

पता—वैद्य पं० बाबूराम शर्मा।
सम्पादक "वनौषधि प्रकाश"
पोष्ट—जलाला बाद, जि० मेरठ।

Printed by Bishwambhar Nath
Sharma at "Sree Madangopal" Press,
Brindaban. U. P.

सम्वत् सर २ अंक ३

वनौषधि प्रकाश।

वैद्यक

[मासिक पत्रिका]

जंगलकी जड़ी बूटियोंके रंगीन चित्र, पहचान, उपयोग प्रयोगादि, विविध वैद्यक विषय सम्पन्न हिन्दी भाषामें एक मात्र पत्रिका।

Vol. 2. | March 1913 | Issue 3

"Banoshadhi Prakash"

(A monthly botanical Hindi magazine)

Edited and published
By
V. Pt Palu Ram Sharma
Post. Jalalabad
MEERUT.

वार्षिक मूल्य २) रु० प्रति संख्या =)

नियम ।

(१) इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित २) रु० प्रति संख्या ३ अग्रिम लिया जाता है ।

(२) जो महाशय इसी विषयके उपयोगी लेखों द्वारा इसकी नित्य सहायता करेंगे उनको बिना मूल्य ।

(३) विज्ञापन छपाई अथवा चंदाईको पत्र व्यवहार करो ।

(४) बैरिंग न लिये जायगे तथा जवाबके लिये जवाबी कार्ड व टिकट आने चाहिए ।

(५) सब प्रकारका पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से होना चाहिये ।

पता—बाबूराम शर्म्मा ।

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ ।

सचित्र

वनौषधि प्रकाश।

मासिक पत्र।

वर्ष २ || मार्च १९१४ | अंक ३

सूचना।

"वनौषधि प्रकाश" के चित्र कलकत्तेमें छपवानेका प्रबंध करनेके कारण इस मासके चित्र आगामी मासके अंकमें लगा दिये जांयगे। अतः ग्राहक महाशय क्षमा करेंगे।

संपादक।

नियम ।

(१) इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित २) रु० प्रति संख्या ≡ अग्रिम लिया जाता है ।

(२) जो महाशय इसी विषयके उपयोगी लेखों द्वारा इसकी निरन्तर सहायता करेंगे उनको विना मूल्य ।

(३) विज्ञापन छपाई अथवा बंटाईको पत्र व्यवहार करो ।

(४) बैरिंग न लिये

—बाबूराम शर्म्मा ।

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ ।

कहलगांव—भागलपुर में गत शनिवार को स्थानीय मिडिल स्कूल में एक सभा बड़े समारोहके साथ हुई जिस में अगले तीन वर्ष के परीक्षाओं में सफलता प्राप्त किये हुए छात्रों को इनाम बांटा गया। राय साहब बाबू राज नाथ चौधरी ने इनाम बांटना सहर्ष स्वीकार किया। आपने फस्ट क्लास के लड़के को "सुच रित्र" पर हिन्दी में लिखने के लिये अपने तरफ से एक इनाम दिया। शहर के रईस अनेक यूरोपियन सज्जन तथा महिलाएं वहां उपस्थित थीं। सभा कार्य्य समाप्त होने पर स्थानीय स्कूल तथा अन्य स्कूलों के छात्रों को मिठाई बांट कर सभा विसर्जित किया गया। यहां हाल ही से हैजे का प्रकोप दिन दिन बढ़ता जाता है। परमेश्वर शीघ्र निवारण करें।

नीमेज हत्या अभियोग।—आरा में गत २४ अप्रेल को यहां तीन हिन्दू नवयुवकों पर एक महन्त और उसके नौकर की हत्या करने के सम्बन्ध में अभियोग पेश हुआ था। सन् १९१३ ई० को बीसवीं मार्च की रात में यह हत्या हुई थी। दिल्ली षड्यंत्र वाले अभियोग के सम्बन्ध में जो कागज पत्र पकड़े गये हैं उन्हों के द्वारा यह लोग गिरफ्तार हुये हैं। चार नवयुवक जैपुर से बिहार प्रान्त के नीमेज नगर में वहां महन्त जी के घर पर डाँका डालने गये। महन्त जी और उनके एक नौकर की उन लोगों ने हत्या की उसके दूसरे दिन महन्त के नौकर वा सम्बन्धी महन्तजी के घर पर नौकर के तलाश में गया। वहां एक कमरे में उनकी गर्दन कटी हुई मिली। एक कमरे में ताला बन्द था उसी में महन्त जी की लाश थी। उनकी गर्दन और अन्यान्य स्थलों में बीसों जगह घाव थे। लोहे की सन्दूक खोलने के लिये भी उन लोगों ने बड़ा यत्न किया था पर कृत कार्य्य न हो सके। एक घड़ी और कुछ साधारण वस्तु ले सके। उन चार मनुष्यों का हुलिया निकला जो मान्दिर में उस

लिप्त ठहरे थे। उन्हें पकड़ने के लिये इनाम की घोषणा हुई। पर जुलाई मास तक कुछ पता न लगने पर अभियोग बन्द कर दिया गया। सात फरवरी १९१४ ई० में दिल्ली षड्यन्त्र वाले अभियोग के सम्बन्ध में दिल्ली में अवधबिहारी के घर की तलाशी हुई। राजद्रोही परचे जिन २ लोगोंके पास भेजे गये थे उस सूची में अर्जुनलाल का भी नाम निकला। लाहोर में रघुबीर के घर पर भी अर्जुन का नाम सूची में निकला। अर्जुनलाल गिरफ्तार हो कर दिल्ली भेजा गया। पीछे छोड़ दिया गया। फिर अन्यान्य अनुसंधानों से पता लगा कि वह कुछ वर्ष पूर्व जैपुर में एक स्कूल में भरती होने गया। फिर वहाँ से चार शिष्योंके सङ्ग इन्दौर गया। उन में से एक शिवनरायण बम्बई में पकड़ा गया। शिवनरायण ने बयान किया कि एक गुप्त समिति है जिसके संचालक अर्जुनलाल और विष्णु दत्त हैं और हमने यह भी सुना है कि मोगलसराय के पास उस समिति के चार सदस्य मोतीचन्द, माणिकचन्द, जोरावर-सिंह, और जैचन्द ने आज से एक वर्ष पूर्व एक महन्त की हत्या की थी। इनदौर में मोतीचन्द और पूनामें माणिक चन्द गिरफ्तार हुआ। विष्णुदत्त मिरजापुर में पकड़ा गया और उसका बयान इन्दौर में लिया गया। माणिक चन्द अब सरकारी गवाह बन गया है। उसने महन्त की हत्या के सम्बन्ध में कहा है कि किस भांति उसने नौकर की हत्या की और शेष तीन साथी महन्त की हत्या करने गये। महन्त चिल्लाने लगा पर शीघ्र शान्त कर दिया गया। फिर चोर गद्दी के पास गये जहां महन्त खून में सराबोर हो रहा था। सन्दूक का ताला तोड़ने का बड़ा यत्न किया गया पर अन्त में हार कर खून में सने हुए कपड़ों को एक कुएं में डाल दिया और भाग गये। भागे हुये अन्यान्य घातकों के पकड़ने के लिये पुलिस प्रबन्ध कर रही है। आज शुक्रवार को फिर इस अभियोग की पेशी होने वाली है।

आत्म हत्या—शुचिलता के पश्चात इधर कई बङ्ग महिलाओं ने आत्म हत्या कर ली है। पर जो यश शुचिलता को मिला है वह अन्यों को कदापि नहीं मिल सकता। मालूम पड़ता है कि आत्म हत्या करने की प्रथा बङ्ग महिलाओं में जोर पकड़ती जाती है। गत रविवारको कलकत्ते के नाथिर बगान में एक विवाहिता हिन्दू कन्या ने अपने वस्त्रों में किरासन तेल छिड़क कर आग लगा ली। आग की ज्वाला फैलते ही घर के लोग उसकी ओर पहुंचे। उसका श्वशुर उसे इस अवस्था में देख कर वे होश हो पड़ा। आग बुझाई गई पर अस्पताल पहुँचते २ वह महिला चल बसी।

प्रश्नोत्तर ।

(१) चूहाकानी (मूषाकरणी) हमारे देशमें एक दूसरे ही क्षुपको कहते हैं और मध्यप्रदेशमें दूसरे ही क्षुपको और वनौषधि प्रकाशमें दूसरे प्रकारकी वनस्पतिको, किन्तु मध्य प्रदेश वाले इस पद्य से "मूषा कानी जड़ी बखाने। दूबी तर है वाधा। वाको रंग बंगेम डारो देखो भजब तमाशा।" कुच्छ मिलता है। किंतु रांगेके योग से तो नहीं किन्तु ताम्र योग से कुच्छ फल प्राप्त होता है।- अब इन तीनों में कौन ठीक है, हमारे देशमें जिसको मूषाकरनी कहते हैं वह तीन पत्ते वाली एक लता है॥ जिसमें मसूरके सदृश छीमी लगती है। जड़का रस हाथमें लगाने से रक्त लगनेकासा हो जाता है। प्रदर रोग और सूतिका रोग नाशक है। पत्र चतुष्कोण गोलाई लिये होते हैं। मध्य प्रदेश वाले जंगली और सभी जिसको चूहाकरनी कहते हैं उसकी पत्ती गोल पुरेन पात के सदृश होती हैं बीज गोल, पुष्पकी तीन पांखुरी बाहर लाल, भीतर पीले रंगकी और केशर भी पीले रंगकी, वाह्य कोष हरे रंगका होता है।

अब वैद्यवरों, साधुओं, निघण्टुओं और जंगली लोगों से साबित करना चाहिए कि कौन ठीक है।

(२) मेरे एक मित्रके अवस्था बारह वर्ष का होता है, कि फर्ण स्राव हुआ, कुच्छ दिनों यह विकार फैल कर सारे शरीर से पूय स्राव होने लगा, चमड़ेका रंग लाल और ऊपर से चमड़ा पतला उतरता है। पीव बराबर सारे शरीर के रोम कूपों से निकलता है मस्तक में स्राव होकर (पेड़कर) जम जाता है, और पुनः फूट

मोटी मोटी खुरंड उतरती हैं। जाड़े के महीनों में कुच्छ विशेष उपद्रव बढ़ते हैं, दर्द, खाज, बराबर होती हैं और जहां इसका आविर्भाव होता है चमड़ा दादके सदृश हो जाता है। इसको यहाँ के वैद्य कर्दमविसर्प कहते है। जो कोई महाशय इसका अनुभवी योग जानते हों वनौषधिप्रकाश पत्र में छपा कर अनुगृहीत करेंगे। इस रोगमें वैद्यक, हिकमत, और डाक्टरी इलाज हो चुका है।

राजवैद्य० संतशरण सिंह विहारी सिंह।

उत्तर प्रश्न नं० (१)

चीता (चित्रकके पत्तों का स्वरस ऽ। सिंगरफ ऽ॥ दोनोंको एकत्र कर घोटने से पारा अलग हो जाता है।

हीरालाल गिरदावर कानूगो।

सिंगरफ से पारदाकर्षण की क्रिया।

(१) सिंगरफ तो० २०, हलदी तो० २० इन दोनोंको घीकंवार के रस में घोट कर टिकिया बना कर हांडीमें धरें, पीछे दूसरी हांडी से दोनों का मुंह मिला कर मिला कर मुद्रा करें और चूल्हे पर चढ़ाकर आंच दें ऊपर की हाडी पर पानी का पोता फेरते जांय तो पारा निकलता है।

(२) सिंगरफको एक हाड़ीमें रख कर ढक दें, और ढकनेके किनारे आटे से बन्द करें, हाड़ीके सब ओर गोबर का लेपदें फिर उसको डेढ़ पहर आग पर रखें ढकने पर पानी भरा रहना चाहिये जब पानी भाप होकर उड़जाय तो और पानी डाल दें। जब १८ वार पानी बदला जा चुके तब सहज से खोल कर पारा निकाल लें।

(३) शुद्ध पारद को बुभुक्षित करने की विधि। कालकूट, वत्सनाभ, शृंगक, प्रदीपक, हलाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्र, सक्तुक, और सौराष्ट्रिक ये नो विष हैं। आक, थूअर, धतूरा, कलयारी, कनेर, चोंटली अफीम यह सात उपविष हैं सब मिल कर १६ हुए।

इनमें से एक एक विषमें पारे को सात सात दिन खरल करे। कांजीमें धोर कर पारद को लेवें तो बुभुक्षित होता है।

(४) दूसरा प्रकार। सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, जवाखार, सज्जी खार, सेंधानमक, सोंचर नमक, बिड़खार, समुद्र नमक, रेह का खार, लहसन, नौसादर, सहजने की छाल, यह तेरह औषधि समान भाग ले कर चूर्ण करके पारे के समान भाग ले तप्त खल्वमें डाल कर नीबूके रसमें तीन दिन रात खरल करे तो स्वर्णादि धातु भक्षक पारद होता है।

मूंगफली ।

भूशिम्बिका रक्तबीजा त्रिबीजा स्नेह बीजका ॥
मण्डपी भूमिजा भूस्था तथा भूचणका स्मृता ॥

संस्कृत नाम—भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजिका मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका, तैल कंद,

हिं० मूंगफली म० भुई मुगाचा शेंगा, भूय मुग ।

गु० माण्डवी, भोंय शींगना दाणा, मगफली भोंयमग,

इ० ग्राउंड नट पिनट् Ground nut Peunet,

लै० आरेकिसहायपोजिया Arachis hypogea

फा० मुलीयन थेल

मर्वा० शेषवान ।

वर्णन—मूंग फली के बोने का समय आषाढ़, कार्तिक और अग्रहायण है । खेत को आलू लगाने के समान तैयार करते हैं । बीज जमजाने पर आलू के समान मिट्टी चढ़ाने से पैदावार अच्छी होती है । इस के बीज लगानेके दो सप्ताह पश्चात् जमकर अंकुर बाहिर निकल आता है । जो लगभग २ फीट ऊंचा बढ़कर जमीन पर फैल जाता है ।

इसकी डालियों पर श्वेत कोमल रोएं होते हैं । लगाने से लगभग तीसरे मास फूल आनेका समय है । फूल आने पर नीले रंगकी सुर्खी मायल जड़ें निकल कर मिट्टी मे प्रवेश करती है । इन्हीं जड़ों में फली मिट्टीके भीतर लगती हैं, फल लग भग साढ़ इंच तक लम्बे छिलका खरदरा, पकने पर सफेद कुछ गादमी रंगके, भीतर १-४

होने दार होते है। बीजोंका रंग बाहर लाल भीतर सफेद होता है। प्राय ३ बीज ही अधिकता से देखनेमें आने के कारण त्रिबीजा कहते हैं। तेलका भाग बीजों में पाये जानेके कारण स्नेह बीज, या तैलकन्द, कहते हैं। पृथ्वीके भीतर फल लगने से भूशिम्बि कहते हैं।

(पत्र) पंवाड के सदृश प्रत्येक डंठल में ४ आमने सामने आते हैं। सूर्यास्त होने पर दो दो पत्र आपसमें आजूबाजू से सट जाते हैं। और सूर्योदय होने पर खुल कर अलग अलग हो जाते है। पत्रों का रंग हरा सुहावना, कोमल, होता है। डंठलों की जड़में सफेद रंगकी एक पुंखुड़ी या, पत्री होती है।

पुष्प, पीतवर्ण अरहरक पुष्पके आकारका होता है, स्वाद मीठा। बीज–ऊपर लाल और तोड़ने पर श्वेत रंग द्विदल होता है, स्वाद हरापन लिये तैल युक्त होता है।

इसके सूख जाने पर उखाड़नेका समय समझना चाहिये। इस के द्वारा अनेक प्रकार के पदार्थ बनाये जाते हैं। यह अत्यंत पौष्टिक पदार्थ है। निर्बल मनुष्यको न पचनेके कारण वातको कुपित करता है। आज कल इसके तैलका व्यवहार अधिकता से बढ़ने लगा है। यह पदार्थ प्राय सभी स्थानोंमें मिल सकता है, इसके नीचे मूल (जिस में फल आते हैं) सेंक कर खाने से स्वादिष्ट लगते हैं।

किन्तु इसको व्यवहारमें लाने से फल लगनेमें कमी होगी सूखे दानों का तेल निकाला जाता है। जो खाने (घी के स्थान पर शाक, पक्वान्नादि) के पदार्थ बनाने के काम में आता है। दीपक जलाने, साबुन बनानेमें भी खर्च होता है। प्रति वर्ष हजारों मन तेल भारत वर्ष से अमेरिका को भेजा जाता है। और अब इसके तैल निकालने के वास्ते विशेष यंत्र बनाया गया है। इसका छिलका उतरे हुए

का तैल यहद्वार का अच्छा पदार्थ है। इसके दानेकी चटनी खटाई डाल कर बनाई जाती है। और भूनकर मिठाई शाकादि बनाते हैं। मूगफली अगर पचजाय तो उत्तम पौष्टिक है। मूंगफली का पेड़ गौ, भैसादि पशुओं को भी अत्यंत पौष्टिक है। जिन पशुओं का दूध सूख गया हो उनका दूध बढ़ाने वाला है।

भारतवर्ष में मूंगफली को उपवास के समय में फलाहारके तौर से वर्तते हैं यह वातल और पचने में भारी है। मूंगफली में रहने वाले पौष्टिक तत्वोंके शास्त्र रीति से विचार करने से विदित होता है कि बल प्रद है पश्चिमीय वज्ञानिकों की शोधमें मांसकी जगह मूगफलीका उपयोग सर्वथा मांसके गुणों से कम साबित नहीं हुआ, अर्थात जितना लाभ मांसमें है उतना ही लाभ मूंगफलीमें साबित हुआ है किंतु मांस में जो नाना प्रकार की हानियां है उनमें से एक भी मूंगफली मे नहीं देखते।

अमेरिका में प्रतिवर्ष ८०००००० मन मूंगफली खर्चके वास्ते वहाँ से जाती हैं। जिनका मूल्य एक क्रोड़ डालर होता है। अमेरिका वाले इसका वहुत से पदार्थों में संयोग कर व्यवहार करते हैं। एक स्वतंत्र बने हुए यंत्रमें इसको दबकर मावा बनाते है और माखनके स्थान में व्यवहार करते हैं। कितने ही आदमी इस मावे में पानी मिला कर दूधके स्थानमें काममें लाते हैं इनकी बनी बिस्कुट अत्यंत पौष्टिक होती है। इसी प्रकार जरमन सरकारने इसको निश्चित कर जर्मन रेजिमेन्ट के सिपाहियोंकी खुराक में नियमित रुपसे काम में लाया जाता है। मूंगफली का तैल ओलाइव ओयलकी जगह भारत, योरोप और ब्राजील देशोंमे काममें लाया जाता है। सेंकी हुई मूंगफली की अपेक्षा कची मूंगफली अधिक पोषक है। और कच्चे दानोंको खानेका अभ्यास होजाने पर सेंके हुए दाने अधिक स्वादिष्ट नहीं लगते।

मूगफली के पौष्टिक तत्वोंका ज्ञान नीचे लिखे सूची से विदित होगा।

एक सेर में पौष्टिक पदार्थों की आणुयें।

स्नेह निकाले हुए दूधमें... ... ... ९८, १
स्नेह निकाले पनीर में... ... ... ८७०-०
साधारण दूध में... ... ... १४५, ५
शूरकरके मास में... ... ...१२५७, ७
माखन में... ... ... ११८६, ३
आलूकंद में... ... ... १३६, २
राई में... ... ... ६०३, ६
चावल में... ... ... ५३४, ६
मूंगफली में... ... ...१४२५,०

गोमांस से तिगुना अधिक मूंगफली में पौष्टिक तत्व रहता है। ऐसे ऐसे मूर्ख भी हैं जो ऐसे पौष्टिक पदार्थों को त्याग कर मांसाहार में प्रीति करते हैं। यह विचारने का स्थल है कि, एक सेर मूँगफली के मूल्य से एक सेर मांसके मूल्य में कितना अंतर है। इसके अतिरिक्त मूंगफली के दानों में मांसकी अपेक्षा जो अन्य उत्तमोत्तम गुण हैं उनको विचार करने पर मूंगफली को त्याग कर मांस का ग्रहण करना, सोनेको त्यागकर पीतलमें प्रीति करनेके बराबर है।

मूंगफली में अमेरिका के रहने वाले विद्वान नीचे लिखे अनुसार खेत के वास्ते खाद बतलाते हैं। सैकडे में कितना खाद है—

पानी... ... ... ७०, ८८
राख... ... ... ४, ११
प्रोटीन... ... ...३५ ३१
रेशा... ... ... २, ६६

नाइट्रोजन... ... ... ७५, ३१
चरबी... ... ...५५, ३१

ऊपर के कोष्टक से प्रकट होता है कि मूंगफली में मांसोत्पादक प्रोटीन Protein) तत्व, उसकी उष्णता, तथा बल उत्पन्न करने वाले चरबी नामके तत्वका बहुत अधिक प्रमाण होता है। किसी किसी पौष्टिक पदार्थ में यह दोनों तत्व मुख्य होते हैं। इससे स्पष्ट सिद्ध है कि मूंगफली कितनी पौष्टिक खुराक है॥

फल शाक तथा अनाज के साथ मूंगफली के व्यवहार करने से उत्तम आरोग्य का अनुभव कर सके हैं। मूंगफली प्रत्येक मनुष्य को कितनी खानी आवश्यक है तिसका निर्णय प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति का निर्णय होने पर हो सकता है। यथा, शारीरिक कठिन परिश्रम करने वाले जो आध सेर मूंगफली पचा सकते हैं, तहाँ दिमागी परिश्रम करने वालों को पावभर पचानी कठिन है। प्रथम इसकी मात्रा आधी छंटाक से आरंभ कर जब सुगमता पूर्वक पचने लगे तो १ तोला प्रमाण से बढ़ाकर पावभर तक खाना चाहिये। सर्वदा स्मर्ण रखना चाहिए कि अधिक प्रमाण खाने से कम प्रमाणमें खाकर पचाना अधिक लाभ कारक है।

इसमें अधिक पौष्टक तत्व रहनेके अतिरिक्त और भी बहुत से गुण है। इसके गुण इस प्रकार हैं—

मण्डपी मधुरा स्निग्धा वातला कफ कारिका।
ग्राहिका बद्ध वर्च्चाच्च नत्तैलं तद्गुणं स्मृतम्॥

अर्थात मूंगफली मधुर; स्निग्ध; वातल, कफकारक, ग्राही, मल-बँधेन वाली है। इसके तैलके गुण भी इसी के समान हैं। हमारे मतमें यह पित्तकर, उष्ण, और वातल; तथा मस्तक तथा वीर्य्य में गरमी बढ़ाने वाली है॥

सोम लता।

सोम वैदिक साहित्यमें विशेष प्रतिष्ठित, वैद्यकग्रंथोंमें प्रशंसित और दुर्लभ वस्तु है। आज उसी के विषय में हम कुछ निवेदन करते हैं, यद्यपि हमने अपने "वनौषधि प्रकाश" के दूसरे अंक में प्रश्न उठाया भी था कि सोमलता क्या वस्तु है, किन्तु अभी तक समग्र भारतके वैद्यों में से किसी ने भी कोई सन्तोषजनक खोज न की। हम सोमके विषयमें कुछ थोड़ासा संग्रह प्रकाशित करते हैं। सोम लता का निम्नांकित विवेचनायें हो सकती हैं।

(१) सोमलताका विवरण।

(क) वैदिक

(ख) लोक्य अवस्था से

(ग) आयुर्वेद से

(घ) पुराणों से

(२) सोमलता की व्युत्पत्ति

(३) सोमलता के प्रकार भेद

(४) सोमलता की उत्पत्ति और उत्पत्ति स्थल।

(५) सोमरस तैयार करने की रीति,

(६) सोमरस के गुण।

(१) सोम लता का विवरण।

समग्र आर्य जातीके गौरव स्वरूप ऋग्वेद से विदित होता है कि यह सर्वोंमें प्राचीनतम ग्रन्थ है। उक्त ग्रंथकी आलोचना करने

से प्राय सर्वत्र ही सोमका उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद का नवम मण्डल केवल सोमके उद्देशको ही रचा गया है। सोमके पान करने से सम्पूर्ण आनन्दकी प्राप्ति पाई जाती है।

यथा। सोम मद्भयो व्यपिबच्छन्द सा हृ ष सः शुचिषत्। ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपानं शुक्र मन्ध स इन्द्र स्येन्द्रिय मिदं पयो ऽमृतम्मधुं। ७४। २१ यजु.

जो (शुचिषत) पवित्र विद्वानोंमें बैठता है। (हंसः) दुःखका नाशक विवेकीजन (छन्दसा) स्वच्छन्दता के साथ (अद्भय) उत्तम संस्कार युक्त जलों से (सोमम) सोमरस को (व्यपिबति) अच्छे प्रकार पीता है वह (ऋतेन) सत्यवेद ज्ञान से (अन्धसः) उत्तम संस्कार किये हुए अन्न (शुक्रम) शुद्धि करने वाले (विपानम्) विविध रक्षा से युक्त (सत्यम) सत्यको (इन्द्रस्य) इन्द्रके (इदं) इस प्रत्यक्ष प्रतीतके आश्रय (पयः, अमृतम) इन्द्रयम्।

सब प्रकारके आनन्द को प्राप्त होता है। इस प्रकार सोमरस के अद्भुत गुणों से ऋषिगण व्यामोहित हो उसकी पूजामें प्रवृत हुए। तथा उसीका रस यज्ञादि के समय पीने और होमयोपयोग में लाने लगे। जिन्हें इस विषय का अधिक विस्तार देखना हो वह मोर साहब का डिक्शनरी की भाग ३ पृष्ट २४७ में देखें अथवा शत पथ ब्राह्मण वेवर एडीशन और यजुः महीधर भाष्य १-७-१-१-८-२-१० में देखें।

(ग)

पारसियों के प्राचीन धर्मशास्त्र (Zenda Avesta) ग्रंथमें होम (Homa) नामक पदार्थ का बहुत स्थानों में उल्लेख आया है। प्राचीन पारसीगण यागों में Homa को व्यवहार करते थे, वह भी अपने यज्ञों में मन्त्रोच्चार पूर्वक जल द्वारा होमको परोक्षित करते थे।

वैदिक ग्रन्थों में सोमरस के गुणों का जिस प्रकार उल्लेख है उसी प्रकार पारसीयों के (Zenda Avesta) में भी है। अतः अनुमान होता है, कि जिस प्रकार और बहुत से संस्कृत शब्द "स" को "ह" के साथ परिवर्त्तन कर पारसी बनालिए गए हैं जिनकी मिसाल "सप्त सिन्धु" का "हप्तहिन्दु" है। इसी प्रकार सोमके "स" का "ह" से परिवर्त्तन कर सोमको होम बना लिया है। अतः होम, सोम ही है। यकपादरीने एक पुस्तक लिखी है जिसमें यह लिखते हैं कि पारसी पुजारी एक भाड़ुमारस पीते हैं जिसकी झाड़ी फारसके उत्तरी पहाड़ों पर होती है। जिसमें पीले फूल लगते हैं। इस से हम यह निश्चय नहीं कर सकते हैं कि इस समयके पारसी पुजारी अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त सोमरस पान करते हैं या कुछ और ही।

(ग)

आर्य्यजनोंके अमूल्य शास्त्र आयुर्वेद द्वारा ही सोम का निश्चय होता है। और इसी शास्त्र में इसका विशद रूपसे विवरण पाया जाता है। चिकित्सा स्थानके प्रथमाध्यायके रसायण प्रकरणमें महर्षि चरक इसको 'औषधिराज" नामसे निर्देशित करते है। यथा "सोमनामौषधिराज" सुश्रुत संहिता में भी सोम को 'औषधिनां पतिः" कहा गया है। तथा इसी ग्रंथमें इसका विवरण पाया जाता है।

यथा "ब्रह्मा दयो ह्यसृजन पूर्व ममृतं सोम संज्ञितं"
"जरा मृत्यु विनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते"

अर्थात ब्रह्मादि देवताओंने सोमसंज्ञक अमृत समान गुण कारी औषधि जरा मृत्युके विनाशार्थ उत्पन्न की है।

इस प्रकारकी अमृत समान गुण कारी औषधियोंकी ऋषियों ने बड़े विधान और सावधानी से रक्षा की है; यहां तक कि शूद्रों तक

को इसके पीने का उपदेश नहीं दिया। जैसा कि सुश्रुतके चिकित्सा स्थानमें लिखा है "शूद्र वर्ज त्रिभिर्वर्णै. सोम उपयोक्तव्यः" अर्थात शूद्रोंको छोड़कर शेष तीनों वर्ण सोमका उपयोग करें।

(घ)

पौराणिक साहित्यमें सोम शब्दका अर्थ चन्द्रमा है पुराणोंके ढूंढ़ने से पता लगा है कि वैदिक सोम शब्दका अर्थ पौराणिक युगमें चन्द्रमा वाचक हो गया। वस्तुतः उक्त विश्वासका बीज बहुत पूर्व ही उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है। जैसा कि ऋग्वेदमें इस विश्वास का सूत्रपात देखा जाता है। यथा "अथो नक्षत्रा नां एषा मुपस्थे सोम आहितः।" ऋग्वेद १०। ८५। २

अर्थात, नक्षत्रोंके मध्यस्थले सोमस्थापित हुआ। इस जगह अवश्य सन्देह होता है कि सोमका अर्थ सोमलता है अथवा चन्द्र बोधात्क अर्थ ग्रहण करनेमें इस जगह कुछ विशेष असङ्गति नहीं होती। अतएव सोम शब्दका चन्द्रमा अर्थ ग्रहण करने पर इसके अपेक्षा प्रकृष्टतः प्रमाण का प्रयोजन है। यह भी हुआ, ऋग्वेदमें ९। ४०। ३७। ८ एवं ९। ७८। २ की आलोचना करने से और भी एक प्रकार की निःसन्देहता होती है। यथा, 'नूनो रयिं महाम् इन्दो ऽ स्मभ्यं सोम विश्वतः। आ अपस्व सहस्रिनम्। ९। ४०। ३।"

अर्थात हे सोम, हे इन्दो, तुम अभिमुख होकर हमारे उद्देश्य को शीघ्र उत्तम धन राशी से चारों ओर से पूर्ण करो।

"पुनान इन्दवाभर सोमाद्विबर्हसं रयिम् वृषन्निन्दो न उक्थ्यम्।" ९। ४०। ६

अर्थात हे इन्दो, हे सोम, तुम हमको द्यावा पृथ्वी से परिवृद्धधन आहरण करो, हे वर्षक इन्दो हमको धन प्रदान करो।

अपस्तुमिर्दिन्वानो अज्यते मर्नाषिभिः ९। ७६। २

अर्थात बुद्धिमान ऋत्विककी चालना करनेसे इन्दु (दधिदुग्धादि गव्य पदार्थ के सहित) मिश्रित हुआ।

सामवेद में भी "इन्दु" अर्थमें सोमशब्द का प्रयोग है। अथर्व वेदके अति स्पष्टाक्षर से प्रतीत होता है।—

सोम मादेवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति। ११–६–७

अर्थात सोम जिसको लोक में चन्द्रमा कहते हैं हमारी रक्षा करें शतपथ ब्राह्मण में भी कहा है। "एष वै सोमो राजा देवा नाम् अन्नं यच्च चन्द्रमाः चन्द्रमावि सोमो देवाना मन्नम्।" अर्थ—सोम चन्द्रमा अभिन्न पदार्थ हैं यह देवगणों का अन्न है।

विष्णु पुराणादि ग्रंथोंमें जो देव और पितृ गणों का चन्द्रकला पानका विवरण पाया जाता है। "तञ्च सोमं पपुर्देव पर्व्यायेनानु पूर्वशः। विर्वनि. विमलं सोम विशिष्टा तस्य या कला। सुधा मृत मयी पुण्याः तामिन्दो' पितरो मुने।" इत्यादि से निश्चय होता है कि, यह वेदोक्त सोमपान ही है। विष्णु पुराण में सोमको लता समूह का राजा कहा है।

यथा "नक्षत्र ग्रह विप्राना वीरुधाञ्चाप्यशेषतः।
सोम राज्ये ददौ ब्रह्मा यज्ञाना तपसा मपि॥

उपरोक्त श्लोक में नक्षत्रादिशब्दों के सह्पाठ्य वशतः अनुमति होती है कि इस जगह सोमशब्द से ज्योतिष्क सोम ही संसूचित होता है। अमावस्या तिथिको इसके द्वारा जो औषधि समूह तेजस्भाग होती हैं उसका भी स्पष्ट उल्लेख देखा जाता है। यथा,—

आमा याश्च सदा सोम औषधिः प्रति पद्यते।

यहाँ औषधि समूह से चन्द्रमा का जिस प्रकार निकट संपर्क

देखा जाता है, उससे चन्द्र और सोम का एकत्व विधायक भ्रांत संस्कार के ऊपर प्रतिष्ठित न हो कर ज्ञान सार की संशोधित होने की संभावना विद्यमान है। परवर्त्ती प्रस्ताव में यह विषय और भी एक प्रकार परिस्फुट होगा ऐसी आशा है।

(२) सोमलता नामकी व्युत्पत्ति।

उपरोक्त प्रसङ्ग में दिखा चुके हैं कि कालक्रम से लतासोम से चन्द्रमाका भी अर्थ ग्रहण हुआ, जिससे बोध होता है कि इन दोनोंमें अवश्य किसी प्रकार का सम्बन्ध है। सोमलता के उत्पन्न होने की जगह पृथ्वी और सोमग्रह (चन्द्रमा) का स्थान आकाश, केवल नाम के एकत्व वशत. इन दोनों का संमिश्रन होना बोध नहीं होता है। अत स्वीकार करना पड़ता है कि दोनों में कुच्छ न कुछ संबंध अवश्य है। अब विचार करना चाहिये कि ग्रह से लता का नाम सोम हुआ अथवा लता सोम से ग्रहका नाम सोम पड़ा। अब प्रश्न उठता है कि इन दोनों से किसका नाम प्राचीनतर है। सोमग्रह (चन्द्रमा) का ज्ञान सोमलता से अधिक प्राचीन तर है, क्यों कि सोमग्रह आकाशमें अनादि कालसे वर्त्तमान है। बालक उत्पन्न होने के कुछ समय ही पीछ चन्द्रमा का दर्शन करता है। उस समय ही वह सोमलताके अस्तित्व से कुच्छ भी ज्ञात नहीं होता। अत: सिद्ध हुआ कि सोमलता से सोमग्रह (चन्द्रमा) का नाम सोम नहीं किन्तु चन्द्रमा से लता का नाम सोम पड़ा है। अब शंका होती है कि चन्द्रमाके नाम स लता का नाम क्यों पड़ा। प्राच्य और प्रतीच्य बहुत से विद्वान सोमके संबंध में अनेक शोध कर गये किन्तु चरक सुश्रुत से ही इसका ठीक ठीक निश्चय हो सकता है।

यथा "सोम नामौषधिराजः पञ्च दश पर्नैः। स सोम इव हीयेते वर्द्धते च।" चरक चिकित्सा स्थान।

अर्थात्। सोम नामक औषधि राज (परमरसायन) के पन्द्रह पत्ते होते हैं जो चन्द्रमाकी कलाओं की तरह गिरते और निकलते हैं। "सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दशपञ्च च। तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च॥ एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा। शुक्लस्य पौर्णिमास्यान्तु भवेत् पञ्चदशच्छदः शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः। कृष्ण पक्षे क्षये चापि वल्लिभवति केवला।" सुश्रुत। अर्थात् सब सोमोंमें पन्द्रह पत्ते होते हैं। कृष्ण पक्ष में सब पत्ते झड़जाते हैं और शुक्ल पक्ष में निकलते हैं। शुक्ल पक्ष में प्रति दिन एक पत्ता निकलता है। अर्थात् प्रतिपदाको एक पत्ता निकलता है और फिर प्रति दिन एक एक निकल कर पौर्णमासी को उसमें पन्द्रह पत्ते हो जाते हैं। कृष्ण पक्ष में प्रति दिन एक एक करके गिरते हैं और अमावस तक सब पत्ते गिर कर खाली बेल रहजाती है।

अन्यथा। रससार में भी लिखा है कि "कृष्णे पक्षे प्रगलति दलं प्रत्यहं चैक मेकं। शुक्ले च्चैवं प्रभवति च पुनर्लम्ब माना लता स्यात्। तस्याः कन्दः कलयति नरां पौर्णिमायां प्रभाते। बद्धा सूतं कनक सहितं देह लोहं विधत्ते।"

"इयं सोमकला नाम्नी वल्ली परम दुर्लभा। अनया बद्ध सूतेन्द्रो लक्ष वेधी प्रजायते॥"

इत्यादि से स्पष्ट प्रतीत होता है कि सोमलता यह नाम चन्द्र परसे ही पड़ा है।

(३) सोमलता के प्रकार भेद।

सुश्रुत कहते हैं "एक एव खलु भगवान् सोमः स्थान नामा

व्हति वीर्य्य विशेषैः चतुर्विंशति धा भिद्यते ॥ तद् यथा अंशुमान मुञ्ज वांश्चैव चन्द्रमा रजत प्रभः।" इत्यादि। अर्थात एक ही सोम, स्थान, आकृति, और वीर्यादि के भेद से चौवीस प्रकार की होती है। और रस सार में दो प्रकार की लिखी है। यथा—"सोम वल्ली द्विधाश्वेत श्वेता रक्ता सकन्दका। रसो रक्तो भवेद्यस्या स्तिथि संख्या दलानिच। शुक्ले पक्षे प्रजायंते कृष्णे च प्रपतंतिहि। कृष्ण पक्ष क्षये चापि वल्ली भवति केवला। पूर्णिमायां गृही तव्या रसवन्धे रसायने।" अर्थात, सोम वल्ली श्वेत, रक्त, कन्द, युक्त दो प्रकारकी होती है जिसका रस लाल हो होता हैं पन्द्रह पत्ते होते हैं यह शुक्ल पक्ष में उत्पन्न हो हो कर कृष्ण पक्षमें गिरते हैं। और पक्षांत में केवल वल्ली रहजाती है जैसा कि भैरवागम शास्त्र में भी लिखा है, "सोम बल्ली वनिस्पत्रा"

सोमलताकी उत्पत्ती और उत्पत्ति स्थल।

सोमकी उत्पत्ती के संबंधमें नाना स्थानों में विविध प्रकार से विवरण पाया जाता है।

ऋगवेदमें। १। ९०। २ और ३। ४३। ९ के देखने से प्रतीत होता है कि यह स्वर्ग से श्येन नामक पक्षी द्वारा लाई गई थी। ऋक १। ८३। ६ से जाना जाता है कि वरुण ने इसको किसी पर्वत पर स्थापित किया और वहाँ से श्येन इसको पृथ्वी पर लाया, इस जगह पर्वत के नाम का कोई विवरण नहीं; किंतु प्रतीत होता है, कि उस पर्वत का नाम मुंजवत था क्योंकि ऋग १०। ३४। १ सौमिस्यव मौज वतस्य भक्षः" इस पाठसे जाना जाता है कि सोम सबसे पहिले

मूंजवत पर्वत पर उत्पन्न हुआ, मूंजवत पर्वतके नामका निरुक्तकार उल्लेख करते हैं। निरुक्त ९। ८। ऋक् १। ८३। ६ और १। ३४। १ इन दोनों स्थलोंके मिलाने से एक प्रकारका शृङ्खला बद्ध विवरण संगृहीत हो सकता है।

ऋक ९। ८२। ३ और अथर्व वेदके १२। ६। १६ "राज्ञः से महया आयन्त जातस्य पुरुषादधि।" के अनुसार सोम पय क्रम पर्जन्य और पुरुष से उत्पन्न हुआ है। पर्जन्य वृष्टि का देवता, वृष्टि द्वारा संभवों बढ़ाता है।

महर्षि सुश्रुत कहते हैं कि पहिले ब्रह्मादि देवगणोंने जरा मृत्यु विनाशार्थ सोमको उत्पन्न किया

यथा "ब्रह्मादयोऽसृजन पूर्व ममृतं सोम संज्ञितम्।
जरा मृत्यु विनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते।

सोमलता भारत में सर्वत्र नहीं पाती। इसके मिलनेके थोड़े ही स्थान है। ऋक और सामवेद में। शर्यनावत हृद। (सायना चार्य कहते हैं कि शर्यनावत नामक सरोवर कुरुक्षेत्र के नीचे है) सरस्वती प्रभृति नदी और आर्जीक (आर्जीकीया नदी तीरस्थ प्रदेश। कोई कोई कहते है कि आर्जीकीया नदी को अब वितस्ता कहते हैं। सायनाचार्य कहते हैं

ऋजीको नाम कुरुभ्यो आर्जीक देशा- तेषु आर्जीकेषु) कृत्य देश कुरव यहां है यह निश्चय नहीं किंतु सायन उदेश द (कृत्यान इति वृत्ताभिधान नेषु कर्मवत्सु देशेषु) इत्यादि देशों में सोमलता की उत्पत्ती होती है।

"यथा शार्यणावति सोम मिन्द्रः पिबतु वृत्र हा" ९। ११३। १।

अर्थात हे इन्द्र वृत्र हनेवाले शर्यणावत नामक सरोवर में उत्पन्न सोमको पान कर। आर्जीकात् साम मोहू ९।११३।१।२

अर्थात् हे सोम तुम अर्जीक नामक देश से क्षरित हो।
(सोमासः) सादः शर्य्यनावति। ९। ६५। २२।

ये अर्जीकेषु कृत्वसु येमध्ये पस्त्यानाम्। ९। ६५। २३। इसी प्रसङ्ग में सुश्रुत कहते हैं।

"हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रे मलये तथा।
श्री पर्वत देव गिरौ देव सहे तथा।
परिपा (या) त्रेच विन्ध्येच देव सुन्दे ह्रदे तथा।
उत्तरे निर्वतस्तायाः प्रवृद्धाये महीधराः।
पञ्च तेषामधो मध्ये सिन्धु नामा महानदः।
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रक मानसम्। इत्यादि।

अर्थात्—हिमवत्। अर्बुद। महेन्द्र। मलय। श्रीपर्वत। देवगिरी। देवसह। परिपा। विन्ध्याचल। देवसुन्द। निवतस्ताके उत्तरके पहाड़ों पर। सिन्धु नदी के किनारे। काश्मीर देश प्रभृति स्थानोंमें सोम वल्ली उत्पन्न होती है।

अब शंका होती है कि सर्व साधारण को फिर क्यों प्राप्त नहीं होती। इस विषय पर सुश्रुत कहते हैं।

न तान् पश्यन्त धर्मिष्ठाः कृतघ्नाश्चापि मानवाः।
भेषज द्वेषि नश्चापि ब्राह्मणद्वेषि नस्तथा।

अर्थात्। उनको, अधर्मिष्ट, कृतघ्न, भैषजनिन्दक, और ब्राह्मणों से द्वेष करने वाले नहीं देख सकते।

(५) सोमरस तैयार करनेकी रीति।

ऋग्वेद का सारा नवां मण्डल सोम से विवेचित है। इस मण्डल में सोम देवता के अतिरिक्त दूसराका कोई भी सूक्त नहीं

मिलता। इस मण्डलके पढ़ने से सोमरसकी प्रणाली भले प्रकार प्रतीत होती है।

ये पवमान धामनी प्रतीचीं तस्थुः। १।

सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः। ७।

समुत्वा धी भिरस्वरं हिन्वती सप्तजामयः। ८।७

मृजन्ति त्वा समग्रु वो हव्ये जीराव धिधिष्ठनि।

९। परमा नस्यते। १०।

अच्छा कोशं मधुश्चतमसृग्रं वारे अव्यये अवार

शान धी मयः।

अर्थात्। कलसके ऊपर मेषलोमनिर्मित वस्त्र टक कर अंगुलियों द्वारा मधुर रस निकलने वाले सोमको पुनः पुनः मथना।

कलस साधारण तथा लोहे वा सोने का होना चाहिए। यथा। मनपुतानः कलशां आविक्ष इन्द्र मिर्यं मानः कोश आहिरण्यये। अच्छा समुद्र मिन्द्रवोस्तं गवान धेनवः। १२

अर्थात सोमकलसके मध्यमें इस प्रकार अन्तर्हित होता है जिस प्रकार नव प्रसूत गौ घरमें प्रवेश करती है।

"प्राम इन्दो महेरन आपो अर्षन्ति सिन्धवः। यद् गोभिर्वसा यिष्यसे। १" अर्थात, हे सोम जब तुम (दधिदुग्धादि) गव्य पदार्थों के सहित मिलते हो तब जल बहबहुर विलक्षण शब्द करता करता तुम्हारी तरफ आता है।

"पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजन। २४।"

अर्थात। स्रवण शील सोमरस एक उत्तम श्वेत रंगका ज्योति-भेद बढ़ाके उत्पन्न करता है।

"एव सोमो अधिरवचि गवां क्रीड़त्य द्रिभिः। २९।"

उपरोक्त समस्त मंत्रोंका तात्पर्य इस प्रकार है, कि प्रथम

सोमलताको लेकर पत्थरसे कुचले और रमनीगण उसका रस निचोड़ें फिर उस रसको जलके सहित मिलाकर ऊनके छन्नेमें छानकर पीवें।

सुश्रुतोक्त सोमपानविधि कुछ नवीन शैलीकी प्रतीत होती है। अर्थात्। २४ प्रकारमें से किसी की जड़ किसीके पत्ते और किसीका कन्द ले कर रस ग्रहण कर पीना।

(६) सोमरसके गुण।

सोमरस एक प्रकार का मादक द्रव्य है इसमें सन्देह नहीं; किन्तु सोमरस में एक प्रकारकी विशेषता यह है कि, अन्यान्य मादक द्रव्यों में किसी न किसी प्रकार का दोष है। किंतु सोमरस पान करने में किसी भी प्रकार के कुफल की आशङ्का नहीं। ऋग्वेद १।८३।५। में "ज्येष्ठ मर्थे मदम्।" अर्थात् अमरत्व विधायक मद्य श्रेष्ठ लिखा है। जिसकी सायना चार्यने निम्न लिखित व्याख्या की है। "सोमपान जन्यो मदो मदांतर वत मारको न भवतीत्यर्थः।" ऋग्वेदादि में सोम का बहुत गुणोल्लेख मिलता है।

सुश्रुतमें भी लिखा है। "शतशोऽथ सहस्रशः।"

इसके पान करने से शरीर का बल, वाक्य, स्फूर्ति और मनमें आनन्द होता है। ऋग्वेद ६। ४७। १, २, ३। में इसके द्वारा वाणिद्रय शक्ति का लाभ होना माना है। यथा—"वर्धाः वर्ध माम् ऋग्वद ९। २५। ९। 'इमार्तिणाम्।"। ९ ६८। ८। ९। ४७। ३ इसके द्वारा सब प्रकार की व्याधी दूर होती है।

"तद्दातुरस्य भेषज" ८। ६१। १७ अर्थात् उत्कट रोगों से पीड़ित पुरुष को सुख देने वाला है।

"अपाय मस्यूर निरा मनीशा" । ८ । ४८ । ११

सब असाध्य और कठिन रोगों को दूर करती है। यहां तक लिखा है कि सोमरसके विधि पूर्वक सेवन से अमरत्व पर्य्यन्त लाभ माना है।

अपाम सोम ममृता अभूम अगन्म ज्योतिरविदाम देवान्
किंनून मस्मान् कृण वदरातिः किमुधूर्त रमृत मर्त्यस्य।
८ । ४८ । ३ ।

भार्थ:। हे अमृत सोम हम तुमको पान करके अमर हुए हमने दिव्य ज्ञान लाभ किया, शत्रु हमारा क्या कर सकते हैं। और मनुष्यकी धूर्तता हमारा क्या करेगी।

भारतवर्ष मे बहुत समय से सोमका ज्ञान उदासा हो गया यागादिकों में सोमका कहीं भी व्यवहार नहीं किया जाता है। सर्वत्र इस की जगह कुछ और ही लता काली जाती हैं।

सोम लता नितान्त दुर्लभ पदार्थ है। इसकी जगह अन्य अन्य जातियां जिनका इस प्रकार उल्लेख है कहीं कहीं मिल जाती हैं।

"अंशु मान आज्य गन्धस्तु कन्द वान रजत प्रभः।
कदल्या कार कन्दस्तु मुञ्ज वालशुनच्छदः।
चन्द्रमा कनकाभा सा जले चरति सर्वदा।
सर्पनिर्मोक सदृशौ तौ वृक्षाग्रावलम्बिनौ।

यथा मात्र वर्णन करने के पश्चात निवेदन है कि भारतीय वैद्यगण इन औषधि के संबंध में यथा मात्र अपने अपने विचारों से अवश्य सूचित करें।

इसके विषय में बंबई के वैद्यधन्वंतरि रामानुजदास आयुर्वेद पञ्चानन इस प्रकार लिखते हैं।

"सोमवल्ली का सिद्धांत यह है कि हम सं १९५१ ज्येष्ठ मास में श्री बद्रीनारायण पहुँचे वहाँ से सत्य पथ यात्रा को गए, एक पहाड़ी जो वहां के जंगल को जानता था हमने साथ लिया। सत पथ के तीनों कुंड देख कर रातको श्री रंगाचार्यजी की गुफा में गए, हम चार पुरुष थे, यहाँ से आगे सूर्य कुण्ड चार मील पहुँचे। दो मील पर पहुँचने से हम चारों बे सुध हो गए। और मुँहमें झाग आने लगे। शीत आ गया वहां अग्नी करने को कुछ लकड़ी नहीं थी तब पहाड़ी बस एकादशी का सोम वल्ली के ११ पत्ते लाया और मसल कर हमारे मुँह में निचोड़े जो अत्यंत स्वादिष्ट खट्टे मीठे अमृत के माफक थे। उनके पीने से हम तुरंत चैतन्य हो गए और वह पहाड़ी बोला कि अब पीछे लोट चलो नहीं तो मर जाओगे।

सोम वल्ली के पत्ते बड़ वृक्षके पत्तों के सदृश कुछेक पतले लंबे थे। सोमवल्लीकी लता एक हाथ बड़ी थी। किसीकी इच्छा हो तो जाओ और उसे देखो।"

सोमवल्ली का दूसरा वृत्तांत यह है कि अयोध्या दास नाम कर के एक महात्मा इन्दौर वाले हंसदासजी पीली पोशाक पर लिखे हुए हैं। वह कहते थे कि एक महात्मा सोम वल्ली का कंद लाया जो नारियल की आकृतिका था, उनका रस निकाल कर पी गया और गुफा में घुस गया, हमें कहा कि हमारे चोले के पास ही रहना।

१५ दिन तक। तब उनका शरीर दिन पर दिन फूलने लगा और हाथी के समान गोल मटोल हो गया। १६ वें दिन मध्याह्नमें फटकर दो टुकड़े हो गया और उसमें से १२ वर्षका आयुका तेजस्वी बालक के सदृश निकल कर भाग गया।

काला दाना।

(कृष्ण बीज)

नील पुष्पी भवेद्वल्ली श्यामा श्यामल बीजकं।
त्रिबीजा कृष्ण बीजाच रेचनी खण्ड पत्रिका।

संस्कृत—नाम नीलपुष्पी, श्यामा, श्यामल बीज, कृष्ण बीज त्रिबीजा, रेचनी, खण्ड पत्रिका।

हि० कालादाना म० कालादाणा

ब० नीलकलमी गु० कालो कुंपो, भमर बेल,

फा० मिरबाई अ० हब्बुल नील

इं० Pale Blue Ipomia पेलब्ल्यू आईपोमिया.

ले० Ipomea He dé rabea.

वर्णन—काले दानेकी बेल चौमासे में होती है।

जो ५ से १५ फीट तक ऊंची होती है। इस बेलके कांड और टेनियें आश्रित वृक्षके इर्द गिर्द लिपटी रहती हैं। यदि कोई वृक्ष सहारे को नहीं होता तो पृथ्वी पर फैल जाती है।

कांड और टहनियां वर्तुला कार होकर उन पर रोंये होते हैं। इसके पत्ते कपास के पत्तों की तरह (Trilobate) त्रिदल विभक्त बेलके ऊपर नीचे लगते हैं। इस पर फीके नीले रंगके घंटाकार फूल लगते हैं।

इसके फल नरम होते हैं, उनमें तीन खाने होते हैं प्रत्येक खाने में काले रंग का त्रिकोणाकृति एक एक बीज होता है। इन्हीं बीजों

को काला दाना कहते हैं। काले दाने की बेलकी दो जाती होती है। दवामें बरतने के लिये छोटा बीज अच्छा रहता है। बेलकी बास उग्र और स्वाद दाहक और चरपरा होता है।

डंडी और शाखायें।—सुतली के समान मोटी हरे वा जामुनी रंगकी, श्वेत छोटी छोटी रोमावली से घिरी हुई होती हैं। पत्ते असन्मुखवर्त्ती, त्रिकोण, २ से ४ इंच तक लंबे और चौड़े होते हैं। तीनों कोनों में से बीचका कोना कभी चौड़ा और अधिक लंबा होता है। पत्तोंकी दोनों तरफ रोंये होते हैं। पत्तोंके डंठल १ इंच तक लंबे और ऊपरकी बाजू निकली रहती है। डंठलका रंग हरा वा जामुनी होता है। बास उग्रस्वाद चिकना चरपरा सा होता है।

फूल—पत्रकोण में से पुष्पधारण करने वाला डंठल निकलता है जिस पर २ से ५ तक फूल एकत्र आते हैं। फूल आसमानी रंगके सहज सुगंधित होते हैं। पुष्प बाह्यकोष से जरा नीचे दो आमने सामने ३ रेखालंबे छोटे पुष्प पत्र होते हैं।

पुष्प बाह्यकोषके ५ पखंडी होती हैं, यह कोष तली तक चिरा रहता है। जिस पर रूवें होते हैं। बाहर के दो पत्ते चौथाई इंच चौड़े और १ इंच तक लंबे होते हैं। जो तलीमें चौड़े और ऊपर चल कर सुकड़े होते हैं।

पुष्पाभ्यंतर कोष की ५ पंखड़ी आसमानी रंगकी होती हैं।

फल गोलाई लेता, बीच में सुकड़ता हुआ, कठिन अनी वाला होता है यह पुष्प बाह्यकोषके भीतर आया हुआ, २ रेखा लम्बा और बहुधा इतना ही चौड़ा होता है, फल जब कच्चे होते हैं, तो हरे और पकने पर कीके रंगके हो जाते हैं।

फलों के अन्दर बिखण्ड होते हैं।

आर्य तथा अनार्यौषधियों की एकता

(प्रेषक डा० बलवंतराय झवेरीलाल)

सन १९०८ के डिसम्बर मास में बम्बई के सुप्रसिद्ध वैद्यक धि० जीवन नि० दुर्लभ राम ने गुजराती वैद्य कल्पतरु में "जंगलकी जड़ी बूटी" शीर्षक विषय में Ammoniacum (एमोन्याकम) Audro graphis (एन्ड्रो ग्रेफिस) Chamomile (के मो माइल) Aroroba (आरो रोबा) Indian birth wart (इन्डियन बर्थ वर्ट) Horse radish root (होर्स रेडिश रूट) आदि द्रव्यों का यहां की भाषा में विशेष विवरण होने की इच्छा प्रकट की थी ; इन द्रव्यों का सविस्तार विवरण भेजने की इच्छा से निम्न लिखित दो विवरण भेजता हूँ।

Amoniacum

एमोन्याकम यह वनस्पति द्रव्य है जो ब्रिटिश फार्मा कोपिया के आधार से एलोपेथी संस्था में बरता जाता है।

नाम, गु० उशाक, भारयक, गुंद। हिं० समाधदमाम। फा० वदने उशाक मुंबई में उशाक। इंग्रे० Ammonic ता० कन्डल। ते० गमनायाकम् अफगान में कन्दल, गमनाथाकम्। अर० फेशुक उशाशक। डा० डोर मा एमोन्याकम्।

उत्पत्तिस्थान। ईरान, अफगानिस्तान और रेतेली जमीन। उपयोगी भाग—फल और फूलवाली डालियों में से निकला हुआ गोंद, जिसको अंग्रेजी में Ammoniacum B. P. कहते हैं।

वर्णन। औषधि में उपयोगी भाग गोंद है, जो गोल दाने धार दाल चीनी के सदृश रंगका स्वाद में कडुवा होता है।

पानी में मिश्रण करने से दूध की सदृश हो जाता है। एमोनिकम छलकी जात का भी आता है और उसमें दूसरे वनस्पति अन्य पदार्थ और मिट्टीके परमाणु मिले रहते हैं। दबाने से नरम लगता है। इसकी जड़ जिसको (Boi) कहते है। जो रेषादार, शोषक, नरम और उत्तेजक वास का होता है। जो अंग्रेजी औषधि क्रिया में आने वाली वस्तु (Sumbul Radix) से मिलता होता है।

एमोन्याकम में रहने वाले मुख्य तत्व।—

गोंद १८ से २८ भाग, सुगंधी दार तैल १ से ४ भाग

चिकना पदार्थ ७० भाग, भस्म (Ashes) ५ भाग

अन्य पदार्थ ४ भाग।

एलोपेथी में निम्न लिखित बना बट होती हैं।—

(१) Ammonia cum and Mercury Plaster

एमोनिकम और पारे का लेप।

एमोनिकम १२ औंस (३० तोले) पारा ३ औंस, गंधक ८ ग्रेन अलसी का तैल १ ड्राम सबको मिला कर मलम बनाना।

(२) Ammonicum Mixture (एमोनिकम का मिश्रण) एमोन्याकम २ ड्राम, शुद्ध जल ८ औंस एकत्र मिलाना। मात्रा आधे से १ औंस तक।

(३) Compound Mixture of Ammoniacum टि० केम्फर बूंद ३० एकजीमल सोडा बूंद ३० एमोनिकम मिश्रण एक औंस, मात्रा एक औंस, गुण गरम और कफघ्न है।

उपयोग—बाह्योपचारमें पारे वाला मरहम सब प्रकारकी पुरानी गांठ और जोड़ोंके पुराने सोजेको मिटाता है।

कालमेघ।

(Andro graphis Poni culata)

अरबी—कीकराडकर, कुथा। फा० नैन चाल बन्दी।

हिं० कालमेघ। बं० कालमेघ, चेरोंटा, महा तेल।

क० नेला बेवी नागीदा। सिन्गालिस० हम्बावदर।

म० कल्पनाथ। इंग्लिश० क्रीट।

गु० किरयाता। मारवा० ओछे फीरायत।

मला० नीलापघा, करीयातु।

संस्कृत० भूनिम्ब। ता० नेला वेम्बु।

ते० फारीचेमु। लेटिन एन्डोग्राफिस पेनिक्युलेटा

उत्पत्ति स्थान। चीन, हिन्दुस्तानके शीतल प्रदेश में सर्वत्र होता है।

वर्णन। यह एक वर्षायु वनस्पति है, इसके क्षुप दो से तीन फीट ऊँचा डंडी चोकोर होती हैं।

पत्र। लंबे काकजंघा के सदृश ऊपरकी तेह श्याम हरे रंगकी फीके पीछे से रंग के होते हैं।

मूल। पतली और एक फुट लंबी होती है।

पुष्प। गुलाबी और जामनी रंगके होते हैं।

बीज। स्वाद में कड़वे होते हैं।

इसमें रहने वाला मुख्य तत्व विशेष कर (Sodium chloride) है।

इस वनस्पति की आर्य्य और इंग्लिश प्रक्रिया में निम्न लिखित प्रयोग हैं।—

(१) इसके पञ्चांग का स्वरस मात्रा १० से ६० बूंद तक।

(२) क्वाथ। कालमेघ ३।- १। भर

नारंगी की छाल ३।- ०।-भर

सूखे धाने (co rrianderseed) ३-०।-भर

२५ तोले जल में दो तीन उफान आने तक ओटाना पुनः छान कर मात्रा चौथाई तो० से आधे तो० तक।

(२) Tincture Kalmegha (टिंचर)

कालमेघ तो० १५ हीरा बैल २॥ तो० घी कुमार तो० २॥ रेक्टीफाइड स्प्रिट (Rectifide Sprit) १०० तोला। मात्रा ३ मासे से ६ मासे तक।

(३) कालमेघ गुटिका।

सफेद जीरा १ तो० दाल चीनी १ तो० इलायची १ तो० लौंग १ तो० एकत्र कर कालमेघ के रसकी भावना दे १ रत्ती प्रमाण गोली बनाना। मात्रा १ से ३ गोली।

कोलंबा और चिरायते के सदृश यह भी कटु पौष्टिक है, बहुत लोग इसको ही चिरायता कहते हैं। किंतु यह बात योग्य नहीं चिरायता अन्य है और कालमेघ अन्य। कालमेघ का स्वरस और क्वाथ बच्चों को ज्वर, कमलाकती, मंदाग्नि, मलावरोध, मृगी अतिसारादि में देते हैं। क्वीनायनके सदृश ज्वरमें भी उपयुक्त है।

सन्निपातोपक्रमाः

लङ्घनं वालुका स्वेदो नस्य निष्ठीवनं तथा ।

अवलेहोऽञ्जनं चैव प्राक् प्रयोज्यं त्रिदोषजे ।

टीका० लङ्घन, वालुका से पसीना दिलाना, नस्य, निष्ठीवन अवलेह, अञ्जन, आदि क्रियायें त्रिदोषज्वर में पूर्व ही करनी चाहियें ।

लङ्घनं यथा—त्रिरात्रं पञ्चरात्रंवा दश रात्र मथापिवा

लङ्घनं सन्निपातेषु कुर्य्याद्वारोग्य दर्शनात् ।

तीन रात, पाँच रात, दश रात अथवा आरोग्य होने तक लङ्घन करावे ।

दोषाणामेवसाशक्तिर्लङ्घने या सहिष्णुता ।

न तु दोष क्षयात् कश्चित् सहते लङ्घनादिकम् ।

जब तक दोष में शक्ति है तब तक ही रोगी उपवास (आदि शब्दात् वालुका स्वेदादि ग्रहणम्) और वालुकास्वेदनादि सह सकता है। किंतु दोषके क्षय होने पर उपवास और वालुका स्वेदादि नहीं सह सक्ता । इति लङ्घनं ।

अथवालुका स्वेदः ।

वालुका खर्परे भृष्टा काञ्जिकाक्ता परा भृता ।

हंति स्वेदात् वात कफ शीत शूलाङ्ग वेदना ।

वालुरेतको ठिकरेमें भून कर पोटली बनाना, और कांजीमें डुबो कर गरम तवे पर रख रख कर सेकना । तो इस से वायु. कफ. शीत, शिर दर्द, हड फुटनी बन्द होती है ।

न स्वेद व्यतिरेकेन सन्निपातः प्रशाम्यति ।
तस्मान्मुहुर्मुहुः कार्य्य स्वेदनं सन्निपातिनाम् ।
सन्निपाते जलमयो नराणां विग्रहो भवेत् ।
विना वन्ह्युपचारेण कस्तं शोषयितुं क्षमाः ।
यद्यपि बहवो सन्ति निर्विषा सविषा अपि ।
वन्ह्युष्मानं विना प्रायो न वीर्य्यं दर्शयन्ति ते ।

सं० टी०—सन्निपात ज्वरे स्वेदस्य विधेयत्व माह । स्वेद क्रिया यां विना सन्निपातः कदापि न शाम्यति । अतस्तत्र मुहुर्मुहुः, सन्निपाते नृणां विग्रहो (देहः) शरीरं वर्ष्म विग्रहः इत्यमरः। जल मयो रस पूर्णो भवेत्। जलन्तुवन्हितापे नैव शोष मुपयाति, नान्येन, यद्यपि सविषा निर्विषाश्च बहवो योगाः सन्ति किंतु ते सर्वेऽपि उष्माणां विना विहीना एव ।

भा० टी० श्लेष्मोल्वण सन्निपात ज्वर में सर्वांग शीतल होने पर बार बार सेक करे, क्यों कि सन्निपात में मनुष्यों के शरीर जल मय होजाते हैं । जलको अग्नि क्रियाके सिवाय कोई शोषण नहीं कर सकता । यद्यपि सन्निपात पर सविष और विना विष के बहुत से योग हैं, किंतु अग्नितापके विना वह रस योग निज निज गुण दिखाने में असमर्थ होते हैं, इसे दस्या नहीं ।

लौहित्य नेत्र योर्वांतौ प्रलापे मूर्द्ध चालने ।
न स्वेदः शुभदस्तत्र शीत क्रिया हिता ।

यदि नेत्र लाल रंगके हों, कै करता हो, बकता हो, शिरको इधर उधर दे दे मारता हो, तो एसे समय स्वेद क्रिया ठीक नहीं, किंतु ठंडी क्रिया ठीक है । इति वालुका स्वेदः

सैंधवं श्वेत मरिचं सर्षपाः कुष्ट मेवच ।
वस्त मूत्रेण सम्पिष्टं नस्यं तन्द्रा निवारणं ।

सेंधा नमक, सफेद मिर्च (केचितु श्वेत मरिचं, शिग्रु बीजम्) सरसों, कूठ, इनको बकरेके मूत्र में पीस कर हुलास देने से तन्द्रा दूर होती है ।

मातुलङ्गादिक रसं कोष्णं त्रिलवणान्वितम् ।
अन्यद्वा सिद्धि विहितं नस्यं तीक्ष्णं प्रयोजयेत् ।

बिजोरे नीबू का रस, पीपळ, तीनों नमक इकट्ठा पीस कर नस्य दे । अथवा सिद्धि स्थान में कहे हुए तेज हुलास देवे ।

फले बृहत्या सकणां सविश्वां चूर्णितम् मृदु ।
प्राणे प्रधमनं कार्यं चेष्टा क्षवथु बोधनम् ।

छोटी कटेळी के फल, छोटी पीपळ, सोंठ, इनको बारीक पीस कर हुलास देने से छींक आकर वे होशी दूर होती है ।

नस्येन स्रियते श्लेष्मा भिन्नश्च प्रसिच्यते ।
शिरो हृदय कंठास्य पार्श्व रुक्को पशाम्यति ।

नस्य से कफ, टूट कर निकलने लगता है । और शिर दर्द, हृदय, पसळियोंकी पीड़ा शांत होती है ।

जिह्वा तालु गुरुत्वमुच दृष्टि श्चास्य प्रसीदति ।
तस्मात् पुनः पुनः कुर्याच्छ्लेष्म कर्षण मौषधम् ।

जीभ, तालुका भारी पन दूर होता है दृष्टि खुलती है । इस से बार बार श्लेष्म निकालने वाली औषधि करनी चाहिए ।

मोहा प्रपेन मुग्धं बोधयितुं यादृशः शक्तः ।

कल्पनर्हनामधेयो रसो नतादृक परं किञ्चित् ।

(४) अथ निष्ठीवनम् ।

आर्द्रक स्वरसो पेतं सैंधवं कटुकत्रयम् ।
आकंठं धारयेदास्ये निष्ठीवेच्च पुनः पुनः ॥
तेनास्य हृदयात् श्लेष्मा मन्या च पार्श्वशिरोगला त्
लानोऽप्याकृष्यते शुष्को लाघवं चास्य जायते ।
पर्श्व भेदो ज्वरो मूर्च्छा निद्राश्वास गला मयाः ।
मुखाक्षिगौरवं जाड्यं मुत्क्लेदश्चाप्युपशाम्यति ।

आर्द्रकेति, आर्द्रक स्वरस मुष्णं कृत्वा सैंधवादि चूर्ण मनुरूपं दत्वा निष्ठीवन मुपदि शति वृद्धः ।

टीका—अद्रक का रस निकाल कर गरम कर उसमें, सेंधा नमक त्रिकुटा, मिला कर गोली बना मुँह में रक्खे और बारंबार थूकता जाय तो इससे, छाती, मन्या, पसली, शिर और गले का सूखा हुआ कफ निकल कर, पसलियों का दर्द, ज्वर, मूर्छा अनिद्रा, श्वास, गलेकी दुखन, आंख और मुँहकी जड़ता उबकाई आदि की शांति होती है।

जिह्वातालु गलं क्षाम मरुतिपत्तेन दूषितम् ।
तदा सञ्चारयेच्छोषंजिह्वाविरसतां तथा ॥
स्फुटनं च तदा जिह्वालेपयेत मधुपिष्टया ।
द्राक्षा साज्य प्रातेन जिह्वा स्यात सरसा मृदु ।

अन्यच्च० उच्छुष्कां स्फुटितां जिह्वां द्राक्षया मधुपिष्टया प्रलेपयेत् सघृतया सान्निपातात्मके ज्वरे ॥ इति जिह्वा लेपनम् ।

जीभ, तालु, गला, और क्लोम स्थान, वायु और पित्तके दूषित होने से सूख जांय और जीभ, फटी और खर्दरी, सूखी हो जाय तो शहत, और घृतके साथ मुनक्का पीसकर जिह्वा पर लेप करे।

अथात्र लेहः

कट्फलं पौष्करं शृंगी व्योषं यासश्चकारवी।
श्लक्ष्ण चूर्णीकृतं चैतत मधुना सह लेहयेत्।
एषावलेहिका हन्ति सन्निपात सुदारुणम्।
हिक्कां श्वासश्च कासञ्च कण्ठ रोगं च नाशयेत्।
एतत योज्यं कफाद्रिके चूर्ण मद्रिक जे रसैः॥

टीका० पौष्करं, पुष्कर मूलं। तदलाभे, कुठं देयम्, शृंगी, कर्कटशृंगी, व्योषं, शुण्ठी, पिप्पली, मरिचानि, यासो यवासः। केचित् यास स्थाने यवानी मपि पठन्ति, कारवी, मंगरेला, इतिलोके।

भा० टी० कायफल, पोहकर मूल, सोंठ, मिर्च, पीपल, जवासा काला जीरा, इन सबको खूब बारीक पीसकर, शहत मिला चटनी बनाकर चाटने से यह चटनी, सन्निपात, हिचकी, श्वास, खांसी, गले के रोगों, को दूर करती है।

इसको कफ निकालने के लिये अद्रक के रस सहित देना यथा—(ऊर्ध्वगेश्लेष्म हरने हरण स्वेदादि कर्मनि, विरोधुष्ण मधु त्यक्त्वा कार्यंचार्द्रक जे रसैः) अर्थात, ऊपर के श्लेष्म हरने की स्वेदादि दुष्ण क्रिया कर्तव्य हैं। इस से शहतकी जगह अद्रकका रस डाल कर अवलेह करना क्यों कि (सर्वेषु सन्निपातेषु नर्सोद्गमन चारयेत्। शोतेप चारां शेग्रस्यात शीतंवात विवध्यते।) सब सन्निपातों में

शहत योग्य नहीं, कारण कि शहत ठंढा है और सन्निपात में ठंढी वस्तु हानि कारक है।

त्रिकटुकं चविका पथ्या चूर्ण सैंधव संयुतं।
तेन दन्तान तथा जिह्वा धर्षयेत्तालुकं तथा।
निष्ठीवनं गले शुद्धिं रुचि कृत कफ सूदनम्।
हल्लासो नाश माप्नोति पटुत्वं कुरुते तरा।

सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, हैड़, सेंधानमक। इनका चूर्ण कर इससे जीभ, तालु और दांतों को घिसने से गले की शुद्धी होती है। कफ दूर होता है और हल्लास नाश हो कर शरीर हलका हो जाता है।

चतुराङ्गावलेहः—

स्विन्न मामलकं पिष्ट्वा द्राक्षया सह लेहयेत्।
विश्वभेषज संयुक्तं स मधुना सह मेलयेत्।
तेनास्य शाम्यतिश्वासः कासो मूर्च्छाऽरुचिस्तथा।
ऊर्ध्वजत्रु गदघ्नो यासा सायमवलेहिका।
अधोरोग हरि यासा भोजनात प्राक् प्रयुज्यते।
अवलेहः प्रायेण ऊर्ध्वजत्रु रोग हरत्वात् सायं उपयुज्यते

टी० उबाले हुए आंवलोंको, मुनकाओंके साथ पीस कर फिर पीपल और सोंठ, मधु, मिला कर चाटने से, कास, श्वास, मूर्छा, अरुचि हंसली के ऊपर के रोग दूर होते हैं। शामको उपयोग करनी चाहिए।

अथाञ्जनम्—

शिरीष बीजं गोमूत्र कृष्णा मिरिच सैंधवैः।

अंजन् स्यात् प्रबोधाय सरसोन शिला वचैः।

सिरस के बीज, पीपल, काली मिर्च, सेंधानमक, गायके मूत्र में पीस कर अंजन करना अथवा लहसन, बच, मनः शिला इनको पीस कर अंजन करने से मूर्छा दूर होती है।

असुरा ह्रय पतंगस्य विट् चूर्णं मधु संयुतम्।

अंजना द्बोधयेन्मुग्धं तन्द्रितं सन्निपातिनम्॥

मनसिल, ताम्र भस्म, सेंधा नमक, इनको बारीक पीस कर, शहत मिला कर आंजने से सन्निपात से तन्द्रित और मुग्ध पुरुषको चैतन्य करता है।

अयो रजः श्वेत रोध्रं मरिचं चाञ्जन तथा।

गो मूत्रेण समायुक्तं तन्द्रा नाशन मुत्तमम्॥

लोहेका चूर्ण, सफेद लोध, मिर्च, इनको पीस कर गो मूत्र के साथ अञ्जन करने से तन्द्रा दूर होती है।

सन्निपात ज्वरे वमनम्—

उदीर्ण दोषं प्रथमे दिवसे वामयेन्नरम्।

विशोषितं न वामयेत् वामयेन्मध्यमं तथा।

प्रथमके दिन में उदीर्ण दोषी पुरुषको वमन करावे और मध्यम में वमन करावे किन्तु शोषित दोष वाले को वमन न करावे।

अथोद्धूलनानि—

सजीर कृष्णकटु तुंव हेम बब्बूल पत्राशित जीरकोग्रैः।
हरीतकी कटुफल रुक्कुलाथै रुद्धूलनं स्वेद मपा करोति।

काला जीरा, पीपल, कड़वी तोंबी, धतू और बबूलके पत्ते सफेद जीरा, हेड, कटु फल, कुलथी। इनका चूर्ण कर मलने से पसीना बंद होता है।

आकल्लकं बिषं कृष्णं हेमद्रुफल भस्मकम्।
एकैशो ह्याष्टभागैः धूलनं स्वेद श्ये शैत्यहृत।

अकर करा १ भाग, विष १ भाग, धतूरे के फलोंकी भस्म आठ भाग एकत्र कर मलने से सन्निपात में पसीना आना रुकता है।

दाह प्रशमनं—

शमयाति दाह मचिरा द्दन्धुं कर्कंधु पल्लवैर्लेपात।
के नोत्थ सलिल मलयज संमिश्रो रिष्ट जः सपदि।

छोटे बेरी के पत्तोंके उठाये हुए फेन अथवा रीठोंके उठाये हुए फेनमें चन्दन घिस कर लेप करने से दाह शांत होती है।

अथ लेपः—

सूतंविषं च मरिचं तुत्थकं नवसादरम्।
चूर्णितं स्वरसे मर्द्यं धूर्त्त पत्र रसोनयोः॥
सान्निपात कृते मोहे मूर्ध्निलिम्पत पदो परि।
अस्थि व्यथा स्वनेनैवं लेपं कुर्यात् पदो परि॥

पारा, विष, काली मिर्च, नीला थोता, नौसादर, इनको धतूरेके पत्तोंके रस में पीस कर सिर और पैरों पर लेप करने से बेहोशी दूर होती है। यदि हड्ड फूटनी हो तो लेप करना।

समालोचना।

धन्वन्तरि—इस मासिक पत्रिकाके संपादक भोगीलाल भीकम वकील, विसनगर (उ० गुजरात, हैं। गुजराती भाषामें प्राचीन आयुर्वेद, पाश्चात्य, डाक्टरीविद्या, नवीन नेचरो पेथी तथा आरोग्य शास्त्रके उत्तम रहस्यों की बड़ी विद्वत्ता से चर्चा होती है। मूल्य २) इस पत्रिका के संपादक वनौषधि प्रकाश के विषय में इस प्रकार अपना मत प्रकाशित करते हैं "वनौषधि प्रकाश" इस नामका मासिक पंडित बाबू राम शर्मा द्वारा जलालाबाद (मेरठ) से प्रकाशित होता है। इस मासिक का आरम्भ अगस्त सं. १९११ से हुआ है। जिसमें जंगलकी जड़ी बूटियों के यथार्थ रंगीन चित्र, पहिचान, उपयोगादि विस्तार से लिखे जाते हैं। औषधि तैयार करने का मुख्य आधार वनस्पति है। वनस्पतियों की उत्तम प्रकार से पहिचान पुराने जमाने में गुरु के सानीध्य में करनेकी प्रथा थी। आज कल यह क्रम बदल गया। दो, तीन वैद्यक पुस्तक खरीद कर वैद्य राज वा वैद्य शास्त्री बन जाते हैं। जिस से वनस्पतियों की पहचान तो बिलकुल होती ही नहीं। पुस्तक पर से दवाओं के नाम उतार कर पन्सारियों के पास भेज देते हैं। पंसारी लोग मनमानी वनस्पति बांध कर वैद्य राज को बताते हैं।

"मीयांने चांदे चांद 'इस कहावत मुजिब वैद्य राज कह देते हैं कि हां यही है और रोगियों को देते हैं। जिससे फायदे के बदले उलटा नुकसान होता है। इस से वनस्पतियों की पहचान वैद्यक धंधा करने वालों को अवश्य होनी चाहिए। और इसका साधन केवल यही वनौषधि प्रकाश है वार्षिक मूल्य २) है संपादक को मासिक सचित्र निकालनी पड़ती है। अत. उस में होने वाले खर्चा से मूल्य ज्यादा नहीं है।"

आयुर्वेद विकाश—यह पत्र बड़ भाषा में अत्युपयोगी

और बड़ा फोटो का है। इसके संपादक श्री सुधांशु भूषण सेन गुप्त काव्य तीर्थ और प्रकाशक श्री कामिनी कुमार सेन, एम, ए, बि, एल हैं। इसके ११ अंक तक हमें प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक लेख विद्वत्ता पूर्ण और उपयोगी होता है। वार्षिक मूल्य २) आयुर्वेद विकाश पाटुया टोली ढाका से मिलता है। उक्त पत्रके संपादक वनौषधि प्रकाश के विषयमें इस प्रकार लिखते हैं—

"वनौषधि प्रकाश—सचित्र वैद्यक मासिक पत्र है। हमारी समालोचनार्थ उक्त पत्रिकाके जनवरी और फरवरी के अंक प्राप्त हुए हैं। पत्रिकाकी भाषा हिन्दी है। किंतु स्थान स्थान पर संस्कृत श्लोकादि का समावेश किया जाता है। पत्रिका के नाम से ही इसके विषय बोधगम्य हैं प्रथमांककी सूची (१) द्रव्यगुण रुद्रवंती (सचित्र) (२) मूषाकर्णी (सचित्र) (३) हाथी सूंड़ी (सचित्र) (२) परीक्षित वनौषधि प्रयोग माला, (१) अनुभूत प्रयोगार्णव (४) विषूची चिकित्सा चन्द्रोदय।

द्वितीयांककी सूची. (१) विविध समाचार (२) परीक्षित वनौषधि प्रयोग माला, (२) चक मर्द (सचित्र), (४) अनुभूत प्रयोगार्णव, (५) सन्निपात चिकित्सा चक्रवर्ती, (६) विषूची चिकित्सा चन्द्रोदय (१) प्रश्नोत्तर, द्रव्य गुणकी आलोचना इस प्रकार की गई है।

यथा—रुद्रवंती, प्रथमतः नानाशास्त्रों से संस्कृत श्लोक उद्धृत कर इसके नामका परिचय दिया गया है। फिर संस्कृत श्लोकानुयायी विस्तृत हिन्दी अनुवाद युक्त वृक्षका स्वरुपादि......वनौषधि प्रयोग माला एक क्रम प्रकाश्य ग्रंथ हैं। जिसमें भिन्न भिन्न रोगों पर प्रयोग एसे विशद भाव से वर्णन किए हैं। इसमें बहुत से अप्रचलित लता गुल्मादिके प्रयोग देखने में आते हैं। द्वितीयांक वनौषधि प्रकाश में "सन्निपात चिकित्सा चक्रवर्ती" में निदान चिकित्सादि सम्बध विषय सन्निवेशित किए हैं। इसके द्वारा

चिकित्सा वर्गको अनेक प्रकार की सुविधा होगी। संस्कृताभिज्ञ चिकित्सा वर्ग के निकट आदर लाभ करेगी। इसमें सन्देह नहीं। हम इस पत्रिका के उत्तरोत्तर श्री वृद्धि की कामना करते हैं।"

वैद्यभूषण—इस मासिकके सम्पादक कविराज वैद्यभूषण धर्म्म देव हैं, वार्षिक मूल्य १॥) रुपया। इस मासिकमें आने वाले सभी लेख उत्तम, उपयोगी, और समयोचित हैं। हम उक्त पत्रिका की सदैव उन्नति चाहते हैं। तथा आशा करते हैं कि सम्पादक महाशय ग्राहकोंकी उचित संख्या होने पर पत्रकी उन्नति दिनों दिन तत्पर रहेंगे। मिलने का पता—

मैंनेजर वैद्यभूषण गुमटी बाजार लाहौर है।

सुधानिधि—इस वैद्यक मासिक पत्रके सम्पादक सुविख्यात आ० पं० जगन्नाथजी शुक्ल, दारा गंज इलाहाबाद है। इस वर्ष से इस पत्र ने विशेष कर प्रत्येक भाव तथा आकार में अच्छी उन्नति की है। सम्मेलन अंक तो विशेष कर उत्तम था। सम्पादक महाशय "वनौषधि प्रकाश" के संबंधमें इस प्रकार लिखते है। "इसके लिये सहयोगी को बधाई है इस बार पृष्ट संख्या और चित्रों में उन्नति की है। वनौषधियों के विषयमें स्वतंत्र विचार करने वाले एक पत्र की आवश्यकता है। इस लिये सहयोगी फले फूले।"

भारत नारी हितकारी—यह मासिक पत्र, भारत वर्षकी स्त्रिसमाज में धार्मिक, लौकिक और शारीरिक, शिक्षाको प्रचार करने वाला और उपयोगी है। मूल्य १) रुपया।

पता—वैद्य जिनेश्वर दास जैन पल्लीवाल मैंनपुरी।

गौड़ हितकारी—अत्यंत आनन्द के साथ अपने जातीय पत्र गौड़हितकारीको बधाई देते हैं कि उसने पहले से अपने

आकार तथा लेख शैलीको उत्तम बनाया। ईश्वर से आशा करते हैं कि सर्वदा इस पत्रको प्रफुल्लित करे।

पता—सम्पादक "गौड हितकारी" मैनपुरी।

आयुर्वेदमें बुद्धि वर्धक प्रयोग—इस नाम का एक अत्युत्तम निबंध, व्यास पूनमचन्द तनसुख राम बोयावर (राजपुताना) की तरफ से हमें समालोचनार्थ प्राप्त हुआ, तथा इस ही निबंधकी एक प्रति धन्वंतरि के सम्पादक महाशय द्वारा वीसनगर से प्राप्त हुई है।

आयुर्वेद शास्त्र में बुद्धि बढाने वाले प्रयोग ढूढना यह एक नये ही प्रकार की चर्चा व्यास जी ने की है। इस प्रकार की पुस्तकें लिखे जाने की अति आवश्यकता है। मैं इस पुस्तक की उत्तमता मुक्त कंठ से स्वीकारे विना नहीं रहता तथा पाठको से अनुरोध करता हूँ कि उक्त पुस्तक को अवश्य अवलोकन कर व्यास जी को धन्यवाद दें।

अभिनव माधवनिदान—सान्वय सरला नामक व्याख्या और भाषानुवाद सहित। इस पुस्तक के रचियता हमारे चिर परिचित वैद्यराज पं० चिरंजीलाल शर्मा आयुर्वेद मार्तण्ड मेरठ निवासी है।

इस पुस्तक के संग्रह तथा सङ्कलन में जो तीन वर्ष तक अथाह परिश्रम तथा द्रव्यव्यय किया गया है वह अवश्य ही सराहनीय है। मुक्त कंठ से कहना पड़ता है कि आयुर्वेद संसार में यह पुस्तक भी एक अलभ्य वस्तु है। इसमें प्रत्येक शब्दके एक एक दो दो पर्य्याय शंका समाधान, समास, पाठोंकी अशुद्धि, पूर्वा पर विरोध, विविध भाषा में निदानके साथ सब रोगोंके नाम, महामारी, प्लेग, निमोनिया, पंगुज्वर, मेलेरियाज्वर, सोजाक प्रभृति आवश्यकीय रोगों का श्लोक बद्ध निदान, आदिका अच्छा संग्रह किया है। मूल्य ३) रुपया।

पता—पं० चिरंजीलाल वैद्यराज फुटा कुआ मेरठ।

आरोग्य सिन्धु।

लेखोंके लिये पुरस्कार

यह पत्र विजयगढ़ जिला अलीगढ़ से वैद्यराज राधावल्लभ के सम्पादकत्व में श्रावण सं० १९७० से निकलना प्रारम्भ हुआ है इस में प्राचीन तथा अर्वाचीन वैद्यक विषयों पर सारगर्भित लेख छपते हैं। छपाई सफाई उत्तम होती है, अनेक सहयोगियों और वैद्योंने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है आजतक ये उपयोगी लेख निकले हैं "वैद्योंमें औषधि प्रार्थना, ज्वर और लंघन, गृहस्थों सावधान मैं लेरिया और क्यूनाइन, ज्वर और गरम पानी, दोषविज्ञान, शरीर रचना डाक्टरी और आयुर्वेदीय औषधिया चिकित्सा प्रणाली, क्षयरोग, रसायन से आयुवृद्धि वैद्यों में रोगवर्णन, आयुर्वेद में भूतविद्या, मोतीज्वर, मस्तिष्क शक्तियां सचित्र,, आदि १८+२२ सायज़ अठपेजी ५ फार्म से बढ़ाकर अब ६ फार्म बढ़िया कागज पर प्रतिमास निकलते हैं तिस पर भी छपाई मात्र मू० केवल १॥-) वार्षिक है वैद्योंको तथा गृहस्थों को इसका अवश्य ग्राहक बनना चाहिये पत्र का नमूना मंगाकर देखिये॥

इसवर्ष (सन् १९१४) निम्नलिखित विषयों पर सर्वोत्तम सारगर्भित उपयोगी लेख लिखने वाले को पच्चीस रुपये का पुरस्कार दिया जावेगा जिसकी लेखकी उत्तमता के लिये ग्राहकों की अधिक सम्मतियां। औषधी-पारद, जन्तुओं से रोगोत्पत्ति, आयुर्वेदीय अस्त्रशस्त्र, ओजक्या है? शरीर रचना, भूतविद्या।

पत्र मगाने का पता—

बांकेलालगुप्ता मैनेजर आरोग्यसिन्धु कार्य्यालय

विजयगढ़ (जि० अलीगढ़)

"गौड़ हितकारी" मासिक पत्र

एक वर्ष का मूल्य १।)　　　जीवन भर का मूल्य १०)

इस नाम का मासिक पत्र गौड़ विशेष कर ब्राह्मण जाति की सेवा, सुश्रुषा, सुधार उन्नति के लिये 'श्रीमान प० नरायण प्रसादजी गौड़, मैनपुरी" द्वारा सम्पादित होकर गत सितम्बर सन् १९१२ से निकलना प्रारम्भ हुआ है।

इस में हर महीने बहुत उत्तम २ लेख, ब्राह्मण और गौड़ महानुभावों के जीवन चरित, ब्राह्मण और गौड़ जाति के सुधार के उपाय ब्राह्मण और गौड़ जाति को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने के लिये गद्य पद्य लेख तथा प्राचीन और नवीन ब्राह्मण एव गौड़ जाति के इतिहास, श्रीमती गौड़महासभा के समाचार तथा ब्राह्मण और गौड़ जाति सम्बन्धी भारतवर्ष भर के नवीन २ समाचार गौड़ जाति के विवाह योग्य लड़कों के पते सदैव प्रकाशित होते हैं और हुआ करेंगे। अतएव प्रार्थना है कि प्रत्येक ब्राह्मण सज्जन और विशेष कर समस्त गौड़ भाइयों को "गौड़हितकारी" को ब्राह्मण जाति एव गौड़ जाति का मुख्य पत्र समझ प्रीति पूर्वक इस का ग्राहक बनना और इस को प्रति मास आद्योपान्त पढ़ना तथा इस के अनुसार स्वयं चलना एव भावी सन्तानों को उसपर चलाना अपना परम कर्तव्य समझना चाहिये।

"गौड़हितकारी" ने अपना जीवन भली भांति निवाहने और आप लोगों की ठीक समय पर सेवा करने के लिये अपना निज का प्रेस यानी "नारायण प्रेस" भी बना लिया है जिस से यह भली भांति सिद्ध है कि यदि आप इसे अपनावेंगे तो यह आप की सेवा करने में कभी त्रुटि न करेगा। "गौड़हितकारी" की एक संख्या *बतौर नमूने के सब को बिना मूल्य भेजी जाती है जो चाहें सो मगा लें।*

पं० प्यारेलाल गौड़ मेनेजर "गौड़ हितकारी"

मैनपुरी यू० पी०

Printed by Bishwambhar Nath
Sharma at "Sree Madangopal" Press,
Brindaban U P

Registered No. A. 648.

सम्वत् सर २ अंक ४

वनौषधि प्रकाश।

वैद्यक

[मासिक पत्रिका]

जंगलकी जड़ी बूटियोंके रंगीन चित्र, पहचान, उपयोग प्रयोगादि, विविध वैद्यक विषय सम्पन्न हिन्दी भाषामें एक मात्र पत्रिका।

Vol. 2. | November 1914. | Issue. 4

"Banoshadhi Prakash"

(*A monthly Botanical Hindi magazine*)

Edited and published

By

V. Pt. Babu Ram Sharma

Post. Jalalabad

MEERUT.

वार्षिक मूल्य २) रु० प्रति संख्या ≡)

सचित्र

वनौषधि प्रकाश।

मासिक पत्र।

वर्ष २	नवम्बर १९१४	४ अंक

विविध समाचार।

दिल्ली षड्यन्त्रका मामला—दिल्ली षड्यन्त्रवाले मामले की अपील आगामी ४ जनवरीको पञ्जाब चीफ कोर्टमें सुनी जायगी।

आयुर्वेद सभा—उस दिन भागलपुर में बाबू सूरजमलकी धर्मशालामें आयुर्वेद सभाका वृहदधिवेशन सफलता पूर्वक हो गया बाहर से कितने ही वैद्य आये थे। आयुर्वेदकी उन्नति तथा प्रचार के सम्बन्ध में विचार हुआ।

विजय कामना—गढ़वाल ओखीमठमें श्रीमान रावल साहबकी आज्ञा से ब्रिटिश सरकारकी विजयके लिये श्री महाकालीजी की पूजा और हवन हो रहा है। रावल साहबने १०००) एकत्र कर युद्ध फण्ड में भेजे हैं।

विजय प्रार्थना—शाहजहांपुर जिले के तिलहर गांव में गत ५ नवम्बर को हिन्दुओंने एकत्र हो कर श्रीमान सम्राट की विजयके लिये ईश्वर से प्रार्थना की। ब्राह्मणोंको भोजन कराया गया।

अन्धे युवाका विवाह—कलकत्ते की किड स्ट्रीट ..... कोर्टमें एक अन्धे वरके विवाहका मुकद्दमा चलता है। ..... कहते हैं, कि विवाह हो गया है और कन्या वाले कहते नहीं। कन्याकी गवाही और जिरह इस आशयकी कि न बरात आई और न विवाह पुरोहितजीने मन्त्र किया और न मैंने जेवर कपड़े लत्ते पहने। विवाह के पूर्वकृत्य कुछ नहीं हुए; मैं कथित विवाहकी रात्रिको अपनी माताके साथ भर सोई हुई थी।

आगरे में डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर—गत .... को डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्वागत आगरे कालेज के एक बड़े जनसमूह के मध्य किया जिसमें नगरके बड़े बड़े रईस सम्मिलित हुए थे। आपको सभामें एक अभिनन्दन पत्र .... गया जिसका आपने एक मनोहर उत्तर दिया।

बङ्गाली के घर जर्मन—गत बुधवारको रामानन्द .... नामक एक बंगाली, जो नं० ८६ भाशा टोला रोड—बालीगञ्ज निवास करता है। कलकत्ते के डिपुटी कमिश्नर बहादुरके उपस्थित किया गया था। भेदिया विभागने उसका यह दिखलाया था कि वह अपने घरमें एक जर्मन का ..... पर र.... देता है। ..... पूछने पर बयान दिया कि हमने अपने म.... का महुद न नामक एक मुसलमानको ..... पर दिया था ..... उस घरको कारागृह बना लिया था और उसी के संसर्ग से जर्मन घरमें छः महीने से रहता था। चितावनी देकर वह छोड़ दिया गया।

चल पड़े—कोमागाटामारु कमिशन के सदस्य आनरेबुल सरदार दलजीत सिंह गत मंगलवार की रातको पंजाब डाकसे जालन्धर के लिये चल पड़े।

नाम और पता लिखे गये—गत सोमवारको प्रातःकाल में लाल बाजार थाना—कलकत्ते में बहुत से अरबी और यहूदी, जो तुर्की प्रजा हैं, पुलिस कमिश्नर की आज्ञानुसार उपस्थित हुये थे। वहां उन के नाम और पता ठिकाने लिख लिये गये।

निकाल दिये गये—लोकल गजट में प्रकाशित हुआ है कि हजारीबाग जिलान्तरगत, जलौनदा गांव के जंग बहादुर सिंहका पुत्र बाल मुकुन्द सिंह और हजारीबाग जिला स्कूल के प्रथम वर्गका एक छात्र बदचलनी के लिये स्कूल से गत १ ली नवम्बर से निकाल दिये गये हैं। इसी भांति पुरी जिला के सरायग्रामके बाबू चरण परीदा के पुत्र विश्वनाथ परीदा और पुरी जिला स्कूल के तीसरे वर्गका एक छात्र २ नवम्बर से बदचलनी के लिये रस्टिकेट (निकाल देना) किये गये हैं।

जञ्जीबारके मुसलमान—जञ्जीबारके सुलतान और मुसलमानों ने वृटिश राजाके प्रति राजभक्ति सूचक संवाद भेजे हैं और साइप्रस के मुसलमानों ने भी ऐसा ही किया है। सबों ने तुर्की की कारखाई की निन्दा की है।

राजभक्ति सूचक सभायें—इस सप्ताह में गिरिडिह, अलवार, सीतामढ़ी और गाजीपुरके मुसलमानोंने सभा कर वृटिश

सरकार के प्रति अटल राजभक्त बने रहने के प्रस्ताव किये और सबोंने तुर्कों की मूर्खता पर शोक प्रकट किया।

टी. पी. मित्र का देहान्त—गत मंगलवारको 'बंगाली' के प्रबन्ध कर्ता श्रीयुत तारक प्रसन्न मित्रका देहान्त हो गया। श्रीयुत मित्रका वर्षोंसे बंगाली से सम्बन्ध था। बंगालीको वर्तमान उन्नति दशा तक पहुँचाने में उनका बड़ा हाथ था। कई महीनों से वे बीमार थे। इस समय उनकी अवस्था ५० सालकी थी।

डा० जगदीश चन्द्र वसु—डा० जगदीश चन्द्र वसु कई महीने से विलायत में विज्ञान पर व्याख्यान दे रहे हैं। अभी वेकुछ दिनों और विलायत ही रहेंगे। इसकी स्वीकृति भारत मन्त्रीने दे दी है। वे अगले वर्ष मई मासमें लौटेंगे।

हिन्दू विश्वविद्यालय—भावी हिन्दू विश्वविद्यालय के सम्बन्धमें एक डेपुटेशन वाइसराय से भेंट करने वाला है जिसमें ये सज्जन होंगे—माननीय महाराज दर्भंगा, डा० रासबिहारी घोस महाराज कासिम बाजार, सर गुरुदासचन्द्र चटर्जी, सर भालचन्द्र कृष्ण (ये न गये तो मान० मि० प्रभाशंकर डी पट्टनी); माननीय सर जी० एम० चिटनवीस (अथवा मान० मि० मधोळकर), दीवान बहादुर एल० ए० गोविन्द राघवैयर (अथवा मा० मि० विजयराघव चारियर) मिसेज एनी बीसेंट, माननीय प० मदनमोहन मालवीय, मान० डाक्टर सुन्दरलाल। कुछ देशी नरेशों से भी डेपुटेशन के साथ जाने के लिये कहा जायगा।

मूंगफली

प्रश्नोत्तर।

(गतांक से आगे।)

मधुनाशिनी अर्थात् गुड़मार क्या वनस्पति है ? कहां होती है ?

फोटो और सामान्य वर्णन देना चाहिये।

कहा जाता है कि यह शर्करा का नाश करती है इसको कितने वैद्यराज मधु मेह में इसका व्यवहार करते हैं।

डा० वलवंतराय झवेरीलाल।

वैद्यभूषण कीम स्टेशन।

आम नगरके प्रसिद्ध प्रोफेसर हीराजी माधव जी के लेक्चर में विवेचित दो वनस्पतियां जिनके ऊपर "धन्वन्तरि" मासिक में भी कुछ चरचा चली है। जिनमें से एक "मधुनाशिनी" और दूसरी "रामेठा" है जिनमें मधुनाशिनी का विवरण और चित्रको हम प्रतीक्षा करते हैं कि कोई महाशय शीघ्र ही भेज देंगे। अन्यथा हम स्वयं इसके ऊपर वृहत् लेख किसी अगले अंकमें प्रकाशित करेंगे। दूसरी वनस्पति रामेठा का हमने इस अंक में संस्कृत निघंटुओं के प्रमाण सहित वर्णन किया है। सम्पादक।

लेखक अर्जुनदत्त शर्म्मा आयुर्वेद विशारद
रसायन शाला काशी।

श्रीमान् पंडित बाबू रामजी प्रणाम ! आपकी आज्ञानुसार आपके प्रश्नोंके उत्तर में लिखता हूँ यदि सब प्रश्नोंके उत्तर मुझसे नहीं लिखे जावें तो मैं अपनी क्षति नहीं समझता हूँ किन्तु अपने भाइयों की झूंठी बात लिखने से अधिक पाप मानता हूं।

(१) प्रश्न—सिंगरफ से पारद कर्षण की सब से सुगम क्या क्रिया है ?

उत्तर—जितने हिंगुलसे पारद् निकालना हो वजन में उतना ही निर्मल वस्त्र लेना चाहिये। यह आवश्यकता नहीं है कि वस्त्र नवीन ही हो, पुराने कपड़े से भी काम चल सक्ता है पर स्वच्छ होना चाहिये। ऽ१ सेर हंस पदी (बहुत नर्म जो हाथ लगाने से ही बिखर जाता है) हिंगुलको नीबूके रसमें घोट और सुखा कर कुछ इकहरे कपड़े के ऊपर पतले तौरसे बिछा दे। उस कपड़ेको धीरे २ इस प्रकार सङ्कुचितकरे कि जिसमें हिंगुलका चूर्ण इकट्ठा न होजाय। जब हिंगुल और कपड़ेका गोला बन जाय, तब बाकी कपड़ेको भी उसी गोलेके ऊपर लपेट दे। फिर उस गोलेको तागे या सुतली से बांध दे, जिससे अग्नि लगाने पर खुल न जाय। उस गोलेको लोहेके तवेके ऊपर रख दे और गोलेके चारों तरफ तवेके ऊपर पांच चार ठीकरियां लगादे, जिसमें गोला इधर उधर घसक न जाय। पश्चात् जमीन पर लम्बा चौड़ा कागज बिछा कर उसके ऊपर जमीन से चार अंगुल ऊँची दो बड़ी मम्वरी ईंट रख दे। उन ईंटोंके ऊपर गोला वाले तवेको रख दे। बाद उस गोलेमें दीया-सलाई से अग्नि लगा दे, अथवा पांच चार सुलगे हुए कोयले रख दे, और धीरे पंखे से हवा देता जाय। जब समझे कि गोलेमें अग्नि व्याप्त हो गई और बुझने की शङ्का नहीं है, तब उस तवेको नांदसे ढांक दे। नांदको ठिकरियों के ऊपर इस प्रकार रक्खे कि जिसमें नांद जमीन से आध अंगुल ऊँची रहे, जिसमें वायु और धूमका गमना गमन होता रहे। यदि वायुका सञ्चार नहीं होगा तो अग्नि बुझ जायगी। यदि नांदको आधे अंगुल से अधिक उठा देंगे तो पारद बाहर निकल जायगा। गोलेको तवेके ऊपर रखने का यह

अभिप्राय है कि अग्नि पाकर पारद तवे से रुका रहे, नीचे नहीं चला जाय। तवे को चार अंगुल ऊँची ईंटों के ऊपर रखनेका यह अभिप्राय है कि पारद उड़कर नांदमें जा लगे यदि जमीन पर तवा रख दिया जाता तो नांदके आधे अंगुल वाले नीचे के अवकाश से पारद निकल जाता। चार छः पहरके बाद नांदको ऊपर से छू कर देखले, जब बिलकुल नांद ठंडी मालूम होवे तब धीरेसे नांदको उठा कर नांदके भीतर लगे हुए पारद को कपड़े से पोंछले। जब सम्पूर्ण पारद नांद से इकट्ठा हो जाय, तब उसको किसी मिट्टीके पात्र में रख दे। और जले हुए कपड़ेको गोलेके ऊपर तथा तवेके ऊपर बिन्दु रूपसे जो पारद दीख पड़े उसको धीरे २ चतुराईके साथ झाड़ कर पात्र में रख दे। यदि किसी कारण से गोलेकी अग्नि बुझ जाय वो गोला कच्चा निकले तो उस गोलेको खोलने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु उसी गोलेके ऊपर पांच सात लपेटा देकर कपड़े को लपेट कर पश्चात् रख कर अग्नि लगादे और नांदको ढाक दे। कुल पारद निकल आने के बाद जो गोले की भस्म बच गई है, उसको हाथ से मल कर मट्टीके चौड़े पात्र में रख कर जल भर दे। जब भस्म पानीके अन्दर बैठ जाय तब धीरे २ पानीको निकालता जाय और दूसरा पानी भरता जाय। इस प्रकार पांच सात बार धोने से जो तल भागमें पारद बचे उसको भी निकाल कर रखले। भस्म के संयोग से पारद मलीन हो जाता है अतः उस पारद को किसी स्वच्छ कपड़े में रख कर निचोड़ लेने से पारद स्वच्छ हो जाता है इस रीतिसे ऽ१ सेर हिंगुल से ऽ– कमऽ१ सेर तक पारद निकल आता है यदि हिंगुल कुछ कठिन होगा तो एक सेर हिंगुलसे ऽ॥ पारद निकलेगा। इस विधिसे पारद निकालनेमें एक पैसा भी खर्च नहीं होता मरके पुराने कपड़ों से ही काम चल जाता

है परन्तु डमरूयन्त्र से उड़ा हुआ पारद अधिक गुण कारक होता है। क्योंकि अगरह संस्कारोंमें एक ऊर्द्ध पातन संस्कार भी शास्त्रकारोंने बतलाया है। डमरूयन्त्र विधि से अथवा इस गोलक विधि से निकले हुए पारद को दोला यन्त्र द्वारा नींबू का स्वरस ऽ२ सेंधा नमक ऽ१ सेर गोमूत्र ऽ४ चार सेरमें २ प्रहर अवश्य स्वेदन कर लेना चाहिये क्यों कि बिना स्वेदन किये पारद का नपुंसकत्व दोष नहीं जाता।

संग्रह श्लोकाः—

यावत्प्रमाणं दरदं गृहीतं तावत्प्रमाणं च पटं प्रगृह्य।
प्रसार्य्य चूर्णं खलु हिंगुलस्य निर्धौत वस्त्रेऽम्ल सुभा-
विलस्य ॥ १ ॥

वस्त्रं तथा कुञ्चयता बुधेन यथा नसंघात मुपैति चूर्णम्
कार्य्यं तयोर्वर्तुल गोलकं च लड्डूक वद्विगुल वस्त्रयो
स्तत् ॥ २ ॥

बद्धा पुनस्सूत्रमुखेनसम्यग् लौहस्यतापेनिदधीत धीमान्
तथा यथानैति चलत्व वृत्तिं गतिं कपालैः कतिभिः
सुरूध्य ॥ ३ ॥

वेद प्रमाणाऽङ्गुल मुच्छ्रितेद्वे द्वेष्टके भूमितले निदध्यात्
लम्बेन पत्रेण समास्तृते च तयोर्म्रृजीर्षक्षप वेशयेत॥४॥

प्रज्वाल्य दीपस्य शलाकया तत् दरोत्थनान्धा पिदधीत

यन्त्रे सुशीते स्वमेव नान्दीमुत्थाप्य गृह्णातु विशुद्ध सूतम् ॥ ५ ॥

नान्या वक्षसि मग्नं लग्नं तस्मिन्नजीप पात्रेऽपि।
गोलक मध्ये मग्नं कञ्चुक सप्तक विनाभावे ॥ ६ ॥

पारद निकालनेकी और अनेक क्रियायें रसायन सार पुस्तक में देखोगे आज कल चन्द्रप्रभा प्रेस काशीमें बम्बई टाईप से छप रहा है

(२) प्रश्न—पारद के बुभुक्षित करने की अति सुगम क्या रीति है?

उत्तर—पारद बुभुक्षित करने की तीन रीति अभी तक हमारी रसायन शाला में अनुभूत हुई हैं। जो श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार बम्बई, श्रीभारतजीवन काशी श्रीवैद्यकल्पतरु अहमदाबाद आदि अनेक समाचार पत्रों में छप चुकी हैं। और उनके ऊपर अनेक वैद्य राजों के खण्डन मण्डन भी हो चुके हैं। वेसव रीति और भी सुगमताके साथ खण्डन मण्डनके सहित रसायन सार पुस्तकमें छप रही है। जिनके संग्रह श्लोक ये हैं।

संग्रह श्लोकः—

गालितो गुलिका शेषः स्वेदो मर्दः पुनः पुनः।
यावद्भिः शेषतां यायात्ततः सम्मूर्छयेद्रसम् ॥ १ ॥
ऊर्द्ध पातन यन्त्रेण स्वर्णशेषो भवेद्यदि।
स्वेद मर्दन संस्कृत्या बुभुक्षामेति पारदः ॥ २ ॥
गालनैरूर्द्धपातैश्चेरस्वर्णं नायाति दृग्पथम्।
मूलमानश्च यत्रास्ते जानीयात्तं बुभुक्षितम् ॥ ३ ॥

बस इस से सुगम रीति मैं नहीं जानता हूँ यद्यपि शास्त्रोंमें तथा वैद्य राजोंके मुख से देखी सुनी हैं परन्तु जिसका मुझे अनुभव नहीं है उसको मैं नहीं लिखुंगा यह मेरी पहली प्रतिज्ञा है।

(३) प्रश्न—क्या ताम्रकी स्वेत भस्म अधिक गुणद् होती है? उसकी क्रिया तथा रोगोंमें अनुभूत अनुपान द्वारा सूचित करनेकी कृपा करें।

उत्तर— स्वेत भस्म की क्रिया मैं नहीं जानता हूँ। किन्तु सद्वैद्य कहते हैं कि—शुद्ध ताम्रके चूर्णको ञ्ञ ले उसके नीचे ऊपर ञ भर भिलावा और ञ भर जमा॰ गोटाके कल्क में रख कर १० बार गज पुट देनेसे कली के समान सफेद भस्म होती है। इस क्रिया को दो बार गजपुट देकर हमने भी अजमाई है कुछ सफेदी तो जरूर मालूम होती है। कौन जाने शायद दश पुट में खिल उठे सम्पूर्ण अनुभव करके आपकी सेवामें विधि पूर्वक लिखूँगा।

और कोई लोगोंका कहना है कि थूहरके दूधमें घोट २ कर ताम्र चूर्णमें १ पुट देने से चूनेके समान स्वेत वर्णकी भस्म होती है भगवान् जाने। इतना तो अपनी बुद्धि से हम भी कह सके हैं यदि उक्त कोई क्रिया से सफेद भस्म हो जावे तो अवश्य अधिक गुण कारी होगी।

प्रश्न—तबकी हड़ताल के साथ पातन तथा स्थिरी करणकी सरयुत्तम अपने हाथ से आजमाई हुई क्रिया के क्या कोई सूचित करेंगे?

उत्तर—ञ भर तबकी हरितालको ३ बार घृत कुमारी के हुगाव में घोट कर सुखावे ऐसे तीन भावना दे कर बाद तीन भावना मंदार (अर्क) के दूध की दे कर डमरू यन्त्र में रख कर ४ प्रहरकी आंच दे स्वांग शीत होने पर डमरूयन्त्रकी ऊपरकी हाण्डीमें लगे हुए

हीराके समान झलकते हुये सत्व को खुरच ले। यह हरिताल सत्व पातनकी विधि मेरी अनुभूत है।

अब शिखरी करणकी बात सुनो—शुद्ध हरिताल ऽ= लेकर तीन भावना मन्दारके दूध की देकर १ टिकिया बनाले खूब सूख जाने पर लोहे के खरल में नीचे ऊपर बिना बुझाया चूना भर कर बीचमें उस टिकिया को रख दे।

उस "लवण सुधा यन्त्र" को बड़े भारी लोहेके चूल्हे पर रख कर ऊपर से २० सेर पक्केका पत्थर रख दे। फिर चूल्हे में २ पहर तक मन्दाग्नि पर बैठाता रहे २ पहरमें पत्थरका उठना बन्द हो जायगा। फिर आनन्द से ८ दिन तक आंच लगाया करें और रात्रिमें दो ढाई प्रहरकी निद्रा भी लिया करें उस समय आंच लगाने की कोई आवश्यक्ता नहीं आठ दिनके बाद वह टिकिया सफेद हो जायगी। उस को गजपुट में फूँकने पर भी हरिताल उड़ेगी नहीं यह भी हमारी अनुभूत है। इत्यादि अनेक क्रिया हरिताल, मनः शिला, संखिया, गन्धक आदिकी तैल स्राव तथा भस्म विधि रसायन सार पुस्तकमें विस्तार रूपसे मिलेगी।

संग्रह श्लोकाः—

रसे कुमार्य्याः परिभावगंत त्रिधाथ मन्दारपयोभि रेवम्
तालस्यचूर्णं परिशोष्यघर्मे खट्वाङ्ग यन्त्रेनिहितं विदध्यात्
यामद्वयं पानकतीव्रयोगैः सत्वं भिषक् पातयतु प्रकृष्टम्।
स्वांगेऽयशीते खलु तत्र यन्त्रे ऊर्द्धस्थहण्ड्याःपरिकर्षयेत्
भरेणापि तालस्य सुधाञ्चितेन लौहेन यन्त्रेण समुत्पटेन्
संतापयेच्चाष्टदिनानि वह्नि-ज्वाला प्रयोगैः क्रम मंदतीव्रैः

प्रश्न—खपरिया क्या वस्तु है ? निश्चय रूप से उसके स्वरूप ज्ञानकी आवश्यकता है ।

उत्तर—खपरियाके विषयमें विद्वानोंके अनेक मत हैं। कोई तो कहते हैं कि—

रसको द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः ।
सदलो दर्दुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः ॥१॥
सत्वपाते शुभः पूर्वो द्वितीयश्चौषधादिषु ।
रसकः सर्वमेहघ्न कफ पित्त विनाशनः ॥२॥

इत्यादि रसरत्न समुच्चये ।

मृत्पाषाण गुडैस्तुल्य स्त्रिविधो रसको मतः ।
पीतस्तु मृत्तिका कारः श्रेष्ठस्यात्सतु पत्तलः ॥१॥

इत्यादि रस दर्पणे ।

रसकं तुत्थ भेदः स्यातखर्परं चापि तत्स्मृतम् ।
ये गुणा स्तुत्यके प्रोक्तास्ते गुणा रसके स्मृताः ॥

इति रस पद्धतौ ।

यह कथा तो शास्त्रोंकी हुई अब बाजारका हाल सुनिये। खपरिया खरिदने बाजारमें जाते है तो कोई दूकान दार काले २ लोह किट्टके समान दिखा कर कहते हैं कि यही खपरिया है और कोई २ जली हुई चूल्हे की मिट्टी के समान को ही खपरिया बतलाते हैं। और तीसरे लोग चिलमकी नली जैसीको खपरिया बतलाते है।

अब वैद्य राजोंकी बात सुनिये।—कोई तो कहते हैं कि चिलम की नली जैसी खपरिया होती है और कोई महाशय कहते है कि खपरिया आज कल मिलती ही नहीं है, और कोई कहते है कि खपरिया के स्थानमें जस्ता की भस्म डालनी चाहिये ।

वैद्य कल्पतरु आदि समाचार पत्रों में भी इसके विषयमें बहुत दिन तक चरचा चल चुकी है, अकल हैरान है। बसन्त मालती वगैरह रसोंमें अभी तक हम जस्तेकी भस्म डालते हैं हमारा यह अभिप्राय है कि विधि पूर्वक शोधन मारण किया हुआ जस्ता भी तो एक खपरियाके गुणोंके साथ मिलता जुलता ही है। देखिये कुछ न कुछ व्यवस्था करके रसायन शास्त्रीजी रसायन सार पुस्तक में लिखेंगे तब और अधिक निर्णय हो जायगा।

प्रश्न—विसूचिका रोगके चिकित्सा क्रमको जो स्वयं अनुभव किया हो प्रत्येक अनुभवी महाशयको भेजना उचित है।

उत्तर—चन्द्रोदय या स्वर्ण सिन्दूर अथवा रस सिन्दूरके समान भाग पीली संखिया-बतनी ही शुद्ध गन्धक डाल कर तीनोंको, कज्जली कर के उसको कपर मट्टी की हुई आतशी शीशीमें भर कर सर्वांगकरी भट्टी (रसायनसार पुस्तकमें सचित्र देखोगे) के ऊपर ६ घंटे आंच देने से विसूचिकादि शतघ्नी (तोप) बन कर तैयार हो जायगी। जो रोग तत्काल मारक हैं, जैसे हैजा, सन्निपात ज्वर प्लेग, आदिको यह तोप अवश्य उड़ा देती है, यह हमारा बहुत वार किया हुआ अनुभव है कोई वैद्य महाशय करले। यदि यह शतघ्नी किसी रोगमें कुंठित हो जायगी तो फिर यह मनुष्य बच भी नहीं सका। विसूचिकादि रोगोंमें इसकी मात्रा २ रत्ती-ले कर आदिके रसमें घोट कर शहतके साथ चटादे। एक एक दो २ घंटेके फांसले से चटाना दो तीन बार होता है। और अच्छा मनुष्य भी इसको १ चांवल मात्रा प्रमाण शहदके साथ खाया करे तो शरीरमें ताकत करे और मस्तिष्क स्नायुओंको मजबूत करे शुक्रको बढ़ावे।

संग्रह श्लोकाः—

चन्द्रोदयः सुवर्णाद्यः सिन्दूरः केवलोऽपिवा।

पीतमल्लेन तुल्येन गन्धेनाऽपि समेन तत् ॥२॥
संमर्घ काच कूपीस्थं यामौ पापच्यते भिषक् ।
कोष्ठर्चा सर्वार्थ कार्य्यार्थे च्छतघ्नी जायते रुजाम् ॥
निराधरी कर्षि कृतान्तरोगान्सञ्चर्स्करीति
प्रबला बलादीन् ।
धरीकरीति प्रचरी करीति जगन्ति यासौ
विचरी करीति ॥ ३ ॥

[अधिकन्तु रसायन सारे]

इयं शतघ्नी यदि कुण्ठितास्यान्नितान्तमन्तं कुरुते कृतांतः

प्रश्न—यदि डाकृटर वायु, पित्त, कफ, के क्रमको नहीं मानते तो उनके चिकित्सा क्रममें क्या त्रुटि उत्पन्न होती है ?

उत्तर—मेरे प्यारे मित्र ! यह प्रश्न ऐसा नहीं है, जिसका उत्तर बहुत विचार कर किया जाय। क्यों कि हमारे यहां आयुर्वेद के विद्यार्थियोंको प्रारम्भमें ही पढ़ाया जाता है कि—

"सर्वेषा मेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः ।
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाऽहित सेवनम् ॥"

अर्थात् वात, पित्त, कफ, जब समाय रूपेण अवस्थित रहते हैं, तब शरीरमें कोई विकार नहीं होता। परन्तु वात, पित्त कफके समान गुणक तथा प्रकृतिके विरुद्ध अहित आहाराचारादिका सेवन किया जाय तो वेही वात, पित्त कफ स्वव्यापार (सम्प्राप्ति) द्वारा अनेक रोगोंको उत्पन्न कर देते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि—

"रूक्षःशीतोलघुः सूक्ष्मश्चलोऽथ विशदःखरः" ।

"सस्नेह मुष्णं तीक्ष्णञ्च द्रवमम्लंसरंकटु"।
"गुरु शीत मृदु स्निग्धमधुर स्थिर पिच्छिलाः"।

क्रमशः इन वात, पित्त, कफके लक्षणोंको देख कर तथा वात, पित्त, कफ जन्य प्रकृति का पर्यालोचन करके तथा तदनुकूल देश कालके अनुसार वात पित्त कफ गुणमय औषधियोंको भी विचार कर जो वैद्य चिकित्सा करता है वो ही राज वैद्य है पीयूष पाणि प्राणाचार्य्य, जगद्गुरु आदि ने अनेक पदवीओंसे अलङ्कृत हो सक्ता है और उसका सत्कार मनुष्य करें इसमें कौन बड़ी बात है देवमानें ऋषिमानें विष्णुमानें और साक्षात् भगवती श्रुति भी उसकी कीर्तिको गाती फिरे। जैसा कि चरका चार्यने लिखा है—

यज्ञस्य च शिरश्छिन्नं मश्विभ्यां संधितं पुरा
प्रभिश्चान्यैश्च बहुभिः कर्मभिर्भिषगुत्तमौ
बभूवं तुर्भृशं पूज्या विन्द्रादीनां महात्मनाम्
सौत्रामण्यांच भगवानश्विभ्यां सह मोदते
अश्विभ्यां सहितः सोम मायः पिबति वासवः
अश्विभ्यां कल्पितो भागो यज्ञेषु च महर्षिभिः
अश्विना वग्निरिन्द्रश्च वेदेषु सुतरांस्तुताः
वैद्या वित्यश्विनौ देवौ पूज्येते विबुधैरपि
अजे रमैर्नित्यं सुखितै रेव माहतैः
व्याधिमृत्यु जराग्रस्तैर्दुःख प्रायैः सुखार्थिभिः
किं पुनर्भिषजो मर्त्यैः पूज्याः स्युर्नात्म शक्तितः

और जो उक्त शास्त्र मम नहीं जान कर चिकित्सा करते है। उनकी निन्दा भी शास्त्रों में इस ग्रंथकी लिखी है जैसा कि—

अज्ञात शास्त्र सद्भावा ञ्छास्त्र मात्र परायणान्।
तान्वर्जयेद्भिषक् पाशान्याशान्वैवस्वतानिव ॥१॥
ये क्रियां विक्रियां कुर्वन्त्यु पेक्षन्तेस्खलतिवा।
खादन्तिते परप्राणान्निजानि सुकृतानि च। इत्यादि

अब तो आप समझ गये होंगे कि वात पित्त कफके बिना क्रमके जाने कितनी त्रुटियां उपस्थित होती हैं। इसी वास्ते ज्वर श्वासादि रोगों में डाक्टरों को पड़े २ सखलना सभी लोगोंको अनुभूत है। हां इतना कह सक्ते हैं कि उनकी शस्त्र क्रिया बहुत उत्तम है। जिससे उनका प्रताप जागरुक है। खेदके साथ लिखना पड़ता है कि अस्मदादि वैद्य लोगोंने उसको हस्तगत नहीं किया है। इसी लिये उतने अंशमें मौनावलम्बन करना पड़ता है आयुर्वेद महार्णवसे निकले हुए रत्न आज घर २ में बिखरे हुए पड़े हैं जिनको हस्तगत करके घर बैठी हुई बुढ़िया स्त्री भी इलाज कर रही है क्या यह विषय किसी परीक्षकके परोक्ष है?

१० प्रश्न—देशी वनस्पतियों की सत्वाकर्षण पद्धतिसे सूचित कीजिये।

उत्तर—मैं समस्त वनस्पतियोंकी सत्व कर्षण पद्धतिको तो नहीं जानता हूँ परन्तु गुरुचका सत्व मैं इस प्रकार निकालता हूँ; गुरुच मोटी २ डंडियोंके छिलका को खुरच कर उतार डाले। फिर सबको पानीमें धोकर साफ कर डाले। बाद लोहेके खरल में उनको कूट कर पानीसे भरी हुई मिट्टी की नांद में धो डाले और फिर कूट कर उसी पानी में धोवे। तीन चार बार ऐसा करने से गुरुच का सर्व सत्व पानीमें घुल जायगा। पश्चात् ६ घण्टे तक उस नांदको यों ही छोड़दे। बाद धीरे २ पानी को मन्दी धारसे

निकालता जाय। और नांदको टेढ़ी करता जाय। नांदके पेंदेमें जमा हुआ गडूचीका सत्व मिलैगा उसको सुखा कर रख छोड़े। यह बहुत अच्छी चीज है। मैं अनुमान करता हूँ प्राय इसी प्रकार अन्य भी औषधियोंका सत्व निकल सकैगा। यह कुछ इतनी कठिन बात नहीं है कि जिसके सिर होने पर भी मनुष्य कृत कार्य नहीं होसके।

आपके षष्ट और सप्तम प्रश्नके उत्तरको अनुभूत करके लिख सक्ता हूँ क्यों कि बिना अनुभव किये लिखने की मेरी आदत नहीं है

इति शम्।

लेखक अर्जुनदत्त शर्म्मा आयुर्वेद विशारद
मैनेजर रसानशाला बनारस सिटी।

आसवारिष्ट विधि ।

आसवारिष्टयोर्लक्षणम् ।

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धः मद्य स आसवः ॥
अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्यात्तयोर्मानं पलोन्मितम् ॥

अन्यञ्च

द्रव्यापरिश्रुत्य कृतंमद्यमासवः ॥
द्रव्याग्निनिः क्वाथ्य कृतं मद्य मरिष्टः ॥

अपक्व औषधियों और जल से जो मद्य सिद्ध होता है उसको आसव कहते हैं। औषधियों के क्वाथ से बने हुए मद्यको अरिष्ट कहते हैं।

सामान्य तोऽरिष्ट विधिः ।

आसव करणेतु जलादौ द्रवेएव गुडादीनि प्रक्षिप्य संधानं न क्वाथ करणं। शेषं अरिष्ट वत् ॥

क्वाथ्य द्रव्याणि द्राक्षादीनि यथोक्त मानेनेक्षे निष्क्वाथ्य वस्त्र पूतं विधाय गुडादिकं धातकी कुसुमादिक च यथोक्त मानेन प्रक्षिप्यघृत भावित्त दृढे मृण्मये कुम्भे यावदर्ध प्रपूर्य्य पक्ष मासं वा भूमौ स्थाप्य जात रसे उद्धृत्य वस्त्र गालितं कृत्वा

उपयुञ्जियादित्यरिष्ट विधिः ।

द्राक्षादि द्रव्योंका काढा करके कपड़े में उसको छान कर गुड़

धायके फूलादि यथोक्त परिमाण से डाल कर मिट्टीके बड़े घड़ेको घृत से लिप्त कर क्राथ से आधा पूर्ण करे एक मास वा पक्ष भूमिमें रखने के पश्चात् कपड़े में छान कर व्यवहार करें। यदि आसव बनाना हो तो क्वाथ न करना चाहिये किन्तु सूखी औषधियोंको कूट कर डालना चाहिये।

अनुक्त मानारिष्टेषु द्रव द्रोणे गुडातुलाम्।
क्षौद्रंक्षिपेद्गुडादर्द्ध प्रक्षेपं दशमांशिकम्॥

अरिष्टमें परिमाण न लिखा हो तो जल ३२ सेर गुड़ साढ़े बारह सेर मधु ६ सेर एक पाव औषधि द्रव्य १ सेर १ पाव लेना उचित है। प्रायः वैद्य आसवारिष्ट बनाया करते हैं और इनके नियम सम्पूर्णता से न जानने के कारण अरिष्टों अथवा आसवोंमें अमल रस होकर गुणकी हानी हो नहीं हो जाती किन्तु उनमें विपरीत गुण हो जाते हैं।

विनष्ट मम्लतां याति मद्यं वा मधुर द्रवः।
विनष्टः सन्धितो व यस्तु तच्छुक्त मभि धीयते॥
अन्यच्च। सर्वं पश्च रसं मद्यं कालान्तर वशाद्यदा
व्यक्तान्य रस मल्मत्वं याति शुक्तं तदोच्यते॥

अर्थात् विनष्ट होकर अम्लता को प्राप्त होने से उसको शुक्त (Yinegar) कहते हैं।

निम्नलिखित विवेचना से वैद्य महाशयों को प्रकट हो जावेगा *कि किन किन त्रुटियों से आसवारिष्ट विनष्ट हो जाते हैं* और किन किन नियमों से उत्तम बनते हैं।

एक क्रिया विशेष की उत्पत्ति जिसे कि सन्धेयन कहते हैं आसव रिष्टके बनाने में अत्यावश्यक है—

"उत्सेचन"

पहिले हमें जानना चाहिए कि उत्सेचन किसे कहते हैं।

F. B. Wright in "Distillation of alchohal" में कहते हैं। Fermentation is a spontaneous Change undergone, under certain, conditions by any animalar vegitable substance, under the influence of ferments, by which are produced other substances not arigmally found in it.

अर्थात् एक स्वतः होने वाला परिवर्तन है जो कि कई एक अवस्थाओंमें होता है और यह उन प्राणिज उद्भिद द्रव्योंमें होता है जो कि किण्व या अन्यान्य आसवोत्पादक द्रव्योंके आश्रय हों और जिस परिवर्तनसे उस द्रव्यमें अन्यान्य द्रव्य बन जावें जो पहिले उस में न हों। प्रधानता से चार प्रकार का उत्सेचन होता है।

(१) आसव सम्बन्धीय।

(२) शुक्त सम्बन्धीय।

(३) दुग्धाम्ल सम्बन्धीय।

(४) लालसिक या पिच्छल।

हमें इस निबन्धमें यद्यपि आसव संबंधी उत्सेचन से ही प्रयोजन है, परन्तु आसव अन्यान्य उत्सेचनों में परिणित न हो जावे इस कारण वैद्यों को सावधानता आवश्यक है।

साधारण मद्यों का उत्सेचन और आसवारिष्ट के उत्सेचनके लक्षण एक ही प्रकार के होते हैं।

उत्सेचन के समय में अल्पता या अधिकता ही होती है।

उत्सेचन के लक्षणों के विषय में एक और ग्रंथकार लिखते हैं।

"In a short time 'bubbles of gas will be seen to rise from all parts of this liquor. Aring of birth will form, at first round the edge, then gradually increasing and spread in till meets in the center, and the whole surface becomes covered with a white cremy form.

These bubbles rise and break in such number that they emit a law hissing sound.

The white form continue to increase in thickness breaking into little pointed heaps of brownish line on the surface and edges.

The yeast gradually thickens, and finally forms a tough, viscid crost which when fermentation slackens, breaks and falls to the bottom.

In most cases this must be prevented by skimming it off as soon as the fermentation is complete, which will be indicated by the liquor becoming clear and the stopping of the hissing noise.

अर्थात् कुछ कालके अनन्तर द्रवके सब अंशोसे वाष्पके बुदबुदों वा अम्बु स्फोटों की उत्पत्ति होगी। फेन चक्र सदृश उत्पन्न होगा प्रथम फेन पात्र से संलग्न होगा, फिर बढते बढते मध्य देश. में आजायेगा तब नवनीत वत् फेन समस्त द्रव के ऊपर आच्छादित हो जावेगा।

बुदबुद इतने अधिक उत्पन्न होते हैं और विलीन होते हैं, कि अद्भुत शब्द विशेष की उत्पत्ति होती है।

श्वेत वर्ण का फेन अधिक होता है जिसके चारों ओर और मध्य में किसी किसी उच्चस्थान पर के फेन किंचित कापश वर्ण होता है। किण्व अथवा सुराबीज क्रमशः स्थूलतर होता है। यह किण्व संग्रह, जब कि उत्सेचन बन्द हो जाता है। तो अधः पतित हो जाता है।

इस किण्व के अधः- पतित होने को सर्वदा निवारण करना उचित द्रवको तत्काल ही छान लें जब कि उत्सेचन सम्पूर्ण हो चुका हो। उत्सेचन के सम्पूर्ण होनेके दो लक्षण हैं। (१) द्रव का स्वच्छ हो जाना। (२) शब्दका विराम होना। पांच द्रव्योंके मिलित होने पर उत्सेचन हो कर अरिष्ट अथवा आसव बनता है। इनकी उपस्थिति अत्यावश्यक है, इनमें से एक के न रहने पर भी उत्सेचन क्रिया नहीं हो सकेगी यह द्रव्य यह हैं।

(१) शर्करा, गुड़, अथवा, मधु।

(२) जल।

(३) किण्व (सुराबीज) अथवा अन्य कोई द्रव्य जिस से उत्सेचन हो सके।

(४) उष्णता।

(५) वायु।

अब हम प्रत्येक के कर्म्मको निर्देश करते हैं।

शर्करादि—शर्करा, गुड़, अथवा मधु जब जलमें द्रव हो जाते और किण्वादि से मिश्रित होते हैं, तो यह द्रव्यांतर में परिणित होते हैं कोहलसार (Alchohal) की उत्पत्ति होती है। और अङ्गाराम्ल वाष्प (Carbonic anhydride) निकलता रहता है।

उत्सेचन से पूर्व शर्करादि को द्राक्षा शर्करा (Glucose) परिणित होना आवश्यक है। यह बहुत रीतियों से हो सकता है। शर्करादि अथवा शर्करा संयुक्त द्रव्योंको यथोक्त जलक साथ अग्नि से पाक करने से किण्वादि के मिलने से अथवा शर्करा जलके साथ मिश्रित रहने पर अन्यान्य अनेक कारणों से हो सकता है। ८८ भाग जल वा द्रवमें १२ भाग शर्करा मिलाना आवश्यक है। इससे अधिक शर्करा प्रायः उत्सेचन क्रियाको रोक देता है। यदि शर्करा मिश्रित जल में शर्कराद्रव का तृतियांश हो तो किण्वके डालने पर भी उत्सेचन क्रिया न होगी क्यों कि वे धान्यादि से ही प्रायः मद्य बनाते हैं।

जल—शर्करादि के द्रव करने के लिये जल का अंश भी यथोपयुक्त होना उचित है। इस पर उत्सेचन क्रिया का ठीक होना निर्भर है। और जलके परिमाण के अनुसार ही उत्सेचन का समय निश्चित हो सकता। जल का पवित्र, स्वच्छ और निर्मल होना अत्यावश्यक है, और इसमें क्षारांश अत्यल्प होना चाहिए। जल अग्नि पूत हो तो सर्वोत्कृष्ट होता है।

किण्वादि द्रव्य।—मद्य बनाने के समय ऊर्द्ध गत फेनको यंत्र में निष्पीडित करने पर जो द्रव्य रह जाता है उसको किण्व कहते है। किण्व वा अन्यान्य आसवोत्पादक द्रव्य ऐसी अवस्था में होती है कि उनके अंश द्रव्यान्तर में परिणित हो रहे हों। और उसके परमाणु अस्थिर वा गतियुक्त होते हैं।

जल युक्त शर्कराके मिलने से वह इनके परमाणुओं में भी उत्सेचन करके कोहल सार (alcohol) की उत्पत्ति करते हैं। और पात्रके ऊपर से अङ्गाराम्लवाष्प निकलना आरम्भ होता है। द्राक्षा खजूर कोलादिमें स्वाभाविक आसवोत्पादक पदार्थ वर्तमान है।

इस लिए किण्व या सुरा बीजके डालने की आवश्यकता नहीं। धातकी पुष्प भी कार्य्य साधक है। और इस लिए आयुर्वेदमें इस का व्यवहार पाया जाता है।

उष्णता।—उष्णता भी जलकी तरह उत्सेचनार्थ आवश्यक है। इसकी अल्पता वा अधिकता से उत्सेचन क्रिया शीघ्रता से होती है वा रुक सकती है। ८२ से ८६ दर्जे (फारन हीट) तक अच्छी तरह से उत्सेचन होता है, उस से अधिक ताप नहीं होना चाहिए। यदि हो जाय तो विनष्ट होकर शुक्त (सिरका) हो जावेगा।

वायु।—यद्यपि वायुकी आरम्भमें आवश्यकता होती है तदन्तर न केवल अनावश्यक ही है किन्तु निरन्तर इसका लगना हानिकारक होता है।

इस लिये उत्सेचन के आरम्भ होते ही पात्र के मुखको बन्द कर देना उचित है। ताकि वायु का स्पर्श न हो सके। द्रव्यके ऊपर संचित बाष्प को भी हिलाना उचित नहीं, क्यों कि वायुके स्पर्श से आसव के स्थान में शुक्त का उत्सेचन (acetic fermentation) आरम्भ हो जावेगा। उत्सेचन का प्रयोजन शर्करा जो कि द्राक्षा शर्करा में परिणित हो चुका है। उसको उत्सेचन क्रिया से कोहल सार (जो कि जलमें द्रव हो जाता है) में परिणित करना और अङ्गाराम्लवाष्प का निष्कासित करना है।

आसवारिष्ट बनाने में सावधानी।

(१) पात्र मिट्टीका चीच से कांच लिप्त हो तो अच्छा है अथवा चीनी (Porcelain) का अथवा इनके अभाव में मिट्टीका। सरल काष्ठके पात्र में भी अरिष्ट या आसव बन सकते हैं। परन्तु

पूर्वोक्त पात्र ही व्यवहार में लाने चाहिये क्योंकि सर्वत्र सुलभ है। काष्ठ पात्रको शुद्ध करना भी कठिन होता है।

(२) पहिले पात्रको जल मिश्रित गन्धक द्रावक (Sulphuric acid) (जल ९५ भाग गन्धक द्राव ५ भा०) से धोडालें फिर गरम जल से धोकर चूर्णोदक (चूनेके पानी) से अच्छी तरह धो डालें। गंधक द्रावक से धोनेका तात्पर्य यह है कि आसवारिष्ट (दुग्धाम्ल lactic acid) में परिणित न होजावे। चूर्णोदक द्वारा धोने से अम्लता सम्पूर्ण विनष्ट होती है। और इससे शुक्त में परिणित नहीं हो सकती। यदि किञ्चिन्मात्र भी अम्लता रह जावे तो क्रमशः शुक्त बन जावेगा। यदि काष्ठके पात्रको व्यवहार करना हो तो प्रथम उसको अलसी के तैल से सिक्त कर लेना उचित है।

(३) जल, शर्करादि और किण्व (अथवा द्राक्षा, कोल, धात की पुष्प) यथोप युक्त मात्रा में होने चाहियें।

(४) किसी भी आसव के बनाते समय उसके रस अथवा काढ़े को गुड़ अथवा शहद मिला कर चौड़े मुँह के बर्तन या अमृतबाण में रख इसका मुँह ढीला रक्खे।

जिससे १५ दिनों में (Carbonic acid gass) पैदा होकर निकल जाय। इसके बाद बर्तन का मुँह मजबूत बंद कर उसे तीन महीने तक पड़ा रहने दें।

(५) उत्सेचन आरम्भ होने पर पात्र के बीच से शब्द सुना जाता है। उस शब्द के बन्द होते ही तत्काल द्रव को छान के बोतलों में बन्द करना उचित है। यदि उस समय छान कर बोतलों में बन्द न किया जाय तो इसके अनन्तर शुक्तिमें परिणित हो जाने की सम्भावना है।

यदि होना आरम्भ हो गया हो तो पुनः शब्द आरम्भ होता है, और द्रवके ऊपर पिच्छल रोटीके सदृश पदार्थ जम जावेगा, आसव का स्वाद जाता रहेगा और अम्लता होकर आसव बिगड़ जावेगा।

(६) प्रायः ग्रीष्मकाल में ६ दिन में वर्षा और शीतकाल में ८ दिन में आसवारिष्ट बन जाते हैं। किंतु प्रथम बार शब्दके बन्द होने पर ही छान लेना उचित है। उस समय आसव स्वच्छ भी हो जावेगा।

इसमें प्रमाण भी है।

घनात्यये तथा ग्रीष्मे सन्धानं षड् दिनं भवेत्।
हेमन्ते शिशिरे स्याप्यं भिषक् इषदि तेन वै॥
प्रावृड् वसन्ते सन्धानं भवेदष्ट दिनैर्नवै।
कृत्वा सप्त दिनं शीते काले चोष्ण मये तथा॥
यावद्दिनानि श्रीणिस्युः पश्चाद्धाडं समुद्धरेत्।

(१) सुगन्धित पदार्थ बोतलों में बन्द करने के समय ही डालें। प्रथम डालने से अङ्गाराम्ल वाष्प के निकलने के साथ ही सुगन्ध का भी नाश हो जायगा।

(२) कारबोलिक एसिड गेस पैदा हुई या नहीं। इसकी पहचान के लिये बरतनके मुँहके पास नित्य चिराग की बत्ती जला कर ले जानी चाहिए। यदि वह बुझजाय तो समझले कि कार बोलिक एसिड गेस पैदा हो गया।

(३) जब जाने कि बत्ती बुझनी बंद हो गई, तो समझें कि अब गेस पैदा होना बंद हो गया है।

मेष शृंगी ।

हि० मेढ़ा सींगी, मेषा सींगी ।

बंगला—मेरा सृंगी ।

बंबई—मेढ़ा शींगी ।

केनाड़यन—केनाजल ।

सीलोन—चीन्तुत ।

दक्षिण प्रदेश—पट पत्र ।

मारवाड़ प्रांत—कावली बांकड़ी ।

तामील—शीरू करंज ।

लेटिन—Gymnema Sylvestre, Asclepias Geminate.

तेलगु—पाड़ोपत्र ।

उत्पत्ति स्थान—दक्षिण प्रांत, बंगाल, नेपाल, आसाम, पूर्व आफ्रिका ।

सामान्य विवरण ।

इसके वृक्ष ५ से १० फीट तक ऊँचे होते हैं ।

इसके पत्र ४ से ५ इंच लंबे गोल और हरे रंगके होते हैं । इसके फूल पीले फल मेंढ़ेके सींगकी सदृश होते हैं । जिससे इसका नाम मेढ़ा सींगी पड़ा है ।

इसकी जड़ अंगुली जैसी लम्बी, स्वादमें कड़वी क्षारयुक्त होती है ।

इसकी छाल काली भूरे रंगकी स्वादमें कटु और क्षारकी सदृश लगती है ।

मेषा सींगी की पत्र और त्वचामें निम्न दर्शित तत्व विद्यमान हैं

चीकाशदार तत्व। कटु (Bitter) तत्व।

अल्ब्युमेन। रंग देने वाला कषाय।

इसके सिवाय पेरेलीन, ग्लुकोझ, कारबो हाईड्रेडिस, टार्टरीक और कई एक अंशमें चुना (Calcuem) का भी तत्व है।

औषधि प्रयोग।

(१) इसकी छाल और पत्तोंका काढ़ा निम्न वर्णित प्रमाण से व्यवहार किया जाता है।

४ तो० पत्र और त्वचाका चूर्ण ४० तोले जलमें गरम करना, दो तीन उफान आने पर छान कर मात्रा २ तो० तक देना।

(२) इसकी जड़की त्वचाका चूर्ण देना।

इसके पत्ते और त्वचा आदिका क्वाथ व्यवहार करने से, हृदय पुष्टी, शांति, ज्वर, कफ आदि पर प्रशस्त है।

इसकी जड़ और छालका अगर कोई भी अंग जलके साथ घिस कर गांठ (Boils) शोफ (Swellings) और सर्प, बिच्छु आदिके विष पर व्यवहार करने से बड़ा गुण होता है।

यहांके लोग सब तरहके भीतरी अथवा बाहरी सोजे पर जलके साथ घिस कर लगाते हैं और इससे बहुत फायदा होता है।

डा० बलवंतराय झमेरीलाल, वैद्यभूषण।

रामठा।

दग्धा दग्धरुहा प्रोक्ता दग्धिकाच स्थंडेरुहा।
रोमशाकर्कशदला भस्म रोहा सुदग्धिका॥
रामठी, काण्डीर भेदः।
यदाह वाप्पचन्द्रः॥
हरितो द्विविधः प्रोक्तो काण्डीरस्तत्त्व दर्शिभिः॥
कटुकं कट देशादौ भक्ष्यन्त्याम मेव तु॥
द्वितीयस्तु द्वोद्भवो रामठेति च गीयते॥

संस्कृत—दग्धा, दग्धरुहा, दग्धिका, स्थण्डेरुहा, रोमशा, कर्कशदला, भस्मरोहा, सुदग्धिका।

हिं०—रामठा।

म०—रामेठा, रामेठो।

गु०—रामेठा।

लेटिन—Lasiosiphoneriocephalus.

क० कुरुड वृक्ष।

वर्णन—यह वृक्ष कोकणसे नीलगिरी तक दक्षण में उत्पन्न होता है। महाबलेश्वर, माथेरान, खंडाळा, कारला इत्यादिमें, गुफाओं के इधर उधर बहुतायत से उत्पन्न होता है।

इसके वृक्ष साधारण रीति से २ से ६ फीट तक ऊंचे बढ़ते हैं। यह घनी शाखाओं युक्त, होता है। पत्र अनियमित २ से ३ इंच लम्बे ॥। से १ इंच तक चौड़े भेह्राकृति के डंठे गोल होते हैं।

फूल बहुधा शाखाओंके निकट छत्राकार गुच्छों युक्त पीले रंगके रस वगैरः अनेक बीजों वाले अति शोभाय मान होते हैं। इसके पत्र और पुष्प गुच्छ सूक्ष्म रोमावरणावेष्ठित होते हैं।

गुण दोष—दग्धा कटुः कषायोष्णा कफ वात निकृन्तनी

पित्त प्रकोपनी सा च रूपे वैश्वाग्नि दीपिनी।

दग्ध करने वाली, कड़वी, कषाय, उष्ण, कफ वायुको दूर करने वाली, पित्त प्रकोपनी और अग्निको तीव्र करने वाली है।

कफानिलघ्नं.........रामठी देव सर्षपा.........इत्यादि।

सिद्ध मंत्र निघंटुमें कफ वायुको दूर करने वाली लिखा है।

Bombay Gazetter vol XXV Botany P. 268. The leaves are said to be aorid and poisonous, and to affect man as well as fish. The bark is used in poisioning fish-

डाक्टर (Dymock) ने लिखा है—

The bark of Rametha is a Pow erful vescicant.

डाक्टर (Sakharam Arjun) ने लिखा है—

Bark is said to be caustic.

डाक्टर (R. N. Khory) ने लिखा है—

रामेठा—Bark is used as a vesicatory and alsd a masti catory.

As a masti catory it should be used with caution.

The bark if *freelly chewed causes looseness of* teeth and spupungyness of the gums.

Natives use the stem to procure abortion.

सं· वाराहीकंद

बीज—जब काले दाने के बीज कच्चे होते हैं। तो बाहर से धोले और भीतर से हरे होते हैं। किंतु पकने पर काले रंगके त्रिकोणाकृति १ रेखा से १॥ रेखा लम्बे ॥ रेखा चौड़े बारीक कणोंसे कोरों पर युक्त होते हैं। इसके बीजोंको ही काला दाना कहते हैं।

उपयोगी अंग—पत्र और बीज हैं।

गुण दोष—कृष्ण बीजं सरं स्निग्धं शोथोदर हरं परम्।
ज्वर विष्टम्भ हारीच मस्तकामय नाशनं॥
उदावर्ते कफेनाह्रे प्रयोज्यं बुद्धि मत्तरैः।
(शालिगराम निघन्टु)

रेचनं श्याम बीजं स्यात् शोथोदर विनाशनम्॥
ज्वरे पुरीष संरोधे दारुणे शिर सो गदे॥
उदावर्ते तथा नाहे बुधै रेतत् प्रयुज्यते॥
(आयुर्वेद विज्ञान)

अर्थात्—कालादाना रेचक, स्निग्ध, शोथ, उदर रोग हर, ज्वर, बद्राध्मान, शिरः पीड़ा, उदावर्त, कफ रोग और अफारा नाशक है।
(शालिग्राम निघंटु)

कालादाना, रेचक, शोथोदर नाशक, ज्वर, मल बद्धता दारुण शिरः पीड़ा, उदावर्त, आनाह, रोग पर देना चाहिये।
(आयुर्वेद विज्ञान)

कालादाना—छोटा बड़ा दो जातिका होता है। दवामें बरतने के लिये छोटा बीज अच्छा होता है। काले दानेका चूर्ण मिर्च के चूर्ण की तरह देखनेमें होता है। स्वाद कुछेक मीठा होता है। चूर्णको फंकी मारनेसे वह मुँह भरमें चिपक जाता है।

काले दानेका मुख्य गुण रेचक है। इसमें विशेषता यह है कि बहुत शीघ्र दस्त लगता है। तिस पर भी किसी प्रकारके दुर्गुण की आशंका नहीं। जमाल गोटे या जलाप नामकी जो तीव्र रेचक दवा हैं उनसे रेचक गुणों में यह किसी भी अंश में कम नहीं।

किंतु इसमें यह विशेष लाभहै कि जमाल गोटा या जलापमें जो कितने ही दोष हैं वह इस से कदापि होने संभव नहीं। रेचक तरीके से मलावरोध, अजीर्ण, कृतोदर, जलोदर, शोथ, आदि रोगोंमें देना चाहिए पेटमें किसी प्रकारका गुल्म हो अथवा मस्तकमें रक्त चढ़ा हो तो, कालादाना देना उचित है। समस्त शरीर के सोजे में भी इसका रेच गुणद है।

Action and uses.

Drastic, 'purgative, and anthel mentic used in constipation. (R. N. Khory Vol. II P. 417)

Constituents

A thick oil 14. 4. P. C. mucilage, olbuminous matter in tannin, and Pharhits an active resinous principle, identical with convol vulin, a light yellowish friable mass, of a nause ous, actrid taste, and on unpleasant adour, soluble in alchohol and insoluble in ether, benzol, chloroform, and sulphido of carbon,

प्रयोग—कृष्ण बीजादि चूर्ण। काला दाना ५ तो० सेंधा नमक २ तो० सोंठ १ तो० इसको बारीक पीस कर रखना, मलावरोध अजीर्णादि पर गरम जलके साथ देना।

(२) यकृतकी शिथिलता से जो कोष्ट बध्द हो जाता है उस को मिटाने के लिये इसके बीजोंका सत्व अति उपयोगी है।

(३) अंतड़ियोंके शोथ वाले रोगी को इसका विरेचन नहीं देना चाहिये।

वाराही कंद।

वाराही सूकरी क्रोड कन्या गृष्टिश्च गृष्टिका।
कन्याविष्वक् सेन कांता वाराही ब्रह्मपुत्रिका॥
क्रोडी त्रिनेत्र कौमारी माधवेष्टा महौषधिः।
क्रोडो सूकरकन्दश्च वन्यश्च कुष्ट नाशनः॥
वनवासी महावीर्य्यो तथा शबर कन्दकः।
वराहकन्दो वरिश्च ब्राह्म कंदः सुकंदकः॥
वृद्धि दो व्याधि हंता च त्वमृतो राजनामकै।
माधवी सौकरी कांतिः कांता च वनमालिनी॥
वक्रालुः श्वास कंदश्च सौकरी 'कैयदेवके'
प्रष्ठे तु शाबरी कंदः किटिः क्रोडा च 'मादने'
तथा कांक्षी च संप्रोक्ता गणा नाम निघंटके।
विष्वक्सेन प्रिया चैव भद्रादिरमरे स्मृता॥

संस्कृत नाम—वाराही (१) सूकरी (२) क्रोडकन्या (३) गृष्टि (४) गृष्टिका (५) कन्या (६) विष्वक्सेन (७) वाराही (८) ब्रह्म पुत्रिका (९) क्राड्री (१०) त्रिनेत्रा (११) कौमारि (१२) माधवेष्टा (१३) महौषधि (१४) क्रोड् (१५) सूकर कन्द (१६) कुष्ट नाशन (१७) वनवासी महा वीर्य (१८) शबर कन्द (१९) वीर (२०) ब्रह्म कंद (२०) सुकन्दक (२१) वृद्धिद (२२) व्याधि हन्ता (२३) अमृत (२४) (राज निघण्टु)

माधवी (२५) सौकरी (२६) कांता (२७) कांती (२८) वनमालिनि (२८) वक्रालु (२९) वराहकंद (३०) शौकरी। (कैयदेव निघंटु)

हिं० वाराही कन्द।

गु० वाराही कन्द।

बं० चामालु, सुवरि आलु।

कं० हन्दगेड्डे (गड्डे)

ते० शास दुंपी चेट्टु, तेल ताडि चेट्टु।

लेटिन—Batatas paniculata. Ipomea Digitata.

वर्णन—शाक कर्कश वाराह वृषणाकार कन्दका।

ताम्बूल वल्लीच्छद बह्माराही गृष्टिकोच्यते॥

इसकी बेलें होती हैं, यह जमीन पर फेलती हैं। प्रायः ऊँची बड़े बड़े पहाड़ोंमें यह स्वयं उत्पन्न हो जाती है। अत्र प्राय देशमें भी यह बेलें बहुत होती है।

कंद—इस बेलके पत्ते पानके पत्तोंकी सदृश भागमें सामने पान के आकार के गहरे हरे रंगके होते है। पत्तोंके डंठल बन्न से ऊंचे होते है।

उन पर शाक सदृश नसें होती हैं फूलोंके गुच्छे लगते हैं। इस का कंद एक हाथ गहरी पृथ्वी खोदने से निकलता है। इसका आकार किसी कदर वृषण के सदृश होता है। इसके ऊपर सूकर के से कड़े बाल होते हैं। इसका मुँह और सिर सूकर के आकार से मिलता है। और ये कन्द कदाचित सूकरको भी प्रिय हो। इसी कारण इसके समार्थक दूसरे नाम दिये गए हैं।

इसकी एक और जाति होती है। जिसके लक्षण भहाव संग्रह में इस प्रकार लिखे हैं।

सं० ‾ङम हि० केसर

केसर।

काश्मीरजं तु काश्मीरं कुंकुमम् त्वग्नि शेखरं ।
असृग्वरं शठं रक्तं बाल्हिकं शोणितं मतं ॥
पीतकं रुधिरं गौरं कांतं वन्हि शिखं तथा ।
घुसृणं पिशुनं चैव वरेण्यं त्वरुणं स्मृतम् ॥
कालेयकं जागुडं च स्यात् केसरं वरं 'नृपे' ।
अस्रं चारू च संकोचं संप्रोक्ता 'धन्व' नामके ॥
काश्मीर जन्माग्निशिखं धीरं लोहित चन्दनं ।
बाल्हिकं पीतनं 'कोशे' त्वस्राह्वं 'मदनपालके'
वरेण्य पीतं तु संप्रोक्ते तथैव वरयोनिकं ।
सौरभं केसरं घस्रं दीपिकं कुंसुमात्मकं ॥

संस्कृतः—काश्मीरजं (१) काश्मीरं (२) कुंकुम (३) अग्निशेखर (४) असृग्वर (५) शठं (६) रक्तं (७) बाल्हिकं (८) शोणित (९) पीतक (१०) रुधिर (११) गौर (१२) कांत (१३) वन्हिशिख (१४) घुसृण (घुणसे + तृण) (१५) पिशुन (१६) वरेण्य (१७) अरुण (१८) कालेयक (१९) जागुड़ (२०)। [राज निघन्टु]

अस्र (२१) चारु (२२) संकोच (२३)। [धन्व निघन्टु]

काश्मीर जन्म (२४) अग्निशिख (२५) धीर (२६) लोहित चंदन (२७) बाल्हिक (२८) पीत (२९)। [कोश निघंटु]

अस्राह्व (३०) [मदनपाल निघंटु]

उत्पत्तिबोधक संज्ञा। काश्मीरम् 'वाल्हिक'

N. O. Irideno,

म०—केशर।	हि०—केसर।
कर्णा०—कुंकुमाइड्।	गु०—केशर।
बं०—कुंकुम्।	फा०—जरकोमस।
द्रा०—कुकुमप्पु।	पं०—केसर।
ता०—कुगुपु।	अर्वी—जाफरान्।
इंग्रे०—Saffron सेफर्न।	ले०—Crocus Sativus,

विवरण—उद्भिजौषधि समूह में केसर एक श्रेष्ठ और सर्वापेक्षा मूल्यवान पदार्थ है, यह गन्ध गुणादि में कस्तूरी से दूसरे दर्जेकी वस्तु है। काव्यादि साहित्य ग्रन्थोंमें सुसमालोचित, मनुष्योंके बहु कार्य्य कर विलासोपयोगी वस्तु है।

इसके क्षुप सकल प्रदेशों में उत्पन्न नहीं होते, किंतु कहीं कहीं शीत प्रधान प्रदेश कन्दोंमें पाई जाती है। भारतवर्षमें केवल काश्मीर देशमें ही केशर की उत्पत्ति सुनी जाती है।

इसी कारण इसका नाम काश्मीरज सार्थक होता है। इतिहास वेत्ताओं ने काश्मीरको 'भूस्वर्ग' कह कर संकेत किया है। आयुर्वेद में पारसीक और वाल्हिक देशोद्भव केसर का भी वर्णन है। किंतु काश्मीर की ही सर्व श्रेष्ठ मानी गई है। विलायत के किसी किसी स्थान में भी उत्पन्न होती है। किन्तु प्रथम भारतवर्ष से ही उसका बीज लेजा कर लगाया गया है। आजकल काश्मीर, पारस, स्पेन, फ्रांस, और सिसली में भी केसर उत्पन्न होती है।

अति प्राचीन काल से निघंटुक्त काश्मीर नाम दृष्टि गोचर होने

से निःसन्देह प्रतीत होता है कि अति प्राचीन काल से काश्मीर ही इसका उत्पत्ति स्थल है।

आज कल भी काश्मीरांतरगत पम्पापुरके निकट १०० से २०० हाथ ऊँचे दो दो कोस लम्बे भूमि खण्ड बहुत सी कियारियों में विभक्त होते हैं। देसी और जंगली भेद से केसर के क्षुप दो प्रकारके होते हैं। जिनमें एक प्रकारकी विभिन्नता पाई जाती है।

कार्तिक मासमें कुंकुमके क्षुप पर पुष्प आते हैं। केसर संग्रह करने वाले उस समय पहिले ही से आकर कुंकुम क्षेत्रों के निकट ही ठहर जाते हैं। केसर के पेड़ प्याजके क्षुपके बराबर बड़ा होता है। फूलोंमें तीन पंखड़ियां होती हैं। इन पंखड़ियों के भीतर के 'चिन्ह' और गर्भतन्तु को केसर कहते हैं। कुंकुम पुष्पके चिन्ह दीर्घ सूत्रा कृति के होते हैं। जो उद्दीपमान सूर्यके सदृश अरुण वर्ण, ॥ से १ इञ्च तक लंबे पीत आभायुक्त अति सुगंध युक्त होते हैं। केसर की परीक्षा के विषयमें भाव प्रकाश लिखते हैं।

काश्मीर देशज क्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेद्धि तत्।
सूक्ष्म केसर मारक्तं पद्म गंधि तदुत्तमम्॥

बाल्हीक देश संजातं कुंकुमं पाण्डुरं भवेत्।
केतकी गन्ध युक्तं तत् मध्यमं सूक्ष्म केसरम्॥

कुंकुमं पारसीकेयं मधु गन्धि तदीरितम्।
ईषत् पाण्डुर वर्णं तदधमं स्थूलकेसरम्॥

सूक्ष्म केसर, आरक्त, पद्मके सदृश गन्ध वाली काश्मीर देशके क्षेत्रोंमें उत्पन्न उत्तम होती है। पाण्डुर रंगकी सूक्ष्म केसर केतकी गंध सदृश गंध वाली मध्यम होती है।

पारस देशोत्पन्न स्थूल केसर ईषत शुभ्रवर्ण मधु गन्धि मधम होती है।

विलायती केसर—प्रथम किसी तीर्थ यात्री द्वारा इंग्लेंड में केसर लेजाई गई थी, विलायती केसर प्राणिज मेद से मिश्रित होती है। अतः औषधार्थ उपयोगमें सर्व्वदा त्याज्य है। उत्तम केसर नीवूके पके रंग के सदृश रंग वाली होती है। निकृष्ट केसर पीले या काले रंगकी, चर्व्वी मिश्रित केसर तैलाक्त होती है। दूसरी पहचान यह है कि इसको पानी में डुबा कर कपड़े पर लगाने से तुरन्त पीले रंग का धब्बा लग जाता है। अगर खराब होती है तो धब्बा पहिले लाल और फिर पीला हो जाता है। मात्रा क्वाथ ५ तोले से १० तोले तक।

गुणदोष—

कुंकुमं कटुकं तिक्त मुष्णं श्लेष्म समीरजित्।
व्रण दृष्टि शिरोरोग विषहृत् काय कांति कृत्॥
(धन्वन्तरीय निघन्टु)

कुंकुमं रेचकं प्रोक्तं कण्डु वैवर्ण्य नाशनम्।
(राज वल्लभः)

कुंकुमं कटुकं स्निग्ध शिरोरुग व्रण जन्तुजित।
उष्णं ह्रास्य करं वर्ण्यं व्यङ्ग दोष त्रयापहम्॥
(मदन विनोधः)

केसर—सुगंधित, कड़वी, तीखी रुचिकर, आनन्द कारक, गरम, कांतिकर, कसेली, चिकनी और कंठ रोग, वायु, कफ, खांसी,

मस्तक शूल, विष, वांति, व्रण, व्यंग, कृमी, हिचकी, त्रिदोष और कुष्ट नाशक है।

शीतल गुणके लिए केसर को मस्तक पर लेप करते हैं। जिस से नेत्र और मस्तक ठंडे हो जाते हैं।

किंतु इसका मुख्य उपयोग बाजी कर रीति में है। बहुत से धातु पौष्टिक चूर्ण और गोलियोंमें डालते हैं। रंगके लिये बहुत से खानों में डाली जाती है। स्तम्भक होने से दस्तोंकी औषधियों में व्यवहार की जाती है।

Action and uses

Stimulant, Aromatic, and antispasmodic,, also used as a clouring agent; given in amenorrhoea, chlorosis, seminal weakness, leucorrhia, dysmenorrhaea, in flatulent, colic, spasmodic, asthma and cough.

Owing to its containing the valatile oil, it is used in rheumatism and neuralgic pains.

It is given to children with ghee in looseness of the bowels.

It is reputed to promote exan the matous eruptions in specific feners, as measles.

Externally a paste of it is used in removing bruises and superficial sores and in headache.

Pessaries of saffron are used in 'pamful 'affections' of the uterns. It gives the urine a yellow colour.

(Materia Madica of India, R. N. Khory)

अर्थात्—कुंकुम, वर्ण, सुगन्धि, वायु नाशक, आक्षेप निवारक और औषध और व्यञ्जनोंमें वर्णोत्पादक रूप से व्यवहार में लाई जाती है।

यह ऋतुरोध, ऋतुरोध जन्य गात्रकी मलिनता, क्षीण शुक्र, प्रदर, रजः कृच्छ्र, वायु जन्य शूल, वातोदवम श्वास, श्लेष्मा रोग में सेवन करने योग्य है। इसमें तैल होने के कारण आमवात और म्यूरेलजिया मूलक वेदनामें हित कर।

बच्चोंके यदि बारम्बार दस्त आते हों तो इसको घी में पीस कर चटानी चाहिए। कुंकुम सेवन करने से ज्वर विशेष जात कोठ (Rashes) और दाम शीघ्र नष्ट हो जाती हैं। गर्भाशय के दर्दमें केसर की पिचुवर्ति (Possaries) योनिमें धारण करनी प्रशस्त है।

केसर सेवन करने से मूत्र पीले रंग का आने लगता है।

प्रयोग—

(१) सर्वेषु कृच्छ्रेषु कुंकुमम्—सकुंकुमम्....पेयः।
द्राक्षा रसेनाश्मरी शर्करासु॥
सर्वेषु कृच्छ्रेषु प्रशस्तएवः॥

चरक (चिः २६ अः)

द्राक्षाके क्वाथ संग केसर पीस कर पीने से सब प्रकार का मूत्र-कृच्छ्र प्रशमित होता है।

(२) मूत्र रोधजे उदावर्त्ते कुंकुमम्। कषायं कुंकुमस्य च।

(उः ५५ अः)

(३) मूत्रा घाते कुंकुमम्। पिबेत् कुंकुमकर्षवा मधूदक समायुतम्।

रात्रि पर्युषितं प्रातस्तथा सुख मवाप्नुयात्।

(उ: ५८ अ:) सुश्रुतः।

(३) जिसको मूत्र रोकने से उदा वर्त रोग हो वह कुंकुमका क्वाथ पीवे।

(३) वजन मधु जितना हो उसका अठगुना जल लेवे इनको एकत्र कर योग्य मात्रा केसर डाल कर कांचके पात्रमें एक रात रक्खा रहने देवे। प्रातः पीने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(४) शिरोरोगे कुंकुमम्। सशर्करं कुंकुम माज्य भृष्टम्।
नस्यं विधेयं पवनास्त्र शुत्यै।
भ्रूशंख कर्णाक्षि शिरोऽर्द्धशूले।
दिनाभि वृद्धि प्रभवे च रोगे॥

(शि० चि०) चक्र दत्तः।

(४) जिस शिरो रोग में आधे मस्तकमें वेदना हो और दिन वृद्धिके साथ साथ वेदना बढ़े तो केसर को घी में भून कर बराबरकी मिश्री मिला कर नस्य देवे।

(५) हाल व्दोली और केसर की गोली बना कर देने से लहर धुक मिटती है।

(६) पानमें रख कर खिलाने से प्रतिश्याय मिटता है।

(७) इसको और पानको पीस गरम कर पिलाने से बच्चोंकी सरदीका असर मिटता है।

(८) केसर और अकरकरे की गोली बना कर देने से मासिक धर्म शुद्ध होने लग जाता है ।

(९) ब्राह्मी के काथ पर केसर बुरक कर पिलाने से चित्तका उदास पन मिटता है ।

(१०) करेले के रसमें घिस कर पिलाने से यकृत शुद्धि दूर होती है ।

(११) इसको नीबूके रसके साथ विषूचिका में वारम्बार देना चाहिए ।

(१२) कुंकुमादि वटी ।

केसर और अफीमकी गोली बना कर शहत संग चटाने से सब प्रकार का अतिसार नष्ट होता है ।

(१३) केशरादि वटी ।

पारा १० तो० लेकर हलदी के चूरे के साथ ३ दिन तक खरल कर लहसन के रस और सेंधा नमक के साथ सात दिन तक घोटें। फिर सेंधा नमक १० तोले फिटकरी १० तोले हीराकसीस १० तोले इनको नीबूके रसमें घोट कर गोला बनावे और उसके बीचमें उप-रोक्त पारा बन्द कर डमरू यंत्रमें ४ पहरकी मन्द मन्द अग्नि देवे। चार पहर अग्नि देनेके पश्चात स्वांग शीतल होने पर आहिस्ता से उतार कर ऊपर लगा हुआ रस काफूर खुरच लेना चाहिए ।

केसर २ तो० रसकपूर ४ तो० लौंग २ तो० जावित्री १ तोला जायफल १ तो० इनको पीस कर बड़के दूधमें जुवार की बराबर गोली बनाना, १ गोली पानमें रख कर खाना। ७ दिनके खाने से २० वर्ष तक की आतशक मधुमेह शर्करा मेह दूर हो जाते हैं।

नाड़ीव्रण—पुराने जख़म, गण्ड मालादि रक्त दोषों पर भी यह गोली बड़ा गुण करती है। इसकी विधि इस प्रकार है।

अनुभूत प्रयोगार्णव।

२० वरसा छाजन दूर हो गया—रमासन के बीज लेकर गोमूत्र में पीस कर तीन दिन तक छाजन पर लगावें।

भागीरथ स्वामी वैद्य ॥

फसली ज्वरके ऊपर अनुभूत योग।

लाल फिटकड़ी पांच तो० खरल में कूट कर एक दिन घृत कुमारी के रस की भावना देना, रस सूख जाने पर एक दिन भंगरे के रस में खरल करना जब कुछ सूखता आवे तब टिकिया बना कर धूपमें रखना। खूब सूख जाने पर एक सराव संपुट में भर तीन कपरौटी कर खूब सुखा लेना, तीन सेर जंगली उपलोंमें रख फूँक देना, स्वांग शीतल होने पर निकाल बारीक पीस कर शीसी में भर रखना। अनुपान—बिना कत्था चूने के पानमें रख कर देने से जाड़े का ज्वर दूर होता है।

ज्वरे स्वेदन विधी।

यदि किसी रोगीका ज्वर तुरंत ही उतारना होवे तो चिरायता ४० तो० गिलोय ६० तो० पित्त पापड़ा २० तो० सिनकोना बार्क १० तो० सबको एकत्र कूट कर दो हांडियों जल भर पकाकर बफारा देना, इससे सब प्रकार के ज्वर पसीना आकर तुरंत उतर जाते हैं।

पुराना ज्वर प्लीहा नाशक महौषधि।

चिरायता २० तो० मजीठ १० तो० लाल चंदन २० तो० असीस १० तो० इन सबको कूट कर १६ सेर जलमें भिगोकर ८ घन्टे रख

कर पकाना। जब ९ सेर शेष रहे तो उतार कर छानना और १२ बोतल भर लेना फिर स्ट्रॉग नाइट्रिक एसिड (Strong Nitric Acid) ३० बूंद स्ट्रॉग मियूरेटिक एसिड ३० बूंद इन दोनोंको एकत्र कर सलफेट आफ क्यूनाइन को हल करके एक बोतलमें भर उपरोक्त क्वाथ में मिलाकर रखना। जवान आदमी को १ छटांक दिन में दोबार बच्चों को आधी छटांक यह प्लीहा, यकृत, अग्रमांस, शोथ पांडु, कामला, श्लीमक गुल्म इत्यादिके साथ ज्वर, विषम ज्वरादि को दूर कर पुष्ट करता है। यदि दस्त साफ लानेकी जरूरत हो तो एक बोतल में ५ औंस सल्फेट ओफ मेगनेशिया मिलाना।

पुराने ज्वरको।

अनन्त मूल २ तोला, चिरायता २ तोला, गिलोय २ तोला, पित्त पापड़ा २ तोला, धनिया १तोला, लाल चंदन १ तोला, सिनकोनाकी छाल १ तोला इनका काढा कर मात्रा १ छटाँक दिनमें दो दो घंटे बाद देना।

वेदना निवृत्ति उपाय।

जल बिना अद्रकका रस निकाल कर उसमें जायफल को चन्दन की तरह घिस कर लगाने से सब प्रकारके दर्द तुरंत बंद हो जाते हैं। इष्ट फलोयं।

दर्दका तैल।

रेक्टीफाइड स्पीट १२ औंस, काफूर २ औंस, तारपीनका तेल, ४औंस, काला जीरा २तोला, जायफलका चूर्ण ४तोला, देशी साबुन ६ मासे इन सबको एक बोतल में बंद कर ७ दिन धूपमें रखना फिर स्वाटिंग पेपर में छान कर वायुके दर्द पर मलने से प्रत्यक्ष फल होता है।

निमोनिया ।

(फुफ्फुसशोथ)

अस्मिन् शीत ज्वरश्चादौ निर्बलत्वमथो भवेत् ।
शीतस्थाने तु बालानां जायतेऽङ्गस्य मोटनम् ॥१॥
केषांचिज्जायते तन्द्रा वमनंच शिरोव्यथा ।
दक्षिणे फुफ्फुसस्यापि भागेऽधो लघु पीड़नम् ॥२॥
अस्य चाधिक्य काले तु पीड़नं तद्विवर्धते ।
येनस्वास्थ्यं न लभते रोगी चास्मिन् कदाचन ॥३॥
कस्य चिद्रोगिणो नूनं शीतस्याचमहत्तरः ।
पीडनं जायते चादौ ततः स्वास्थ्यं न रोगिणः ॥४॥
दीर्घे श्वासे च कासे च पार्श्वस्य परिवर्तने ।
आधिक्यं जायते तस्य ह्यनुभूतं मया सकृत् ॥५॥
समुत्तान मुखो रोगी शेते पूर्वेण हेतुना ।
तेन स्वास्थ्यंच लभते सःस्वान्ते किञ्चि देव तु ॥६॥
श्वासस्यागमनं शीघ्रं भवत्यस्मिन्महागदे ।
शुष्क कासः कदाचित्तु चेदक् समुपजायते ॥७॥
कम्पते येन सकलं शरीरं रोगिणः खलुः ।
पुनस्तस्यावरोधस्तु न भवेदिति निश्चितम् ॥८॥
पीड़ाधिक्यं भवेदस्मिन् गदिनश्चोपवेशने ।
अति कालस्य कासे च लिप्तश्लेष्मा कफो घनः॥९॥

मनः शिलेष्ट रागस्य सदशो मुखतो वमेत् ।
रोगी चानेन रोगेण पीडश्च मानोतिदारुणः ॥१०॥
तदन्ते च मधुः क्षारः पीतश्लेष्मा पुनः पुनः ।
मुखतो रोगिणो नूनं कासेन सह निस्सरेत् ॥११॥
उष्णत्वं शुष्कता चापि त्वचःस्पर्शेण ज्ञायते ।
कदा चिच्छेद बाहुल्यं मूत्ररक्तत्व न्यूनते ॥१२॥
दशार्द्ध शत संख्या तो नवाधिक शतावधि ।
शरीरोष्मा भवंत्यस्मिन नुभूतमिदं मया ॥१३॥
वक्षो रोगयुते भागे उष्णात्व मधिकं भवेत् ।
अरोग भागावसदा निश्चित्यै तद्विलेखतम् ॥१४॥
तद्भागके कपोलेहि लोहि तत्त्वं च दृश्यते ।
अन्ते नाड़ी भवेत् सूक्ष्मा सुगंधी दुर्बला तथा ॥१५॥
एतादृशं च दौर्वल्यं नाड्यां सञ्जायते सदा ।
यतः कृच्छ्रेण लभते पार्श्वयोः परिवर्त्तनम् ॥१६॥
चिंता युक्तश्च बदनो दुःखाधिक्यं च रोगिणः ॥
नैर्बल्य चैव मुखतो जायतेस्मिन् महागदे ॥१७॥
यदात्ययं भवेद्रोगो द्वयोः फुफ्फुसयोर्महान् ।
न जीवति तदा रोगी नीलास्यो ज्ञान वर्जितः ॥१८॥
मल युक्ता च रसना भूत्वा विस्फुटति स्वयम् ॥
ओष्ठयोः शुष्कता दक्षा शिरो पीड़ा च जायते ॥१९॥

निद्रा नाशः प्रलापश्च वैकल्यं चैति वर्द्धनम् ॥
जिह्वा श्वेता तथा शुष्का श्यावाबास्यू रदास्तथा॥२०॥
नासिकालुञ्चनं रोगी कुर्यांद्धस्तांघ्रि चालनम्।
एतान्यन्यानि चिन्हानि भवंतीह गदे तदा ॥२१॥
तृतीयं घस्र मारभ्य अरुद्र प्रमितं दिनम् ॥
अवस्था याश्च साध्यायां रोगो यं शांति मृच्छति २२
परंत्व साध्य वस्थायां षद् दिनाद् द्वादशावधि ॥
दिनेषु मृत्यु दो नूनं नृणां रोगो भवेदयम् ॥२३॥
॥ इति फुफ्फुस शोथ निदानम् ॥

Pneumonia.

फुफ्फुस पंचका दक्षिणांस बामांश की अपेक्षा अधिक कष्ट युक्त होता है। इसकी साधारणतः तीन अवस्था हैं।

साधारण लक्षण।

पीड़ाके उत्पन्न होने से पहिले ही, क्षुधा मन्द, दौर्बल्य, हाथ, पैर और छातीमें कुछ कुछ दर्द, ज्वर भाव, कम्प, खांसी आदि लक्षण प्रकाश होते हैं।

श्वास मद्द्वासद्रुत, प्रदाहाधिक्य, नाड़ी दुर्बल, द्रुतगामी, जिह्वा श्वेत और कुछ पीले रंगकी। रोगी सीधा लेटने से कुछ सुख से रहता है।

विशेष लक्षण निम्न प्रदर्शितानुसार होते हैं।

श्वास कष्ट—साधारणतः छः दिन से १० दिन के भीतर श्वास-

गति और दर्द अत्यन्त पीड़ा दायक होता है। प्रत्येक मिनटमें ३५ से ४० तक श्वासकी गति हो जाती है।

खांसी—इस रोगकी *प्रथमावस्था से ही कुछ कुछ खांसी आरम्भ* होकर क्रम से बढ़ने लगती है। यहां तक हो जाती है कि रोगी अधिक चेष्टा करने पर भी कुछ देर नहीं रोक सक्ता, उठ कर बैठने से, दीर्घ श्वास लेने से खांसी की वृद्धि होती है। क्रम से उसके साथ कफ निकलने लगता है। यहां तक कि शेषावस्थामें अत्यल्प वा एक बार बन्द हो जाती है।

श्लेष्मा—प्रथम स्वाभाविक सरदी के सदृश होता है। दो एक दिन पीछे लोह मलके वर्ण वाला, क्रमशः रक्त मिश्रित, ईषत् पीत वा स्पष्ट लाल वर्ण होता है।

त्वक् सन्ताप—इस रोग में त्वचा की गरमी स्वभाव से ही बढ़ जाती है। पहिले ही दिन प्राय-१०२ से १०४ डिग्री तक होती है। दूसरे और तीसरे दिन किसी किसी को प्राय १०७ डिग्री तक हो जाती देखी गई है। किन्तु इस अवस्थामें प्राय रोगी बचते नहीं। सन्ताप प्रातकाल सर्वापेक्षा अल्प मध्यान्ह काल में उसकी अपेक्षा अधिक और सायं काल को सब से अधिक हो जाता है। नाड़ी गति सर्वत्र समान नहीं होती, बराबर तीसरे और चौथे दिन स्पन्दन संख्या प्रति मिनट १२० से १३० तक हो जाती है। कभी कभी अति न्यून और क्षण विलुप्त भी हो जाती है।

मस्तिष्क का लक्षण—शिरः पीड़ा, निद्रा का अभाव और किसी को रात्रीके समय कुछ कुछ प्रलाप भी हो जाता देखा गया है।

मूत्रावस्था—साधारणतः लाल वा पीताभा युक्त सदोष होता है।

प्रथमा वस्था।

प्रथमावस्था में फुफ्फुस में रक्त इकट्ठा हो कर शीत बोध पुर्व्वक ज्वर, पसलीके नीचे दर्द, गात्र संताप १०१ से १०३ डिग्री, श्वास प्रश्वास की गति प्रति मिनट ३० से ४० तक होती है। ज्वरके साथ कुछ कुछ खांसी होती है।

चिकित्सा।

इसमें प्रथम मृदु विरेचन देकर अद्रक रस, वंश लोचन और मधु संग दो दो घंटे में मृत्युञ्जय देना। दर्दकी जगह स्वेद प्रदान करना अर्थात गरम जल में फलालेन या कंबल का टुकड़ा भिगोकर निचोड़ना फिर उसे एक कपड़े की तहमें देकर उससे सेंकना। इस क्रिया से फेफड़े में रुके हुए रक्त सञ्चालक वायु वहां से चल कर वेदना और प्रदाह कम करती है। यदि इस प्रकार अचल रक्त न चलाया जाय तो वह गाढ़ा हो कर उसमें राध पड़ जाती है। इस कारण राध पड़ने से पहले आरोग्य कर देना बुद्धिमानी है। नहीं तो प्रदाप हो कर असाध्य हो जाता है।

(२) उसके पश्चात पुल्टिसका विधान हित कर है। अलसी को बारीक पीस कर पानी डाल कर पकाना, और एक कपड़े पर लगा कर दर्दकी जगह बांध देना। इस प्रकार दिनमें कई बार पुल्टिस बदलना चाहिए।

(३) अति उत्तम तारपीन के तेलमें काफूर मिला कर उस से एक कपड़ा तर करके दर्दके अस्थान पर रखना और बूंद बूंद तेल डालते रहना। जिस से वह तेल भीतर प्रवेश कर रोग को शांत करेगा।

(४) दर्दकी जगह मांदी मदमा अथवा टिंचर जिञ्जर येह स्थान पर मलना।

(५) अथवा जायफल, अजवान, इन दोनों को अद्रक के रसमें पीस कर लेप करना ।

(६) द्राक्षारिष्ट और कृष्णाभ्रक भस्म दो दो घंटेमें यथा मात्रा देने से बड़ा लाभ होता है ।

पथ्य—लघु, दूधमें मुनक्का १०, पीपल १, करेली छोटीकी जड़ ३ मा० इनको पका कर बारम्बार पिलाना ।

द्वितियावस्था ।

इस अवस्थामें फुफ्फुस यंत्र में क्रम से रक्त गाढ़ा हो कर यकृत की तरह आकार वाला होकर रक्त सहित श्लेष्मा आने लगता है। उस समय रोगी की छाती पर किसी वस्तु के छूने अथवा किसी भी करवट लेटने से बड़ा दुःख होता है ।

चिकित्सा ।

इस अवस्थामें उपरोक्त पुल्टिसको पीठ, छाती वगैरह पर बाँधना यदि निद्रा न आती हो तो बारह शृंगके सींगकी भस्म सहतमें चटाना। वासे के रस और मधु संग इस भस्मको बारम्बार देनेसे मुँह से रक्त आना खांसी प्रभृति उपद्रव तुरन्त शमन हो जाते हैं ।

तृतियावस्था ।

इस अवस्थामें रोगी का वर्ण मलीन, श्वास प्रश्वास सकष्ट, मूर्छा, कफकी अधिकता अनादि असाध्य उपद्रव हो जाते हैं ।

चिकित्सा ।

इस अवस्था में कफ निःसारक उत्तेजक औषधि देनी उचित है। चन्द्रोदयकी १ रत्ती मात्रा अद्रक के रस और शहदमें देकर ऊपर से थोड़ा थोड़ा दूध पिलाना, मस्तक पर माल कंगनीका हलवा बँधवाना चाहिए ।

ग्राहकों से निवेदन ।

हम जैसी आशा और साहस से वनौषधि प्रकाश के कार्य में संलग्न हुए हैं, उसे अभी तक पुष्पित होते नहीं देखते और यही कारण है कि पत्रके चित्रादिमें यथेष्ट उन्नति नहीं की गई। कारण कि हम लाचार हैं कि, हिन्दी पाठक वर्ग ने ग्राहक संख्या अभी इतनी भी एकत्र नहीं की कि जिस से पत्रके छपनेका भार तो यथेष्ट रूप से निर्वाहित होता रहै। तौ भी हमने इस मास के चित्रों में विशेष रूप से यत्न किया है। यदि ग्राहक संख्या १००० भी हो जाय तो हम जो उन्नति करके पाठकों को दिखायें वह संतोष जनक और सराहनीय होगी।

हमें आशा ही नहीं किन्तु पूर्ण विश्वास है कि इस अंकके पहुँचते ही हमारे गुण ग्राही ग्राहकोंकी ओर से अवश्य आशा जनक उत्तर मिलेगा। यदि प्रत्येक ग्राहक कम से कम दो दो नवीन ग्राहक भी करदें तो कुछ काल में उक्त संख्या की पूर्ति भी हो जाय और हमें भी क्षति न उठानी पड़े। इसके अतिरिक्त निवेदन है कि अब वर्षाके होने से नवीन वनस्पतियां प्रत्येक प्रांत में उग रही है। अतः प्रत्येक के नमूने पञ्चांग सहित उन देशो में विज्ञात नाम और गुण युक्त भेजने की कृपा करे। तथा जिन जिन बूंटियों की यहां अधिकता हो उनसे भी सूचित करें। जिससे वह मंगा कर परीक्षा की जावें और उनका उचित संग्रह किया जावें। जिस से जिन २ महाशयों को आवश्यकता हो समय पर भेज दी जावें।

आपका—संपादक।

हमारी एजेंसीके नियम।

(१) हमारी शास्त्रोक्त आयुर्वेदीय औषधियोंके बेचनेको प्रत्येक शहर और कस्बों में एजेंटोंकी जरूरत है कमीसन २५) सैकडा।

(२) एजेंट बनने वालों को प्रथम १०) मनीआर्डर द्वारा भेजने चाहिए। जिसमें उन के पास २०) की औषधियां भेज दी जावेंगी और तीन मास तक जो औषधियां न बिकेंगी उन्हें बदल कर उनकी इच्छानुसार दूसरी दवाइयां भेजदी जांयगी।

(३) हम अपने खर्च से एजेंटों के पास सुन्दर साइन बोर्ड और उनके नामके छपे नोटिस भेज देतेहैं, जिनके द्वारा औषधियां बहुत जल्दी बिक जाती हैं।

(४) एजेंटोंको इख्तयार है वह किसी रोगी का निदान लिख कर भेज देवें जिस से उस के लिये उचित व्यवस्था, औषधि की तजवीज आदि बताई जाती है।

मैनेजर—"वनौषधि प्रकाश" कार्य्यालय।

पोष्ट—जलालाबाद, जि० मेरठ

अपूर्व अवसर

जो महाशय अगले महीने के अंत तक सब से अधिक वनौषधि प्रकाश के ग्राहक बनावेंगे उन्हें ५०) नकद इनाम दिया जावेगा।

(२) जो महाशय १०० ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें एक हारमोनियम इनाम दिया जायगा।

(३) जो महाशय २५ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें एक जेबी घड़ी इनाम।

(४) महाशय १०ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें १टाइम-पीस घड़ी।

(५) महाशय ५ ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें वनौषधि प्रकाश प्रथम गुच्छ मूल्य १॥) इनाम दिया जायगा।

(६) जो ३ ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें वनौषधि परि-भाषा नामक मूल्य १) की पुस्तक इनाममें दी जावेगी।

(७) पञ्च वर्षीय डायरी सं० १९२० तक के पांच वर्षों की बृहत् डायरी मुफ्त देते हैं।

मैनेजर—"वनौषधि प्रकाश"
पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ

नियम ।

• इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित २) रु० प्रति संख्या ≡) अग्रिम लिया जाता है ।

(२) जो महाशय इसी विषयके उपयोगी लेखों द्वारा इसकी निरंतर सहायता करेंगे उनको विना मूल्य ।

(३) विज्ञापन छपाई अथवा बंटाईको पत्र व्यवहार करो ।

(४) बैरिंग न लिये जांयगे तथा जवाबके लिये जवाबी कार्ड व टिकट आने चाहिए ।

(५) सब प्रकारका पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से होना चाहिये ।

पता—बाबूराम शर्म्मा ।

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ ।

आपके भविष्यतकी सलाह । नं० १५

आप देख रहे हैं, इस बरसातके दिनमें जाड़ा देकर पारीका बुखार हो रहा है । यही इस रोग (मलेरिया) की पहली हालत है यदि अच्छी दवासे शीघ्र आराम न किया जावे, तो धीरे२ यह शरीर के खूनको पानी कर देता है, इस से पेटके भीतर तिल्ली बढ़ जाती है, एक प्रकार अति सूक्ष्म जीव पिलहीमें जा समाते हैं और खूनके लाल कणिकाओंको नष्ट करते हैं, साथही शरीर सूख जाता है । ऐसे ही हालतको सुधारनेके लिये डाक्तर बर्मनकी प्रसिद्ध "फसली बुखार व तिल्लीकी दवा" ३० वर्षसे घर २ प्रचलित है, इसमें विशेष गुण है इसके ४ ५ खुराक पीने ही से बुखारका आना बन्द होता है । पिलहीको गलाती है और जल्द आराम करती है ।

मोल—छोटी शीशी ॥) आठ आने, पै॰ ब डा म ।–) २शीशी तक॥)
मोल—बड़ी शीशी ॥≈) चौदह आने, पै॰ व डा॰ म॰ ।≈) २शीशी ॥)

नकली बर्मन और उनके झूठे विज्ञापनों से बचो !	दादकी मलहम	वर्त्तमान समय अनेक बर्मन नामधारी कम्पनियां हैं !

आजकल अनेक दादकी दवाका विज्ञापन पत्रोंमें देखते होंगे, इनमें केवल दादकी खुजली कम होती है; परन्तु आराम होना दूर रहा । ऐसी दवा से सदा बचो !!!

डाक्तर बर्मनकी दादकी मलहम ३० वर्षसे लाखों लोगोंकी परीक्षाकी हुई है । आप भी परीक्षा करें ।

एक बारके लगानेसे खुजली मिटती है । दो तीन बारके लगानेसे दाद जड़से छूट जाती है, जब सब दवाइयां लगाकर थक गये हों तो इसका व्यवहार करो । यह मलहम लगती नहीं है, खुशबूदार है, इसमें चर्बी नहीं है यह सुन्दर सुनहली डिबियामें रहती है ।

मोल—।) चार आने डिबिया । डा म १ से ६ डिबिया ।–) पांच आने ; १२ डिबिया ।≈) छै आने ।

दवा सब जगह हमारे एजेण्ट और दवा फरोशोंके पास बिकती हैं ।

डा॰ एस॰ के॰ बर्मन, ५।१ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

सम्वत् सर २ अंक ५-६

वनौषधि प्रकाश।

वैद्यक

[मासिक पत्रिका]

जंगलकी जड़ी बूटियोंके रंगीन चित्र, पहिचान, उपयोग प्रयोगादि, विविध वैद्यक विषय सम्पन्न हिन्दी भाषामें एक मात्र पत्रिका।

Vol 2	October 1915	Issue 7

"Banoshadhi Prakash"

(*A monthly Botanical Hindi magazine*)

Edited and published
By
V. Pt Babu Ram Sharma
Post. Jalalabad
MEERUT.

वार्षिक मूल्य २) रु० प्रति संख्या ।)

नियम।

(१) इसका वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित २) रु० संख्या ≡) आना अग्रिम लिया जाता है। नमूनेका अंक =)

(२) इसकी प्रति पहुंचने पर जिन्हें ग्राहक होना स्वीकार हो २) मनिआर्डर द्वारा भेजनेकी कृपा करें। पत्र वी० नहीं भेजा जाता है।

(३) जो महाशय इसी विषयके उपयोगी लेखों द्वारा निरंतर सहायता करेंगे उनको बिना मूल्य। विद्यार्थियों, पुस्तकालयों को १।) रु० में देते हैं।

(४) जो महाशय पांच ग्राहक एकत्र करेंगे उन्हें वनौष प्रकाश प्रथम गुच्छ १॥) रु० उपहारमें देंगे।

(५) बैरंग न लिये जांयगे तथा जवाबके लिये जवाबी व टिकट आने चाहिये।

(६) सब प्रकारका पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से हो चाहिये।

(७) विज्ञापन छपाई ३०) प्रति पृष्ठ प्रति वर्ष, तथा ५८ १) सैकड़ा।

पता—बाबूराम शर्म्मा

पोष्ट—जलालाबाद जिला मेरठ

वनौषधि प्रकाश

सचित्र

वैद्य मासिक पत्र।

अंक २ | अक्टूबर सन् १९१५ | ७

विविध समाचार !

संपादन कर रही है।—बम्बईमें कितने ही महाराष्ट्र सज्जनोंकी एक समिति स्थापित हुई है। अंगरेजीके सुप्रसिद्ध आख्यायिकाके उपन्यासोंका अनुवाद मराठी भाषामें प्रकाशित करना इस समितिका प्रधान उद्देश्य है। इसमें सन्देह नहीं, कि यह उद्देश्य प्रशंसनीय है और इस से महाराष्ट्र साहित्यकी वृद्धि होगी। हिन्दी-भाषामें ऐसी कितनी ही समितियां मौजूद हैं और इनमें कितनी ही बड़ी ही सुन्दरता से अपना कार्य सम्पादन कर रही हैं।

जमानत पर छोड़ दिया।—खुलनाकी अदालतमें साहब नामक एक व्यक्ति पर एक आनरेरी मजिस्ट्रेटको घूस देनेका उद्योग करनेका अभियोग चलाया गया था। अदालतने अभियुक्तको एक मासकी कड़ी कैद और २०) जुरमानेकी दण्डाज्ञा सुनायी। अभियुक्तने सेशन अदालतमें अपील की। अदालतने अपील दाखिल करके अभियुक्तको जमानत पर छोड़ दिया।

तजवीज करेगी।—सहकारी समितिके सम्बन्धमें मेकलेगनकी रिपोर्ट सम्मतिके लिये प्रान्तिक गवर्नमेंटोंके पास भेजी गई है। सम्मति प्राप्त होने पर भारत सरकार कुछ करेगी।

जूरियों की सम्मति।—कई बार बिकने वाली लड़कीके मामलेमें जूरियोंने लड़कीकी उमर १६ वर्ष से अधिक बता कर अभियुक्त दुर्गाको निर्दोष बताया से जजने अभियुक्तको मुक्त करते समय कहा यद्यपि दुर्गा बदमाश है, किन्तु जूरी उसे निर्दोष बताते हैं इसी लिये मैं उसे मुक्त करने पर बाध्य हूँ ।

रद्द कर दी गई।—एक सिपाहीके पास एक रिवालवर और उसकी गोलियां मिलनेके अपराधमें झाँसीके मजिस्ट्रेटने उसे दो वर्षके कारावासकी दण्डाज्ञा सुनायी थी । इलाहाबाद हाईकोर्टमें मामला पेश होने पर दण्डाज्ञा रद्द कर दी गयी । चीफ जस्टिसने कहा, सिपाही भारतीय सेनाका है इस लिये उस पर शस्त्र_आईन लागू नहीं होता ।

लाभ पँहुचेगा।—कलकत्तेमें वाणिज्य विषयक अजायब घर खोलनेका जो प्रस्ताव हुआ है उसीको देख कर दक्षिणी चेम्बर आफ कमर्सने ने विचार किया है, कि मद्रास-सरकार भी भारतसरकार से एक ऐसा अजायब घर मद्रासमें स्थापित करनेकी प्रार्थना करे और उसमें कलकत्तेके उक्त अजायब घरमें नमूनोंकी नकल रख जाय । इस से मद्रासके व्यापारको बड़ा लाभ पहुँचेगा ।

विचार होगा।—ऐसी सूचना मिली है कि भारत सचिव ईस्ट इण्डियन रेलवेके भविष्यके सम्बन्धमें भारत सरकारकी सम्मता लेने वाले हैं क्यों कि रेलवेका ठेका खतम होने वाला है और उस पर शीघ्र ही विचार होगा ।

व्यापारिक दशा पर विचार करेगी।—आगामी बड़े दिनकी छुट्टियोंमें सर फजल भाई करीम भाईकी अध्यक्षतामें समस्त भारतीय व्यापार मण्डलके प्रतिनिधियोंकी एक कान्फ्रेंस बम्बईमें एक सेन्ट्रल इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स स्थापित करनेके अभिप्राय से होगी जो इस देशकी व्यापारिक दशा पर विचार करेगी ।

निवेदनम्

आपकी सेवामें यह अंक अमूल्य सादर समर्पण करते हैं। आप सदृश आयुर्वेद प्रेमियों से हमें सदैव प्रबल आशा है। इसके स्वयं ग्राहक हो कर अपनी शुभ सम्मित प्रदान करेंगे। तथा अपने इष्ट मित्रोंको भी इस पत्रको दिखला कर एक एक दो दो नवीन ग्राहक बनावेंगे। जिस से हम आप से उत्साहित होकर अपने कर्तव्य क्षेत्रमें दृढ़ता से स्थित रह सकें।

सम्पादक।

अष्टाङ्ग संग्रह।

लोक प्रसिद्ध विद्वान् शिरोमणि वाग्भटाचार्यने, अष्टाङ्ग आयुर्वेदको मन्थन कर सुश्रुत, भेड़, अतुकर्ण, पराशर प्रभृति संहिताओं से अष्टाङ्ग संग्रह नामक यह सुललित ग्रंथरत्न प्रणयन किया है। इस ग्रंथमें चरक सुश्रुत आदिमें न मिलने के बहुत से उत्तमोत्तम प्रयोग देखने में आते हैं। जिस कारण बड़े २ विद्वद्रत्न इसको बड़े सम्मानकी दृष्टि से देखते हैं।

यह ग्रंथ अद्यावधि मूल तथा दुर्लभ होनेके कारण साधारण जन समूहमें अपरिचित है। इस ग्रन्थके ऊपर आज तक कोई सुबोध भाषा टीका नहीं हुआ है। जिस से बहुत विद्या प्रेमी अहर्निशि इसके देखनेको लालायित रहते हैं। अत हमने इस ग्रंथको मूल और भाषा टीका सहित विस्तृत विवेचन युक्त छपाना आरम्भ किया है। हिन्दीमें आज तक इसके जोड़की कोई पुस्तक नहीं छपी। अन्य ऋषियोंके विवेचन से स्थान २ पर कथाकी पुष्टि की गई है। अगस्त्य रूपी वाग्भट्टने वैद्यक महोदधिको गण्डूष रूप से पान किया है यथा—"अष्टाङ्ग वैद्यक महोदधि मन्थनेन। योऽष्टाङ्ग संग्रह महामृतराशि राप्त।" इत्यादि। प्रथम खण्ड मूल्य ८) रु०

जो महाशय अभी से इसके ग्राहकोंमें नाम लिखावेंगे उन्हें ६) में तथा वनौषधि प्रकाशके ग्राहकोंको ५) में देंगे। और जो मनीआर्डर द्वारा अग्रिम मूल्य भेजेंगे उन्हें ४) रुपयेमें देंगे।

"वनौषधि प्रकाश"

प्रथम गुच्छ।

मूल्य १॥)

जिसमें भारतीय दुष्प्राप्य जड़ी बूटियोंके सर्वाङ्गयुक्त विविध रंगों से विभूषित मनोहर चित्र नाना भाषाओंमें यथा प्राप्त और शुद्ध नाम, विवरण, मूल, पत्र फल, पुष्पादि, प्रत्येक अंगकी विस्तारित पहचान, अर्वाचीन और प्राचीन निघण्टुओं से गुण दोष, औषधियों के रस वीर्य्य, विपाक, प्रभावत्व, उनके उत्पन्न होनेका देश काल, विविध अंगोको काममें लानेकी विधि उपयोग प्रयोगादि ऐसी उत्तमता से वर्णन किये हैं कि प्रत्येक पुरुष पहचान कर काममें ला सकता है। पुनः भारतीय विद्वान वैद्य, डाकुटरों द्वारा भेजे हुये। हजारों आज़मूदा नुस्खे रसोपरस धातु उपधातु आदिकों का बूटियों द्वारा शोधन मारण। प्रभृति।

सभी वैद्योपयोगी निबन्धोंका संग्रह किया है। इस पुस्तकके समीप होने पर वनस्पति संबंधी फिर किसी पुस्तककी आवश्यकता नहीं रहती है।

मिलनेका पता—

वैद्य पं० बाबू राम शर्म्मा।

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ

Printed by Bishwambhar Nath Sharma at
Shri Madangopal Press, Brindaban.

समालोचना।

रसायनसारः

यह ग्रन्थ काशीके प्रसिद्ध रसायन शास्त्री श्री श्यामसुन्दराचार्य-वैश्य जीने छः वर्षके परिश्रम और १० हजार रुपया खर्च से प्राप्त हुए अनुभव द्वारा निर्माण किया है। मुक्तकंठ से स्वीकार किये विना नहीं रहा जाता कि अद्यावधि इस प्रकारका कोई भी रसायण संबंधी रस ग्रंथ मुद्रित नहीं हुआ। चन्द्रोदय, लाल चन्द्रोदय, प्रभृति सहस्रों रसोंकी यमी उत्तम श्लोक बद्ध सुललित प्रक्रियायें भाषानुवाद सह संग्रह की हैं कि जिनके द्वारा सहज में ही रस निर्माण कर वैद्य लोग, धर्मार्थ का लाभ कर सकें।

नलिका डमरू यन्त्र द्वारा दस सेर पक्का चन्द्रोदय बनानेका विधान आजपर्यंत नहीं सुना गया था। भ्राष्ट्री पाताल यंत्र प्रभृतिके बहु रंग सुसज्जित मनोहर चित्र, पारदकी सुगम तथा प्रचण्ड बुभुक्षा विधि, धातु उपधातुओंका सोधन मारण अनुभव किया हुआ चिकित्सा काण्ड, पारद, बुभुक्षा विधि में भारतके बड़े बड़े विद्वान वैद्योंका वाद विवाद आदि उल्लेख योग्य बहुत से निबन्ध सन्निवेशित किये हैं। हम वैद्य लोगों तथा ईश्वर से प्रार्थी हैं कि यह रसायिण शास्त्री जीके सतत परिश्रम और निष्कपट क्रिया कौशलको सफल कर चिरा वधि उनके नामको अमर रक्खें तथा उन्हें साहस दें कि शीघ्र ही इस पुस्तक के अवशेष चार खण्डोंके दर्शन हों। इस ६०० पृष्ट के ग्रंथका मूल्य केवल ५) रु० है।

सुश्रुत संहिता।

कलकत्तेके प्रसिद्ध कविराज नगेन्द्र नाथसेन द्वारा प्रेशित सुश्रुत संहिताका श्री हाराणचन्द्र चक्रवर्ती द्वारा विरचित सुश्रुतार्थ संदीपन संस्कृत सुस्पष्ट गुम्फत गुम्फित मनोहर भाष्यके दर्शन कर चित अत्यानन्द होता है।

प्रत्येक श्लोकोंका संस्कृत टीका एसा सरल और सुललित है कि संस्कृत विद्व सम्यक् प्रकार से तत्त्व बोध कर सक्ते हैं। समुद्रित ग्रंथस्याग्रिम मूल्यम १० मुद्रा। खण्ड शः मुद्रा।

आयुर्वेद शिक्षा।

श्री अमृत लाल गुप्त कविराज, द्वारा विरचित यह ग्रंथ लाक्षाणिक चिकित्सा विषय में आद्वितीय है। बङ्ग भाषा भाषियोंकी जो त्रुटियां इस ग्रंथ निर्माताने पूर्णकी है वह अवर्णनीय है।

इसमें प्रत्येक रोग का निदान, लाक्षणिक ८ चिकित्सा एसे सरल भाव से लिखे गए हैं कि प्रत्येक पुरुष इस से लाभ उठा सक्ता है। प्रथम खण्ड मूल्य १) द्वतिय जातिय खण्डका मूल्य भी १) प्रति खण्ड है। इस पुस्तक परिशिष्ट खण्ड जिसमें अधा बधि गुप्त प्राय बहुत से आयुर्वेद के वैज्ञानिक तत्त्वोंकी मीमांसाकी गई है। इस ग्रंथके परिशीलन से वैद्योंके ज्ञान भण्डारकी बहुत उन्नति होना सम्भव है मूल्य १) "प्राच्यविज्ञान" नामक बङ्ग भाषा का ग्रंथ भी उक्त कविराज महाशयने ही लिखा है। मूल्य ॥)

पता—कविराज अमृतलाल गुप्त काविभूपण।
१७ नं० काशीदत्तष्ट्रीट,निम तल्ला, कलकत्ता।

—

बिच्छू के विष पर।

फिटकरी का पानी कर उसे बिच्छूके दंश पर लगाना।

श्वास रोग हर वटी।

शुद्ध तेलिया १ तो० अफीम २ तो० काले धतूरेके बीज २ तो० इन सबको एकत्र कर पानके रसमें घोट कर सरसों के बराबर गोली बनाना। पानके रस और शहद संग वात दमादिमें देना।

रसेन्द्रो द्विगुणो गन्धस्तत्समो व्योमलोहकौ।
बिल्वमल्लशिवाव्योषा रसेन्द्र समभागकाः ॥१॥
सिन्धूत्थं टंकणं यावक्षाराभागश्च पञ्चधा।
द्वात्रिंशद्भाग गोमूत्रं तावद्भागास्तु हि भवेत् ॥२॥
सर्वमन्दाग्निना पक्त्वा कुर्य्यान्माषोन्मिता वटीः।
भक्ष्यं सेवनान्नासां साध्यानाम्या गुदांकुराः ॥३॥

अर्शकुठार रस।

गोलक विधि या डमरू यंत्र विधि से निकला हुआ शुद्ध पारा ऽ= शुद्ध आमलासार गंधक ऽ= लोहभस्म ऽ- अभ्रकभस्म ऽ- बेलगिरी ऽ- बड़ीहर्र ऽ- सोंठ, मिर्च, पीपल, एक एक छटांक। शुद्ध कलिहारी ऽ- सेंधा नमक, सुहागे की खील, जवाखार यह चारों पांच पांच छटांक गोमूत्र बत्तीस छटांक थूहरका दूध ३२ छ० इन सबको एकत्र कर मन्दाग्नि से पकावे। जब गाढ़ा हो जाय तब पत्थरकी खरल में डाल कर घोंटे और दो, दो मासे की गोली बना ले शौचादि से निवृत्त हो कर प्रातः काल एक गोली गरम जलके साथ खावे। इस प्रकार सेवन करने से बवासीर जड़से ही नष्ट हो जाती है।

दद्रुनाशक वटी।

चक्रमर्द रसै नैव रंकण क्षार गन्धकौ ॥
भावयित्वा वटी कुर्य्याद्दद्रुघ्नी वदरी समाः ॥१॥
घृष्ट्वा निम्बूक नीरेण दद्रुरोगे प्रलेपयेत् ॥
धर्मस्थितो मुहूर्तचेत्तेन रोगेण मुच्यते ॥२॥

दाद दूर करने वाली गोली।

लोणियागंधक, सुहागा, पंवाड़के बीज, तीनों चीज समान भाग-लेकर बारीक पीसले, फिर पंवाड़के रसकी भावना देकर बेरके बरा-बर गोलियाँ बनावे। इन गोलियों को नींबूके रसमें घोटकर जहां दाद हो वहां लगावें। और दो घंटे धूपमें खड़ा होवे, तो तीन वार के ही लगाने से दाद नष्ट हो जाते हैं।

श्वास कास नाशक योग।

कंटकारी (कटेली) के पञ्चांगको छायामें सुखा कर बारीक चूर्ण बनाले, इस चूर्णके साथ १ रत्ती रससिन्दूर शहदमें मिला कर सुबह स्याम चाटे तो श्वास कास नष्ट होते हैं।

रस सिन्दूर बनानेकी विधि।

हिङ्गल से निकाले हुए पारदको दोला यंत्र विधि से गोमूत्र ४सेर चूणा॥ नीमका रस॥ में चार पहर तक मन्दाग्नि से स्वेदन कराले यह पारद पावभर और शुद्धगंधक ऽ॥ सेर इन दोनों की कज्जलि कर लो इस कज्जलीमें बट जटा अरोहके काथ की तीनया पांच भावना दे। जब घोटते घोटते कज्जली सूख जाय, तब सात कपर मिट्टीकी हुई जिसमें चार से कज्जली समा जाय, एसी आतशी शीशी में तीनों पाव कज्जलि भर बालुका यंत्र वाली हांडिया में रखदे। इसे यंत्रको

भट्टी पर रख कर चार दिन रातकी मृदु, मध्य, तीव्र, अग्नि क्रमसे दे, परन्तु दो दिन अग्नि लगने पर शीशीके मुखमें खड़िया मट्टीका डाट ठुसा कर उसको गुड़चनेकी मुद्रा कर दे जिससे कि पारद उड़े नहीं, और रस अधिक गुण कारी बने। चार दिन के बाद अग्नि लगाना बंद कर दे। जब यंत्र स्वांगशीतल हो जाय, तब शीशी के गले पर लगे हुए सिन्दूर रस को निकाल ले। यह सिन्दूर अनुपान द्वारा सभी रोगों को नष्ट करता है। सिन्दूर रस सभी वैद्यों को अपने पास रखना चाहिए।

रससिन्दूर बनाने की सुगम विधि।

बाजारमें एक एक मिलांद की सफेद शीशी चार चार पैसे में मिलती है। उसे लाकर सात कपर मिट्टी चढ़ावे, फिर उसमें पाव-भर कजली भर कर शीशीको बालुका यंत्रमें रखदे बालू रेता शीशी के मुखसे एक अंगुल नीचे तक रहै। बालुका यंत्र वाली हंडिया छिद्र न कर केवल तीन कपड़ मिट्टी चढ़ावे। इस बालुक यंत्रको सर्वांग भट्टी की लोह जाली पर बीचमें रख इधर उधर रेलके कोयले भर कर नीचे से दो लकड़ियों की आग्नि देवे। और चिकनी मिट्टी की डाट शीशी के मुंह पर लगादे जिसमें होकर धुआं भी निकलता रहे। यदि अग्नि के अधिक वेगके कारण शीशी के मुखसे अग्निकी ज्वाला निकलने लगे तो यंत्रको बचाकर अङ्गारोंके ऊपर धीरे २ पानी छिड़कदे। ऐसा करने से ज्वाला तुरन्त बन्द हो जायगी, तीन चार घंटेके बाद जब अङ्गारोंका वेग कम हो जाय। तब भट्टी के पास बैठनेकी कोई जरूरत नहीं। यंत्रके स्वांग शीतल होने पर बालुका यंत्र से शीशी को निकालकर शीशी के ऊपर लगी हुई कपर मिट्टी को चाकू से खुरच डाले और गीले कपड़े से शीशी को पोंछले

फिर धीरे २ शीशी को फोड़ कर गलेमें लगी हुई सिन्दूर रसकी कटोरीको निकाल ले, तत्तद्रोगहरानुपानकथित, ज्वरादिकोंमें एक रत्ती से दो रत्ती तक बलाबल देख कर इस रसको व्यवहार कर सके हैं।

अन्तर्धूम रससिन्दूर बनाने की विधि।

जिस शीशी में तीन सेर कज्जली समाती हो उस में रससिन्दूर बनानेके लिये अष्टमांश कज्जलीको भरे परन्तु जिस शीशीमें अन्तर्धूम-रस बनाना हो उस के ऊपर सात कपर मिट्टी कर के तेज धूप में सुखा ले उस शीशी के मुख पर खड़िया मिट्टी की डाट लगा कर गुड़ चूने से उस डाट की दर्ज को बन्द कर दे। बाद मिट्टी में सने हुए चार तह कपड़ेको शीशीके मुख पर लपेट कर उस के ऊपर सुतलीके बीसों लपेटे दे कर खूब मजबूत बांध दे। जिससे मुद्रा अग्नि के ताप से खिसकने नहीं पावै। और सुतली के ऊपर भी मिट्टी का लेप कर दे।

अब शीशी खूब सूख जाय तब बालुका यंत्र में रख कर भट्टी पर प्रथम तो मन्द२ आंच दे बाद दिन ब दिन अग्निको क्रमसे थोड़ी थोड़ी तेज करता रहे। बालूके ऊपर निकले हुए शीसीके गलेको स्पर्श करता रहै। यदि शीशीका गला इतना तप्त हो जाय कि जिसको स्पर्श भी नहीं कर सके। तब समझे कि कज्जली गले तक उकन कर आ गई है इस लिए तुरन्त ही भट्टी से लकड़ी निकाल कर अग्निको कम करदे नहीं तो शीशी अवश्य फूट जायगी जब शीशीके गलेको छूनेसे हाथ नहीं जले तो समझे कि गन्धक अपन स्थान पर जा बैठी, तब पूर्व वत् तेज अग्नि देना शुरू कर दे। परन्तु बार बार शीशीके गलेके स्पर्शकर परीक्षा करता रहे जब जब गला आग्न तीव्र तप्त हो जाय, तब तब ही अग्नि को कम करता रहे। इस प्रकार आठ दिन तक अग्नि

को प्रति दिन तेज करता हुआ आंच दे। प्रति दिन तेज करनेका यह अभिप्राय है। कि जब तक कज्जलि का धुंआ नहीं घटा है तब ही यदि प्रथम से अग्नि तेज कर दी जायगी तो शीशी के फूटने का भय है। और यदि आठ दिन तक मन्दाग्नि को ही लिए बैठे रहेंगे तो एक महीने में भी शीशी नहीं पकेगी इस प्रकार ८ दिन तक अग्नि देने पर जब तीव्राग्नि पा कर भी शीशी का गलों तप्त नहीं हो तो समझ लें कि रस घन कर तैय्यार हो गया है तब अग्नि देनेकी कोई आवश्यकता नहीं। क्यों कि गले में ठसे हुए रस सिंदुर से अग्निका मार्ग रुक जाता है। इस लिये अग्नि शीशीके गलेको तप्त नहीं कर सकी और न शीशी को फोड़ ही सक्ती क्यों कि शीशी के तल भाग में यदि कज्जलि होती तो उस के धूम से शीशी फूटने का भय था परन्तु जब कज्जलि रस सिन्दुर घन कर शीशी के गले पर आ पहुँचा है। तब अग्नि लगाने की जरूरत नहीं है। यंत्र के स्वांग शीतल होने पर शीशी के गले से अन्तर धूम रस सिंदूर निकाल ले। इस प्रकार छः बार गन्धक जारण करने से षड्गुण गन्धक जारित अन्तर धूमरस बना कर तैय्यार हो जाता है। इस प्रकार अन्तर्धूम चन्द्रोदय अन्तर्धूम तालचन्द्रोय तालरसलिन्दुर इत्यादि सभी प्रकारके चन्द्रोदय और सिन्दूर रस बन सके हैं। परन्तु जब बहिर्धूम सिन्दुर रसका पूरा अभ्यास हो सक्ता है।

सिन्दूरादि रसोंकी पक्की मात्रा

। बनानेकी विधि।

रसायन शास्त्रमें चन्द्रोदय, तालचन्द्रोदय, मल्लचन्द्रोदय, ताल-सिन्दूर, शिलासिन्दूर, रससिन्दूर, आदि हजारों प्रकारके जितने रस

बनकर तैय्यार हो तब सबको, जुदेजुदे घोट कर कपड़छन कर ले। बाद रात्रिको आध पाव इसबगोलमें ऽ॥ सेर पानी डाल कर रख दे। प्रातः काल हाथ से मल कर उसको कड़ाही में छानके पका करने से इसबगोल का रस लुआब दार तैय्यार हो जायगा, फिर चन्द्रोदयादि जिस रसकी पक्की मात्रा बनानी हो उसको उसी लुआब में खूब घोटे।

बाद लम्बी चौड़ी गोल शिखर दार चौखूंटी जैसी इष्ट हो वैसी पोटली बनाले। और एक उलटे अक्षरों वाला लकड़ी का या लोहे का ठप्पा (मोहर) बनवा कर रख छोड़े जिसमें अनेक प्रकारके रसों के नाम और वैद्यराजका नाम खोदारहे। उसी ठप्पे पर उस गुटिका को जमा देने से नाम भी गुटिका के ऊपर साफ साफ उघड़ आवेगा। बाद उस गुटिकाको छायामें सुखाले। जब पोटली सूख जाय तब रेशमी वस्त्रकी पक्की कोथली बनावे, जिसमें गुटिका भी अट जाय और गुटिका के चारों तरफ आध आध अँगुल गन्धक का चूर्ण भी अट सके। उसकोथली में अर्द्ध भाग तक गन्धक का चूर्ण भर दे। उस चूर्णके ऊपर पोटली रख कर ऊपर भी गंधक भर दे। अर्थात पोटली गन्धक के अन्दर रहनी चाहिए। फिर उसकोथली के मुखको रेशमी डोरे सी कर, फिर दूसरी रेशमी वस्त्रकी पक्की कोथली बनाले कि जिसके अन्दर आधे भाग में गंधक भर कर बाद में पोटली वाली कोथली को रख कर और उसके ऊपर गन्धकका चूर्ण भर कर, इस कोथली के भी मुखको रेशमी डोरा से सीमदें। फिर एक हण्डियाके अन्दर ऊपर नीचे गन्धक का चूर्ण भर कर। तथा उस गन्धकके बीचमें पोटली वाली कोथली को रख कर उस हांडी को चूल्हे पर चैठा कर मन्दी मन्दी आंच से पकावे।

वासकः ।

(वासा)

वासकः सिंहिका वासा भिषङ् माता वसादनी
अटरुषः सिंह मुखी सिंही कंठी रवी वृषा ॥
शितकर्णि वाजिदन्ता नासा पञ्च मुखी तथा ।
सिंहपर्णि मृगेन्द्राणि प्रोक्ता "राज निघंटके"

सिंहा स्याशित बल्ली च मातृका सिंह वल्लभा ।
वाड़ दन्ती भिषक् श्रेष्ठः "कैयदेवे" प्रकीर्तिता ॥

सिंहकश्च महद्दैद्यैः प्रोक्तो "गण" निघन्टके
सिंही "त्वमरकोशे" च त्रयोदश संख्यका

संस्कृत नामः—वासकः, सिंहिका, वासा, भिषङ्माता, वसादनी, अटरुषः, सिंहमुखी, सिंही, कंठी, रवी (सिंह मुखी, सिंहास्यसदृश पुष्पत्वात्,(भानुजी दीक्षित, वृषा (वर्षति मधु । भा: दी:,) शितकर्णिका, (वाजिदन्ता वाजीदन्ताभकेसरत्वात) नासा, पञ्चमुखी सिंह पर्णी, मृगेन्द्राणि, सिंहास्या, शितवल्ली, मातृका, सिंहवल्लभा, वाड़दन्त, (निघटशिरोमणि)

हि० वासा, अडूसा ।
गु० अरडुशी ।
बं० वासक ।
कर्ना० आड्सोगे ।
तै० आड्सार ।
ता० अधडोडे ।

का० मधुयोकसा ।	आ० वाइक ।
मारवाड़ी—अरडुसो ।	पंजा० वासा ।
द्राविड—अडादोडे ।	अर्बी । हुफारीनकून ।
मरा० आडालोटिके ।	ला० Adhota Vasica

विवरण

सफेद और काले पुष्पोंके भेद से वांसा दो प्रकार का होता है। कोई कोई ग्रंथ कार। श्वेत और लाल फूल वाला दो तरह का लिखते हैं। इसका पेड़ दस फीट तक ऊंचा होता है।

काण्ड, सरल, कर्कश, शाखा प्राय गोल, क्षुद्र अर्बुदा कृति चिन्ह युक्त, पत्र हीन शाखा में गिरे हुए पत्तों के स्थान सूचक चिन्ह बने रहते हैं।

पत्र—४ से ८ इंच तक लंबे, किञ्चित २ से ३ इंच तक चौड़े होते हैं। पत्राग्रभाग नोकदार, होते हैं।

पुष्प, शाखप्रांति, पुष्पवृन्त में छोटे ठंडलेयुक्त, दलाग्र अधर ओष्ठा झुकरन खिरित, अत एव इसको पूर्वाचार्योंने "सिंहास्य कहा है। यद्यपि रक्त वासक का पूरी तरह आयुर्वेद में उल्लेख नहीं देखा जाता, किंतु पूर्वा चार्य्य गण रक्त पित्त में ताम्र पुष्प वाले को ही व्यवहार करते थे। अपने देशमें एक प्रकार का काले फूलों वाला वांसा भी देखने में आता है जिसे सर्वसाधारण "हाड़ा वांसा कहते हैं।

वाँसा सालमें दो दफे फूलता है। पहिले शरद् ऋतुमें और फिर, वसंत ऋतुमें।

औषधार्थ व्यवहार:—छाल, पत्ते फूल, क्षार।

मात्रा—त्वक् क्वाथ, दो तोले। पत्र स्वरस १ तोला मूल त्वक चूर्ण १ मासा, क्षार, १ रत्ती।

गुणदोषः-

अाट वृषोहिमस्तिक्तः पित्तश्लेष्मास्र कासजित् ।
क्षयहृच्छर्द्दि कुष्टघ्नो ज्वर तृष्ण विनाशनः ।
[धन्वन्तरीय निघुन्टु]

वासतिक्ता कटुः शीता कासघ्नी रक्त पित्त जित् ।
कामला कफ वैकल्य ज्वर श्वासक्षयाऽपहा ॥
[राजनिघन्टुः]

वासको वात कृत्स्वर्य्यः कफ पित्तास्र नाशनः ।
तिक्तस्तुवर को हृद्यो लघुः शीतस्तृड़ार्त्ति हृत् ॥
श्वास कास ज्वर च्छर्द्दि मेह कुष्ठ क्षयापहः ।
[भाव प्रकाशः]

अस्य पुष्प गुणः । कटु पाकानितक्तानि. कासक्षय हराणिच
वासकः कास वैस्वर्य्यरक्त पित्त कफापहः ।
राजवल्लभः

वृष पुष्पाणि कटु पाका नितिक्त शीत कटु विपच्यते ।
चरकः

वृष पुष्पाणि तिक्तानि कटु विपाकानि क्षय कासा पहानि ।
[सुश्रुतः]

वासा-हिम, तिक्त, पित्त, श्लेष्म, खांसी, क्षय, छार्द्दि, कुष्ट, ज्वर,

रक्त पित्त, कामला, स्वरका बैठना, तृष, तृड़, मेद, आदि रोगों का नाशक है।

इसके फूल, कटु, तिक्त, खांसी क्षय, आदि रोगों को हरने वाले है।

प्रयोग—

[रक्तपित्ते]

वांसों सशाखां स पलाश मूलां।
कृत्त्वा कषायं कुसुमानिचास्य
प्रदाय कंलक विपचेंत्‌घृतंतत्‌। सक्षौद्र माश्वेव
निहन्ति रक्तम।

(चि० ४ अ:)चरक।

बांसेकी साखा, ढाककी जड़ बांसेके पुष्प डाल कर क्वाथ सिद्ध कर घृतमें पचा कर सेवन करने से रक्त पित्त तुरन्त शान्त होता है।

(२) [शोषे वासक]

कृतस्ने वृषे तत्कु सुमैश्च सिद्धम्‌। सर्पिः पिवेत्क्षौद्रहितहिताशी यक्ष्माण मेतत्‌ प्रवलंच कास श्वासञ्च हन्यादपि पाण्डुतांच।

बांसेकी जड़ पत्ते फूल सहित कुट कर क्वाथ करना इस क्वाथमें बांसेके फूलोंको डाल कर घृत पका कर यथा विधि सेवन करने से यक्ष्मा प्रबल खांसी और पाण्डु रोग शांत होता है।

(३) [रक्त पित्ते वासक पत्र स्वरसः]

मध्यवाट (स्वरसः सित शार्कराच चूर्णीकृता समधुका कृत तुल्य भागा। योवे नरः पिबति पथ्यरतः प्रभाते। तद्रक्त पित्त मतिदारुण मेतिनाशम्।

बांसेके पत्तोंका रस मिश्री मुलहटी, इनको एकत्र कर प्रातःकाल पीने से प्रबल रक्त पित्त नाश होता है।

(४) [पित्त श्लेष्म ज्वरे वासकः]

सपत्र पुष्प वासायाः रसः क्षौद्रसितायुतः। पित्त श्लेष्मज्वरं हंति साम्लपित्तसकामलाम्।

बांसेके पत्तेका स्वरस फूल डाल कर शहत और मिश्री सहित सेवन से पित्तश्लेष्म ज्वर अम्ल पित्त कामलादि रोग दूर होते हैं।

(५) [जीर्ण ज्वरे वृपः]

वृषस्य च। सिद्धाः स्नेहा ज्वर च्छिदः।

चक्रदत्त।

बांसेके पत्तोंके रसमें घी सिद्ध कर सेवन करने से पुराना ज्वर दूर होता है।

(६) [कुष्ठे वासा]

कोमलसिंहास्यदलं। सनिशं सुरभिजलेन पिष्टम् दिवस त्रयेण नियतं क्षपयति कच्छूं विलेपनतः।

चक्रदत्त।

बांसके कोमल पत्ते, हल्दी गायके दूधमें पीस कर लेप करने से कच्छूना रोग तीन दिनमें जाता रहता है।

(७) [गुदकीले वृपः]

रुगातंकफवातेन ग्रत्यर्थं गुदकीलिकम् । स्वेदयेद्ध्वृषापिण्डैः रास्नयावाऽथ शिग्रुभिः ।

कफ वातज अर्शके मस्सोंमें यदि दर्द हो तो वांसेके पत्तोंकी पोटालियों द्वारा सेकना चाहिये।

(८) [मसूरिकासु वृषः]

वृषस्य स्वरं दद्यात क्षौद्र युक्तं कफात्मके ।

वांसेके स्वरसको शहत डाल कर पिलाने मसूरिकाणें दूर होता है।

अन्यमत ।

Constituents:—An aelarous Principle ; Fatresin, a bitter alkaloïd vascine, an araganic acid, aclhato-dic acid, Sugar, gum, colouring matter Salts Action and uses, Expectorant, Antispasmodio, and altera tive, the flowers and roots with ginger & sital aro given an ague, rheumatism, consumption, asthma, chronic bronchitis, and other chest affections, the root is fare substitute for Senega. Leaves are often smocked in Asthma ; (Materia medica of India by R-N. Khory)

अर्थात् वासा, कफ निस्सारक, आक्षेपनिवारक और रसायन है। इसके फूल और जड़ सोंठ और सितापके साथ सेवन करने से कम्प ज्वर वात दाय कास स्वास, और अन्यान्य उरोगतरोगेंम रोगोंमें सेवन करने योग्य है। श्वास रोगमें इसके पत्तोंकी बीड़ी पीना लाभदायक है।

आयुर्वेदोक्त

गृह चिकित्सा ।

उपक्रमणिका

आयुर्वेद शास्त्र अनन्त अमृत निधि, सुविशाल सागर स्वरूप, प्राचीन काल में भारत सन्तान गणके स्वाधीन युगमें धन्वन्तरि, अग्निवश, सुश्रुत, चरक प्रभृति, महर्षियोंके कठोर साधनोलब्ध फल है इस सुधार्णवकी उत्पत्ति से, इसी के अमृत रसको पान कर प्राचीन आर्य्य गण केवल रोगोन्मुक्त ही नहीं, धरण, दीर्घकाम, बलिष्ठ सुदीर्घ धर्म्म मय आयु प्रभृति रत्नोंको उपलब्ध कर गए है। आयुर्वेद आर्य्य गण का सनातन धर्मानु मोदित सर्व्वा ऐसा प्राचीनतम चिकित्सा शास्त्र है ॥ क्रमागत वैदेशिक शासनों द्वारा लुप्ततेज भारत सन्तान के धर्म विकार के सहित इस क्षण वैदेशिक चिकित्साओं ने प्रधान स्थान किया है। किंतु आयुर्वेद शास्त्र के सदृश प्रदेश भर में कोई समुन्नत सर्व्वांग सुन्दर चिकित्सा शास्त्र नहीं है किंतु आयुर्वेद जटिल संस्कृत प्रगाढ व्युत्पन्न, अथच बहुकाल पर्य्यंत विज्ञ चिकित्सक के समीप चिकित्सा विषयके ज्ञान लाभके अतिरिक्त इसका भावार्थ हृदयङ्गम होना एक प्रकार असम्भव है।

अतः साधारण पुरुषोंके लिए आयुर्वेदीय चिकित्सा का मर्म्म विदित होना कठिन है। जिसके साथ जीवन मरण का नित्य सम्बन्ध है। और जिसके बिना धर्म चतुष्टय की सिद्धि होना असम्भव सा विषय है। ऐसे प्रयोजनीय विषय का मर्म्म ग्रहण करना सभी का कर्तव्य है। किन्तु हिन्दी भाषा में ऐसी कोई भी पुस्तक नहीं जिन्हें पाठकर सर्व्व

साधारण अपनेको रोगोन्मुक्त कर सकें। होम्योपैथिक, एलोपैथिक चिकित्सा विषयक ग्रन्थों का मर्म जिस प्रकार सहज में ही जानकर चिकित्सा में प्रवृत्त हो सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार आयुर्वेद का बिना सुविज्ञ चिकित्सक के प्रकार ज्ञान नहीं होसकता इसी लिए आयुर्वेद में हस्ताक्षेप कर लक्षणानुयायी चिकित्सा और औषधनिर्व्वाचन नहीं कर सकते। यही कारण है कि जिससे आयुर्वेदीय औषधियों का व्यवहार बहुत न्यून सीमा में परि बद्ध होगया, आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें भी लक्षणा नुयायी चिकित्सा विषयक कोई सहज ग्रंथ नहीं है जिसमें एक, दो, या अधिक रोगों के मिलित होने पर अथवा एक मूल रोग के विविध मारात्मक उपसर्ग उपस्थित होने पर किस रोग या उपसर्गका चिकित्सा किस समय या किस प्रकार करनी उचित है। कोन कोन अवस्था के कोन कोन लक्षण होने पर कोन औषधि से प्रत्यक्ष फल होता है।

अतः उपरोक्त बातोंके अभाव से साधारण तथा लोगोंकी अश्रद्धा हो रही है। जो जो कठिन कठिन योग पुस्तकों में लिखे हैं। और जिनकी दुःस्साध्य रोगों पर भूरि भूरि प्रशंसा की गई है। प्रथम तो सर्व्व साधारण से उनका बनना कठिन और दूसरे उन औषधियोंको रोगोंकी किस किस अवस्था में किस प्रकार दिया जाय, इत्यादि लक्षणानुयायी औषध निर्व्वाचन में वैद्यराज नामरखाने वाले भी अविज्ञ, अतः उन शास्त्रोक्त (चन्द्रोदयादि) उत्तम औषधियों के व्यवहार में बहुतसी बाधायें पड़ रही हैं। यही दुरुह घाटियां हैं जिनमें आयुर्वेद शास्त्र पर पूर्ण भक्ति रखने वाले भी यथा लाभ से वञ्चित रहते हैं।

दृष्टांत स्थल में एलो पेथी, तथा होम्योपेथी, प्रभृतिचिकित्सा पद्धतियों का उल्लेख है। कोई कोई कह देते हैं कि यह तो राजा-

श्रित है एलो पेथी ही राज चिकित्सा है होम्यो पेथी तो नहीं, किन्तु इसने जो थोड़े कालमें ही आश्चर्य उन्नति की है वह किसी से अविदित नहीं यद्यपि विचार किया जाय तो होम्यो पेथी से आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में कोई गुण कम नहीं। जैसे होम्पो पेथीकी औषधियां, अल्प मात्रामें दी जाती है। तुरंत गुण करती हैं। इन में व्यय भी कम पड़ता है। उनका स्वाद भी कड़वा खट्टा नहीं होता जिससे सुकुमार भी भले प्रकार सेवन कर सक्ते हैं।

इत्यादि गुणों पर सर्व साधारणोंकी रुचि बढ़ती है। किन्तु आयुर्वेदीय औषधियोंमें यह गुण ही नहीं किन्तु बहुत से आश्चर्य हैं। शास्त्रकार लिखते हैं कि,—"अल्प मात्रोपयोगित्वा दरुचेर प्रसंगतः। क्षिप्रमारोग्य दायित्वादौषधि स्योधिको रसः।" अर्थात् अत्यंत थोड़ी मात्रामें दिए जाते हैं। जिन से औषधि सेवन करने वाला यह न जान सके कि क्या स्वाद है, औषध से अरुचि होना तो दूर रहा। काष्ठादि औषधियां जिस कामको अहोरात्र में करें उनको रस कुछ मिनटों में ही कर दिखाते हैं। इत्यादि सभी बात आयुर्वेदीय औषधियोंमें मौजूद हैं। होम्योपेथी औषधियां जहां मदिरा आदि मादक द्रव्यों तथा अशुद्ध विषोंके योग से बनती हैं यदि मात्रा से अधिक दी जांय तो तुरंत प्राणों का संहार कर दें। दूसरे इनका असर अधिक स्थायी नहीं है। उधर दवा दी कि कुछ घंटे बाद उसका असर जाता रहा। और रोगके ज्यों के त्यों लक्षण प्रतीत होने लगे। किंतु आयुर्वेदीय औषधियोंमें न तो धर्म भृष्ट कारी ही वस्तुएं हैं। न एसी ही वस्तुएं हैं जिन से कभी अनिष्ट घटने की संभावना हो सके। यह तो सर्वदा आबाल वृद्धको लाभ पहुँचा कर रोग की जड़ से उखाड़ देती हैं। जिससे उस रोगके बार बार होने की संभावना ही नहीं रहती, अतः हमने इस आयुर्वे-

द्योक्त ग्रह चिकित्सा नामक पुस्तकको अभिनव समुन्नतिकर जन्म दिया है।

जिस प्रकार होम्योपेथीके ग्रंथोंको देख कर सर्व सधारण औषधि व्यवहार कर सके हैं। उसी प्रकार इस पुस्तक से भी सर्व साधारण तथा चिकित्सा व्यवसाई गण लक्षणानुरूप चिकित्सा कर मुझे सफल मनोरथ करेंगे।

ग्रन्थमें आलोच्य विषय।

(१) रोगोंके बाह्य और भीतरी लक्षणानुसार तथा वायु, पित्त, कफकी गतिके अनुरूप किस विषयमें कौन औषधि प्रयोग करनी चाहिये। इत्यादिका वर्णन किया गया है।

(२) वायु, पित्त, कफकी गतिके अनुसार और बाह्य लक्षणानुसार दो तीन व अधिक रोगोंके लक्षण मिले होने पर औषधियोंके सहज प्राप्य अनुपान लिखे गये हैं।

(३) एक रोगके उत्पन्न होने पर उसके उपद्रव स्वरूप अन्य रोग उपस्थित हों तो उनमें औषधि प्रयोग विधि स्वानुभूत दी गई है।

(४) प्रत्येक रोगकी अवस्था भेदमें सहज लाभ सब प्रकारकी पथ्यादि चिकित्सा लिखी गई है।

(५) जिस प्रकार होम्योपेथीमें थोड़ी ही औषधियों से विविध रोगोंकी शांति रीति है उसी प्रकार इस ग्रंथमें भी हमने अपनी बहु परीक्षित औषधियोंका वर्णन किया है। किसी भी औषधिके विषयमें शंका करने की आवश्कता नहीं।

(६) इस पुस्तक में प्राय शास्त्रोक्त औषधियोंका जो प्राचीन ऋषियों द्वारा शतशः अनुभूति हो चुकी हैं। विवरण किया गया

है। किन्तु शास्त्रोंमें जो औषधियोंकी मात्रा लिखी हुई है उस में योग्य फेर फार किया गया है क्यों कि इतनी मात्रा आज कल विष तुल्य क्रिया करती है।

(७) जिस प्रकार यूरोपीय चिकित्सा पद्धतिमें प्रत्येक पुरुष को औषधि बनाके छानने, कूटने पीटनेके झगड़ेमें नहीं डाला जाता है। इसी प्रकार ठीक इस पुस्तकमें आने वाली सभी औषधियां पाठक गण हमारे कार्य्यालयसे मँगा कर निर्भ्रांत व्यवहार कर सके हैं। क्यों कि प्रथम तो सर्व साधारण से औषधि ठीक तरह प्रस्तुत ही नहीं हो सकी। और दूसरे इन में पड़ने वाले भेषज्य द्रव्य प्राय प्रत्येक स्थानमें अप्राप्य हैं। हमारे कार्य्यालयमें प्रत्येक धातु, भस्म, मोती, कस्तूरी, केशर, शिलाजीत तथा वनस्पति द्रव्य असली और ताजे डाले जाते हैं जो चाहैं सो परीक्षा कर सके हैं।

(८) यद्यपि वैद्य लोगोंके यहाँ यह सब औषधियां प्रस्तुत रक्खी जांय तो इन्हें प्राय इस प्रकारकी शंका नहीं करनी पड़ती कि अमुक रोगमें अमुक औषधि लाभ करैगी या नहीं।

(९) चन्द्रोदय, मालती बसंत, वृहत्कस्तूरी भैरव, प्रभृति औषधियोंका वैद्य लोगोंके यहां इतना भाव तेज है कि सर्व्व साधारण तो क्या बड़े रईस भी व्यवहार करते घबराते हैं और तिस पर औषधियोंके असली मिलनेकी शंका हर समय बनी रहती है। यही कारण इन औषधियोंके व्यवहार घट जाने का है। किन्तु आयुर्वेदोक्त चिकित्सा बक्समें यह समस्त औषधियां इसी अभिप्राय से रक्खी गई हैं कि सर्व्व साधारण के चित्त से यह शंका दूर हो जाय और प्रत्येक साधारण पुरुष भी थोड़े ही व्ययमें इनकी परीक्षा कर कृत कार्य्य तथा यशस्वी हों और आयुर्वेद औषधियोंका

तेल। यद्यपि इन समस्त औषधियोंका मूल्य २५) से कम नहीं है किन्तु इनका प्रचार बढ़ानेके लिये हमने इनका मूल्य केवल ६) रक्खा है।

(३) बृहत् आयुर्वेदीय भैषज्यभण्डार।

इस बक्स मे दुःसाध्य तथा कष्ट प्रद रोगोंको जीतनेके लिये आयुर्वेद रूपी समुद्रको मथ कर संग्रह किया है। जिन औषधियोंके बनानेमे बहुत समय तथा धन खर्च होता है और प्रत्येक वैद्य कभी बना भी नहीं सकता और न इनके फलोंको प्रत्यक्ष कर दुःस्साध्य रोगोंको दमन कर सक्ता। उन समस्त औषधियोंका वैद्य चातकोंकी तृषा बुझनार्थ इसमें संग्रह किया गया है। आभ्यंतरिक प्रयोगों की प्रधान प्रधान औषधियोंको एक ड्रामकी शीशियों में और बाह्य प्रयोग के लिये आध औंसकी ४ शीशियां नीचे की दराजमें रक्खी गई हैं। इसके अतिरिक्त एक म्याग्निफाई थर्मामीटर एक स्टेथस्कोप एक पनिमाँ साइरिंग (बस्तियंत्र) प्रभृति वस्तुयें जिनके प्रयोग से वैद्योंको लाभ उठाना चाहिए संग्रह की गई है।

औषधियोंके नाम।

(१) चन्द्रोदयमकरध्वज	१ ड्राम	२५)
(२) षड्गुण बलिजारित रससिन्दूर	१ ड्राम	१०)
(३) तालचन्द्रोदय	१ ड्राम	३०)
(४) शिलाचन्द्रोदय	१ ड्राम	२५)
(५) मल्ल चन्द्रोदय	१ ड्राम	१५)
(६) कर्पूर चन्द्रोदय	१ ड्राम	१५)
(७) विष चन्द्रोदय	१ ड्राम	२५)
(८) चतुर्वङ्ग भस्म	१ ड्राम	२५)

(९) ताम्र भस्म	१ ड्राम	१)
(१०) सहस्रपुटितवज्राभ्रक भस्म	१ ड्राम	२०)
(११) सहस्र पुटित लोह भस्म	१ ड्राम	१०)
(१२) श्वेताभ्रक भस्म	१ ड्राम	२)
(१३) स्वर्णमाक्षिक भस्म	१ ड्राम	२)
(१४) स्वर्णपर्पटी	२ ड्राम	१०)
(१५) नागरस	१ ड्राम	१)
(१६) भीमसेनीकाफूर	१ ड्राम	

(१७) नारायण तैल (१८) लाक्षादिक तैल (१९) सुधांशु तैल (२०) गोप्यरस। यद्यपि उपरोक्त कुल दवाई लगभग १५०) के होती हैं। किन्तु वैद्योषधिप्रकाशके ग्राहकोंको उपरोक्त कुल वक्स केवल ७५) पिचत्तर रूपएको देते हैं। जिनमें २५) पहले मनिआर्डर द्वारा आने चाहिए।

आयुर्वेदीय भैषज भण्डार।

(स्वल्प)

इसमें भी उपरोक्त सब औषधियोंका संग्रह है इसका मूल्य २५) है जो मनिआर्डर द्वारा आने चाहिये।

हमारी प्रार्थना है कि प्रत्येक वैद्यको उपरोक्त वक्सोंका संग्रह कर लाभ उठाना चाहिये। क्यों कि जो वैद्य शास्त्रीय अनुभव जन्य शास्त्र रूपी औषधियोंको संग्रह रखते हैं। वही कठिन से कठिन रोगोंको लक्ष्यकी भांति विद्ध कर सके हैं। ऐसा ही श्रुति कहती है "यत्रौषधि समग्मत राजानः समिता विव, विप्रः सउच्यते भिषग्रक्षो हामीव चातनः" अर्थात् जिस वैद्यके पास राजसभामें बैठे तेजस्वि राजाओंके समान दिव्योषधियाँ होती हैं। वही विद्वान वैद्य कहाता है और वही अनेक रोगों को दूर कर सकता है।

दिनों दिन व्यवहार बढ़ कर आयुर्वेद शास्त्र पर लोगों की श्रद्धा पुनः दृढ़ हो और आयुर्वेदोन्नति में पड़ने वाली बाधायें दूर हों।

(१०) इस पुस्तकमें औषधियोंके व्यवहार करनेकी यही पद्धति है कि प्रथम तो जो औषधि जिस रोग पर निर्वाचित है वह उस पर प्रत्यक्ष फल दिखाती है। यदि किसी कारण से वह लाभ न करे तो उसके नीचे लिखी हुई दूसरी अथवा तीसरी औषधि व्यवहार करनी चाहिये।

(११) यदि किसी भी रोग पर नियत की हुई औषधि न लाभ करे या किसी पेचीदा रोगोंमें औषधि निर्वाचन करनेमें कठिनता पड़े तो हमें सूचित करना चाहिये। हम उचित व्यवस्था देंगे।

(१२) इस पुस्तक में वर्णित पद्धति पर चिकित्सा करने से नवीन रोगों पर तो लाभ होता है ही, किन्तु जटिल और पुरातन रोगियों पर जिन को होम्यो पेथी, तथा एलोपथी दोनों जवाबदे दें, अद्भुत चमत्कार देखनेमें आता है।

(१३) इसमें वर्णित सारी अनुपानादि विधि एसी सरल है कि प्रत्येक पुरुष बिना किसी दिक्कत के काम चला सक्ता है। (१४) बहुत से पुरुष शास्त्रोंमें लिखी बड़ी बड़ी दिक्कत से बनने वाली बहुत सी औषधियां बना कर अनुभवमें लाते हैं किन्तु कभी कभी बहुतसे योग्य किसी कारण वश उल्लिखित गुण नहीं करते। तो हृदयमें बड़ा दुःख होता है किन्तु हमारी प्रार्थना है कि पहले वह इस पुस्तकमें वर्णित औषधियोंको तैय्यार हुई मंगा कर अनुभव कर लें फिर अपनी इच्छानुसार बनाने पर किसी भी प्रकारकी दिक्कत नहीं उठानी पड़ेगी।

(१५) इस पुस्तक में आने वाले सभी योगोंको अनुभव करते

समय नोट करते रहें और पीछे हमें सूचित करें जिससे उनका सर्व साधारण के ऊपर बड़ा उपकार होगा।

इस पुस्तकमें आने वाली औषधियोंको तीन भागोंमें विभक्त हैं प्रथम खण्ड गृहचिकित्सा नामक जिसमें केवल १२ औषधियोंका संग्रह किया गया है जो प्रत्येक समय सफर और गृहस्थमें समीप होने पर तुरन्त काम देती हैं इसमें औषधियां रक्खी गई हैं जिनसे सर्व साधारण किसी प्रकारका अनुपानादि समीप न होने पर अचानक होने वाली व्याधियोंमें केवल जलमें एक बूंद डाल कर देते ही रोग को शमन कर देती है। इनको बच्चे भी बड़ी आसानीसे सेवन कर सक्ते हैं। इस बक्सका मूल्य केवल २॥) है।

(२) आयुर्वेदीय गृह चिकित्सा बक्स

जिसमें आयुर्वेद शास्त्रकी निम्न लिखित केवल २५ औषधियोंका एक सुन्दर बक्समें संग्रह किया है। जिनके द्वारा प्रत्येक पुरुष गृहस्थ तथा सफरमें होने वाले सभी रोगोंकी चिकित्सा स्वयं कर सक्ता है। इसका मूल्य केवल ६) रुपये मात्र है इसमें इतनी औषधियों का संग्रह है।

(१) चन्द्रोदय ॥ माशा (२) मालतीवसंत ॥ माशा (३) मृत्युंजय रस (४) कामकेश्वर रस (५) ज्वरांतक बटी (६) बृहतलोकनाथ रस (७) स्वर्णपर्पटी (८) बालरोगांतक बटी (९) लोहपर्पटी (१०) धात्रीलोह (११) चन्द्रप्रभाकर बटी (१२) वाचकारि बटी (१३) दाद्रांतक रस (१४) बृहतवात गजांकुश (१५) महालक्ष्मी विलास (१६) बृहतचिंतामणि (१७) सिद्ध प्राणेश्वर (१८) सरल भेदी वाटिका (१९) उन्माद प्रचेतन रस (२०) बृहत कस्तूरी भैरव (२१) सालसादि बटी (२२) बृहत चन्द्रामृत रस (२३) कांकायण वटिका (२४) गोप्यरस (गोप्यार्क) (२५) सुधांशु

रोग लक्षण ।

और

(औषध निर्वाचन)

पीड़ा होने पर शरीर और मनमें जो विकार उत्पन्न होते हैं उन विकार समष्टिको "रोग लक्षण" (Symptoms) कहते हैं ।

यथा, गात्रके तापकी वृद्धि, नाड़ी की द्रुत गति, कमर में वेदना क्षुधा मांद्य, प्रभृति ज्वर के लक्षण होते हैं । उनमें से प्रथम लक्षणोंको बाह्य लक्षण (Objective symptoms) और बाकी को अन्तर्लक्षण (Subjective symptoms) कहते हैं ।

वायु, पित्त, कफ, की विकृति ही यावतीय रोगोंका कारण है । और शमता (समानता ही से आरोग्य स्थापित रहता है ।

रोग परीक्षा

रोगोंके जानतेके उपाय ६ प्रकार से हैं । यथा, पञ्चेन्द्रिय से प्रत्यक्ष ज्ञान करना और पूछना ।

प्रथम रोगी से पूछना चाहिये कि रोग किस कारण से हुआ है । फिर उसके अन्तर्लक्षण यथा, माथेमें दर्द, उद्वेग, उष्णता प्रभृतिको तथा, किस समय और किस अवस्था में रोगका ह्रास होता है या वृद्धि, इत्यादि सब बातों को पूछ कर फिर बाह्य लक्षण (शरीर) ताप, नाड़ी, जिह्वा, चर्म्म, वक्षस्थल, मल मूत्र, प्रभृतिको यथा रीति परीक्षा करे ।

(१) प्रथम शरीर का ताप, तापमान यंत्र द्वारा निर्णयकरना, स्वस्थ शरीर का ताप ९८.४ डिग्री से ९९.५ डिग्री तक होता है ।

बालकोंका गात्र ताप जवानोंकी अपेक्षा कुछ अधिक होता है और जवानोंका बूढ़ों से अधिक होता है। निद्रा और विश्रामके समय शरीरका ताप १॥ डिग्री कम हो जाता है। मस्तिष्क आवरक, झिल्ली प्रदाह, फुफ्फुस प्रदाह, आरक्त ज्वर मंथर ज्वर प्रभृतिमें गात्र ताप १०६ से १०७ तक चढ़ जाता है किन्तु अन्यान्य ज्वरोंमें १०३ से १०४ डिग्री तक ही रहता है। १०० से १०१ डिग्री तक सामान्य ज्वर १०५ तक प्रबल ज्वर, १०७ तक सांघातिक ज्वर और इससे अधिक होने पर तुरंत ही मृत्यु हो जाती है।

(२) नाड़ी स्पन्दन जन्म से १ साल उसके बच्चोंकी नाड़ी प्रति मिनट १४० बार उंगली से स्पर्श करती है। १५ वर्ष तक ८० तक १६ से ५० वर्ष तक ७५ बार और बुढ़ापेमें ७० बार स्वाभाविक नाड़ी स्पन्दन करती है। स्वाभाविक अवस्था से १० बार कम होने पर जीवन शक्तिका ह्रास होने लगता है।

शरीरका ताप १ डिग्री बढ़ने पर नाड़ीकी स्पन्दन संख्या १० बार बढ़ जाती है। और श्वास २ अधिक होते जाते हैं, जैसे स्वाभाविक गात्र ताप ९८-४ हो तो नाड़ीकी गति प्रति मिनट ७५ बार और प्रश्वास प्रश्वास २० बार होगा। ताप मान यंत्र (थर्मामीटर) न होने पर नाड़ीकी स्पन्दन संख्या से गात्र ताप जान लेना चाहिये।

(५) जिह्वा परीक्षा।

वात व्याधिमें जिह्वा रक्तता लिए हुए सूखी होती है। कफमें जिह्वाका रंग सफेद होता है पित्तमें पीला पन लिये होता है। चरकट सान्निपातिक ज्वरमें जिह्वा काले रंगकी हो जाती है। रक्त वर्ण जिह्वा, पाक स्थलीमें विकृति और मंथर ज्वरमें होती है।

(६) वक्षस्थल परीक्षा।

वक्ष परीक्षाके प्रधान तया तीन उपाय हैं। दर्शन, स्पर्शन, श्रवन द्वारा।

(१) दर्शन-रोगीको स्थिर भाव से लिटा कर देखना कि श्वास प्रश्वासादि गहरा लेता है या वक्ष किसी स्थानमें सो जा आदि तो नहीं है।

(२) स्पर्शन या प्रतिघात-बांये हाथकी हथेलीको रोगीकी छाती पर रख कर उसके ऊपर २ अंगुलियों द्वारा चोट मारनेसे यदि ठन् २ हो तो स्वस्थ है। यदि टप् टप् शब्द हो तो वक्षशोथ और फुफ्फुस विकृत है।

(३) श्रवण—यह स्टेथकोप नामक यंत्र से हो सक्ता है। यह रीति यद्यपि नवीन कही जाती है किन्तु यह ठीक नहीं है। महर्षि चर्क लिखते हैं—"शरीर गतान् सर्वान् शब्दान् कर्णेन् श्रृणुयात्" अर्थात् शरीरमें होने वाले सब प्रकारके शब्दोंको कानों से सुने।

फुफ्फस पर स्टेथ कोपको लगा कर सुने यदि सां, सां शब्द हो तो स्वस्थ है। यदि नाना प्रकारकी ध्वनि हो तो, कास, क्षयादि जाने, यदि घड़ घड़ शब्द हो तो फुफ्फुसमें कष्टका सञ्चय है। फुफ्फुसमें सो जा होने पर खस् खस् शब्द होता है।

औषध निर्वाचन।

Selection of Medicines

प्रथम इस बातको निश्चय करो कि यह रोग कौन दोष प्रधान है यथा वायु रोगमें कर्कशता, कृषता, कृष्णता, गात्र स्फुरन, उष्ण द्रव्य की अभिलाषा नींदका कम आना शरीरकी सन्धियोंमें अकड़ा शिरो शूल आदि लक्षण होते हैं और अति व्यायाम, रित्र संगम, अपचन,

गिरना, चोट लगना, भूका रहना, जलमें भीजना, रातको जगना, बोझा ढोना कड़वे, कसैले, रूखे, द्रव्योंका अधिक सेवन करना, विपरीत तथा कुसमय भोजन करना, अधिक भोजन करना, वेगोंका रुकना, इत्यादि कारणों से वायु बिगड़कर बहुत से रोगोंको उत्पन्न कर देती है।

पित्तके बढ़ने से, पीला वर्ण, गरमी लगना, सन्ताप, प्यासकी अधिकता, ठंडी वस्तुओंकी इच्छा होना, नींद कम आना, आंख, मूत्र, नख, त्वचा, मलादिका पीला वर्ण होना पित्तके लक्षण हैं।

पित्त वृद्धिके कारण—क्रोध, शोक, भय, उपवास, कड़वे, खट्टे, तेल, गरम, विदाहि, इत्यादि कारणो से पित्त दुष्ट होता है।

कफ वृद्धिके लक्षण—शरीरकी त्वचाकी श्वेतता, शरीरमें शीतता, स्थिरता, शरीरका भारी पन, मुंहका स्वाद फीका होना, नींद अधिक आना, माथेका भारी होना ; कफकी अधिकताके लक्षण हैं। दिनमें सोना अधिक ठंडे द्रव्य सेवन करने से ठंड लगने से, मीठे द्रव्य अधिक सेवन करने से कफकी अधिकता होती है।

इस कारण प्रथम दोषोंका निश्चय करे, फिर जिन औषधियोंके गुणों के दोषोंके अधिकांश लक्षण मिलते हों। इस रोगमें वहीं औषधि लिखे हुए अनुपानके साथ देना।

औषधि मात्रा।

पूरी उमर वाले पुरुषको लिखी हुई मात्रा देना चाहिये। अर्थात् १ बटिका, १ बिन्दु अर्क, तथा २॥ तो० तक अनुपानकी औषधि पकम कर देना चाहिए। बालकोंको लिखित मात्राकी चौथाई दे देना चाहिए। कमजोर तथा सुकुमार पुरुषोंको नियत मात्रा से आधी औषधि देना।

— —

तरुण रोगमें सुबह स्याम या चार चार घंटा अनन्तर उचित अनुपान से औषधि देना और उसके एक घंटे पश्चात् उचित पथ्य देना उचित है।

तीव्र और मारात्मक रोगोंमें दो दो घंटे या एक एक घंटे बाद औषध देना। पुरानी पीड़ाओंमें चन्द्रोदयादि औषधियोंको यथा क्रम देने से अधिक लाभ होता है। यदि ४ बार या दो दिन तक एक औषधि सेवन से किसी भी प्रकारको वर्मा न हो तो दूसरी औषधि प्रयोग करना।

यदि किसी रोगमें औषधि देने से दस्त न हो तो। गरम गरम जलमें साबुन घोल कर पिचकारी द्वारा दस्त करा देना चाहिए।

पथ्या पथ्यके प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए।

(२) यदि एक ही व्यधीकी औषधि सेवन करना हो तो दिन में दो बार अर्थात प्रातः और सायं।

(३) यदि दो रोग एकत्र हों तो प्रातः काल प्रधान रोगकी औषधि सेवन करना और सायं कालको अप्रधान रोगकी।

(४) अनुपानकी औषधियोंमें, कपूर, जायफल, पीपल प्रभृति का चूर्ण १ रत्ती लेना, और मधु १ माशा, सूखी अथवा हरी अनुपान की औषधिको १ तोला ले कर २ छटाक पानीमें पकाना, जब २॥ तो० रहे मधु ३ माशे डाल कर पिलाना, यदि गुरूची आदिका हिम बनाना हो तो उसे १ तोला ले कर रात्रिको २॥ तो० जलमें भिगोना और सुबहको, मिश्री डाल कर सेवन करना चाहिये।

लाक्षणिक चिकित्सा।

सामान्य ज्वर (Simqle Fever)

(१) नव ज्वरको प्रथमावस्थामें मृत्युञ्जयरस मात्रा १ बटी अद्रक के रस शहदके साथ तीन तीन घंटे बाद देना। पथ्य दूध।

(२) चन्द्रोदय—पानके रस मधु संग अथवा केवल शहद संग दिनमें ३ दफे। मात्रा १ चावल भर। पथ्य दूध, चावल।

(३) ताल चन्द्रोदय—मात्रा ॥ रत्ती अनुपान गिलोयका स्वरस मिश्री।

(४) रस सिन्दुर—मात्रा १ रत्ती मधु संग।

(५) अमृतम—मात्रा १ विन्दु आधी छटांक जलके साथ दो दो घंटे बाद।

एक ज्वर (Continued Fever)

(१) मालती वसंत—मात्रा आधी रत्ती शहतके साथ दिनमें ३ दफे।

(२) मृत्युञ्जय रस—पानके रस मधु संग दिनमें ३ दफे।

(३) सर्दी लगने से उत्पन्न हुए ज्वर पर—आश्वास्ताव, माथेमें दर्द, श्वास मर्शति पर महा लक्ष्मी विलास रस पानके रस मधु संग दिनमें दो दफे।

(४) वात ज्वर वातश्लेष्मज्वर, में मृत्युञ्जय रस अद्रकके रस शहत संग, कोष्ठ कठिन हो तो पानके रस मधु संग सेवन करना।

वात ज्वर और पित्त ज्वरमें केवल मधु संग पित्त प्रधान ज्वर वा कफ प्रधान ज्वरकी निरामावस्थामें अथवा दुषित जल वायुके कारण उत्पन्न हुए ज्वरमें दिनमें दो तीन बार मधु सह देना।

॥ पित्त ज्वर ॥

(१) पित्तज्वर, वातश्लेष्म ज्वरमें दार्दातक रस मधु संग दो दो घंटे बाद मात्रा १ चावल, पथ्य पूरा चावल।

(२) दाह, पिपासा, मुखका कटु स्वाद, मूर्छा, भ्रम, मल मूत्र

आदिकी पीतता इत्यादि लक्षण हों तो चन्द्रामृत रस चन्दनको मधु में घिसके उसके साथ देना।

(क) रस सिन्दूर—गिलोयके हिममें मिश्री डाल कर उसके साथ १ रत्ती मात्रा देना।

(ख) चन्द्रोदय—मद्दल, कपूरके साथ देना, पथ्य—चूरा चावल।

(ग) श्वेताभ्रक भस्म—मात्रा १ रत्ती, मिश्री, मुनक्का ५ नग, इलायची छोटी ७ नग इनको छटांक भर पानीमें औंट कर ठंडाई चर्म कर उसके साथ देना।

(घ) यदि मस्तकमें अधिक वेदना, दाह, मूर्छा आदि हों तो सिर से सुधांशु तैल मलना।

कफ ज्वर।

(१) मुखका मीठा स्वाद, आलसता, अरुचि, शीत बोध, अति निद्रा प्रभृति लक्षण हों तो।

(क) मृत्युञ्जय रस—अदरकके रस मधु संग।

(ख) ज्वरांतक बटी—पानके रस मधु संग।

(ग) महालक्ष्मी विलास—पानके रस मधु संग।

(घ) रस सिन्दूर—पीपल मधु संग तीन तीन घंटा बाद।

(च) कस्तूरी भैरव—तुलसीके रस मधु संग।

(छ) मालती बसंत—मात्रा ॥ रत्ती धनिके रस मधु संग।

(ज) चन्द्रोदय—अदरकके रस मधु संग मात्रा १ चावल।

(झ) ताल चन्द्रोदय, मल्लचन्द्रोदय, विष चन्द्रोदय, चन्द्रोदय मकरध्वजादिमें से कोई मात्रा १ चावल पानके रस मधुके संग देने से कफके सब विकार शांत कर ज्वरको तुरन्त शमन कर देते हैं।

(ज्वरे उपद्रव चिकित्सा)

(१) ज्वरमें रोगीको अग्निमांद्य, अफारा, क्षुधा मन्द इत्यादि लक्षण उपस्थित हों तो प्रथम सरल भेदी वटिका एक वा दो यथा आवश्यकता मिश्री ३ माशेके साथ देकर ऊपर से दूध पिलादें इससे एक या दो दस्त साफ हो जायगा फिर चन्द्रोदय, धात्री लोह, नारायण बटी इनमें से कोई सी भी औषधि अदरकके रस शहत संग वा धनिये के जलमें मिश्री डाल कर उसके साथ दिनमें तीन बार देने से आनन्द हो जाता है।

(२) यदि अफारा सरल भेदी वटिका से न दबे तो नाराचरस . बूराके साथ देकर ठंडा जल पिलावे अथवा जौ का चूर्ण दो छँटाक जवाखार दो छँटाक इनको एकत्र कर लेप करने से अफारा तुरन्त शान्त होता है।

यदि इस प्रकार भी अफरा शान्त न हो तो अंडका तैल १ छ० साबुन १ तोला। इनको गरम पानी में मिला कर पिचकारी देवें। पथ्य—खिचड़ी अथवा दूधमें द्राक्षा ओटा कर पिलावें।

ज्वरे वमन चिकित्सा ।

(१) ज्वरमें किसी भी कारण से वमन उपस्थित होने पर तो प्रथम धात्री लोह मधुके साथ 'कई कई दफे चटाना देना करने से वमन तुरन्त बन्द हो जाती है।

(क) चन्द्रोदय—अनारके रसमें मिश्री डाल कर देना।

(ख) रस सिन्दूर—गिलोयके हिममें मिश्री डाल कर दो दो घंटे बाद।

(ग) सद्गुरु पुटित लोह—मात्रा ॥ चावल मधु संग।

(ज्वरे अतिसार चिकित्सा)

किसी भी प्रकारके ज्वरमें। पतला दस्त,प्यास प्रभृति उपसर्ग उपस्थित हों तो प्रथम लोह पर्पटी मधुसंग मात्रा १ चावल।

(क) ज्वरमें पित्तके प्रकोप वश से या किसी अन्य कारण से पतला दस्त होने लगे तो सिद्ध प्राणेश्वर रस। मोथके रस मधु संग देनेसे मरोड़ा, आंव, ज्वरातिसार आदि शांति होते है।

(ख) इससे यदि उपकार न हो तो रस पर्णवटी पानके रस मधु संग घंटे घंटे भर बाद देना जब दस्त बंद हो जाय तो इसको बंद करना पथ्य हलका।

ज्वरे प्रलाप चिकित्सा।

ज्वरमें यदि रोगीको प्रलाप (बकवाद) हो जाय तो चन्द्रोदय पानके रस मधु संग दो दो घन्टे बाद निरंतर देना सिर से सुधांशु तैलकी मालिश करना।

(क) दाहांतक रस, अद्रकके रस मधु संग दो दो घंटे बाद देना।

(ख) रससिन्दूर ब्राह्मीके रसमें मिश्री डाल कर सेवन करना।

(ग) महा लक्ष्मी विलास, विष चन्द्रोदय, लाल चन्द्रोदय कस्तूरी भैरव, सहस्र पुटिताभ्र, सहस्र पुटित लोह, इन औषधियों मे से कोई सी एक औषधि अद्रकके रस मधुके साथ देना।

(घ) यदि गरमीकी अधिकता आँखें लाल हों बार बार सिर इधर उधर दे दे मारता हो बकता हो तो माथे पर, कफूर, चन्दन, धनियेके पानीमें पीस कर लेप करना, सिर पर बकरीका दूध मलना, आदि शैत्य उपचार करने चाहिए। यदि दस्त न हुआ हो तो दस्त कराने से तुरंत बकवाद बन्द हो जाती है।

ज्वरे दाह चिकित्सा।

पित्त प्रधान ज्वरोंमें असह्य दाह हो तो दाहांतक रस मिश्री मुनक्का इलायचीकी ठंडाईके साथ दो दो घंटे बाद देना अथवा इसी अनुपान से श्वेताभ्रक भस्म, भीमसेनी कापुर, रस सिन्दुर, चन्द्रादयादि औषधियां देनी चाहिये।

ज्वरे पिपासा चिकित्सा।

ज्वरमें रोगीको प्रायशः बारंबार प्यास लगती है। इसके शमन करनेको मोथा, क्षेत पपड़ा, खस, लालचन्दन, धनियां इन सबको एक एक तोला लेकर २ सेर जलमें भिगो देना और इस जलको पिलाना। श्वेताभ्रक भस्म, रस सिन्दूर, चन्द्रोदय, धात्री लोह भीमसेनी कापूर इनमें से कोई औषधि चन्दनको शहदमें घिसकर उसके साथ चटाने से दारुण तृषा बन्द हो जाती है।

ज्वरे कास चिकित्सा।

ज्वरके साथ खांसीका निरंतर वेग हो, श्लेष्मा, कठिनता से निकले, कफ ज्वर, पित्त ज्वर अथवा किसी भी प्रकारके ज्वरके साथ अधिक खांसी शुष्क हो तो, चन्द्रामृत रस, पानके रस मधु संग देने से कफ पतला होकर खांसीको आराम हो जाता है।

(क) चन्द्रोदय, श्वेत भ्रक, सहस्र पुटिताभ्रक भस्म, सहस्र पुटित लोह भस्म, महालक्ष्मी विलास रस, मालती बसंत, रक्तपित्तांतक लोह आदिको गिलोयके स्वरस और मधुके साथ सेवन करने से दुःसाध्य दुर्निवार, तथा कैसी कठिन खांसी क्यों न हो, केवल दो ही दिनमें आधी रहती है। तथा साथ ही बहु उपद्रव सहित ज्वर निर्बलता आदि भी जाते रहते हैं।

ज्वरे सर्वांग शूल चिकित्सा ।

ज्वरके समय विशेष कर रोगीके शिर. सन्धिस्थान प्रभृतिमें पीड़ा हड़कल आदि हो तो वात गजांकुश रस दिनमें दो तीन बार अद्रकके रस मधु संग अथवा मालेके पत्तोंके रस मधु संग देना चाहिये ।

(क) चन्द्रोदय मकरध्वज—ताम्र भस्म, वात चिंतामणि, विष चंद्रोदय, ताल चन्द्रोदय, मल्ल चन्द्रोदयादि रसोंमें से कोई भी लौंगके काढ़ेमें शहत डाल कर सेवन करने से कैसा असह्य सर्वाङ्ग शूल मस्तक शूल प्रभृति क्यों न हो तुरत आराम हो जाता है ।

बालुकाकी पोटली बना कर उन्हें गरम कर स्वेद देने से और नारायण वा सुधांशु तैलके मलने से बहुत लाभ होता है ।

(ख) यदि किसी भी प्रकारके ज्वरमें अधिक शिरमें दर्द हो तो हिमांशु मलना, तथा महा लक्ष्मीविलास रस, पानके रस मधुसंग सेवन करना

अथवा चन्द्रोदय, रस सिन्दूर, विष सिंदूर, प्रभृतिमें से कोईसा रस त्रिफलेके हिममें मिश्री डाल कर उसके साथ सेवन करना ।

विषय और जीर्ण ज्वर चिकित्सा ।

नव ज्वरादि चिकित्सा से विषम और जीर्ण ज्वरादिकी चिकित्सा कठिन है । वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक, सन्यपातिक, ज्वर कालांतरमें, विषम ज्वर स्वरूपमें बदल जाते हैं । अन्यद्युष्क तृतीयक, मेलेरिया, वाताश्रित, पित्ताश्रित, वात पित्ताश्रित चातुर्थिक प्रभृति दोरे से आने वाले ज्वरोंमें प्रथम सुदर्शनको पीपल १ रत्ती मधु १ माशा मालती वसंत १ चावलभर एकत्र कर देना पथ्य दूध

देना। इसी प्रकार दो पहरको देना। दोरेसे एक घंटे पहले बताशेमें रखकर १ बटी उपरांतक रसको देना। इस से दोरा रुक जाता है।

(क) दाह पूर्व विषम ज्वरमें दाहांतक रस, मिश्री मुनक्का इलायचीके साथ दिनमें ३ दफे देना चाहिये।

(ख) मेलेरिया ज्वरमें। मृत्युञ्जय रस १ गोली सुबहको तुलसीके पत्तों के साथ। दोपहरको मालती वसंत, शहदके साथ शामको चन्द्रोदय पानके रस मधु संग देना पथ्य दूध चावल।

मन्थर ज्वर।

इस ज्वरमें जिह्वाका अग्र भाग लाल रंगका और पीछे से सफेदी होती है इसमें गले तथा छातीमें मोतियोंकी सदृश दाने निकल आते हैं।

इस रोगमें बहुत से उपद्रव होते हैं। यह अधिक तर बालकों को ही होता है। यदि सिरमें अधिक दर्द हो तो सुधांशु तैल मलना, यदि प्यास अधिक हो तो, धनिया, चन्दन, आंवले इनको पानीमें भिगो कर रखना और उस पानीको पिलाना।

इसकी सब अवस्थामें निम्न लिखित औषधि अधिक गुण करती है।

(ग) श्वेताभ्रक भस्म ॥ रत्ती द्राक्षीका रस १ तोला मधु १ माशा इनको एकत्र करके एक एक घंटे बाद पिलाना, इस से दाह, प्यास, सिर दर्द, ज्वरकी तेजी आदि समस्त लक्षण शांत हो जाते हैं।

(घ) यदि कफकी अधिकता, दांत बोध, सिरमें दर्द, पे, प्यास, दस्त, पेट फूलना, प्रभृति उपसंग हों तो रस सिन्दूर १ रत्ती पानका रस मधु संग देना।

(ग) जो ऐसे पुरुष हों कि दवा न खा सकें तो उन्हें चन्द्रोदय मात्रा १ चावल शहदमें चटाना ।

(ख) इन रोगमें बहुधा रोगी हाथ पैर फैनने लगता है, बक-वाद करने लगता है। तथा उठ बठ कर भी भागता है। ऐसी अवस्थामें। महा लक्ष्मी विलास, १ वटी दो दो घंटे बाद शहद और पानके रसके साथ देना।

इसमें सिवाय दूधके और किसी भी प्रकारके पथ्य देनेमें अच्छा नहीं होता। ७ दिन अथवा २१ दिन बाद पथ्य देना चाहिये।

डेङ्गू ज्वर ।

(Dengue Fever)

इसमें विशेष कर सन्धि स्थानोंमें दर्द, धड़कन, अल्प शैत्य संयुक्त ज्वर, शिरो वेदना, वमन, कम्प, गात्र ताप १०२ डिग्री, शरीर के स्थान स्थानमें फूल आता है। घामके सदृश छोटी छोटी फुंसी, मुख मंडल रक्त वर्ण, क्षुधा मांद्य, आदि लक्षण होते हैं, सामान्य तया इसमें औषधि सेवन करनेकी आवश्यकता नहीं, प्रथम उपवास ही हित कर है।

(क) रस सिन्दूर १ रत्ती शहद संग देना।

अथवा, चन्द्रोदय, वात चिंता मणि, ताम्र भस्म औषधि सेवन करना चाहिये।

यकृत, प्लीहा संयुक्त ज्वर ।

जिस किसी भी ज्वरमें तिल्ली और जिगर (Lever) बढ़ जाय, क्षुधा मांद्य, हर समय ज्वर रहना आदि लक्षण हो तो।

प्रथम सुबहको। बृहत लोकनाथ रस १ वटी, पानके रस मधु

संग, दोषहरकी मृत्युञ्जय रस मधु संग, शामको चन्द्रोदय व मालती बसंत, गिलोयके क्वाथ और मधु संग देना।

यदि कोष्ठ कठिनता हो तो, मृत्युञ्जय रस अथवा नाराचभेदी बटिका अद्रकके रस शहद संग देना, पथ्य दूध।

इस रोगमें पाण्डुता, शोथ, अग्निमांद्यादि उपस्थित हों तो ताल चन्द्रोदय, सहस्र पुटित लोह, स्वर्ण पर्पटी, श्वेताभ्रक भस्म आदिमें से कोई एक सेवन करना चाहिये।

फुफ्फुस प्रदाह।

(Pneu Monia)

इसकी प्रथमावस्थामें फुफ्फुसमें रक्त सञ्चय होकर शीत पूर्वक ज्वर होता है। गात्र ताप १०३ डिग्री तक होता है। श्वास प्रश्वासकी गति प्रति मिनट ३०।३५ बार होती है।

नाड़ी स्पन्दन संख्या १२० से १३० बार तक। प्रथम ज्वर आरम्भ होकर थोड़ी थोड़ी खांसी होती है फिर गाढ़ा गाढ़ा कफ रक्त मिला हुआ निकलने लगता है। इस रोगमें वक्ष परीक्षा यंत्र द्वारा फुफ्फुसकी परीक्षा अवश्य करनी चाहिये। पीड़ाकी प्रथमावस्थामें कठिन शब्द सुनाई देता है। फिर बाल घिसनेके सदृश, द्वितीया अवस्थामें जब फुफ्फुस कठिन हो जाता है तब कोई शब्द सुनाई नहीं देता, तृतीय अवस्थामें जब पीप पड़ जाती है तो टप टप शब्द सुनाई देने लगता है।

(क) पीड़ाकी प्रथमावस्थामें जब ज्वर भाव, खांई, ग्लानि जकड़ा, इत्यादि लक्षण हों तो, छाती से सुधांशु तैल मलना, तथा गरम दवा से सेकना, ऐसा करने से खांसीका वेग कम हो जाता है और दर्द भी बन्द हो जाता है।

इस अवस्थामें—महा लक्ष्मी विलास रस, १ रत्ती, पानके रस मधु संग, तीन तीन घंटे बाद देना। अथवा मृत्युञ्जय रस अद्रकके रस मधु संग दो दो घंटे बाद देना।

पथ्य—सेर भर दूधमें सेर भर पानी डाल कर ४० द्राक्षा मुनक्का पीस कर डालना, जब पानी जल जाय तब थोड़ी देरमें पिलाना।

(ख) अति कठिन खांसी, छातीमें अत्यंत दर्द, रक्त मिला हुआ गाढ़ा कफ निकलना, नाड़ी द्रुत गति, इत्यादि लक्षण हों तो। श्वेताभ्रक भस्म, अथवा चन्द्रोदय, महा लक्ष्मी विलास, सहस्र पुटित लोह इनमें से कोई भी औषधि वासेके रस मधु संग दो दो घंटे बाद देना, छाती पर तार पीनके तैलमें काफूर मिला कर मलना, ऊपर से अलसीकी पुलिटस बांधना। पथ्य, द्राक्षा दुग्ध।

(ग) बार बार सूखी खांसी, छातीमें सूई चुभोनेकीसी वेदना, श्वास लेनेमें दर्द बढ़ना आदि लक्षण हों तो चन्द्रामृत रस, पानके रस मधु संग, देने से श्लेष्म पतला हो जाता है। उसके पश्चात बृहत्कस्तूरी भैरव अथवा कृष्णाभ्रक भस्म या मालती बसंत गिलोयके स्वरस और मधु संग सुबह श्याम देना।

(घ) वर्ण मलीन, श्वास, प्रश्वासमें कष्ट, कफाधिक्य, मूर्छा, आदि असाध्य उपद्रव उपस्थित हों तो। चन्द्रोदय, १ रत्ती अद्रक के रस मधु संग देना ताल चन्द्रोदय, विष चन्द्रोदय, षंगुण बलिजारित मकरध्वज सहस्र पुटित अभ्रक भस्म, सहस्र पुटित लोह भस्म इत्यादिका पानके रस, मधु संग देना।

॥ सन्निपात चिकित्सा ॥

सन्निपात अर्थात वायु पित्त कफ के प्रकोपसे मृत्यु देने वाला ज्वर उत्पन्न हो जाता है।

(१) सन्निपात ज्वरमें तन्द्रा, प्रलाप, ज्ञान हीनता, ज्वरका प्रकोप आदि हो तो मृत्युञ्जय रस अद्रकके रस मधु संग दोदो घंटे बाद देना ।

(२) चन्द्रोदय पानके रस मधु संग दो दो या तीन तीन घंटे बाद देना ।

(३) सन्निपात ज्वरमें देहकी जड़ता, निद्राधिक्य तन्द्रभाव खांसी शरीरमें दर्द, कफाधिक्यादि हों तो ज्वरांतक बटी मालके रस मधु संग तीन तीन घंटे बाद देना ।

(४) चैतन्य लोप, श्वास, वायुकी शीतलता, नाड़ी गति मन्द, सर्वे शरीरका एक दम ठंढा होना, गलेमें कफ का घड़ घड़ बोलना आदि लक्षण हों तो ।

(क) पंगुण बलिजारित, चन्द्रोदय, मलचन्द्रोदय, विष चन्द्रोदय, ताल चन्द्रोदय, बृहद् कस्तूरी भैरव, इनमें से कोईसा रस अद्रकके रस मधु संग दो दो घंटे बाद देना सिर से सुधांशु तैल मलना पथ्य मुनक्का ओटा हुआ दूध पिलाना ।

(५) सन्निपात ज्वरमें कफ या वात श्लेष्मके प्रकोप से शरीर की जड़ता, तन्द्रा, पसलियोंमें दर्द, निद्राधिक्य, जोड़ोंमें हड़फूटन, खांसी, कफका आना, सान्धिग तथा कंप युक्त सन्निपातमें भी बृहद् कस्तूरी भैरव रस, अद्रकके रस सेंधा नमकके साथ देने से प्रत्यक्ष फल देखा जाता है ।

(६) सन्निपात ज्वरमें रोगीके शरीरमें भीतर और बाहर असह्य दाह, पसीना, प्यास, मस्तकमें अग्निसी निकलना, तन्द्रा, मूर्छा, दस्त या वमन, रक्तष्ठीवि सन्निक, दाहिद्रक, आदि सन्निपातों में दाहांतक रस, मिश्रीके साथ देना ।

(७) सन्निपात ज्वरमें गदगद वाक्य या बोलना बन्द हो

होना, शीत ज्वर, तन्द्रा, कटि ग्रीवा, मस्तक तथा सारी सन्धियोंमें पीड़ा, गलेमें से कबूतर की तरह गुटर गुटर शब्द निकलना कानों से कम सुनना, खांसी कानकी जड़में तीव्र सोजा आदि लक्षणों पर महालक्ष्मीविलास, अद्रक या पानके रस और शहतके साथ देना यदि ४ दफै इस रसके देने से लाभ नहो तो इसी अनुपान से ताल चन्द्रोदय रस दो दो घंटे बाद देना।

(८) यदि सन्निपात ज्वरमें, वमन, रक्त वमन, या हिक्का हो तो चन्द्र मृत रस, वंशलोचन मधु संग अथवा श्वेताभ्रक भस्म काफूर मधु संग देना।

(क) सन्निपात ज्वरमें रोगीको, दस्त, अफारा, हो तो प्राणेश्वर रस जीरा चूर्ण मधु संग देना।

(९) यदि पसीना अधिक आवे तो, चिरायता, कुटकी, वच, काय फल, इनको बारीक पीस कर सारी देहमें मलना, अथवा बालु काकी पोटलियों से सेकना।

(१०) यदि पेटमें अफारा आ जाय तो पेट पर हलवा बंधवाना और वस्ति द्वारा दस्त कराना उचित है।

(११) सब प्रकारके सन्नि पातोंमें चन्द्रोदय पान अथवा अद्रक के रसके साथ तीन तीन घंट पश्चात् देने से अति लाभ देखा गया है। जब यह परीक्षा न हो कि किस प्रकारका सन्निपात है तो इस का प्रयोग सब से प्रथम करना चाहिये।

(१२) इस ज्वरमें सर्वदा इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि रोगीका तन्द्रा न बढ़ने पावे जब जब तन्द्रा बढ़े तभी तभी उन्माद प्रचेतनी वटिका आखोंमें आंजे—जलमें घिस कर। तथा, कामकेश्वर रसका नस्य देवे। सिर से हलवा बंधवावे। यदि बकवाद बढ़े और रोगी उठ उठ कर भागे तो मल्ल चन्द्रोदय, अथवा ताल चन्द्रो-

द्र रसकी दो दो मात्रा अद्रकके रसके साथ देकर फिर सरलभेदी वटिका मिश्रीके साथ देवे। एक दो दस्त हो जाने से बक वाद बन्द हो जाती है।

यदि किसीको दस्त भी होते हों और बक वाद (प्रलाप) भी अधिक करे उसे कस्तूरी भैरव रस १ रत्ती, जायफल२ रत्ती, पानका रस १ माशा, इनको एकत्र करके एक एक घंटे बाद देवे। पथ्य, दूध, जब ज्वरादि सब उपद्रव शांत हो जांय तथा सन्निपातकी, ९, १०, १२ वा २१ दिनकी मर्य्यादा खतम हो जाय तब हलका पथ्य दे। सन्निपातकी अवस्थामें जल कभी भी ठंडा नहीं पिलाना चाहिये। जहां तक हो सके जलकी जगह भी दूध पिलाता रहे एसा करने से रोगीका बल भी नहीं घटता तथा औषधादिकी गरमी उसे बाधा नहीं पहुंचाती, यदि किसीको दूध न पचे, तो उस दूधमें अद्रक, जाय फल डाल कर औटा लेना चाहिए। सारांश यह है। कि किसी अवस्थामें भी रोगीके बलको कम न होने दे। कारण कि बलके क्षय होने पर किसी प्रकारकी भी औषधादि क्रिया नहीं सह सक्ता, यदि सन्निपातके संबंधमें विस्तृत चिकित्सा विधि जानना चाहो तो हमारी पुस्तक "सन्निपात चिकित्सा चक्रवर्त्ती" देखो।

(ज्वरातिसार चिकित्सा)

ज्वरातिसारकी साधारण चिकित्सा, सन्निपात ज्वरमें अतिसार के समान है। इस रोगमें भी साधारणतः दाह, पसीना, प्यास, प्रबल ज्वर आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं। कभी, कभी, श्वास, हिचकी, शूल, भी हो जाते हैं।

चाहे किसी भी प्रकारका अतिसार क्यों न हो उसमें प्रथम दस्त रोकने वाली औषधि नहीं देनी चाहिए, किन्तु, पाचक, अग्नि-

वर्धक, तथा, मृत्युञ्जय रस, अमृतपर्ण घटी, देना उचित है। ज्वरातिसारकी प्रत्येक अवस्थामें सिद्ध प्राणेश्वर रस काफूर और मधु संग दो दो घंटे बाद देने से अच्छा फल होता है। यदि ज्वरातिसार में, शरीर ठंडा होने लगे, नाड़ीकी गति मन्द हो जाय, कफ बोलने लगे तो बृहत्कस्तूरी भैरव अद्रकके रस मधुके साथ देना।

प्लीहा और यकृत चिकित्सा।

प्लीहा अथवा यकृतको, प्रत्येक अवस्थामें चाहे कुछ हो लक्षण क्यों न हो निम्न लिखित प्रक्रिया से सर्वदा लाभ होता है। प्रथम प्रातः काल, यदि कोष्ठ कठिनता, अग्नि मांद्यादि हो तो, बृहत लोकनाथ रस त्रिफलाके क्वाथमें मिश्री डाल कर सेवन करना, दो पहरको कांकायण वटिका, शहतके संग।

श्यामको—चन्द्रोदय अथवा रस सिन्दुर अथवा सहस्र पुटित लोह सुहागे भुने हुए और मधुके संग।

(२) यदि यकृत अथवा तिल्ली बहुत पुराने हो गये हों तथा शरीर पाण्डु वर्ण और कृश हो गया हो, हर समय ज्वर रहता हो तो प्रातःकाल लौह भस्म, अभ्रक भस्म, चन्द्रोदय दो चावल भर इन तीनोंको एकत्र कर एक चावल गिलोयके एक चावल रस मधुके साथ सेवन करना। दो पहरको और शामको लोकनाथ रस, आधी गोली, मालती बसंत आधी रत्ती, लोह भस्म १ चावल भर तीनोंको मिला कर त्रिफलेके क्वाथमें मिश्री डाल कर उसके साथ सेवन करना। इस प्रक्रिया से पुराने से पुराने यकृत और तिल्ली वाले रोगी केवल एक सप्ताहमें आरोग्य हो जाते हैं। चाहे किसी भी

कारण से यकृत और तिल्ली बढ़ गये हों अथवा उनमें कैसे ही लक्षण हों यह प्रक्रिया अवश्य आराम कर देती है।

(३) यदि यकृत और प्लीहा कई वर्षके पुराने रोग हों जांच और चिकित्सक तक उत्तर दे दें तो निम्न प्रक्रिया से अवश्य लाभ होता है।

प्रातःकाल,—ताल चन्द्रोय आधी रत्ती चिरायतेके क्वाथमें शहत डाल कर पीना और शामको सहत पुटित लोह भस्म देइके क्वाथके साथ सेवन करना।

(४) यदि यकृत प्लीहा वृद्धिके कारण शोथ हो जाय तो लोह भस्मको मकोयके रस मधु सहित सेवन करने से अति शीघ्र लाभ होता है। पाण्डु, कामला, हलीमक, इन रोगोंमें भी यह क्रिया काम करना चाहिये।

स्नायु मंडलके रोग।

[Disease of the Nerves System]

(१) पक्षाघात—Hemiplegia.

(२) अर्धांग—Paraplegia.

(३) ज्ञानतंतुस्तम्भ—Nerve Paralysis.

(४) मज्जावज्जुदाह—Infantile Paralysis.

(५) ऊरुस्तम्भ—Lacomotor Ataxy.

(६) मस्तिष्कावरण प्रदाह—Cereberal Meningitis.

(७) अपस्मार—Epilepsy.

(८) कम्पवात—Chorea.

(९) योषापस्मार—Hysteria.

(१०) उन्माद—Delireum.

(११) बुद्धि भ्रंश—Insanity.

(१२) शिरः पीड़ा—Headach.

(१३) अनिद्रा—Sleepleesness.

(१४) धनुष्टङ्कार—Tetanus.

(१५) स्नायुशूल—Neuralgia.

(१) पक्षाघात (Paralysis)

पक्षाघात अनेक प्रकारका होता है। यथा मेरु दण्डमें आघातके कारण कंप पक्षाघात, निम्नांगका पक्षाघात प्रभृति।

प्रमेह, बहु मूत्र, सूतिका, उदरामय, क्षय आदि कारणों से पक्षाघात रोगकी उत्पत्ति होती है।

इसकी प्रथमावस्थामें जब एक तरफका शरीर वेदना सहित हो तो वात चिंतामणि रस १ रत्ती, ताम्रभस्म एक चावल भर एकत्र कर पानके रस मधुके साथ दो दो घंटे बाद देना।

सब शरीर पर नारायण तैल मल कर स्वेद देना और जिस तरफका अंग निष्क्रिय हो गया हो उधर नारायण तैल मल कर जायफल १ तोला, लौंग १ तोला, जावित्री १ तोला इनको एकत्र कर कूट पोटली बनाना और उसे गरम करकरउस स्थानको बारम्बारएक घंटे तक सेंक कर उपर बांध देना। इस प्रकार दोनों पक्ष सेवन तीन दिनके पश्चात् निम्न लिखित औषधि सेवन करना।

चन्द्रोदय २ रत्ती सुवर्णको पानके रस और मधुके साथ देकर ऊपर से दूधमें एक बूंद गोरख रस डाल कर पिलाना। इसी प्रकार दो पहर और शामको करना।

इस प्रक्रियाको एक सप्ताह तक जारी रखने से अवश्य लाभ

होता है । यदि रोगीका कोष्ट कठिन हो, तो एक दो दस्त कराना, पक्षाघात रोगको दो तीन मास व्यतीत न हो गए हों तो निम्नलिखित प्रक्रिया करना ।

ताल चन्द्रोदय १ चावल भर सुबहको गिलोयके क्वाथ और मधु संग देना फिर दोपहर तथा रात्रिको मल्ल चन्द्रोदय मात्रा १ चावल पानके रस मधु संग देना । शरीर से सुधांशु तैल मलना ।

सूतिका जनित पक्षाघातमें शरीर अत्यन्त कृश हो गया हो तो चन्द्रोदय पानके रस मधु संग मात्रा १ चावल तीन तीन घंटे बाद देना । शरीर से सुधांशु तैल मलना । स्नायु मंडलके सब रोगोंमें यही चिकित्सा करनी चाहिये ।

अर्दित ।

यह रोग दुस्तर है । इसकी चिकित्सा प्रथमावस्था से ही सावधानीके साथ करनी चाहिये । रोगारम्भमें ही मरिच, वच, धाम्र ककोड़ेकी जड़ इनको पीस कर सुंघाना देना चाहिये ।

सुधांशु तैल मास्तिष्क से मलना चाहिये और महालक्ष्मी विलास रस अदरकके रस मधु संग तीन तीन घंटे बाद देना चाहिये ।

यदि इस से कोई लाभ न हो तो निम्न प्रक्रियाका अवलंबन करें । प्रथम सुबहको—चन्द्रोदय १ चावल, सहस्र पुटित लोहभस्म १ चावल इन दोनोंको एकत्र कर पानके रस मधु संग देना चाहिये दोपहरको और रात्रिको ताल चन्द्रोदय रस १ चावल, ताम्रभस्म १ चावल इन दोनोंको (निर्गुंडी) मालेके रसके साथ देना । पथ्य दुग्ध प्रभृति ।

अधूसी।

प्रथमावस्थामें नितम्ब स्थानमें वेदना और स्तम्भ हो तो कोष्ठ शुद्धिकारक सरल भेदी वटिका देना। फिर आध सेर कायफलको कूट कर तारोंकी छलनीमें छान लेना चाहिये फिर कडुवे तैल एक सेरको कड़ाहीमें चढ़ा कर एक एक तोला कायफलका चूरा बराबर डालता रहे।

इस प्रकार चार घंटेमें सब चूरा जलावे फिर इस तैलको कपड़ेमें छान कर किट्टको बचा रक्खे और तैलको चिकनी हांडीमें भर कर रखदे, जब तैल नितर' जाय तो उसे बोतल में भर रक्खे और हांड़ीकी गादको पहली किट्टमें मिलाले। फिर उस किट्टको गरम कर उसकी छोटी छोटी पोटली बनाके प्रथम पीड़ाकी जगह तैल मल कर उसको उक्त पोटलियोंसे गरम करके सेंके। आध सेर कायफलका चार सेर पानी डाल कर काढ़ा कर ले इसको सेर भर घीमें डाल कर जला के, इस घीको रोगी खाया करे।

खानेको निम्न लिखित औषधि सुबह श्याम खावे चन्द्रोदय एक चावल, वज्राभ्रकभस्म एक चावल भर, लोह भस्म एक चावल इन तीनोंको एकत्र कर पानके रस और मधु सेवन करे।

कंपवात।

वृहद्वात चिंतामणि रस गिलोयके काथमें मधु डाल कर सुबह श्याम पिलाना चाहिये।

योषापस्मार (Hysteria)

स्नायु विकार से इस रोगकी उत्पत्ति होती है। इसके लिये निम्न प्रक्रिया से सदैव लाभ होता है। मूर्छाके समय उन्माद प्रचेतनी बटी आंखोंमें आंजनेसे तुरंत मूर्छा दूर हो जाती है।

महा लक्ष्मी विलास ॥ गोली, वृहद्वात चिंतामणि ॥ गोली पानके रस मधु संग देने से तुरंत हिस्टेरियाके दोरे रुक जाते हैं। सिर से सुधांशु तैल मलना ।

यदि यह रोग अधिक दिनका हो गया हो तो सुबहको चन्द्रोदय त्रिफलेके काढ़ेके साथ देना और रात्रिको ताल चन्द्रोदय पानके रस मधु संग देने से केवल १५ दिनमें पुराने से पुरानः रोग शांति हो जाता है।

वात व्याधि ।

(Acute Rheumatism)

गात्रत्वक उष्ण, कम्प, कोष्ठ बध्द, शिरः पीडा, प्रलाप पिपासा नाड़ी पूर्ण और कठिन, मूत्र, कभी लाल और कभी पीला प्रभृति लक्षण और सन्धि स्थानोंमें पीड़ा आदि हो तो । प्रातः काल, वात गजांकुश रस १ वटी अद्रकके रस और शहद संग देना दुपहर को चन्द्रोदय बकरीके दूधके साथ, शामको महा लक्ष्मी विलास पानके रस मधु संग देना चाहिये पथ्य दूधमें १ बुन्द गोप्य रस डाल कर कई कई दफे पिलाना।

अपतंत्रक, अपतानक, अन्तरायाम, बाहिरायाम, हनुस्तंभ, मन्यास्तंभ आदि समस्त वात रोगोंमें पक्षाघातमें लिखी हुई समस्त प्रक्रिया काम देती हैं।

धनुष्टकार ।

(Tetanus)

इस रोगमें अति सावधानी से चिकित्सा कर्त्तव्य है। इस रोग में बहुधा बेहोशीके दौरे होते हैं । ऐसी अवस्थामें वामकेश्वर

रसका हुलास देना, उन्माद प्रचेतनी वटी अंजन करना, तथा वात चिंता मणि और महा लक्ष्मी विलास रस चूर्णकर पान और अद्रकके रस मधु संग दो दो घंटे बाद देना। समस्त शरीर तथा कमरके पास से सुधांशु तैल मल कर जाय फलादिकी पोटलियों से सेकना। कफाधिक्य, हृदय धड़कना, सर्व शरीरमें शूल, ठोड़ीका अकड़ जाना, ऐसी अवस्थामें वारंवार चन्द्रोदय रस पानके रस मधु संग देना, इस प्रकार ११ दिन व्यतीत होने पर। ताल चन्द्रोदय रस, षड्गुण बलिजारित मकरध्वज, सहस्र पुटित लोह भस्म आदिमें से कोई भी औषधि पानके रस और शहद संग चार चार घंटे बाद देना।

पथ्य दुध, प्रभृति, इस बातका सदा ध्यान रखना चाहिये कि दस्त साफ होता रहे। यदि न हो तो दुधमें मुनक्का औटा कर पिलाना। यद्यपि यह रोग असाध्य है किंतु उपरोक्त प्रक्रिया से यदि सावधानीके साथ की जाय और रोगीको ज्वर न हो तो अवश्य आराम हो जाता है। यह हमारा अनुभूत है।

आमवात (गठिया) उपदंश या रक्त बिगड़ने से उत्पन्न हुए वायु रोगोंमें सालसादि बटी गिलोयका काथ, संग अथवा कर्पूर चन्द्रोदय रस मात्रा एक चावल मंजिष्ठादि क्वाथ संग एक महीना सेवन करने से शिरोग्रह मूकत्व, मिन्मिनत्व, हनुस्तंभ, शरीरकी जड़ता, श्लेष्माधिक्य आदि वात रोग शमन हो जाते हैं।

ऐसे वायु रोगोंमें जिनका निदान अच्छे प्रकार न हो सके और जो बहुत पुराने हो गये हों सुबहको ताल चन्द्रोदय १ रत्ती रास्नादि अर्क संग, और श्यामको महा लक्ष्मी विलास रस

आद्रकके रस और मधुके संग सेवन करने से बहुत जल्द आराम हो जाता है।

प्रमेहाश्रित वात।

प्रमेह जनित दुर्बलता से अनेक पुरुषोंको प्रबल आम वात उत्पन्न हो जाता है। प्रमेह रोगमें वीर्यके अधिक निकल जाने से पाचकाग्नि कम होने पर लिक, शिर, आदि नाना स्थानोंमें वायुके रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस अवस्थामें सुवह स्याम चन्द्रोदय रस गिलोयके साथ शहत डाल कर देना, रात्रि, और दोपहरको चन्द्र प्रभा वटी मधुके साथ सेवन करना चाहिये।

सूतिकाश्रित आमवात।

नव प्रसूतिको अनेक समय आम वात उत्पन्न हो जाता है। ऐसी अवस्थामें, विरेचक औषधि देनेके पश्चात् गजाङ्कुश रस आद्रकके साथ सेवन कराना सम्पूर्ण शरीर से नारायण तेल मलना चाहिये।

गण्ड माला।

(Scrof Ula)

रक्त दूषित हो जाने से गला, बगल, कण्ठ प्रभृतिमें गांठ उत्पन्न हो जाती हैं इनमें रोगी अत्यंत दुर्बल हो जाता है, पिता माताके रक्त दोष यक्ष्मा, कास प्रभृति से यह अधिकतर उत्पन्न हो जाती हैं।

प्रथम सुवहको १ चावल मात्र चन्द्रोदय, गिलोयके रसके साथ देना, दोपहरको लाक्षादि वटी मधु संग देना, रातको लाल चन्द्रोदय १ चावल मात्रा मंजिष्ठादि क्वाथमें शहत डाल कर पिलाना। यदि एक मास व्यवहार करने से पुरानी से पुरानी गण्डमालामें अवश्य लाभ होता है। गांठों पर सुधांशु तेल मालिश करना।

अपस्मार !

(Epelepsy)

यह भी अत्यन्त कठिन रोग है। इसमें सावधानी से चिकित्सा करने पर कभी कभी आराम भी हो जाता है। इसका दौरा होनेकी अवस्थामें उन्माद प्रभंजनी बटी घिस कर आंखोंमें डालना, इस से तुरंत आराम होता है। सब प्रकारकी मृगीके रोगमें निम्न प्रक्रिया अति लाभ दायक है।

सिर से सुधांशु तैल नित्य प्रति मलना, सुबहको प्रथम वामके-श्वर रस रोगीकी जिह्वा से मलवा कर वमन कराना चाहिये। पश्चात चन्द्रोदय रस १ रत्ती मक्खी और वचके क्वाथ संग शहत डाल कर पिलाना, दोपहरको और शामको महा लक्ष्मी विलास रस १ बटी वात चिंता मणि १ बटी, इन दोनोंको एकत्र कर पान के रस मधु संग देना चाहिये। दो महीने तक इस प्रक्रियाके करने से पुरानी से पुरानी मृगी के दौरे पड़ने बंद हो जाते हैं। पथ्य, ब्रह्मीको घी में जला कर उस घी को दूधमें डाल कर पीना तथा हलका पथ्य खाना।

यक्ष्मा, शोष !

(Phthisis or Consumption.)

यक्ष्मा, क्षय, शोष यह तीनों शब्द एक रोग वाचक हैं वातिक पैत्तिक, और श्लेष्मिक, यक्ष्माकी रोगारम्भक अवस्था कठिनता से जानी जाती है। स्वल्प ज्वर, खांसी, प्रमेह स्कन्ध देहमें सामान्य वेदना, लक्षण होते हैं, क्रमशः ये लक्षण बढ़ते बढ़ते असाध्य अवस्था तक पहुँच जाते हैं। यदि स्कन्ध और छातीमें

यथक हाथ पेरोंमें जलन निकलना और आठ पहर मन्दा २ ज्वर यह तीन लक्षण भी हों तो निश्चय समझ लेना चाहिये कि यक्ष्मा रोग है। अन्य लक्षण चाहे हों अथवा न हों, यदि इन तीनों लक्षणोंमें से यदि एक भी लक्षण न हो और मुँह से श्लेष्मा तथा रक्त भी आता हो निश्चय यक्ष्मा नहीं है।

यक्ष्मा रोग चिकित्सा।

प्रथमावस्थामें-मालती वसंत, गिलोयके हिम और मधु संग सुबहको देना, दो पहरको मृगनाभिकस्तूरी भैरव और चन्द्रोदय एकत्र कर पानके रस मधु संग देना रात्रिमें महा लक्ष्मी विलास १ गोली चन्द्रोदय १ रत्ती, बंस लोचन और मधु संग देना। छाती और सर्व शरीर से लाक्षादि तेल मलना, पथ्य बकरीका दूध, मक्खन मिश्री और प्रभृति।

(क) यक्ष्मा रोगमें यदि दस्त हो जाय और उसके साथ शोथ भी हो अथवा न हो, ज्वर, कास, श्वास, पसलियोंमें दर्द, अग्निमांद्य उदरामय आदि लक्षण हों तो सुबहको मकल चन्द्रोदय ॥ रत्ती पानके रस मधु संग देना। दोपहरको—स्वर्ण पर्पटी ॥ रत्ती, सहस्र पुटि-तात्मक भस्म आधी रत्ती इन दोनोंको एकत्र करके देना, इसी प्रकार शामको देना।

(ख) यदि यक्ष्मा रोगमें श्वास, कास, श्लेष्मामें रक्त मिश्रित, ज्वरादि उपद्रव हों तो सुबहको—सहस्र पुटिताभ्रक भस्म एक चांवल भर धांसेके रस और मधु संग। दोपहरको—सहस्र पुटित लोह भस्म १ चावल, चन्द्रामृत रस एक रत्ती, इन दोनोंको पानके रस मधु संग देना। और शामको ताल चन्द्रोदय रस एक चावल, सहस्र पुटित लोह भस्म एक चावल भर, दोनोंको एकत्र कर,

वंशलोचन और गिलोयके हिममें डाल कर पिलाना। इस प्रकार केवल एक हफ्ता व्यवहार करने से उपरोक्त समस्त लक्षण शांत हो जाते हैं।

(ग) यक्ष्मा रोगमें यदि श्वास कास ज्वरादिकी अधिकता हो महालक्ष्मी विलास रस तथा चन्द्रामृत रस यथाक्रम दो दो घंटे बाद गिलोयके हिममें मिश्री डाल कर पिलाना।

(घ) यक्ष्मा रोगमें यदि किसी भी औषधि से आराम न होता हो और अति कष्ट साध्य अवस्था हो जाय तो निम्न लिखित क्रिया क्रम करना चाहिये। सुबहको स्वर्ण पुटित अभ्रक भस्म चोथाई रत्ती, षड्गुणबलि जारित चन्द्रोदय चोथाई रत्ती, केसर ॥ रत्ती, इन तीनों औषधियोंको एकत्र कर मधु मिला कर चटाना चाहिये। दोपहरको सहस्र पुटित लोहभस्म ॥ रत्ती, ताल चन्द्रोदय। रत्ती, च्यवनप्राश ३ माशे इनको एकत्र कर देना ऊपर से गुनगुना औटाया हुआ दूध पिलाना इसी प्रकार शामको।

हमारे यहां यक्ष्मा रोगका इलाज बड़ी सावधानीसे साथ किया जाता है। जो महाशय चिकित्सा कराना चाहें वह प्रथम रोगीके लक्षण लिख कर भेजें। पश्चात् उन्हें आज्ञा पत्र भेज दिया जाता है। यहां पर उनके ठहरने आदिका सब प्रबन्ध उचित प्रकार कर दिया जाता है।

बहु मूत्र।

(Dia betes)

यह रोग प्रत्येक अवस्थामें निम्न लिखित क्रिया क्रम सर्वदा आराम पहुँचाता है।

सुबहको मकरध्वज पाव रत्ती गिलोय और आमलेके हिममें

शहद डाल कर पिलाना दो पहरको चन्द्र प्रभा बटी मधु सग, रामिम चन्द्रोदय १ चावल भर कस्तूरी १ चावल भर अफीम एक सरसोंके बराबर इन तीनोंको एकत्र कर पानके रस मधु संग सेवन करने से बड़ा लाभ होता है।

शोथ।

(Dropsy)

समस्त शरीर वा अंग विशेषमें शोथ हो तो प्रथम लोहपर्पटी १ रत्ती काष माची (मकोय) का स्वरस १ तोला मधु संग दिनमें तीन दफे देना।

यकृत प्लीहा बढ़ने से शोथ ज्वर पञ्जरयमें दर्द खांसी आदि लक्षण हो तो वृहत् लोकनाथ रस सुवदके पानके रस मधु देना और दोपहर शामको वृहद् पुटित लोह भस्म, पुनर्नवादि क्वाथ संग देना, शोथ स्थान पर सुधांशु तैल मल कर मालाइता चिरायता १ तो० सोंठ १ तो० इनकी पोटली बना कर सेकना। पथ्य, दूध, प्रभृति, । एक वर्ष से पुराना सर्वांग शोथ हो तो यह प्रक्रिया करने से केवल १५ दिनमें आरोग्य हो जाता है।

स्वर्ण पर्पटी अथवा लोह पर्पटी प्रथम दिन सुबह एक रत्ती पान के रस मधु संग देना दूसरे दिन एक पुड़िया दोपहरको अधिक देना, तीसरे दिन तीन ऐसे दिन चार इस क्रम से दस दिन तक एक पुड़िया बढ़ा कर रोज देना, दस दिनके बाद एक एक पुड़िया घटाना, यहां तक कि एक पुड़िया पर आजावें इस प्रकार एक कल्पमें ही सब शोथ उतर जायगा, यदि कुछ रह जाय तो फिर इसी प्रकार दूसरा कल्प करना, पथ्य, दूधमें अदरक पका कर पीना, सिवाय दूधके और कोई वस्तु, जल तक भी न देना

चाहिये। ऐसा करने से बड़े २ डाक्टरों से असाध्य कहा हुआ शोथ रोग भी आराम हो जाता है यह हमारा कई बारका किया हुआ अनुभव है। इस प्रयोग से पांडु, कामला, जलोदर, अतिसार, ग्रहणी, रक्तार्श, गण्डमाला, मेह रोग, श्वास, कासादि बहुत से रोग जड़ से चले जाते हैं। स्त्रियोंके प्रसूत रोग प्रदर रोगादिमें भी इसका यथेष्ट फल देखा गया है। जिन पुरुषोंको सर्वदा विष्टम्भ रहता हो भूक न लगती हो, अथवा अर्शका रक्त बार २ गिरने से शरीर अतिकृश हो गया हो उनके लिये भी यह प्रयोग राम बाणके सदृश गुण करता है।

रक्त सञ्चालन यंत्रकी पीड़ायें।

हृद् वृद्धि (Hypertrophy of the Heart)

हृत्पिण्डका आकार बढ़ कर सुगोल और भारी हो जाता है। पेशियोंमें मल सञ्चय हो जाता है। अपरिमित परिश्रम से रक्त सञ्चालन क्रियाके रुकने से यह रोग उत्पन्न होता है।

हृत्पिण्डकी क्रिया अधिक बढ़ जाती है गलेमें कुट कुट या खुस खुस शब्दके साथ खांसी उठती है। श्वास प्रश्वास कष्ट से लिया जाता है। नाड़ी क्षुद्र और द्रुत होती है, कभी कभी छाती के निकट सोजा भी हो जाया करता है।

मार्गेमें, दर्द दिल धकड़कना, जी घबराना आदि लक्षण हों तो त्रिफले के हिमर्मे शहद डाल कर उसके साथ चन्द्रोदय सेवन करना। हृच्छूल (Angina peotoris) इसमें छाती अत्यंत वेदना और मूर्छा तक होती है। *ऐसी अवस्थामें अद्रकके रस सहित, लोह भस्म देना, यदि इससे लाभ न हो तो, ताम्र भस्म लोह भस्म चन्द्रोदय, तीनों एक एक चावल भर ले कर पीपल और शहतके साथ चाटना।

हृत्स्पन्दन।

(Palpitation of Heart)

इस रोगकी चाहे कोई अवस्था हो चन्द्रोदय श्वेताभ्रक अदम वंश लोचन, इन तीनोंको त्रिफले के हिमके साथ देना।

मूर्च्छा!

(Synocope or fainting)

मूर्च्छा होते ही रोगीको चित करके सुलाना, उसकी नाकके समीप काफूरकी पोटली बांध कर रखना, उन्माद प्रचेतनी बटी घिस कर आंजना मस्तकमें सुधांशु मलना, चन्द्रोदय, पीपलके चूर्ण मधु संग चाटना, अथवा, महा लक्ष्मी विलास रस पानके रस और मधु संग देना, वृ द चिंतामणि बड़ी इलायचीके जल और मधु संग बारंबार देना।

श्वास यंत्रकी पीडायें

सर्दि (Catarrh)

आखिर दाग गीले कपड़े पहरना ठंडी हवा लगना, सर्दि लगना नाकमें से पानी बहना, माथेमें दर्द, गलेमें जलन, क्षुधा मांद्य आदि लक्षण हों तो प्रथम, मृत्युञ्जय रस मधु सहित दो तीन बार देना, उसके पश्चात् वृहत्कस्तूरी भैरव, पानके रस मधुके संग रात्रिमें और दिनमें तीन दफे महालक्ष्मी विलास रस सेवन करना, इस तरह बहुत जल्दी रोग शांत हो जाता है। यदि इन से लाभ न हो तो, विष चन्द्रोदय, शिलाचन्द्रोदय, मल्ल चन्द्रोदय आदि रसोंको यथानुपान सेवन करना।

वायुनाली प्रदाह!

(Bronchitis)

(क) वृहत् चन्द्रामृतरस, पानके रस मधु संग दिनमें तीन दफे सेवन करना।

(ख) महालक्ष्मी विलास, पानके रस मधु संग दिनमें ३ दफे,

(ग) चन्द्रोदय, मात्रा १ चावल, गिलोयके क्वाथमें शहत डाल कर दिनमें दो दफे देने से पुराने से पुराना रोग दूर हो जाता है।

(घ) स्वरनाली और छातीमें दाह, खांसते खांसते, अधिक पीर, पीड़ा, श्वास लेनेमें कष्ट, ज्वर इत्यादि लक्षण हों तो श्वेताभ्रक भस्म मात्रा १ रत्ती सुवर्णको बंसलोचन शहत संग, दुपहरको चन्द्रामृतरस, बंसलोचन शहत संग, रात्रिको चन्द्रोदय १ चावल मात्रा, कापूर १ रत्ती मधु १ रत्ती संग देना, छाती पर सुधांशु तैल मलना।

खांसी!

(Caugh)

सूखी खांसीमें चाहे किसी कारण से हो अथवा कुछ ही लक्षण हों श्वेताभ्रकभस्म, कापूर, मधु संग दो दो घन्टे बाद चटाना।

यदि इससे लाभ न हो तो सुवर्णको वृहत् चन्द्रामृतरस गिलोय के हिममें मिश्री डाल कर पिलाना, रातको दुग्धातरस, बंसलोचन, कापूरके साथ चटाना, इस प्रकार क्रमसे चाहे किसी भी प्रकारकी सूखी खांसी हो, तुरत शांत हो कर श्लेष्मा निकलने लगता है।

(ख) वातिक श्लैष्मिक, क्षय, क्षत, जन्यकास, न्यूमोनियाके पश्चात् रह जाने वाली खांसी, चाहे रक्त भी श्लेष्मामें आता हो।

सुबहको, सहस्र पुटिताभ्रकभस्म १ चावल बोलेके रस मधु संग और शामको चन्द्रोदय, पानके रसमें मधु मिला कर चटाना, पथ्य, १ सेर दूधमें १ सेर पानी, और १ छ० कटेलीके पञ्चाग, २० द्राक्षा, इन सबको एकत्र कर कड़ाहीमें पकाना, जब दूध बाकी रह जाय तब छान कर पिलाना, इस प्रक्रियासे बरसों पुरानी खांसी जो किसी भी यत्न से न जाती हो केवल एक सप्ताहमें जड़ मूल से विदा हो जाती है।

(ग) यदि खांसी कभी पीछा न छोड़ती हो, जो वस्तु खाई जाय उसीका कफ बन जाता हो, भूक न लगती हो, शरीर अति कमजोर हो गया हो तो, सुबहको, सहस्र पुटिताभ्रक १ चावल, सहस्र पुटित लोह १ चावल, वृहत्कस्तूरी भैरव १ बटी एकत्र कर पानके रस मधु संग सेवन करना।

हिक्का, (Hiccough) हिचकी

वायु नाशक और गर्म वस्तुओं से हिक्काकी शांति होती है, लालचन्दनको दूधमें घिस कर चटाने से हिचकी बंद होती है, तथा इसीका नस्य भी देना चाहिये। छोटी इलायची, मोर पंखकी भस्म इनको शहतमें चटाने से हिचकी बंद हो जाती है।

धात्री लोह, मींगवार मधुके साथ चटाने से तुरंत हिचकी बंद हो जाती है। वातांतक रस, बड़ी इलायचीके भिगोये हुए जलमें शहत डाल कर पिलाना।

रस सिन्दूर, शहतमें चटाना, अथवा, चन्द्रोदय १ चावल मात्रा शहतमें चटाना, इस से सब प्रकारकी हिचकी तुरन्त बंद हो जाती है।

श्वास।

(Asthma)

फुफ्फुसके वायु वहनलीमें छोटी छोटी पेशी लगी रहती है। इन पेशियोंके आक्षेपके कारण श्वास पथ बन्द होता है, और गलेमें सांय सांय हुआ करती है।

यद्यपि यह प्राण नाशक रोग नहीं है किन्तु इससे उत्पन्न पीड़ा बड़ी ही दुःख दायी होती है।

आयुर्वेद शास्त्रमें श्वासकी ५ जातियां मानी हैं, क्षुद्र श्वास, तमकश्वास, प्रतमक श्वास, छिन्न श्वास ऊर्द्ध्वश्वास, महाश्वास, प्रभृति है।

तमकश्वास, प्रतमकश्वास, क्षुद्र श्वासादिमें, मालती वसंत रस पीपलके चूर्ण और मधु संग दो दो घन्टे बाद देना।

(क) श्वास आदिमें रोगीको ज्वर, दुर्बलतादि लक्षण हों तो बृहत्कस्तूरी भैरव रस दिनमें तीन चार और रात्रिमें तीन चार पान के रस शहतके साथ देने से ज्वर, कफाधिक्यादि उपद्रव तत्क्षण दूर हो जाते हैं।

(ख) यदि रोगी श्वासमें ज्वर हो, कफाधिक्य हो, दस्त साफ न होता हो तो, मृत्युञ्जय रस, सेंधा नमक और अद्रकके रस संगमें तीन तीन घंटे बाद सेवन करना।

(ग) जब श्वासका वेग अति तीव्र हो और किसी तरह चैन न पड़ती हो तब गोल्यार्क १ बूँद आधी छ० पानीमें डाल कर आध आध घंटे बाद सेवन करना।

(घ) यदि श्वास रोगमें खुश्कीकी अधिकता हो कफ न आता

हो तो, वृहच्चन्द्रामृतरस पानके रस मधु संग सेवन करने से श्लेष्मा पतला हो कर निकलने लगता है।

(च) सब प्रकारके श्वास रोगोंमें निम्न क्रिया से चाहे कुछ ही लक्षण हो सर्वदा लाभ होता है।

रात्रिको छाती से सुधांशु तैल मल कर अरण्डके पत्ते बांधना, सुबहको वामेश्वर रसको जिह्वा से अच्छी तरह मलना, जिस से सारा कफ निकल जायगा फिर सहस्र पुटिताभ्रकभस्म १ चावल मात्रा चन्द्रोदय १ चावल मात्रा इन दोनोंको एकत्र कर, वासिके रस मधु संग, अथवा गिलोयके क्वाथ मधु संग सेवन करना, इसी प्रकार रात्रिमें। दो पहरको महालक्ष्मी विलास रस अद्रकके रस मधु संग सेवन करना चाहिये।

पथ्य दूधमें एक बूंद योग्याके डाल कर एक एक घंटे बाद सेवन करना चाहिये। इस रीति से चाहे कैसा ही सरकट श्वास क्यों न हो न जाने कहां चला जाता है।

(छ) तालचन्द्रोदय, मल्ल चन्द्रोदय, विषचन्द्रोदय, सहस्र पुटिताभ्रकभस्म, सहस्र पुटित लोह भस्म, ताम्रभस्म, चन्द्रोदयादि विविध औषधियां श्वासमें यथानुपान सेवन करने से असाध्य प्राय श्वास रोगी आनन्द लाभ करते हैं।

हमारे चर्यालयमें श्वास रोगके अति प्राचीन, और दुःसाध्य रोगियोंकी चिकित्सा बड़ी उत्तमता से की जाती है। चाहे कैसा ही कष्टसाध्य श्वास रोगी हो केवल एक मासमें शर्तिया अच्छा कर दिया जाता है, किन्तु रोगियोंको एक मास तक हमारे ही पास ठहरना पड़ता है। और आरोग्य होने पर धनवानों से ५०) रुपया और गरीबों से केवल औषधियोंकी लागत मात्र,

जिनको इच्छा हो पहिले हमारे पास आध आनेके टिकट सहित कृपा पत्र भेजें।

रक्त पित चिकित्सा।

(Harmatemesis)

इस रोगमें रक्त पित्त द्वारा दूषित हो कर, चक्षु, कर्ण नासिका, (नकसीर) मुखादि से ऊर्ध्व मार्ग हो कर गिरता है। और लिङ्ग योनि गुदा आदि से अधोमार्ग हो कर आता है। बहुधा मुँह से अधिक आता है।

(क) ऊर्ध्वगत रक्त पित्तमें धात्री लोह काफूर १ रत्ती मधुके साथ चटाना और मुनक्का २५ दाने हैड बड़ी १ तोला इनको एकत्र कूट कर दूधमें पका कर मिश्री डाल कर पिलाना।

यदि इस से लाभ न हो तो, चन्द्र पुटित लोह आधे चावल श्वेताभ्रकभस्म १ रत्ती चन्द्रोदय आधी रत्ती भीमसेनी काफूर एक रत्ती इन सबको एकत्र कर गिलोय १ तोला बांसेकी छाल १ तोला इन दोनोंको पका कर बंसलोचन, शहत डाल कर पिलाना, पथ्य, चावल बूरा।

(ख) अधोगत रक्त पित्तको स्वर्ण पर्पटी अथवा लोह पर्पटी, इनमें से कोई सी औषधि, १ रत्ती शतावार गोखरू, चन्दन प्रत्येक एक माशा पाव भर जलमें पका कर छटाक भर रहने पर मधु डाल कर पीना, पथ्य, चावलोंका मांड़ मिश्री डाल कर।

(ग) ऊर्ध्वगत रक्त पित्तमें, ज्वर, श्लेष्माधिकय, शरीरकी शीतलता, दाह, मूर्छा, श्वास, नाड़ीकी गति मंद आदि लक्षण हो तो वृहत्कस्तूरी भैरव, काफूर मधु संग देना।

(घ) जो ऊर्ध्वगत अथवा अधोगत रक्त पित्त बहुत पुराना हो

गया हो तो, चन्द्रोदय सहस्र पुटिताभ्रक भस्म मात्रा एक एक चावल एकत्र करके सुबहको मधु संग देना और रात्रिमें ताम्र चन्द्रोदय भीमसेनी काफूर किशमिसके जल संग सेवन कराना।

अम्ल पित्त।

(क) इस रोगमें खट्टी डकार, वमन, दाह प्यास आदि लक्षण हों तो धात्री लोह दिनमें तीन बार धनियेके हिममें मिश्री डाल कर पिलाना।

(ख) अधोगत अम्लपित्तमें पतला दस्त, प्रभृति लक्षण हों तो लोह पर्पटी, एक रत्ती, काफूर एक रत्ती, मधु एक माशा संग सेवन कराना।

(ग) अम्लपित्तमें पेट फूलना, शिर घूमना, नींद न आना, हाथ पैरोंमें जलन वमन, आदि लक्षण हों तो बृहत् वातचिन्ता-मणि, धनियेके हिममें मिश्री डाल कर देना।

(घ) अम्ल पित्तमें, मनकी चंचलता, शिरमें चक्कर आना, नींद न आना, पेटमें शूल स्फूर्ति न रहना, इत्यादि लक्षण हों तो सुबहको धात्री लोह धनियेके जल मधु संग, और रात्रिको बृहत् वात चिन्तामणि त्रिफलेके जलमें मधु डाल कर उसके साथ देना।

वमन।

(Vomiting)

नाना कारणों से वमन रोग हो सकता है अग्निमांद्य, अधिक भोजन, शारीरिक दुर्बलता, स्नायुमंडलकी पीड़ा, यकृत रोग, क्रिमि रोग, सवारी आदिमें चक्कर आ जाना, आदि इसके कारण हैं।

चाहे किसी प्रकार से वमन हो साधारणतः निम्न लिखित योग प्रत्येक प्रकारके वमनको शांत कर देगा।

(क) चन्द्रोदय १ चावल मात्रा, गिलोयको भिगो कर उसका स्वरस निकाल कर और उसमें मिश्री डाल कर एक एक घंटे बाद सेवन करने से सब प्रकारका वमन रोग शांत हो जाता है।

(ख) रस सिन्दूर १ रत्ती कौड़ियों भस्म १ रत्ती इन दोनोंको एकत्र कर शहतमें चटाना।

(ग) यदि किसी प्रकारका अनुपानादि संग्रह न हो सके तो गोप्याके १ बूंद मिश्रीके शरबतमें डाल कर पिलाना।

(घ) पाकाशयपर सरसों और राईको पीस कर एक कपड़ेमें लगा कर पहिले पेटके ऊपर घी लगा कर ऊपरसे इस कपड़ेको चिपका देने से वमन तुरंत बन्द हो जाती है।

शूल रोग।

(Colic)

वातिक, वात पैत्तिक, और सन्निपातिक शूल रोगमें रोगीका शरीर अति दुर्बल, कम्प, अफारा, मूर्छा; दाह, प्रभृति हों तो, बृहत् वात चिंतामणि, त्रिफलेके जल और मधु संग आधे आधे घंटे बाद देना।

(क) वात पैत्तिक, पैत्तिक, परिणामशूल, आदिमें पित्तकी अधिकता होने पर वमन, दाह, मूर्छा आदि हो तो धात्री लौह मधु संग एक एक घंटे बाद सेवन करना।

(ख) भोजन करनेके पश्चात् पेटमें शूल हो, वमन हो जाय अन्नद्रव शूलादिमें भोजनके आदि, मध्य अंतमें एक एक वटिका सेवन करने से अत्यन्त लाभ होता है।

(ग) पेटमें अफारा, शूल, वायुका प्रकोप आदि हों तो सरल भेरी वटिका मिश्रीके सहित देना।

(घ) स्त्रियोंके ऋतु रुकनेके कारण उत्पन्न हुए शूलमें चाङ्गायण गुटिका; सुहागे और मधु अथवा गरम जलके साथ सेवन करनेसे दो एक बार में ही शूल बन्द हो जाता है।

(ङ) आमशूल रोगमें लोह पर्पटी त्रिफलेके क्काथ संग देना।

ज्वरातिसार।

प्रातः व सन्ध्या, सिद्ध प्राणेश्वर मधु संग सेवन कराना।

(क) यदि दस्तोंमें रक्त आता हो पेठन होती हो तो लोह पर्पटी, पानके रस मधु संग।

(ख) दस्तोंके साथ अफरा हो तो सिद्ध प्राणेश्वर सोंफके रस और मधु संग देना।

(ग) प्रायः सब प्रकारके ज्वरातिसारमें रसपर्णपटी काफूर और शहतके साथ प्रत्येक दस्त आनेके पीछे चटाना इस से ज्वर भी कम हो जाता है और दस्त भी बन्द हो जाते है।

उदरामय (Diarrhea)

बिना मरोड़के बारंबार दस्त आनेको उदरामय अथवा अतिसार कहते हैं।

सब प्रकारके अतिसारोंमें सिद्ध प्राणेश्वर मधु संग देना।

(क) इससे लाभ न होने पर रसपर्ण पटी दहीके साथ दस्त आनेके बाद सेवन कराना।

(ख) यदि दस्त अधिक दिनके हो जाय, मुंह पैरों पर सोजा आ जाय तो रसपर्ण पटी और स्वर्ण पर्पटी एकके पश्चात् एक पान के रस और मधुके साथ सेवन करना पथ्य, केवल दूध पीवें।

रक्तामाशय ।

(Dysentry)

रक्त मिश्रित, दस्तके आनेको रक्तातिसार कहते हैं यदि पेटमें मरोड़ा, प्यास, आदि लक्षण हों तो सिद्ध प्राणेश्वर सफेद जीरेके चूर्ण और मिश्रीके साथ सेवन कराना।

(क) इस से लाभ न होने पर लोह पर्पटी, कत्थेके और काफूरके साथ प्रत्येक दस्त आनेके बाद देना। पथ्य मुनक्का दूधमें ओटा कर उस दूधको पिलाना।

(ख) आमातिसार, रक्तातिसार, पित्त, श्लेष्मातिसार, रक्त प्रवाहिका पैतिक प्रवाहिका, प्रभृति यदि दीर्घ समय तक रहें और शरीर बहुत कमजोर हो जाय, ज्वर रहने लगे, मृतिक के दस्तों को भी स्वर्ण पर्पटी पानके रस और शहद सहित दिनमें तीन दफे देना इस से बड़ा लाभ होता है। पथ्य, नमक बिना अन्न और दुग्धादि लघु वस्तु खानेको देना।

(ग) रक्तातिसार, आमातिसार, सन्निपातातिसार रोगोंम दाह प्रलाप, तेज ज्वर, नाड़ीकी गति मन्द आदि लक्षण हों तो मृ.स.-कस्तूरी भैरव पानके रस और मधु संग सेवन कराना।

ग्रहणी ।

ग्रहणी रोगकी प्रत्येक अवस्थामें ,रसपर्ण पटी पानके रस और मधुके साथ दो दो घंटे बाद सेवन करना पथ्य, दही खिचड़ी।

(क) वात पैतिक, श्लेष्मिक वातश्लेष्मिक ग्रहणीमें यदि अल्प ज्वर, शोथ इत्यादि आदि लक्षण हों तो लोह पर्पटी पानके रस मधु संग सेवन करना।

(ख) ग्रहणीके साथ प्रबल ज्वर श्वास शूल आदि हों तो वृहत कस्तूरी भैरव अद्रकके रस और शहदके साथ दो दो घंटे बाद। तथा सिद्ध प्राणेश्वर प्रत्येक दस्त आनेके पश्चात शहदके साथ देना।

PILES.

अर्श

खूनी बवासीरमें लोह पर्पटी त्रिफलेके जलमें रसोत डाल कर पिलाना दिनमें तीन दफे। जो बहुत पुराना रक्तार्श हो किसी औषधि से लाभ न होता हो रोगी अत्यन्त कृश हो गया हो तो सहस्र पुटित लोह १ चावल, स्वर्ण पर्पटी १ चावल भर इन दोनों को एकत्र कर गिलोयके हिममें मिश्रीके साथ सुबह, दोपहर सेवन करना और रात्रिमें ताम्र चन्द्रोदय रस १ चावल मात्रा किसमिसके जल और मधु संग।

वातार्श में।

ततैया अंग रेवतचीनी इन तीनोंको बराबर भाग लेकर तिलके तेलमें हलवा बना कर मस्सों पर बांधना रातको सोते समय अर्श हर वटी पानके रस मधु संग सुबह शाम देना चाहिये।

(क) सहस्र पुटित लोह भस्म चीतेके काढ़े और मधु संग दिनमें तीन दफे सेवन करना।

(ख) वातिक, वात पैतिक अर्शमें, कमर, पीठ, पसलियोंमें दर्द प्रमेह दोष पाण्डुता आदि लक्षण हों तो चन्द्र प्रभा सुबहको और रात्रिको दूधके संग और दोपहरको सहस्र पुटिताभ्रक चन्द्रोदय पानके रस मधु संग देना।

(ग) श्लेष्मिक अर्श रोगमें माथेका भारी पना कानोंमें कम सुनाई देने पर महा लक्ष्मी विलास पानके रस मधु संग।

(घ) इलेष्मिक वातश्लेष्मिक अर्शमें अग्निमांद्य आम सहित मल बार बार निकलना इसके साथ खांसी ज्वर प्रभृति हो तो रस सिन्दूर १ रत्ती सहस्र पुटित लोह भस्म १ चावल दोनोंको एकत्र कर चीतेके काढ़े और शहद संग देना।

स्वप्न दोश।

निद्रित अवस्थामें खराब स्वप्न देखने से अथवा अज्ञान अवस्था में जो वीर्य्य निकल जाता है उसे स्वप्न दोष कहते हैं। इस प्रकार अत्यन्त वीर्य्य पतन से माथेमें दर्द, बैठ कर उठने से चक्कर आना, स्मृति शक्तिका नष्ट हो जाना, सर्व्वदा दुष चिंता, माथा हमेशा गरम रहना, बाल गिरने लगने, हाथ पैरोंमें हड़कल और जलन छातीका धड़कना, पेटमें तरह तरहकी पीड़ा जैसे भूक न लगना, दस्त साफ न आना आदि बहुत से उपद्रव उपस्थित हो जाते हैं।

इस रोगके लिये निम्न प्रक्रिया रामबाण सदृश है। प्रात:काल चतुर्वंग भस्म १ चावल, अभ्रक भस्म १ चावल, रस सिन्दूर १ चावल इन तीनोंको एकत्र कर त्रिफलेके क्वाथमें शहद डाल कर पीना।

शामको सोते समय दो बटी चन्द्रप्रभा शहदके साथ सेवन करना, इस से एक ही सप्ताहमें स्वप्न दोष होना बन्द हो कर, उत्तरोत्तर बल वीर्य्यादिकी वृद्धि हो कर नवीन जीवन मिलता है। यह हमारा शतशः अनुभूत उपाय है।

GONORRHEA.

सोजाक।

दुष्ट स्त्रीके साथ सम्भोग करने, अतिरिक्त नशीली चीज खाने से अपरिमित रति विलास से रातको अधिक जागने से रातको स्वप्न

अवस्थामें धातुके निकलने से, हस्त दोष वा स्वाभाविक कोष्टकी कठिनता से इत्यादिकारणों से मूत्र नलीमें जो प्रदाह उपस्थित हो जाता है और पस्सी आने लगता है। इसी रोगको सोजाक कहते हैं।

गनोरियाकी प्रथमावस्था।

इस अवस्थामें मूत्र नलीके मुँहमें सुरु सुरी होती है, मूत्र बूँद बूँद हो कर निकलता है, जलन होती है। इस अवस्थामें सुधांशु तैल १० बूँद, मिश्री ३ माशे, रेवत चीनी १ माशे इनको पीस कर एकत्र कर एक एक घंटे बाद त्रिफलेके जलके साथ सेवन करने से दाह, आदि बंद हो कर मूत्र साफ आने लगेगा और सब पीड़ा शांत हो जायगी।

दूसरी अवस्था।

इस अवस्थामें मूत्र नलीका मुँह फूला हुआ जान पड़ता है, पेशाबके समय जलन होती है, कमरमें दर्द, पूँजके साथ धातु पतन, सर्वदा पेशाब त्यागनेकी इच्छा इत्यादि लक्षण होते हैं यह अवस्था दो तीन सप्ताह तक रहती है। इस अवस्थामें चन्दन, शीतल चीनी रेवत चीनी इनके क्वाथके साथ, चतुर्मुख भस्म, रस सिन्दूर दोनों एक रत्ती डाल कर देना।

तीसरी अवस्था।

(१) इन्द्रिके अग्रभागमें चमड़ा सिकुड़ जाने से (Phimosis) मूत्राशयके नीचे विषाक्त पदार्थ जमा हो जाता है। जो इन्द्रिमें प्रदाह उत्पन्न करता है। इस अवस्थामें पिचकारी द्वारा गरम जलमें सुधांशु डाल कर लिंग इन्द्रियोंमें चढाना दिनमें दो तीन बार, यह सोजाक रोग बड़ा भीषण पीड़ा दाई है। यह कुछ दिन पश्चात धातु अतिन

पीड़ाओंमें परिणित हो जाता है। और ऐसा अनिष्ट कारी दुष्ट रोग उपस्थित हो जाता है कि रोगी सर्वदा दुःख भोग करता है। स्वास्थ्य भंग, काममें अनिच्छा, आदि लक्षण विद्यमान होकर कुछ समयमें संसारसे कूँच कर जाता है। इस भीषण दुःख दायक व्याधि के लिये निम्न प्रक्रिया से छुटकारा हो जाता है।

प्रातकाल चतुर्मुख भस्म १ चावल, चन्द्रोदय १ चावल इन दोनों को एकत्र कर चन्दनादि क्वाथके साथ सेवन करना। दोपहरको लाक्षादि वटि शहदके साथ।

रात्रिको चन्द्रोदय १ चावल माशा पानके रस मधु संग सेवन करना।

इस प्रक्रियाके १५ दिन करने से पुराने से पुराना उपदंश सोजाक पेशाबके साथ शर्करा जाना तथा धातु सम्बन्ध समस्त रोग गठिया आंखोंके रोग, स्वप्न भंगता आदि नष्ट हो जाते हैं। इस रोग पर पथ्य हलकी, रोचक और हलकी दूध चावल प्रभृति देना।

SPERMATORRHIA.

प्रमेह।

स्मृति शक्तिकी अल्पता, सब कामोंमें निरुत्साह शारीरिक दुर्बलता अग्निमांद्य, कोष्ठ बद्ध, शिर दर्द, स्वप्न दोष, स्वप्न भंग, वीर्यका मूत्र व किसी और प्रकार से वीर्यका गिरना आदि लक्षण हों तो निम्नलिखित प्रक्रिया करनी चाहिये।

शिर से सुधांशु तैल मलना।

दुपहरको—चन्द्र प्रभावटी मधुके संग।

रात्रिमें—चन्द्रोदय १ रत्ती गिलोयके क्वाथ और शहद संग सेवन करना इस से केवल १५ दिनमें स्वप्न ... उपद्रव बन्द हो

जाते हैं। शरीर बलका पुनः सञ्चार होने लगता है। स्मृति शक्ति तीव्र हो जाती है।

(क) अधिक श्री सहवास, हस्त मैथुन, स्वप्न दोष, चित्तका उदास रहना आदि लक्षण हों तो चन्द्र प्रभा वटी, पानके रस और मधु संग दिनमें तीन दफे सेवन करनी चाहिये।

(ख) यदि किसी भी कारण से प्रमेह, नपुंसकता धातु क्षीण आदि हों उन पर निम्नलिखित योग व्यवहार करना चाहिये।

चतुर्मुख भस्म १ रत्ती चन्द्रोदय १ रत्ती इन दोनोंको एकत्र कर त्रिफलेके जलके साथ सेवन करने से जो गुण होता है उसे आप स्वयं अनुभव कर जानेंगे।

CHOLERA

(विषूचिका) हैजा

इसकी प्रथमावस्थामें दस्त वा के होते हों प्रथम नमक डाल कर गरम पानी पिलाना ऐसा करने से इसका सारा विष वमन द्वारा निकल जाता है। इसके पश्चात् गोरखाके एक एक बिन्दु बताशेमें अथवा मिश्री पर डाल कर आध आध घंटे बाद देना, अथवा कपूरादि दस दस बूँद मिश्री डाल कर पिलावें, ऐसा करने से प्यास, वमन और दस्त शांत हो जाते हैं।

(ग) अरुचि, वमनेच्छा, पिपासा, पेटमें दर्द, पिंडिलियोंमें ऐंठन, अनिद्रा आदि लक्षण हों तो सिद्ध प्राणेश्वर रस, पानके रसमें एक एक घंटे बाद देना।

(घ) चावल धोये जलके समान, दस्त, वमन, प्यास स्वरभंग, पेटमें दर्द, पांवोंकी नीचेको ऐंठना आदि लक्षण हों तो,

चन्द्रादय १ रत्ती रासपर्ण बटी दोनोंको एकत्र कर पानके रस और सेंधानमकके साथ एक एक घंटे बाद देनां।

(२) मल्लचन्द्रोदय मात्रा एक चावल, भीमसेनी काफूर एक रत्ती दोनोंको एकत्र कर-शहतमें चटाने से सब उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(३) वृहत्कस्तूरी भैरव १ बटी लोह पर्पटी १ रत्ती दोनोंको एकत्र कर अद्रकके रस और शहतके साथ देना चाहिये।

(४) विसूचिका मे वमन।

यदि वमनकी अधिकता हो तो सुधांशु तैल मट्ठेमें १० बूंद डाल कर पिलाना, और पाकाशय पर राई और सरसोंको एकत्र कर प्लास्टर चढाना।

(५) यदि विषूचिकामें दस्त अधिक हों तो, स्वर्ण पर्पटी पान के रसके साथ बारंबार देना।

(६) यदि प्यास अधिक हो तो, रस सिन्दूर एक माशा कबाब चीनी एक तोला मुलेठी ३ माशा भीमसेनी काफूर एक माशा, इन तीनोंको एकत्र कर बारंबार मधुके साथ चटाना, इस से प्यास शांत हो जाती है।

(७) यदि हिक्का (हुचकी) आने लगे तो कमर पर और गरदनमें राईका प्लास्टर लगाना और चन्द्रोदय शहतमें चटाना चाहिये।

(८) मूत्र न उतरे तो जवाखार और पत्थर सदा इन दोनोंको जलमें पीस कर पेट पर लेप करे।

अथवा शंख भस्म एक रत्ती कपाड़ीके बीजोंकी ठंडाईके साथ मिश्री डाल कर पिलावे।

(९) यदि विषूचिकामें शरीर शीतल होने लगे नाड़ी छूप जाय

हो जाय आंख गड़ जाय और पसीना अधिक आने लगे तो वृहत् कस्तूरी भैरव, अद्रकके रस और मधुके संग एक एक घड़ी बाद देवें।

(१०) विषूचिकामें वमनके अधिक प्रकोप से नाड़ी एक दम लोप, शरीर एक दम शीतल, बेहोशी आदि हो तो विषचन्द्रोदय, तालचन्द्रोदय, चन्द्र दयमकरध्वज, मल्लचन्द्रोदय, सहस्र पुटिताभ्रकभस्म, आदिमें से कोई सा रस, अद्रकके रस और पानके रसके साथ आध आध घंटे बाद देना, इस से यदि नाड़ी चैतन्य हो कर घटे तो एक बार फिर देना, केवल तीन या चार मात्रा इतनी देने से रोगीके यदि बचनेके ढंग दीखने लगें तो औषधि प्रयोग करें नहीं तो नहीं।

(११) यदि इस रोगमें सन्निपात हो जाय तो, सन्निपातमें वर्णित विधिका अवलम्ब करें।

यदि इस रोगके सबधम अधिक जानना चाहो तो विषूचिचिकित्साचक्रवर्ती नामक पुस्तक देखो। उस पुस्तकके साथ एक विषूचिका चिकित्सा बकस भी देते हैं जिसमें विषूचिकामें उपयुक्त बहुतसी औषधियोंका संग्रह किया गया है।

प्लेग महामारी।

यह रोग पांच प्रकारका होता है यथा—

(१) (Septicœmic) इसमें शरीरके समस्त यन्त्र बिगड़ जाते हैं।

(२) (Bubonic) इसमें ग्रन्थिका ग्रन्थ (Lymphaticglands) दूषित होकर गृधा, जंघा, बगल आदि में गिल्टी निकल आती है।

(३) (Pneumonic) इसमें फुफ्फुस विशेष रूप से बिगड़ जाते हैं मुख से खून आता है श्वास तीव्र होता है।

(४) (Cerebral) अर्थात् इसमें मस्तिष्क विकृत होकर मूर्छा हो जाती है।

(५) (Intestinal) इसमें दस्त, वमनादिक उपद्रव होते हैं।

(१) ज्वर चढ़ते ही मृत्युंजयरस एक एक घंटे बाद तुलसी के काढ़े के साथ देना चाहिये।

(२) ज्वरकी अधिकता, घर घराहट, खांसी आदि हो तो मल्ल-चन्द्रोदय रस पानके रस और मधुके साथ दो दो घंटे बाद देना चाहिये।

(३) यदि फुफ्फुस विकृति हो तो न्यूमोनियामें लिखी चिकित्सा विधि अवलंबन करना।

(४) यदि वमन और दस्त हो तो विषूचिका विधि काममें लाना चाहिये।

(५) चाटनेकी दवा—तुलसीका रस, अद्रकका रस, अंगरेका रस इन तीनोंको एकत्र कर, उसमें चन्द्रोदय और अभ्रकभस्म डाल कर बारंबार चटाना, इस से कफादिकी अधिकता नहीं होने पाती।

(६) गिलटी पर गोदपाके पान पर लगा कर बांधना।

(७) साधारण तथा इस रोगमें नीचे लिखी औषधियां अद्रकके रस और मधु संग देने से अच्छा लाभ दिखाती है। चन्द्रोदय, विषचन्द्रोदय, तालचन्द्रोदय, मल्लचन्द्रोदय सहस्र पुटिताभ्रकभस्म आदि यथा समय सेवन करनी चाहिये।

(८) इस रोगमें कस्तुरी भगरातिका प्रयोग भी बड़ा गुण दिखाता है। यदि देखना चाहो तो वनौषधि प्रकाश, भाग प्रथम अंक एकमें देखो।

स्त्री रोग चिकित्सा।

DYSMENORRHEA.

बाधकरोग।

रजके गड़बड़ होने से एक प्रकारका कष्ट कर रोग उपस्थित होता है, जिसे बाधक रोग कहते हैं। इस रोगमें रक्त रजका थोड़ा बहना मेरु दण्डमें दर्द, कमरमें दर्द, दुर्बलता, सिरमें दर्द, आलस्य, भूखका न लगना, वमनेच्छा या वमनादि लक्षण होते हैं। *मद्यपानादि अथवा अति मैथुन से यह रोग उत्पन्न होता है।*

(क) बाधकारी बटी, सुबह स्याम दो दफे गरम जलके साथ सेवन करना।

(ख) चन्द्रोदय, सुबहको गिलोयके रस मधु संग और रात्रि में चन्द्र प्रभा बटी।

(ग) यदि यह रोग बहुत पुराना हो गया हो और रोगी अति दुर्बल हो तो सुबहको, चन्द्रोदय एक ख्वाबक चतुर्मुख भस्म एक रत्ती दोनोंको एकत्र कर पानके रस मधु संग देना। रात्रिमें, लोह भस्म आधी रत्ती रस सिन्दूर दोनोंको एकत्र कर दाढ़तों चटाना।

LEUCORRHEA.

श्वेत प्रदर।

प्रदर रोगकी प्रत्येक अवस्थामें—

लोह भस्म एक रत्ती चतुर्मुख भस्म आध रत्ती इन दोनों को एकत्र कर गिलोयके क्वाथ शहद डाल कर सुबहको और

रात्रिको, चन्द्रोदय एक चावल भीमसेनी काफूर एक रत्ती दोनों को शहतमें चटाना, इस से सब प्रकारके प्रदरादि स्त्रियोंके समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

सूतिकारोग !

(प्रसूत)

स्त्रियोंके बच्चा होनेके पश्चात जो, सोजा, दर्द अतिसार देही का टूटना, ज्वर, कंप, प्यासकी अधिकता आदि लक्षण हो जाते हैं, उसको, वृहत्कस्तूरी भैरव रस पानके रस और मधु संग सुबह स्याम देना, अथवा चन्द्रोदय, दश मूलके काढे साथ देना।

प्रसूति—स्त्रीको अधिक दस्त हों, शूल हो तो लोह पर्पटी शहत और पानके रस मे सेवन करना चाहिये।

स्त्रियोंके रक्त गुल्मको कांकायण वटि अति हित कार है।

गर्भावस्थामें यदि मालती वसंत एक चावल शहतमें नित्य प्रति चटा दिया जावे तो गर्भके गिरनेकी शंका नहीं रहती और बालक हृष्ट पुष्ट उत्पन्न होता है। जिस स्त्रीका गर्भ गिर २ जाता हो उसको गर्भ रहने से और बच्चा होने तक निम्न लिखित औषधि प्रातः काल सेवन करनी चाहिये।

गर्भपाल रस एक रत्ती, मालती वसंत एक रत्ती, सहस्र पुटित लोह भस्म एक चावल, तीनोंको एकत्र कर सुबह स्याम शहतमें चटाना चाहिये।

बालरोग

बच्चोंकी, खांसी, ज्वर, वमन, पेठन, आदि चाहे कोई रोग क्यों न हो बाल रोगांतक वटी सुबह स्याम उनकी माके दूधमें देनेसे नष्ट हो जाते हैं।

सुलभव्यवहार औषध।

सब प्रकारके पेटके दर्द अफारा, अजीर्ण, शिरका दर्द, वायु के दर्द, खांसी, जुकाम, नज़ला, पसलीका दर्द, हैजा, आदि सारे वायु और कफके रोगोंमें यदि कोई औषधादिका अनुपान न संग्रह हो सके तो प्रथम गोप्पार्क एक बूंद जलमें डाल कर पिलाना चाहिये।

(१) इस से सब वायु तथा कफके रोगोंमें सहारा मिलता है।

(२) सिरका दर्द, दांतका दर्द, आंखका दुखना, हाड़का दर्द, चोट लगना, बिच्छू, ततैया आदिका काटना, फोड़े, फुन्सी क्षत, आग जलना, आदि समस्त बाह्य प्रयोगोंमें मलने, लगाने, आदि से सुधांशु तैल काममें लाना चाहिये।

(३) यदि किसी रोगका निदान अच्छी तरह निश्चय न हो और औषधि देनेकी जल्दी हो तो सब से पहिले चन्द्रोदय मात्रा एक चावल शहदमें चटाना चाहिये।

(४) ज्वरकी तीव्र अवस्थामें पसीना लानेको लाक्षादि तैल मल कर स्नान कराना उचित है।

(५) गिल्टी निकलना, फोड़ा, घाव आदि सब प्रकार सोजों और निकासों पर गोप्पार्क पानीमें लगा कर बांधना चाहिये।

॥ * ॥ इतिशम् ॥ * ॥

वृहतआयुर्वेदीय

* गृह चिकित्सा *

जिसमें, प्रत्येक रोगका कारण, उपशय, संप्राप्ति, निदान, आदि तथा लाक्षणिक चिकित्सा, पथ्या पथ्य, सभी गृहस्थियोपयोगी बातें ऐसे विस्तार से लिखी हैं कि चिकित्सा विषय में, समस्त बातें ऐसी सुविस्तृत वर्णनकी हैं कि जिनको पढ़ कर साधारण पुरुष भी निदान चिकित्सा सम्बंधी सारा मर्म विदित कर आरोग्य प्राप्त कर सकें, वैद्य और गृहस्थियोंमें इसके हर समय पास होने पर किसी और पुस्तकके देखनेकी आवश्यकता नहीं पडेगी। मूल्य १) रुपया।

पता—पं॰ बाबूराम शर्म्मा !

पोष्ट—जलालाबाद, जिला मेरठ।

वनौषधिप्रकाश

कार्य्यालयका

सूचीपत्र

मैनेजर---

वैद्य पं० बाबूराम शर्म्मा

संपादक वनौषधिप्रकाश।

पो० जलालाबाद।

जि० मेरठ।

नियम

हमारे कार्य्यालय से १०) रुपयेकी वस्तु एक साथ खरीदने वालोंको "आयुर्वेदीय गृह चिकित्सा" नामक पुस्तक मुफ्त देते हैं।

(२) १०) से अधिककी वस्तु खरीदने वालोंको चौथाई रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिये।

(३) प्रत्येक प्रकारके जवाबके लिये आध आनेका टिकट भेजना चाहिये।

(४) वैद्योंको धातु भस्म, तथा, जड़ी बूटियों पर १०) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(५) अपना नाम और पूरा पता इंग्रेजी अथवा देव नागरीमें लिखना चाहिये।

(६) यदि कोई वस्तु हमारे यहां समय पर तैय्यार न होगी तो एक सप्ताहके भीतर तैय्यार करा कर भेज दी जावेगी।

(७) वनौषधि प्रकाश, पत्रके २० ग्राहक एकत्र करने वालों को "आयुर्वेद गृह चिकित्सा," नामक बक्स मुफ्त देते हैं।

(८) वनौषधि प्रकाशके १० ग्राहक एकत्र करने वालोंको गृह चिकित्सा बक्स, मूल्य २) उपहारमें देते हैं।

(९) वनौषधि प्रकाश के पांच ग्राहक एकत्र करने वालोंको "वनौषधि प्रकाश" प्रथम गुच्छ मूल्य १॥) रु० मुफ्त उपहार में देते है।

(१०) यदि कोई रोगी अपना रोगका वृतांत लिख कर भेजे तो उसे बिना फीस उचित व्यवस्था दी जाती है।

वनौषधि प्रकाश कार्य्यालय

हम वैद्य बन्धुओंको सहर्ष सूचित करते हैं कि हमने इस कार्य्यालयमें निम्न लिखित संस्था खोली है।

(१) पुस्तक विभाग

जिसमें समस्त आयुर्वेदीय पुस्तकें, संस्कृत, हिन्दी, मराठी, बंगला, गुजराती, प्रभृति भाषाओंकी विक्रयार्थ एकत्र की गई हैं। अतः आयुर्वेदीय पुस्तक प्रकाशकों से सविनय निवेदन है कि वह अपनी पुस्तकोंकी एक एक प्रति दर्शनार्थ भेजें, उनकी पुस्तकोंकी वनौषधि प्रकाश पत्रमें समालोचना भी कर दी जाती है। और कुछ प्रतियां मंगा कर रक्खी भी जाती हैं।

(२) वनस्पति विभाग

जिसमें दुष्प्राप्य जड़ी बूटियोंको देश देशांतरों से मंगा कर संग्रह किया है। अतः जिन महाशयोंको वनस्पतियोंकी आवश्यकता हो वह हमें लिखें।

(३) सिद्धौषधि विभाग।

जिसमें सब प्रकारकी धातु भस्म, घृत, तैल गुटिका, रसायणादि हर समय संग्रह रहती हैं।

(४) चिकित्सा विभाग।

प्रत्येक रोगी, अपने रोगका निदान, लिख कर भेजें, तो उन्हें पूर्ण विचार पूर्वक, व्यवस्था देते हैं। जवाबके लिये एक आनेका टिकट आना चाहिये, रोगियोंकी इच्छानुसार उनके रोगका विवरण वनौषधि प्रकाश पत्रमें भी छाप दिया

जाता है । जिस से अन्य विद्वान वैद्य तथा डाक्टर उन पर धर्म मीमांसा प्रकट करते हैं। दुःस्साध्य और जटिल रोगों की चिकित्सा यहां पधारने पर बड़ी सावधानी से की जाती है। उनके ठहरने आदिका यहां पूरा पूरा प्रबन्ध है। जो गरीब रोगी यहां पधार कर अपनी चिकित्सा कराते हैं। उनको ठहरनेकी जगह आदि दी जाती है और उन से किसी प्रकारकी भेंट आदि नहीं ली जाती। जो धनी महाशय हमें चिकित्सार्थ अपने यहां बुलाते हैं उन से मार्ग व्ययादिके अतिरिक्त ५) रु० रोज लेते हैं। औषधादिका मूल्य पृथक।

सिद्ध रसायण

षड्गुण गन्धक जारित

(स्वर्ण घटित)

चन्द्रोदय मकरध्वज।

वच्छेद्वलं चैव जरां नियच्छेद रक्षेद्वयोकाल कृतान्ततोऽपि।
क्षीवस्य मन्दाग्नि मुखांश्च रोगान्मुष्णाति पुष्णाति च बालकायम्।
मृत्युवधि मर्गान्स्य जनाग घहिम गुर्दन्तु मेतेन विनाऽग्रसूहै।
सृष्ट न यह परमेष्ठिनाऽपि दुर्ला कस पथ शतानि षट् च।

बुभुक्षित पारद द्वारा स्वर्ण ग्रास पूर्वक छ. गुणी गन्धकको अन्तर्धूम विधि से प्रस्तुत किया है। यह साधारण चन्द्रोदयकी अपेक्षा अधिक गुण करता है मूल्य १००) तोला।

चन्द्रोदय

(स्वर्ण घटित विशुद्ध)

चन्द्रोदय भृति विज्ञानका अपूर्व निदर्शन आयुर्वेदका मेरु दण्ड

सर्व रोग हर अत्यन्त शक्ति शाली, महौषधि है आज तक इसकी सदृश किसी भी चिकित्सा शास्त्रमें कोई औषधि नहीं।

अनुपान विशेष से यह सर्व रोग हर, बलकारक, अजीर्ण नाशक अर्श, अम्ल पित्त, स्वप्न दोष, कास, क्षय यक्ष्मा, उन्माद, जीर्ण ज्वर, वात व्याधि, कोष्ठाश्रित वायु, शूल, अतिसार प्रभृति नाना रोगोंको बातकी बातमें दूर कर देता है। मूल्य १ तोला ५०) रुपया

तालचन्द्रोदय

(स्वर्ण घटित)

कुष्ठादि रोगेष्वतुल प्रभावः स्वास्थ्य प्रचार क्षमतास्वभावः।

यह कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ, उपदंशादि सैकड़ों रोगोंको एक दम नष्ट कर देता है। मूल्य ५०) रु० तोला,

सिलाचन्द्रोदय

(स्वर्ण घटित)

रक्तरयदोषापहरस्वतोयं धातू न शोषानुपजीवयेद।

शिलादि चन्द्रोदय संज्ञकः स्यादुष्णा स्वभावो यतीतसेव्यः।

श्वास, कास, कफ रोगादिमे यह बड़ा गुण दिखाता है। मूल्य ५०) तोला

मल्लचन्द्रोदय !

(स्वर्णघटित)

मल्लादि चन्द्रोदय नामनामि सर्वोषधेभ्योऽहि प्रधान वीर्यम्।

विसूचिका सन्निपत त्रिदोषात व्याधीन या हंतु मनन्य शस्त्रम्॥

विसूचिका, सन्निपात, प्लेग, पक्षाघात, कठीवता, तथा वायु और कफ के समस्त रोगोंमें यह अनन्य रूप है। मूल्य ५०) तो०

विषचन्द्रोदय !

विषूचिका प्लेग श्वास कासादि विविध रोगोंपर आश्चर्य दि-खाता है। मूल्य ४५) तो०

शत पुटित लोह भस्म !

(मृतोत्थापन)

यह लोहभस्म ऐसी उमवीर्य है कि तत्काल गुण दिखाती है।
जिस आदमी को सापने काटाहो और मुह में झाग आने लगे हों तो १ रत्ती पान के साथ देनेसे तत्काल गुण करती है ५०) तो०

कस्तूरी !

सांघातिक रोगोंमें शीत आने पर यह बडा कामदेती है। रक्त पित्त सर्दी, कफ, दुर्बलता, प्रभृति पर बड़ी गुण कारी है। किन्तु इस का मिलना आजकल बड़ा दुर्लभ है धोखे बाजोंके धोखेमें न आना चाहिये शास्त्रकार इसकी परीक्षा इस प्रकार लिखते हैं।

यागन्धं केतकी नां मपहरति मदं सिंधुराणां च घसे,
स्वादे तिक्ता कुटुबी लघुरथ तुलिता मर्द्दिता चिक्कणास्यात्
दाहं या नैति बन्हौ शिमशिमिति चिरम चर्म्मगंधा हुताशे
सा कस्तूरी प्रशस्ता वर मृग तनुजा पठ्यते राज राज.
भोग्या याऽप्सुन्यस्ता नैव वैवर्ण्य मीयात् सा कस्तूरी राज भोग्या प्रशस्ता ।

अत- हमने आसाम और नेपाल से शुद्ध कस्तूरी मगाई है आसामकी कस्तूरी ५०) तो० नेपालकी कस्तूरी ४५) रु० तोला है।

भीमसेनी काफूर !

जब नेत्रों में किसी प्रकारकी औषधि से लाभ नहीं होता तो भीमसेनी काफुर उसकी १ मात्र औषधि है और यह चन्द्रोदयादि रसोंके साथ भी व्यवहार किया जाता है मूल्य ५) तोला

विशुद्ध शिलाजीत ।

बल वर्धक धातु पुष्टिकारक प्रमेह नाशक अव्यर्थ महौषधि २०) रुपया तोला

कृष्णा वज्राभ्रक !

आर्य वैद्यकमें अभ्रक सब जातियों में

अभ्राणां मेव सर्वेषां वज्र मेवोत्तमं सदा ।
शेषाणि त्रीणि चाभ्राणि घोरान् व्याधीन् सृजन्तिहि

अर्थात् सब प्रकारके अभ्रोंमें सदा वज्राभ्रक श्रेष्ठ है और बाकी के तीन प्रकारके अभ्रक बहुत से रोग उत्पन्न करने वाले हैं। अतः वैद्यराजों से निवेदन है कि शेषाभ्रकोंको छोड़ कर वज्राभ्रककी ही भस्म बनावें क्योंकि "वलि पलित नाशाय दृढताय शरीरणां" इत्यादि गुण केवल इसमें ही होते हैं। किंतु सब जगह इसका मिलना दुस्तर है। अतः हमने नेपाल से मंगा कर इसका बड़ा संग्रह किया है। मूल्य १०) सेर।

धातु भस्म तथा अकृत्रिम

भैषज्य द्रव्य

१–सहस्र पुटित वज्राभ्रक भस्म ५०) रुपये तोला
२–सर्वकमारम५०० पुटित २०) ,,
३–हीरा एक रत्ती ६५) रुपया
४–मीठा तेलिया शुद्ध ।) तोला
५–हसीस ॥) तोला

६-अभ्रक भस्म सौ पुटी १०) ,,
७-वज्राभ्रक भस्म(निश्चन्द्र)४) ,,
८-श्वेताभ्रक भस्म २) तोला
९-स्वर्ण भस्म ४०) तोला
१०-चांदी भस्म २) तोला
११-ताम्रभस्म नं. १ ५) तोला
१२-ताम्रभस्म नं. २ ॥) तोला
१३-बंगभस्म नं. १ ५) तोला
१४-बंगभस्म नं. २ २) तोला
१५-बंगभस्म नं. ३ ॥) तोला
१६-त्रिवंगभस्म ५) तोला
१७-चतुर्वंग भस्म ५) तोला
१८-वङ्गाष्टक १०) तोला
१९-वंगेश्वर रसायण १०) तोला
२०-स्वर्ण मृगांक २) तोला
२१-जस्त भस्म ॥) तोला
२२-नागभस्म नं. १ ५) तोला
२३-नागभस्म नं. २ २) तोला
२४-नागभस्म नं. ३ ॥) तोला
२५-लोह भस्म सहस्त्र पुटित २५) रुपये तोला
२६-लोहभस्म शतपुटित ५) तोला
२७-लोहभस्म २) तोला
२८-मण्डूरभस्म ॥) तोला
२९-स्वर्ण माक्षिकभस्म १) तोला
३०-आंवला सार गंधक ≈) तोला

शुद्ध

३१-मनशिल शुद्ध ≈) तोला
३२-पारा शुद्ध १) तोला
३३-हिङ्गुलोत्थ रस १) तोला
३४-हरिताल तबकी शुद्ध ।*)तोला
३५-हरिताल तबकी भस्म ५) ,,
३६-सिंगरफ शुद्ध ।) तोला
३७-हिङ्गुल भस्म १) तोला
३८-शङ्खनाभी ॥) तोला
३९-शोधित कंकुष्ठ ५) तोला
४०-गुग्गुल महिषाक्ष ।) तोला
४१-तुत्थ शुद्ध =) तोला
४२-कज्जली १) तोला
४३-जवाखार ।) तोला
४४-मूलिका खार ।) तोला
४५-कटेलीका खार ।) तोला
४६-आकका खार ।) तोला
४७-चिरचिटेका खार ।) तोला
४८-गिलोयका सत ।) तोला
४९-करञ्जेका खार ॥) तोला
५०-केसर १) तोला
५१-द्रोण पुष्पी सत्त्व ।) तोला
५२-लटुकरी सत्त्व ।) तोला
५३-सखिया भस्म १) तोला

५४-मोती भस्म	३०) तोला	५९-संखिया शुद्ध	॥) तोला
५५-माक्षतीक भस्म	२५) तोला	६०-सोमल भस्म	५) तोला
५६-प्रवालभस्म	१) तोला	६१-रस सिन्दूर	२) तोला
५७-शंख भस्म	॥ तोला	६२ रस कर्पूर	२) तोला
५८-सीप भस्म	।) तोला	६३-बारहू सींगकी भस्म	=)तोला

॥ चूर्ण ॥

कर्पूरादि चूर्ण	१० तोला १)	सुधांशु तैल	१ शीसी २)
सितोपलादि चूर्ण	१० तोला १)	जातिफलादि चूर्ण	५) सेर
सुदर्शन चूर्ण	१० तोला १)	एलादि चूर्ण	॥) तोला
लाई चूर्ण	१) तोला	पुष्यानुग चूर्ण	॥)५ तोला
नारायण चूर्ण ॥)	१० तो०	द्राक्षासव	१ शीशी २)
च्यवनप्राश	१६) सेर	लोहासव	१ शीशी १)
धात्रावलेह	१०) सेर	ब्राह्मी घृत	१०) सेर
दशमूलारिष्ट	१) सेर	कुचला शुद्ध	।) तोला
लाक्षादिक तैल	१६) सेर	जमालगोटा शुद्ध	।) तोला
नारायण तैल	१०) सेर	सिंगरफ शुद्ध	॥) तोला

चन्द्रोदय मकरध्वज ।

(स्वर्ण घटित)

मकरध्वज (चन्द्रोदय) की समान सब रोगोंमें उपयोगी औषधि, पृथ्वीके किसी चिकित्सा शास्त्रमें नहीं है ।

एतदभ्यास तस्यैव जरा मरण नाशनं
अनुपान विशेषेण करोति विविधानगुणान् ।

अर्थात् चन्द्रोदय बुढापे और अकाल मृत्युका नाश करता है। अनुपान द्वारा ज्वर, अजीर्ण, अम्लपित्त, धातु दौर्बल्य, प्रदर, नामरदी, शिर घूमना, प्रमेह, वायु, दमा, खांसी, पुराना बुखार, सूतिका रोग प्रभृति को दूर कर आयु और मेधा वृद्धि कर जीवनको पुनः नवीन कर देता है।

तुरंत पैदा हुए बालक से लेकर मुमूर्ष रोगीको भी देते हैं। पुराने और जटिल रोगमें बहुत दिन तक कष्ट भोगनेके बाद शरीर मोटा ताजा करनेके लिये और पुराने धातु गत रोगोंको जड़से नाश करनेके लिये केवल एक चन्द्रोदय ही महौषधि है।

प्रसवके बाद स्त्रियोंकी शरीरसे दुर्बलता जरायु दोषको दूर कर शरीरको लावण्य युक्त कर देता है।

छोटे छोटे बच्चोंको कोई दवा न देकर केवल थोड़ा थोड़ा चन्द्रोदय खिलाते रहना चाहिये। इस से उनको कोई पीड़ा नहीं होने पाती और शरीर पुष्ट हो जाता है।

जो मनुष्य बहुत पढ़ने लिखने और कोई शारीरिक या मानसिक परिश्रम से नाना प्रकारके रोग भोग रहे हों अथवा धातु दौर्बल्य मस्तककी कमजोरी याद रखनेकी ताकतका कम होनो सिरमें दर्द आदि रोग हो तो उनके लिये मकरध्वज रामबाण है। यद्यपि मकरध्वज (चन्द्रोदय) का असली मिलना दुर्लभ है। किन्तु हमने अपने हाथ से यथा शास्त्र प्रस्तुत किया है। अतः इसका गुण भी तुरंत ही मालूम हो जाता है। दाम एक सप्ताह का एक रुपया। एक तोलेका ५०) रुपया।

(मालती बसंत)

यह भी आयुर्वेद शास्त्रकी परम प्रसिद्ध वस्तु है। जो स्वर्ण मोती आदि मूल्य वान औषधियों द्वारा महीनोंमे तैय्यार होती है।

इसके सेवन से सब प्रकारके ज्वर पुराने ज्वर, खांसी श्वास, यक्ष्मा प्रभृति बहुत से रोग दूर होते हैं। ज्वर भोगते २ अस्थि, अस्थिचर्म-सार रोगियोंके लिये, मालती बसंत ही एक मात्र महौषध है। दाम ३०) तोला। अनुपान पीपल चूर्ण और मधु।

मृत्युञ्जय रस

(नवज्वरे)

ज्वर होते ही इस औषधिक सेवन से बड़ा लाभ होता है।

श्लेष्म ज्वर या वात श्लेष्म ज्वरमें इसे अद्रकके रस मधु संग तीन तीन घंटे बाद दे, पथ्य दूध।

यदि भारी चीजके खानेसे कब्ज होकर ज्वर आजाय तो अदरकके रस सेंधा नमकके साथ वात पित्त ज्वरमें केवल मधुके साथ अजीर्ण अनाजीर्ण अग्नि मांद्य रोगोंमें विषूचिका रोगकी अन्तिम अवस्था सन्निपातादिकमें अद्रकके रस और मधु संग देना मूल्य ॥) तोला

॥ वामकेश्वर रस ॥

यदि किसीने विष खाया हो कफकी अधिकता हो, पेटमें दर्द हो अथवा जब जब रोगीको कै करानेकी आवश्यकता पड़े, इसको जीभ में मलवानेसे तुरत वमन हो जाती है।

मूल्य ।) तोला

॥ ज्वरांतक वटी ॥

कफ ज्वर वातज्वर, जाड़े से आने वाले ज्वर, दोरेसे आने वाले ज्वर पाठिया, श्वास, सन्निपात, मेलेरिया, तिजारी, चौथैया, आदि रोगोंमें दोरा होनेसे एक घंटा पहले। बतासेमें रखकर एक गोली खिलाने से जाड़ेका दोरा तुरत रुक जाता है।

मूल्य १० गोली ॥) आने

खसपर्णी वटी

ततः सप्त वटिं दद्यात् दधिमस्तु समाप्लुताः

नित्यं दधना च भोक्तव्य कोष्ठ दृष्टी निवृत्तये।

गृहणि घ्यतिसारं च ज्वर दोषं च नाशयेत्।

इसके सेवन करने से दस्त, मरोड़ा, पेटका दर्द, आंव आना, गृहणि, ज्वरातिसार आदि दूर हो जाते हैं। अनुपान, दहीके साथ एक गोली। मूल्य २० गोली ॥)

बृहत् लोकनाथ रस

तिल्ली, यकृत, पाण्डु, कामळा, मन्दाग्नि आदि रोगों पर इस से बढ़िया औषधि नहीं है, अनुपान पानका रस और मधु दिनमें तीन दफे, मूल्य २० गोली १)

(बाल रोगांतक वटी)

हंति त्रिदोषकं चैव ज्वर मांम सुदारुणम्।

कासं पञ्च विधं चापि सर्व रोगं निहंति च

चाहे बच्चेको किसी कारण से कोई रोग हो, इस औषधिको इस की माके दूधमें २ दफे देने से तुरन्त आरोग्य हो जाता है। नित्य प्रति एक गोली देने से कभी भी कोई किसी प्रकारका रोग नहीं हो सक्ता। मूल्य २० गोली ॥) आना

(लोह पर्पटी)

रक्ति कैकां समारभ्य वर्द्ध येद्रक्तिकां क्रमात्।

सप्ताहं वा द्वयं वापि यावदारोग्य दर्शनात्।

सूतिकांच ज्वरञ्चैव ग्रहणि मति दुस्तरम्।

आमशूला तिसारांश्च, पाण्डु रोगं स कामलाम्!
प्लीहा न मग्नि मांद्यांश्च भस्मकं च तथैवहि।
आमवात मुदावर्त कुष्ठान्यष्टादशान्यपि ।
भोजनं रक्त शाली नां त्यक्त्वा शार्कं विदाहिच!

इसके सेवन करने से, अतिसार, ग्रहणी, पाण्डु, प्लीहा, यकृत अग्निमांद्य, भस्मक, उदावर्त, शोथ, आदि रोग नष्ट होते हैं। अनुपान पानका रस और मधु। २) तोला

धात्री लोह

अम्ल पित्त, शूल, वमन, खट्टी डकार आना, परिणाम शूल, यकृत रोग दूर हो कर भूख खूब लगती है। मूल्य ॥) २० बटी। अनुपान, धनियेका जल मिश्री एक एक गोली दिनमें तीन दफे।

(चन्द्रप्रभावटी)

बीस प्रकारके प्रमेह स्वप्नदोष, अर्श, ग्रहणि, स्त्रियोंका सोम रोग, पांडु, श्वास, धवासीर, स्त्रियोंके ऋतु रोग, मन्दाग्नि, आदि रोगोंको दूर कर शरीरको हृष्ट पुष्ट बनाती है। मूल्य १) अनुपान शहतके साथ दिनमें तीन दफे।

(बाधकारी बटी)

स्त्रियोंके ऋतु दोष, में खून आते समय दर्द होना कमरका दर्द आंखोंमें गरमी निकलना, भूखका न लगना, आदि लक्षण हों तो इन गोलियोंको सेवन करना चाहिये। मूल्य १) ६०

(दाहांतक रस)

पित्त ज्वर, दाह, पिपासा, रक्त पित्त वात श्लेष्म ज्वर, सन्निपात ज्वर दाह, तन्द्रा, ज्वरका अधिक तेजीमें प्रबल ताप निद्रा-

धियंकपादि लक्षण हों तो इसको। मिश्री १ तोला छोटी इलायची ४ मुनक्का ५ इनकी ठंडाई बना कर पुडिया डाल कर दें दो घंटे बाद पिलाना इस से बुखारकी तेजी, प्यास, सिरमें दर्द आदि तत्काल दूर हो जाते हैं। २० गोली मूल्य २)

(बृहत् वात गजाङ्कुश)

इसके सेवन से पक्षा घात, सर्वांग वात, गृध्रसी क्रोष्ठशीर्ष, मन्यास्तम, हनुस्तंभ स्नायु रोग गठिया, तथा वायु सम्बन्धी सब रोग दूर हो जाते हैं। अनुपान पानका रस, मधु, मूल्य १)

(महा लक्ष्मी विलास)

खांसी, जुकाम, सिरका दर्द, श्वास, निद्राधिक्य, तन्द्रा, गला बैठ जाना माथेमें दर्द हिस्टीरिया, सन्निपात, कफाश्रित वायु, और कफ संबन्धी सब रोगोंमें दिनमें तीन बार पानके रस और शहदमें देना। १ तोला २०)

(बृहत्त चिन्तामणि)

मूर्छा, अपस्मार अम्ल पित्त शिरमें चक्कर आना, अनिद्रा हाथ पैरोंमें जलन होना वातिक पैतिक उन्माद, वातिक पैतिक शूल, कोष्ठाबद्धता कप, मूर्छा शुक्र, कृशता प्रभृति समस्त वायु रोगोंमे त्रिफलेके अर्क और मधु संग।

(सिद्ध प्राणेश्वर)

ज्वरातिसार, वातिसार, ग्रहणी, आमातिसार, इनमें पानके रस मधु संग। वातातिसार, श्लेष्मातिसार सन्निपातमें दस्त होना आम दोष, मलबद्ध अन्य शूल, ज्वर सहित ग्रहणी आदिमें अद्रक के रस मधु संग। मूल्य २०) गोली १) रु०

॥ सरलभेदी वटिका ॥

अथविशुद्ध कोष्ठस्य कायाग्निरति वर्द्धते ।
व्याधयश्चोपशाम्यन्ति प्रकृतिश्चानुवर्त्तते ।
इन्द्रियाणि मनोबुद्धिर्वर्णश्चास्य प्रसीदति ।
बलं पुष्टि रपत्यं च वृषता चास्यजायते
चरक संहिता ।

अच्छी तरह पेट साफ रहने से भूख बढ़ती है, प्रायः सब रोग शान्त होते हैं प्रकृतिका अनुवर्त्तन होता है, इन्द्र, समूह मन और बुद्ध प्रफुल्लित होते हैं। और शारीरिक बल पुष्टि आदि नाना उपकार होते है। इस लिये मनुष्य मात्रको कोष्ठ शुद्ध रखना अवश्य है सरल भेदी वटिका से बिना कष्टके पेट साफ हो जाता है। और प्लीहा यकृत, पाण्डु, उदरी, अर्श, रक्त दोष, पित्त विकृति, आदि तत्काल शमन होते हैं। इनका गोदक बच्चे से ले कर जराजीर्ण मनुष्य भी खटके खा सकते हैं। मूल्य ॥) तोला

बृहत कस्तूरी भैरव

यह औषधि, कस्तूरी, काफूर, मोती, स्वर्ण बहु मूल्य पदार्थों द्वारा तैय्यार किया जाता है। सन्निपात ज्वरकी प्रत्येक अवस्थामें यह बड़ा उपकारी है। रोगीका जब शरीर ठंडा नाड़ा मंद, मुग्धता आदि मृत्यु सूचक चिन्ह हो तो इसको अद्रकके रस मधु सग देना चाहिये। वायु विकार, कफ, खांसी, दुर्बलता माथेका दर्द, विषम ज्वर प्रात: और सन्ध्याको दो बार पानके रस और शहद संग।

सालसादि वटी

उपदंश गरमी, रक्तदोष गण्ड माला, प्रभृति सब खूनकी विकृति

से उत्पन्न हुए रोगोंमें गिलोयके क्वाथ और शहद संग देना। मूल्य १) रुपया २० वटी।

बृहत चन्द्रामृत रस

खांसी, यक्ष्मा, श्वास, हिचकी, प्रभृति श्वास नलीके समस्त रोगोंमें वांसेके पत्तोंके रस और मधु संग। मूल्य ४० गोली २)

गृह चिकित्सा बक्स

वैद्य बन्धुओंको दवा बनानेकी कूट, पीट, से बचानेको, गृहस्थियोंको प्रत्येक समय रोगके हमलेसे बचानेको सफर और यात्रा में साथ रख यौसियों प्राणियोंकी प्राण रक्षा कर, यश और धनका लाभ करनेको, सर्व साधारणमें आयुर्वेदका प्रचार होनेको हमने एक सुन्दर बक्समें निम्न लिखित औषधियोंको यथा शास्त्र, ठीक ठीक बनाकर संग्रह किया है। थोड़े पढ़े लिखे भी इस बक्स द्वारा विधि पुस्तकानुसार औषधि सेवन कर सकते हैं। यदि इन समस्त औषधियोंको पृथक पृथक बनाया जाय तो कम से कम २५) रु० से कममें नहीं बन सकती। जिस प्रकार होम्यो पैथी चिकित्साके बक्सको वैदेशिक लोग हर समय अपने पास रख लाभ उठाते हैं। उसी तरह इस बक्स से एतद्देशीय पुरुषों को लाभ उठाना चाहिये, इस बक्सके होने से बारबार डाक्टरोंकी फीस नहीं देनी पड़ती। इसके साथ गृह चिकित्सा नामक पुस्तक, जिसमें हर एक रोगोंमें औषधि सेवनकी विधि, पथ्या पथ्यादि सैकड़ों उपयोगी बात लिखी हैं। मूल्य १) रुपया।

क्या चिकित्सक, क्या, गृहस्थ, सबको यह बक्स अवश्य संग्रह करने चाहिये। मूल्य ६) डाक महसूल ।॥)

जो महाशय इसके साथ, थर्मा मेटर कान धोनेकी पिचकारी, दस्त करानेकी पिचकारी छाती परीक्षाका यंत्र (स्टेथ स्कोप,) यह चार

बक्सु लेना चाहें वह १०) मनीआर्डर द्वारा भेजदें। बहुत पुरुष वी. पी. मंगा कर फेर दिया करते हैं। और इस बक्सका महसूल डाक ।||) है इस लिये हमें नियम बनाना पड़ता है। कि जो इस बक्सको मंगाना चाहें वह ६) मनिआर्डर द्वारा भेजें। मनीआर्डर आते ही उनके नाम बक्स ।||) की वी. पी. भेज दिया जावेगा। जो ६) मनिआर्डर न भेजें। उन्हें १) मनीआर्डर द्वारा पेशगी भेजना चाहिये। बिना पेशगी आये बक्स वी. पी. नहीं भेजा जाता है।

बक्सकी औषधियोंके नाम

चन्द्रोदय मकरध्वज आधा माशा मूल्य ५) मालती वसंत आधा माशा १) नव ज्वरे, मृत्युञ्जयरस २० गोली ।|) काम केश्वर रस, ।) ज्वरांतक वटी ।|) २० गोली सर्पण वटी २० गोली बृहत लोकनाथरस २० गोली बालरोगांतक वटी। लौह पर्पटी धात्री लौह चन्द्र प्रभा वटी। बाधकारी वटी दाहांतक रस, बृहत वात गजा कुश, महा लक्ष्मी बिलास बृहत चिंता मणि, सिद्ध माणेश्वर। सारठ भेदी वाटिका, उन्माद प्रचेतन रस। बृहत कस्तुरी भैरव रस। लाक्षादि वटी। बृहच्चन्द्रामृत रस सुधांशु तैल कांकायण वटी गोप्यार्क, २५ औषधियां है। इस से अधिक सर्व साधारणका क्या लाभ होगा?

सरळभेदी वटिका, उन्माद प्रचेतन रस, बृहत् कस्तूरी भैरवरस, लाक्षादि वटी, बृहच्चन्द्रामृत रस, सुधांशु तैल, कांकायणवटी, गोप्यार्क, प्रभृति २५) औषधियां है। इससे अधिक सर्व साधारणका क्या लाभ होगा।

गृह चिकित्सा बक्स

(लघु)

इस बक्समें केवल १२ औषधियां हैं। इनके सेवन करनेसे

किसी प्रकारके अनुपानादिकी दिक्कत नहीं है। न इसकी दवा कडवी खट्टी है। १ बूद मात्रा ताजे जल के साथ इधर दी और उधर तुरत आराम हुआ। इन औषधियोंको स्त्री, बालक, सुकुमार सभी बड़े आनन्द से सेवन कर सकते हैं। यह पत्येक गृहस्थ और सफर में पास रखने से हर एक रोगको बातकी बातमें ठहरा सकता है। इनके बिजलीके समान असरको देख कर सबको चकित होना पड़ता है जो महाशय इसका मूल्य मनिआर्डर द्वारा भेजेंगे उन्हें Homeo Ayurvedic treat ment नामक पुस्तक मुफ्त देंगे। मूल्य २) डा० म० ।।।) जो इसकी एक दफे परीक्षा कर लेता है वह सदाँको इसका प्रिय बन जाता है। आशा है कि आप भी इसकी परीक्षा करने से न चूकेंगे।

※ वनौषधि प्रकाश कार्य्यालय ※

(आश्चर्य्य आविष्कार)

[औषधियोंकी मिथ्या प्रशंसा न कर अनुभव सिद्ध गुण लिखे हैं]

सुधांशु तैल

(१) इसकी सुगन्ध अत्यंत मस्त और मीठी है। शिर पर मलने से मस्तकको बलवान बनाता है। सब प्रकारके सिर दर्द, शिरका घूमना, कमजोरी, असमय बाल पकना, आधासीसी, मृगी, सन्निपात सिरमें गरमी बढ़ना, आंखों में गजला पड़ना, सिरमें चक्कर आना इत्यादि बहुतसे सिर रोगोंको दूरकर बुद्धि और स्मृतिको ठीक करता और बालोंको सुन्दर तथा सचिक्कन बनाता है।

(२) कानोंमें डालने से कानोंका दर्द, खुदकी राध आना, बहरापन आदि कानोंके सब रोगोंको दूर करता है। प्रथम कानको

फिटकरीके पानी द्वारा पिचकारी से साफ कर इस तैलको ५—१० बूंद दिनमें तीन चार दफे डालना।

(३) आंखोंमें डालने से आंख दुखना, अजनहारी, सोजा, खुजाहट लू लगना आदि अनेक नेत्र रोगोंको अच्छा करता है। विधि—प्रथम नेत्रोंको त्रिफलेके जल से खूब धोकर फिर इसको डालना।

(४) दांतोंमें मलने से दांतोंका दर्द मसूड़ोंका सूजना, दंत मूल व्यथा मुख पाक कीड़ा दुर्गंध जिह्वा तालू और ओष्ठकी पीड़ा इत्यादि समस्त मुख रोगोंका नाश करता है।

(५) फोया भरकर लगाने, आग से जलना बिच्छु भिड़ड़ ततैया आदिके काटने चोट लगने घाव फुंसी निकाले आदि लगाना चाहिये।

(६) मालिश करने से पक्षाघात अर्धांग पसलीका दर्द कमर का दर्द गठिया समस्त वायुके दर्द दाद खुजली अङ्ग सकुच हृदयशूल निमोनिया वात रक्त शोथ आदिको तत्काल शमनकरता है।

(७) मट्ठेमें दस दस बूंद डाल कर पिलाने से दस्त, कै, हैजा, हिचकी प्यास मरोड़ा इत्यादि पर तुरन्त फल दिखाता है।

(८) मिश्री पर दस बूंद डालकर खिलाने से सोजाक मूत्र कृच्छ्र प्रमेह पेशाबकी जलन प्रभृति बहुत से रोग जड़से जाते रहते हैं।

(९) सोजाकमें इसकी पिचकारी लगाने से अत्यंत लाभ होता है

(१०) कहां तक लिखें प्राय बहुत से रोगोंमें रामबाण सदृश गुण दिखाता है। प्रत्येक घरमें कम सेकम इसकी एक शीशी अवश्य होनी चाहिये मूल्य २)

पामाहर अनुभूत चूर्ण

सब प्रकारकी खुजलीको केवल २४ घंटे में आराम कर देता है मूल्य ॥)

(३) हिन्दी उर्दू शिक्षक, इस पुस्तक द्वारा प्रत्येक हिन्दी वाले उर्दू और उर्दू जानने वाले हिन्दी स्वयं सीख सकते हैं मूल्य ।)

(४) रसेन्द्रमंगल, यह तन्त्र ग्रन्थ महाराजा मैसूरकी लायब्रेरीमें ताड़ पत्रों पर कनाड़ी भाषामें लिखा हुआ, बहुत समय से रखा था, हमने इसको मंगाकर काशीके परम प्रसिद्ध रसायण शास्त्री श्यामसुन्दराचार्य वैश्य द्वारा सललित भाषा भाष्य से सुसज्जित करा कर मुद्रित किया है। इसमें पारदशोध बुभुक्षाविधि, मारण, अभ्रक, सत्वादि पालन, ग्रासचारणादि रसायण विषय बहुत सरल और सहज साध्य वर्णित हैं।

इसमें सारी विधि एसी अनुभूत और अद्यावधि गोप्य क्रियायें वर्णित हैं कि जिनके जानने को वैद्य लोग वर्षों से लालायित थे। आशा है कि रसायण प्रक्रिया इच्छुक इसको अवश्य संग्रह करेंगे। मूल्य ।)

(५) सुश्रुत संहिता—

श्रीहाराण चन्द्र चक्रवर्ति कविराज विरचित सुश्रुतार्थ सन्दीपन भाष्य सुललित संस्कृतमें विवर्णित है। सुश्रुत संहिताके ऊपर अब तक ऐसा संस्कृत भाष्य प्रकाशित नहीं हुआ है। सूत्रस्थानस्य, षोड़शावधि षट त्रिंशाध्याय पर्यन्तम् मूल्य १।) रुपये। शरीरस्थानम् मूल्य १॥=) आने, चिकित्सास्थानम् मूल्य २) रुपये सूत्रस्थान निदानस्थानञ्च मूल्य २।) रुपये, सूत्रस्थानस्य प्रथमावधि पञ्चदशाध्याय पर्यन्तम् मूल्य १।) रुपये।

अभिनव निदान संग्रह।

(सान्वय सरला व्याख्या तथा भाषानुवाद सहित)

पं० गिरजीलाल शर्मा वैद्यराज मेरठ द्वारा रचित।

प्रिय पाठक गण ! रोग निदान संग्रह ग्रन्थोंमें माधव निदान प्राचीन ग्रन्थ है। परन्तु इसमें बहुत से अति प्रयोजनीय विषय और निदान भी नहीं हैं। अतएव मधुकोशव्याख्या, आतंकदर्पण, कुसुमावली टीका, डल्हणकृत टीका, पञ्जिका, चक्रपाणि, निदानचन्द्रिका, विजयरक्षित टीका, सर्वांगसुन्दर, भावमिश्र, कृतभाष्य, प्रभृति, संस्कृत बंगला मरहठी, आदि अनेक ग्रंथों से मनोरंजक, सुखबोधक और सर्वसाधारण के अनायास शीघ्रबोध के लिये अति विस्तृत सान्वय सरल व्याख्या तथा भाषानुवाद सहित इस अपूर्व अभिनव निदान संग्रह नामक ग्रंथकी रचना अति सरलता के साथ की है जिसमें प्रत्येक शब्द के एक एक दा दो पर्याय शंकासमाधान, समास पाठों की अशुद्धि, पूर्वापर विरोध वर्तमान समयके, प्लेग, निमोनिया, टायोफाइड, इन्फ्लुएंजा प्रभृति नवीन रोगों का श्लोक बद्ध निदान सन्निवेशित किया है।

मूल्य २॥) रुपया।

रसायनसार

रसायन शास्त्री पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य

प्रणीत

जिसके देखनेके लिये आज अनेक वर्षों से वैद्यगण और आयुर्वेद प्रेमी महाशय उत्कंठित हो रहे थे। वही अद्भुत पारद बुभुक्षाविधि चन्द्रोदयादि हजारों रस निर्माण प्रकार, सर्वधातु शोधन मारण रीति बड़े बड़े वैद्योंका पारद बुभुक्षादि विषयक शास्त्रार्थ, गन्धक, हरिताल्रादि तैल तथा परीक्षित चिकित्साकाण्ड आदि अनेक विषयों से विभूषित अनेक चित्रों से चित्रित ग्रंथ है।

मूल्य ५) रुपया डा० खर्च ॥)